प्रकाशक,
कोठारी विट्ठलदास मगनलाल
गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद.

卐

: मुद्रणस्थानः आदित्यमुद्रणालय :
: : रायखडरोड–अहमदावाद. : :
मुद्रकः गजानन विश्वनाथ पाठक.

विज्ञापन

गूजरातपुरातत्त्वमंदिरनी प्रबंध समितिना संवत १९८० ना भादरवा वद १२ नी बेठकना ठराव १ (परिशिष्ट १) मुजब आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

गूजरात विद्यापीठ कार्यालय,
अमदावाद.
आसो वद १२, सं० १९८१.

[illegible]

प्रवेश

प्राकृतव्याकरणना शिक्षक अने शिष्य माटे आ पुस्तकना परिचय पूरती थोडी माहिती आ प्रमाणे छे:

अहीं नीचेना चार मुद्दाओ विषे क्रमवार लखवानुं छे–

१ रचनाशैली

२ प्राकृतभाषा

३ अर्धमागधी भाषा

४ प्राकृतभाषानां व्याकरणो

१ रचनाशैली

आचार्य हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणने सामे राखीने आ पुस्तक लखवामां आव्युं छे पण क्रमने फेरववामां आव्यो छे. हेमचंद्रना प्राकृतव्याकरणमां सौथी पहेलुं प्राकृतभाषानुं व्याकरण आपेलुं छे अने पछी क्रमे शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने छेल्ले अपभ्रंशनुं व्याकरण आपवामां आवेलुं छे त्यारे प्रस्तुत पुस्तकमां ए बधां व्याकरणोने साथे साथे समाववामां आव्यां छे एटले आ पुस्तकमां प्राकृतनुं व्याकरण आपता जे जे नियमनां शौरसेनी, मागधी, पैशाची–चूलिका पैशाची अने अपभ्रंशनी विशेषता होय ते पण साथे साथे–प्राकृतभाषाना नियमनी साथे–ज आपवामां आवी छे. जेमके;

प्राकृतमां साधारण रीते क, ग, च, ज, त, द, प, य अने व नो लोप थाय छे (जुओ पृ० १०) आ नियम आपवानी साथे ज तुरत घट शके ए रीते एम पण जणाव्युं छे के, शौरसेनीमां 'त' नो 'द' थाय छे, मागधीमां 'ज' नो 'य' थाय छे, पैशाचीमां 'द' नो 'त' थाय छे अने अपभ्रंशमां 'क' नो 'ग' थाय छे (जुओ पृ० १२ अने १३)

आ रीते वर्णविकारने लगता बधा नियमोने आपवामां आव्या छे. नियमोमां सौथी पहेलां सर्व साधारण नियमोने आपवामां आव्या छे अने पछी विशेष (आपवादिक) नियमोने मूकवामां आव्या छे. नाम अने आख्यातना प्रकरणमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरेनां रूपोनी साधना बताव्या पछी क्रमवार प्राकृत, शौरसेनी वगेरेनां रूपोने मूकवामां आव्या छे अने केटलेक ठेकाणे ए बधा रूपोने साथे साथे एक ज कोठामां पण मूकेलां छे (जुओ पृ० १२१–१२६–१२८–१२९–१३०–१३२–१३३ नामप्रकरण अने पृ० १४१ तथा पृ० २९१ आख्यात प्रकरण)

खास विशेषता (विशेषताओने टिप्पणमां मूकेली छे)

(१) पालिनी साथे सरखामणी

प्राकृतभाषाना वर्णविकारना नियमोने पालिभाषाना वर्णविकारना नियमोनी साथे सरखाववामां आव्या छे अने केटलेक स्थळे तो पालि शब्दोने पण मूकवामां आव्या छे (पालिशब्दो माटे जुओ पृ० ८–१३–१८ वगेरे)

नामना, धातुना, कृदंतना अने तद्धितना रूपोने पालिरूपोनी साथे मूकवामां आव्या छे अने केटलीक जग्याए पालिना प्रत्ययो आदिने पण सरखावेली बतावी छे (प्रत्ययो माटे जुओ पृ० २४८ अने ३२४) संधिप्रकरणमां अने बीजे पण संभवित स्थळे सरखामणी माटे पालिना नियमोने आपवामां आव्या छे. एकंदर रीते पालिनी अने प्राकृतनी सरखामणी सविस्तर दर्शाववामां आवी छे अने ते उपरथी ज कही शके के, प्राकृतनो अभ्यासी सहेजे साथे पालिने पण सर्वांशे शीखी शके.

(२) वैदिक संस्कृत अने प्राकृतनो संबंध

जूनामां जूना वररुचिथी छेक छेल्ला मार्कंडेय सुधीना बधा प्राकृतव्याकरणकारोए प्राकृतरूपोनी साधना माटे लौकिक (वैदिकेतर) संस्कृतनो ज उपयोग करेलो छे, तदनुसार आ पुस्तकमां पण ए ज शैलीने मान्य राखवामां आवी छे. परंतु अत्यारनां विपुल साधनोथी एम जणाय छे के, प्राकृतभाषानो संबंध वैदिक संस्कृतनी साथे पण छे (जुओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० १९४–२०९) तेथी प्राकृतरूपोनी साधना माटे वैदिक शब्दोने पण मूळभूत राखवा ए, सरळतानी दृष्टिए विशेष अगत्यनुं छे. आ वातने सूचववा वैदिक संस्कृतने मूळभूत राखीने पण सरखामणी करवामां आवी छे. (जुओ पृ० ६९–९४–२०९)

प्राकृतना एवा तो घणा य नियमो छे जे वैदिक संस्कृतनां रूपो साथे मळता आवे छे,

[जेमके; अंत्यव्यंजननो लोप (जुओ पृ० १० नि० १)

वैदिकरूपो

पश्चा (पश्चात्)

उच्चा (उच्चात्)

नीचा (नीचात्)

युष्मा (युष्मात्)

देवकर्मेभिः (देवकर्मभिः)

आ बधां वैदिक रूपोमां अंत्यव्यंजननो लोप थएलो छे.

'द्' 'य' नो लोप

(जुओ पृ० १६ नि० ५ तथा पृ० १५ नि० ४)

अवगन्न (अवगत्न)

[illegible]

संयुक्तनी पूर्वे ह्रस्व (जुओ पृ० ४ नि० १)

रोदसिआ (रोदसीआ)

अमत्र (अमात्र)

'ऋ' नो 'उ' (जुओ पृ० ७ नि० ८)

वृन्द (वृन्द)

'द' नो 'ड' (जुओ पृ० ६८–६९ द्-विकार)

दुदभ, दूडभ

पुरोदाश, पुरोडाश वगेरे.

उपर्युक्त उदाहरणोनां वैदिक स्थळो माटे अने विशेष उदाहरणो माटे जुओ आर्यविद्याव्याख्यानमाळा पृ० २०३ थी २०८]

पण पुनरुक्ति थवी जाय अने प्रवेश करनारने कठण लागे एथी ए बधा नियमोने अहीं नथी आपवामा आव्या.

(३) आदेशो करवा करतां मूळ शब्द उपरथी ज विकृत शब्दने बतावबो

जूना वैयाकरणोए संस्कृत शब्दोना आदेशो करीने प्राकृत शब्दो बनाववानी रीत स्वीकारी छे पण भाषानुं ऐतिहासिक अने शास्त्रीय दृष्टिए निरूपण करवुं होय तो जे जे शब्दोनी सरखामणी करी शकाती होय त्यां आदेशो करवा करतां ए मूळ शब्दोना ज उच्चारणजन्य वर्णविकारोने बताववा जोइए. जेमके;

'ओळ' सूचक प्राकृत 'ओलि' शब्दनी साधना माटे नकामुं, आटसु, निरर्थक, प्रामाणिक, वीथी, मधमाखी, सखी, श्रेणि, शीर्ष, पुट, इडा अने कुट एटला अर्थमां (अर्थो माटे जुओ आप्टेनो कोश) वपराता 'आलि' शब्द उपरथी 'पंक्ति' अर्थमां 'ओलि' बनाववानी मथामण करवी ए करतां 'पंक्ति' अर्थवाळा

ज 'आवलि' शब्दनां 'आवडि' 'ओडि' रूपो बनावीने 'ओलि' शब्द बनाववानी रीत ऐतिहासिक अने भाषाशास्त्रनी दृष्टिए वधारे सुसंगत लागे छे.

'सूक्ष्म' ना 'क्ष' नो 'ख' करीने 'सण्ह' रूप बनाववा करतां 'श्लक्ष्ण' नुं सहज मार्गे थतुं 'सण्ह' रूप ज अधिक संगत लागे छे.

आम करवाथी उच्चारणोथी थता क्रमिक वर्णविकारो कळी शकाय छे अने व्याकरणमां आवतो गौरवदोष पण अटकी शके छे.

आ हकीकत अहीं मात्र एक उदाहरण द्वारा ज दर्शाववामां आवी छे (जुओ पृ० ५४)

(४) आगमोमां नहि वपराएलां रूपोनी साधना

जैन आगमोमां केटलांक रूपो जे अत्यार सुधी अगम्यस्थां हतां तेने पालिभाषानां रूपो द्वारा साधवानो प्रयत्न करवामां आव्यो छे (जुओ पृ० १३६ अने २६२)

२ प्राकृतभाषा

शौरसेनी अने मागधीनुं क्षेत्र एना नाम उपरथी ज जाणीतुं छे. पैशाचीनुं क्षेत्र—

" पाण्ड्य–केकय–बाह्लीक–सिंह–नेपाल–कुन्तलाः ।
सुदेष्ण–भोज–गान्धार–हैव–कन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् " ।

(षड्भाषाचंद्रिका पृ० ४ श्लो० २९–३०)

आ श्लोकमां जणावेलुं छे. साधारण प्राकृत अने अपभ्रंशनुं क्षेत्र व्यापक छे एटले ए माटे कोई देशने निर्देशी शकाय नहि.

वैयाकरणोए शब्दशास्त्रनी दृष्टिए प्राकृतना त्रण प्रकार जणावेला छे: १ संस्कृतजन्यप्राकृत, २ संस्कृतसमप्राकृत अने ३ देश्यप्राकृत.

[१ जेनी व्युत्पत्तिनो वधारे संबंध बन्ने प्रकारना संस्कृत साथे छे ते संस्कृतजन्यप्राकृत.

२ संस्कृतनी जेवुं प्राकृत ते समसंस्कृतप्राकृत.

नीचेना एक ज श्लोक द्वारा संस्कृतसमप्राकृतनो परिचय थई जाय छे.

" चारुसमीरणरमणे हरिणकलङ्ककिरणावलीसविलासा ।
आबद्धराममोहा वेलमूले विभावरी परिहीणा " ॥ १ ॥
(*भट्टिकाव्य १३ मो सर्ग)

३ देश्यप्राकृतनो नमूनो आ प्रमाणे छे:

" रे खेआलुअ खोसल इमाण खोट्टीण मज्झमावडिओ ।
छुट्टिरसत्ति कह व तुमं अकुडिओ टक्कराहि फुडं " ॥
(देशीनाममाला पृ० १८ श्लो० ६५]

प्रस्तुत व्याकरण पेला प्रकारने लगतुं छे. बीजो प्रकार तो संस्कृत व्याकरणथी ज सिद्ध छे अने त्रीजा प्रकारनुं प्राकृत हजु सुधी शास्त्रीय गवेषणानो विषय न बनेलुं होवाथी आमां तेनुं निरूपण करवुं योग्य धार्युं नथी. एना बोध माटे देशीनाममाला वगेरे देशी भाषाना कोशोथी ज चलावी लेवुं पडे एम छे.

३ अर्धमागधी भाषा

प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषाओनुं व्याकरण लखतां आमां क्यांय अर्धमागधी विषे लखवामां नथी आव्युं, एथी कोइ एम तो न ज समजी ल्ये के, अर्धमागधी कोई भाषा ज नथी.

---

* भट्टिकाव्यना आ सर्गमां समसंस्कृतप्राकृतनां आवां अनेक काव्यो छे. आ सर्गनुं नाम ज ' भाषासंनिवेश ' छे,

जैनसूत्रोमां केटलेक ठेकाणे अर्धमागधीने भाषा तरीके जणावी छे अने साथे एम पण कहेवामां आव्युं छे के, 'भगवान् महावीर अर्धमागधी भाषामां उपदेश करता हता.'

अर्धमागधीने लगता जैनसूत्रोना उल्लेखो आ प्रमाणे छेः

"भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ" (समवाय—अंगसूत्र पृ० ६० समिति)	"भगवान् अर्धमागधीभाषा-द्वारा धर्मने कहे छे."
प्र०—"देवा णं भंते कयराए भासाए भासंति ? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ?	"हे भगवन् ! देवो कइ भाषामां बोले छे ? अथवा बोलाती भाषामां कइ भाषा विशिष्ट छे ?
उ०—गोयमा ! देवा णं अद्ध-मागहाए भासाए भासंति, सा वि य णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ" (भगवती—अंगसूत्र श० ५ उ० ४ पृ० १८१ प्रश्न—२० राय० अने समिति पृ० २२१ सू० १९१)	हे गौतम ! देवो अर्ध-मागधीभाषामां बोले छे अने बोलाती भाषामां पण ते ज भाषा—अर्ध-मागधीभाषा—विशिष्ट छे."

" तए णं समणे भगवं महावीरे कूणिअस्स भंभसारपुत्तस्स अद्धमागहाए भासाए भासति " (औपपातिक-उपांग-सूत्र पृ० ७७ समिति)	" त्यार पछी भगवान महावीर भंभसारपुत्र कोणिकने अर्ध-मागधीभाषामां धर्म कहे छे "
प्र०—" से किं तं भासारिया ?	" भाषानी दृष्टिए आर्यो कोने कहेवा ?
उ०——भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेंति " (प्रज्ञापना-उपांगसूत्र पृ० ९६ समिति)	जेओ अर्धमागधीभाषामां बोले छे तेओने भाषानी दृष्टिए आर्यो समजवा "

आ उपरथी 'अर्धमागधी' ने भाषा तरीके अने 'महावीर अर्धमागधीभाषामां उपदेश करता हता' ए बन्ने वातो स्वीकारी शकाय एवी छे पण '*अर्धमागधी*' ना *भाषा* तरीकेना उल्लेख मात्रथी ज कांइ एनुं व्याकरण लखी शकाय नहि.

व्याकरण लखवा माटे तो एना विपुल साहित्यने सामे राखवुं जोइए, जेथी बीजी भाषाओ करतां अर्धमागधीनी जे खास खास विशेषताओ होय ते बधी साधी शकाय. काइ बे चार रूपोनी विशेषताने लीधे कोइ एक भाषाने बीजी भाषाथी जुदी पाडी शकाय नहि तेम ज बे चार रूपोने साधवा माटे जुदु व्याकरण पण लखी शकाय नहि, जो फक्त बे चार रूपोनी ज विशेषताने लीधे एक

भाषाने बीजी भाषाथी जुदी गणावी शकती होय अने एनुं व्याकरण पण रची शकातुं होय तो भाषाओनो अने व्याकरणोनो अंत ज केम आवत ?

आ संबंधमां आचार्य हेमचंद्रनुं ज उदाहरण बस छे: श्रीहेमचंद्रे प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनां व्याकरणो रच्यां छे तेम साथे साथे आर्षप्राकृतने पण लीधुं छे. साधारण प्राकृत करतां आर्षप्राकृतनी कांइक विशेषता जरूर छे पण ते एटली नजीवी छे के, तेनुं जुदुं व्याकरण करवुं तेमने योग्य नथी जणायुं. आ ज कारणथी साधारण प्राकृतना पेटामां आर्षप्राकृतने पण एमने मेळवी दीधुं छे.

हेमचंद्र जेवा जैन वैयाकरण शौरसेनी, मागधी अने पैशाची जेवी प्रायः जैनेतर ग्रंथोमां वपराती के नाटकीय भाषाओनुं व्याकरण लखवा बेसाय अने जैनआगमोनी भाषानुं व्याकरण न लखे ए कांइ अर्थविनानी वात नथी.

जैनसंप्रदायमां अर्धमागधीना साहित्य तरीके प्रसिद्धि पामेलुं समस्त आगमसाहित्य एमनी सामे ज हतुं, ए विषेनो भाषानो अने भावनो एमनो अभ्यास पण गंभीर हतो छतां य एमणे ए साहित्यने लगतुं एक जुदुं व्याकरण केम न रच्युं ? ए प्रश्न एमने माटे थवो सहज छे.

ए प्रश्ननो उत्तर आचार्य हेमचंद्रे पोतानी कृतिद्वारा ज आपी दीधेलो छे. आपणे जेम अगाउ जोइ गया के, आर्षप्राकृतनुं जुदुं व्याकरण रचवा जेवी खास विशेषता न जणायाथी तेम एने साधारण प्राकृतना पेटामां समावी दीधुं छे तेम आगमसाहित्यनी भाषा पण ए बंने प्राकृतो करतां कोइ विशिष्ट विशेषता न जणायाथी

एमणे ए भाषाने ए बन्ने प्राकृतोमां भेळवी दीधी छे अने ए ज कारणथी एनुं जुदुं व्याकरण करवा तेओ प्रेराया पण नथी.

एमना समयनुं वातावरण जोतां तो जरुर ए पाणिनिना वैदिक व्याकरणनी पेठे जैनआगमोनी भाषानुं पण व्याकरण रचवाने प्रेराया होत.

जैनपरंपरामां आचार्य हेमचंद्र ज एक एवा प्रतिष्ठापक पुरुष छे जेमणे जैनोनी साहित्यने लगती प्रतिष्ठा साचववानो भगीरथ प्रयत्न सेव्यो छे. नवु व्याकरण, नवुं छंदःशास्त्र, नवुं अलंकारशास्त्र, नवुं धातुपारायण, नवा कोशो, नवो निघंटु, नवुं पुराण अने नवुं योगशास्त्र वगेरे ए बधुं जैनोनी विशेषताने खातर नवुं नवुं रचवा छतां आगमोनी भाषाना ज प्रसंगमां एमणे वृद्धप्रवादनी सामे पण जे मौन बताव्युं छे ते ज आपणा ए प्रश्नना पूर्वोक्त उत्तर माटे पूरतुं छे.

वळी, आचार्य हेमचंद्र पोते एम पण मानता लागे छे के, आगमोनी भाषा अर्धमागधी तो जरुर कही शकाय पण जो एमां 'अर्धमागधी' नामने योग्य केटलीक विशेषताओ मागधी भाषानी पण भळेली होय. आ विशेषताओ तपासतां एमने तो फक्त मागधीनी एक ज विशेषता मुख्यपणे जणाणी छे. ते विशेषता-प्रथमाना एकवचनमां मागधीना 'ए' प्रत्ययनो प्रयोग, जेमके; जीवे, अजीवे, लोए, अलोए, आसवे, संवरे, बंधे, मोक्खे वगेरे. पण आ एक ज विशेषताने लीधे तेओ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी कहेवी योग्य धारता नथी अने प्राकृत के आर्षप्राकृतथी जुदी पण गणी शकता नथी. माटे ज एमणे आगमोनी भाषाने माटे पोताना व्याकरणमां कोइ खास स्थान आपेलुं नथी. साथे साथे एटलुं पण जणावी देवुं जोइए के, हेमचंद्रना

ध्यानमां आवेली ए एक विशेषता पण कांइ आगमोनी भाषामां व्यापक रीते आवेली नथी, एमां तो 'ए'ना प्रयोगनी पेठे प्राकृतना 'ओ' प्रत्ययवाळां पण घणां रूपो—ने पण आचारांग जेवा प्राचीन सूत्रमां य—मळी आवे छे. जेमकेः निक्खंतो, उद्देसो, अप्पमाओ, निरामगंधो, उवरओ, उवेहमाणो, आलीणगुत्तो, माहिओ, नाणागमो, संयतो, दोसो, हलवाहो, दुरणुचरो, मग्गो वगेरे (आचारांग सूत्र पृ० ४१–१२४–१२७–१३०–१५९–१६८–१८३–१८४–१८९–१९०–१९२ समितिनुं). एमणे ज आ संबंधमां एम जणाव्युं छे के, "प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" (प्रा० व्या० पृ० १९९ सू० २८७) अर्थात् "आर्ष प्रवचनमां प्रायः मागधीना 'ए' प्रत्ययनुं ज विधान छे, पण मागधीनां बीजां बीजां लक्षणोनुं नथी." आ उल्लेखमां वपराएलो 'प्रायः' शब्द आगमोमां 'ए' प्रत्ययनी वपराशनो पण संकोच बतावे छे अने एथी ज एम जणाय छे के उपर्युक्त 'ओ' प्रत्ययनी वपराशनुं आगमिक क्षेत्र पण कांइ हेमचंद्रना ध्यान बहार छे एम नथी.

सार आ छे के, आचार्य हेमचंद्रे पोताने उल्लेखेला जैन आगमोनी भाषाने लगता प्रश्ननो खुलासो आम बे रीते करी बताव्यो छे:

एक तो जैन आगमोनी कहेवाती अर्धमागधीने पोतानी कृतिमां खास जुदुं स्थान नहि आपीने. बीजुं, एमां जोइए तेटला प्रमाणमां मागधीनी विशेषताओ न होवानुं जणावीने.

'आ आगमोनी भाषा अर्धमागधी नथी पण प्राकृत के आर्षप्राकृत छे' एम स्पष्ट शब्दोमां कहेवा जेवुं जैन समाजनुं वातावरण अत्यारे पण नथी तो संप्रदाय भक्तिना बारमा सैकामां तो शी रीते होय ? छतां य एक जवाबदार अने प्रामाणिक वैयाकरण तरीके आचार्य

हेमचंद्रे उपर्युक्त साची हकीकतने पण आगळ जणावेली भंगिए आबाद रीते जणावेली छे अने साथे वृद्धप्रवादना अनुसंधाननी युक्ति पण बतावेली छे. आ संबंधमां एमनो आखो उल्लेख आ प्रमाणे छे: "यद्यपि 'पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं'[1] इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात् न वक्ष्यमाणलक्षणस्य"

(प्राकृत व्या० पृ० १५९ सू० २८७)

---

१. आ उल्लेख निशीथचूर्णिमां छे. जुओ लिखित प्रति पा० ३५२ पूना भां० प्रा० वि० मं० सं०. ए उल्लेखमांना 'अद्धमागह' शब्दनी व्याख्या करता श्रीजिनदास महत्तरे जणाव्युं छे के; "मगहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं" अथवा "अट्ठारसदेसीभासाणियतं अद्धमागधं" अर्थात् एमणे 'अर्धमागध' शब्दनी बे व्याख्या करी छे: पहेली— मगध देशनी अरधी भाषामां नियत ते अर्धमागध. बीजी—अढार जातनी देशी भाषामां नियत ते अर्धमागध.

वर्तमान आगमोनी भाषामां पहेली व्याख्या तो घटती नथी एम हेमचंद्र पोते कहे छे.

बीजी व्याख्या पण जो आगमोनी भाषामां घटी शके तेवी होत तो जरूर तेने प्रधानपद आपी आचार्य हेमचंद्र ए रीते चोक्कस कर्युं होत अने ए रीते वृद्धवादनुं ज समर्थन करत. पण ए प्रकार वैयाकरण ए व्याख्या तरफ उदासीन रह्या छे, एथी जणाय छे के, ए व्याख्या पण आगमोनी भाषामां घटती नहि होय अथवा ए व्याख्यामां कहेला अढार देश कया समजवा? ए प्रश्न ज गुंचवाळो छे.

राजकुमारोना शिक्षणवर्णनना प्रसंगमां 'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' शब्द जैन सूत्रोमां मळे छे, त्यां तेनो अर्थ 'अढार (जातनी) देशी भाषामां विशारद' थाय छे. ए शब्दना संबंधमां ए सिवाय बीजी

वळी बीजा टीकाकारोए आवी नथी तेम अढार जातनी देशी भाषाने 'अर्धमागधी' कहीने ओळखावी पण नथी.

'अट्ठारसदेसीभासाविसारए' नो उल्लेख ज्ञातासूत्रमां अने औपपातिक सूत्रमां मळे छे:

"तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए* अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए"

ज्ञातासूत्र पृ० ३८ समिति
टीका पृ० ४२ ,,

"त्यार पछी ते मेघ कुमार बोतेर कळाओमां प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामां निपुण थयो"

[टीकाकारना मत प्रमाणे 'अढार जातनी भाषामां नहिं पण अढार जातनी लिपिमां' प्रवीण थयो. आ अढार जातनी लिपिनो उल्लेख प्रज्ञापना सूत्रमां अने नंदीसूत्रमां मळे छे]

"तए णं से दढपइण्णे दारए बावत्तरिकलापंडिए* अट्ठारसदेसीभासाविसारए"

औपपातिक सूत्र पृ० ९८ समिति

"त्यार पछी ते दृढप्रतिज्ञ नामनो कुमार बोतेर कळाना प्रवीण थयो अने अढार प्रकारनी देशी भाषामां निपुण थयो"

सूत्रना ए उल्लेखो जोतां अढार देशने लगती आपणी ए गुंच उकली शकती नथी पण एटलुं कही शकाय छे के, कदाच आ उल्लेखोने जोईने ज श्रीजिनदास महत्तरे पोतानी चूर्णिमां अढार जातनी देशी भाषाने 'अर्धमागधी' नुं नाम आप्युं होय.

श्रीहरिभद्रना विद्यार्थी अने [illegible] तथा श्रीउद्योतन अपरनाम तत्त्वादित्यना शिष्य श्रीदाक्षिण्यचिह्नसूरिए बनावेला 'प्राकृत कुवलयमाला' ने जोतां अढार देशने लगती आपणी ए गुंच कदाच उकली शके.

पण याद राखवु जोइए के; प्रस्तुत अर्धमागधीनी चर्चा साथे कुवलय-मालामां आवता अढार देशने लगता ए उल्लेखनो कशो ज संबंध नथी.

कुवलयमालामां ए देशोनी गणना आ प्रमाणे करेली छे:

"लाडा कनाडा वि य मालविया कन्नुज्ज–गोल्लया । करय मरहट्ठ य सोरट्ठा ढक्का किरि अंग सिंधवया ॥"	"लाटदेश, कर्णाटकदेश, मालवदेश, कनोजदेश, गोलदेश, करय (कारवाड?) देश, महाराष्ट्रदेश, सोरठदेश, ढक्कदेश, किरदेश, अंगदेश अने सिंधदेश"
कु० लि० प्रति पृ० ७५	

पेली बाजु पं० ५ पूना भां० प्रा० वि० मं० स०

आ उल्लेखमां मात्र बार देशोने गणाववामां आव्या छे परंतु आ पछीना एक बीजा उल्लेखमा (पृ० ७६) एथी वधारे देशोने मूकेला छे. आ नीचेना उल्लेखमां देशोनां नामो साथे तेने देशना मनुष्योनो स्वभाव अने भाषाना एक बे शब्दोने पण मूकवामां आव्या छे अने छेवटे उपसंहारमा जणावेलुं छे के,

"इय अट्ठारसदेसी–भासाउ पुलइऊण सिरिदत्ते । अन्ने इ य पुलएती जवस–पारस–बब्बरातीए ॥"	"ए प्रमाणे श्रीदत्त नामनो कोइ गृहस्थ अढार देशनी भाषाओने जोइने (सांभळीने) बीजाओनी पण–एटले अनार्यो पैकी जवन, पारस अने बर्बर लोकोनी पण–भाषाने जुए छे (सांभळे छे)"

ग्रंथकारे उपसंहारमा आम अढार देशी भाषानो उल्लेख कर्यो छे अने देशोनी गणनाना प्रसंगमा मात्र सोळ देशो ज जणावेला छे तेनुं कारण समजातुं नथी.

ते उल्लेखमां ए देशोने जणावेला छे ते उल्लेख आ प्रमाणे छे:

"तत्थ य पविसमाणेणं
दिट्ठा अणेयदेसभासालक्खिए
देसवणिए। तं जहा–
कसिणा निट्ठुरवयणे बहुसमर (?)
भुंजए अलज्जे य।
'अड्डे' त्ति भणमाणे अह
पेच्छइ गोल्लए तत्थ॥
नयनीइसंधिविग्गहपडुए बहुजं-
पए य पयईए।
'तेरे मेरे आउ' त्ति जंपिरे
मज्झदेसे य॥

नीहरियपोट्ट–दुवन्ने
मडहए सुरयकेलितल्लिच्छे।
'एगेले' जंपिरे अह पेच्छइ
मागहे कुमरो॥
कविले पिंगलनयणे भोयण-
कहामेत्तदिन्नवावारे (?)।
'किं तो किं मो' त्ति य जंपिरे
य अंतवेए य॥

[illegible] य
[illegible] य।

त्यां प्रवेश करतां [illegible]
अनेक देशनी भाषाना जाणकार
ते ते देशना वणिकोने जोया.
ते आ प्रमाणे: प्रथम गोल्ल देशना
लोकोने जोया, ए लोको निष्ठुर
भाषी, काळा, समरलोभी (?)
अने निर्लज्ज होय छे तथा
'अड्डे' एवुं बोलनारा होय छे.
पछी मध्यदेशना लोकोने जोया,
ए लोको नय, नीति, संधि अने
विग्रहमां चतुर, बहुबोला अने
'तेरे मेरे आउ' एवुं बोलनारा
होय छे.

पछी मगधना लोकोने जोया,
ए लोको दुर्वर्ण, [illegible] पेटवाळा,
ठिंगणा, सुरतप्रिय अने 'एगेले'
एवुं बोलनारा होय छे.

पछी अंतर्वेदना एटले गंगा
जमनानी वच्चेना प्रदेशना रहे-
नारा लोकोने जोया, ए लोको
[illegible], मांजरी आंखवाळा
अने 'किं ते किं मो' एवुं बोल-
नारा होय छे.

पछी [illegible] लोकोने जोया,
ए लोको [illegible], [illegible]

'सरि पारि' जंपिरे कीरे
सुमारो पलोएइ ॥

अने जाडी नासिकावाळा, मार खानारा अने 'सरि पारि' एवुं बोलनारा होय छे.

दक्खिन्नदाणपोरुस–विन्नाण-
दयाविवज्जियसरीरे ।
'एह तेह' चवंते टक्के
उण पेच्छइ कुमरो ॥

पछी टक्क देशना लोकोने जोया, ए लोको दाक्षिण्य, दान, पौरुष, विज्ञान अने दया विनाना होय छे अने 'एइ तेहं' एम बोलनारा होय छे.

ललियमिउमद्दवए गंधव्व-
पिए सदेसगयचित्ते ।
'चेसे दइणो' भणिरे सुहसे
अह सेंधवे दिट्ठे ॥

पछी सिंधना लोकोने जोया, ए लोको ललित, मृदु, गांधर्वप्रिय, स्वदेशपरायण, हसमुखा अने 'चेसे दइणो' एम बोलनारा होय छे.

कोंपडे (?) य जडे बहु-
भोई कढिणपीणथणगे ।
'अप्पां तुप्पा' भणिरे अह
पेच्छइ कारुए तत्तो ॥

पछी कारुदेशना लोकोने जोया, ए लोको कपिजल (?) जड, बहु-भोजी, कठण अने पुष्ट अंगवाळा तथा 'अप्पां तुप्पा' एम बोल-नारा होय छे.

घयलोणियपुट्ठंगे धम्मपरे
संधिविग्गहे निउणे ।
'न उ रे भल्लउं' भणिरे
अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे ॥

पछी गूर्जरलोकोने जोया, ए लोको घी अने माखणथी पुष्ट शरीरवाळा, धर्मपरायण, संधि विग्रहमां निपुण अने 'न उ रे भल्लउं' एम बोलनारा होय छे.

ण्हाणविलित्तविलित्ते कयसीमंते
सुसोहियंगत्ते ।

पछी लाटना लोकोने जोया, ए लोको (मागमां) सेंथो

'अम्हं काउं तुम्हं' भणिरे
अह पेच्छइ लाडे ।

तणुसाममडहदेहे कोवणए
माणजीविणो रोद्दे ।
'माइ य भइणी तुब्भे'
भणिरे अह मालवे दिट्ठे ॥

उक्कडदप्पे पियमोहणे य
रोद्दे पयंगवित्ती य ।
'अडिपांडि मरे' भणिरे
पेच्छइ कण्णाडए अन्ने ॥

कुप्पासपाउअंगो मासरुइ (!)
पाणमयणतल्लिच्छे ।
'इसि किसि मिसि' भण-
माणे अह पेच्छइ ताइए अवरे ॥
सव्वकलापत्तट्ठे माणी पिय-
कोवणे कढिणदेहे ।
'जल तल ले' भणमाणे
कोसलए पुलइए अवरे ॥
दढमडहसामलंगे सहिए
अह माणकलहसीले य ।
'दिण्णल्ले गहियल्ले' उल्ल-
विरे तत्थ मरहट्ठे ॥

नाहनारा, लेपन करनारा, सुशो-
भित शरीरवाळा अने 'अम्हं काउं
तुम्ह' एम बोलनारा होय छे.

पछी माळवाना लोकोने जोया,
ए लोको, काळा अने नाना शरीर-
वाळा, क्रोधी, अभिमानी, रौद्र
अने 'माइ य भइणी तुब्भे'
एम बोलनारा होय छे.

पछी कर्णाटकना लोकोने
जोया, ए लोको दर्पवाळा, मोह-
वाळा, रौद्र, चंचळ अने 'अडि-
पांडि मरे' एम बोलनारा
होय छे.

पछी ताइ लोकोने जोया, ए
लोको कंचुक पहेरनारा अने 'इसि
किसि मिसि' एम बोलनारा
होय छे.

पछी कोसलदेशना लोकोने
जोया, ए लोको सर्वकलाहीन,
मानी, कोपी अने 'जल तल ले'
एम बोलनारा होय छे.

पछी महाराष्ट्रना लोकोने
जोया, ए लोको शरीरे दृढ,
नाना अने काळा होय छे तथा
साहसमां मान-कलहशील अने

हवे ' वर्तमान जैन आगमोने महावीर भाषित समजीने कोई ए आगमोनी ज भाषाने अर्धमागधी कहे अने ए उपरथी ज एनां व्याकरण अने कोष बनावे तो न बनी शके ! ' ए प्रश्ननुं समाधान आचार्य हेमचंद्रे पोतानी कृतिद्वारा अने उपर्युक्त उल्लेखद्वारा पण करी नांख्युं छे पछी आ आगमोनी भाषाने अर्धमागधी समजवी के एम समजी-ए विषेनां पुस्तको लखवां ए भाषाना इतिहासमां गोटाळो करवा सिवाय बीजुं शुं होई शके ?

आचार्य हेमचंद्रना पूर्ववर्ती अने अंगसूत्रोना टीकाकार आचार्य अभयदेवे पण अर्धमागधी नाम धरावती भाषाने प्राकृत लक्षणनी बहुलतावाळी जणावी छे. तेमणे लख्युं छे के:

पियमहिलासगामे सुंदरगोत्ते य
भायणे रोद्दे ।
'आट्टे माट्टे' भणति थवरे
अधे कुमारो पलोएइ ॥

'दिसल्ले गहियल्ले' एम बोलनारा होय छे.

पछी आध्रना लोकोने जोया, ए लोकोने स्त्री अने संग्राम बन्ने प्रिय होय छे, एमना गोत्रो सुंदर होय छे, अने ए लोको रौद्र तथा भयकर अने 'आट्टे माट्टे' एम बोलनारा होय छे.

उपरना उल्लेखमा गोल्ल (गौड?), मध्यदेश, मगध, अन्तर्वेदि, कीर, ढक्क, सिंध, कारु (कारनाड), गूर्जर, लाट, मालव, कर्णाटक, ताइअ (?) कोशल, महाराष्ट्र अने आंध्र एम सोळ देशोने जणावेला छे.

कुवलयमालानो आ उल्लेख अहीं एटला माटे आप्यो छे के, एमा ए देशोनी गणना ए रीते करेली छे. (आचार्य जिनविजयजीनी एक नोंधद्वारा आ उल्लेखने हुं ' कुवलयमाला 'मांथी मेळवी शक्यो छुं)

" ' र–सो–र्लशौ मागध्याम् ' इत्यादि यत् मागधभाषालक्षणं तेन अपरिपूर्णा प्राकृतभाषालक्षणबहुला अर्धमागधी "

(औपपातिक टीका पृ० ७८ समिति)

अभयदेवे आगमोनी भाषा उपरथी नक्की करेलुं अर्धमागधीनुं स्वरूप जोतां तो ' अर्धमागधी ' नाम ' देवाद्वार 'ना ' रणछोड ' (रणने छोडनार) नाम जेवुं लागे छे. तेओ साफ साफ कहे छे के, आगमोनी भाषा प्राकृतलक्षणनी बहुलतावाळी छे अने एक लक्षण सिवाय मागधीनां बीजां खास लक्षणोने एमां कांई स्थान नथी, एथी ज वांचनार समजी शकशे के, वर्तमान आगमोनी भाषाने अर्धमागधी कहेवी के प्राकृत कहेवी !

' आगमो प्राकृत छे ' ए मत तो आज घणा समयथी चाल्यो आवे छे अने हेमचंद्र अने अभयदेव करतां य प्राचीन अने प्रामाणिक आचार्योए ए मतने स्वीकारेलो छे.

ए संबंधमां आचार्य हरिभद्र जणावे छे के,

[1] " प्राकृतनिबन्धोऽपि बालादिभावारणः " इति

---

१ दशवैकालिकनी टीकामां जे प्रसंगे आचार्य हरिभद्रे आ उल्लेख कर्यो छे ते प्रसंग आ छे:

" दर्शनाचारना आठ प्रकार छे, तेमां पहेलो प्रकार निःशंकित गणेलुं छे, ' निःशंकित 'नुं विवरण करतां कहुं छे के, शंकाना बे प्रकार छे—सर्वशंका अने देशशंका. सर्वशंका एटले सर्व प्रकारे शंका अने देशशंका एटले थोडी शंका. तेमां ' सर्वशंका 'नुं स्वरूप बतावतां जणावे छे के,

" सर्वशङ्का तु प्राकृतनिबद्धत्वात् सकलमेवेदं परिकल्पितं भविष्यतीति।"

अर्थात् ' प्राकृत भाषामां रचेलुं होवाथी आ बधुं य कल्पेलुं केम न होय ! ' आवी जे निरंतर थती शंका करवी ते सर्वशंका, अने समाधान करतां हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने टांकी बताव्यो छे

આટલું લખ્યા પછી ... આચાર્યશ્રી "ઉક્તં ચ" કહીને પોતાના [illegible] એક જુના [illegible] ટાંકી બતાવે છે—

"[illegible]।
[illegible] ॥"

([illegible] ટીકા પૃ૦ ૧૧૨ [illegible])

આ ઉપરથી [illegible] છે.

[illegible]

[illegible] પૃ૦ ૭૭, [illegible]

[illegible] પૃ૦૬૦.

[illegible] છે—

[illegible] (પૃ૦ ૯૮–૯૯) [illegible] છે.

"[illegible] ।

[illegible] ॥૬૯

---

૧ [illegible] (પૃ૦ ૧૧૧ [illegible]) [illegible]

सिद्धान्तं संस्कृतं कर्तुमिच्छन् यं स्मरिरपन् ।
प्राकृते केवलज्ञानिभाषितेऽपि निरादरः ॥ ११

यदि (इदं) विबुधपर्यायैः पूर्वेषां संप्रदायम् ।
चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥ ११
प्रज्ञातिशयसाध्यानि मान्युच्छिन्नानि कालतः ।
अधुनैकादशाङ्ग्यस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥ ११
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय सा ।
प्राकृतां नामिराटश्रीदिनागमाद्य ...

अर्थात् " सिद्धसेन दिवाकर नामना [illegible] जैन आगमोने संस्कृतमां [illegible] संघना [illegible] अने [illegible]

[illegible]

आटलुं छल्या पछी ए आचार्यवर "उक्तं च" कहीने पोताना उल्लेखना पोषणमां एक जूना संवादने टांकी बतावे छे—

"बालस्त्रीमूढमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतैः कृतः ॥"

(दशवैकालिक टीका पृ० ११३ बाबु०)

आ उपरथी आपणे जोइ शकीए छीए के आपणो आ मत हरिभद्र करतां य जूनो ठरे छे.

जे प्रसंगमां हरिभद्रे उपर्युक्त उल्लेखने मूकेलो छे ते ज प्रसंगमां वादिदेवसूरिना गुरु आचार्य मुनिचंद्र पण ए ज उल्लेखने (हरिभद्रना धर्मबिंदुनी टीकामां) मूके छे. धर्मबिंदु पृ० ७७, द्वितीय अध्याय आत्मानंद सभानी आवृत्ति.

आचार्य मलयगिरि पण प्रज्ञापनानी पोतानी टीकामां एवा ज प्रसंगमां ए ज वातने जणावे छे—प्रज्ञापनासूत्र टीका समितिनुं पृ० ६०.

हेमचंद्रनी पछी थयेला आचार्यो द्वारा पण ए ज मतने टेको आपवामां आव्यो छे—

आचार्य प्रभाचंद्रे बनावेला अने श्रीप्रद्युम्नसूरिए शोधेला प्रभावकचरित्रमां (पृ० ९८–९९) जणाव्युं छे के,

"अन्यदा लोकवाक्येन जातिप्रत्ययतस्तथा ।
आ बाल्यात् संस्कृताभ्यासी कर्मदोषात् प्रबो(बा)धितः॥१०९

---

१ उपरना बधा उल्लेखोमां वपराएलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृतभाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारसूत्रमां 'पाइत' शब्द प्राकृतभाषाना अर्थमां वपराएलो छे. (पृ० १३१ स०) वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ए अर्थमां वपरातो आव्यो छे, अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने ए ज अर्थमां वापरेलो छे. माटे कोइए अहीं ए शब्दने भरडवो नहि.

सिद्धान्तं संस्कृतं कर्तुमिच्छन् संघं व्यजिज्ञपत् ।
प्राकृते केवलज्ञानिभाषितेऽपि निरादरः ॥ ११७

\+ \+ \+

आह (इदं) विद्धि न्यासिभिः पूर्वेषां संप्रदायतः ।
चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥ ११८
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालतः ।
अधुनैकादशाङ्ग्यस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥ ११९
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय सः ।
प्राकृतां तामिहाकार्षीदनास्थाऽत्र कथं हि वः ॥ १२०

अर्थात् " सिद्धसेन दिवाकर नामना सुप्रसिद्ध जैनाचार्ये प्राकृत जैन आगमोने संस्कृतमां करवानी इच्छा करी " आदि. त्यारबाद ग्रंथकार पोताना तरफथी बहु समाधान करे छे के, " बाल, स्त्री, अने मूर्ख वगेरेनी सगवडताने माटे पूर्वे सुधर्मा—सुधर्मस्वामीए—ए आगमोने प्राकृतमां रच्यां छे, तो पछी आपने शा माटे अनास्था करवी ? "

" पच उवलम्भइ " अर्थात् ' अनास्था बहु छे के ' एम लखीने श्रीजिनप्रभसूरि पोताना तरफ निर्वितकाळमां जणावे छे के,

मुनि विहितार्थ [illegible]–[illegible] ।
[illegible] [illegible] निरदोषि ।

अने साथे [illegible] उल्लेखो [illegible] पण टके छे. [illegible]

[illegible] आ प्राकृत भाषने [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आवी छे.)

[illegible] [illegible] [illegible] छे के.

" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "

([illegible])

अर्थात् 'संस्कृत अने प्राकृत बे भाषाओ छे.'

आ उल्लेख गीतनी भाषाना प्रसंगमां छे. आ उपरथी एटलुं तो जरूर तारवी शकाय के, अनुयोगद्वारना समयमां अर्धमागधीने प्राकृतथी जुदी ज गणवामां आवती होत तो सूत्रकार प्राकृतनी साथे ज पोतानी प्रिय अने देवभाषा तरीके प्रसिद्धि पामेली अर्धमागधीने पण मूकवी भूले खरा ?

आ प्रमाणे एक नहि पण अनेक जैनाचार्योए वर्तमान आगमोनी भाषाने स्पष्ट शब्दमां प्राकृत कहेली छे माटे अमे पण अहीं ए ज मतने स्वीकारेलो छे, अने तेथी ज प्रस्तुत व्याकरणमां पण जैन आगमोना केटलांक विशिष्ट रूपोने प्राकृतना व्याकरण साथे ज नोंधेलां छे.

आ तो जैनाचार्योनी ज दृष्टिए आगमोमां आवेली भाषाना संबंधमां चर्चा थई, तदुपरांत बीजी त्रण दृष्टिए पण अर्धमागधी भाषानी चर्चा थई शके छे. तेमां—

पहेली दृष्टि भरतना नाट्यशास्त्रनी,
बीजी दृष्टि प्राकृत भाषानां व्याकरणोनी
अने त्रीजी दृष्टि अशोकनी धर्मलिपिओनी.
भरतना नाट्यशास्त्रमां कह्युं छे के,
"चेटाना राजपुत्राणां श्रेष्ठिना चार्धमागधी"

भरतना० अध्याय १७ श्लो० ५०

नाटकोना पात्र तरीके आवता चेटो, राजपुत्रो अने शेठियाओ अर्धमागधी भाषा बोले छे. भरतना आ उल्लेखथी आपणे नाटकोनां ते ते पात्रोनी भाषाद्वारा अर्धमागधीना स्वरूपने कल्पी शकीशुं.

नाटकोनी भाषाना नमूना—

(भासनुं प्रतिज्ञायौगंधरायण)

भटः—को कालो अहं भट्टिदारिआए वासवदत्ताए उदए कीळिदु-
कामाए भद्दवदीपरिचारअं गत्तसेवअं ण पेक्खामि । भाव पुप्फ-
दंतअ गत्तसेवअं ण पेक्खामि । किं भणासि एसो गत्तसेवओ
कण्डिळमुंदिगिणीए गेहं पविसिअ सुरं पिवदि त्ति।पृ० १०२

भटः—सव्वं दाव चिट्ठदु राअउळे भद्दपीठिअं ण णिक्कामिअ कुदो
अअं आहिण्डदि त्ति । पृ० १०६

भटः—किं णु खु एवं + होदु, इमं वुत्तंतं अमच्चस्स णिवेदेमि ।
पृ० १०६

(भासनुं चारुदत्त)

चेटः—अम्मो अय्यमेत्तेओ ।

चेटः—अम्मो भट्टिदारओ । पृ० ६७

चेटः—सुहीदेसु पादेसु भूमीए पज्जोट्ठिदव्वं । पृ० ६८

(भासनुं स्वप्नवासवदत्त)

भटौ—उस्सरह उस्सरह अय्या उस्सरह । पृ० ८

चेटी—एदु एदु भट्टिदारआ इदं अस्समपदं पविसदु । पृ० १५

चेटी—अत्थि राओ पज्जोदो णाम उज्जइणीए सो दारअस्स कारणादो
दूदसंपादं करोदि पृ० १७

(शूद्रकनुं मृच्छकटिक)

चेटः—अज्जुए चिट्ठ, चिट्ठ ।

उत्तासिता गच्छशि अंतिका मे
शंपुण्णपुच्छा विअ गिम्हमोरी ।
ओवग्गदी शामिअ भट्टके मे ।
वणे गदे कुक्कुरशावके व्व ॥ पृ० २७

चेटः—लामेहि अ लाअवछहं तो साहिशि मच्छमंशकं।
एदेहिं मच्छमंशकेहिं शुणआ मडअं ण शेवंदि॥ पृ० २१
आ बधी भाषा चेटोनी छे.

राजपुत्रनी भाषा आ प्रमाणे छेः

(काळीदासनुं शाकुंतल)

बालः—जिंम जिंम दंदाणि ते गणइस्सं पृ० २९९
बालः—बलिअं भीद म्हि पृ० २९६
बालः—इमिणा एव्व दाव कीळिस्सं पृ० २९८

हवे शेठियाओनी भाषानो नमुनो—

(शूद्रकनुं मृच्छकटिक)

चन्दनदासः—जेदु अज्जो
चन्दनदासः—किं ण जाणादि अज्जो जह अणुचिदो उवआरो परिहवादो वि महंतं दुःखं उप्पादेदि। ता इह य्येव उचिदाए भूमीए उवविसामि।
चन्दनदास—अह इ अज्जस्स प्पसाएण अखण्डिदा वणिज्जा। पृ० १४
चन्दनदासः—आणवेदु अज्जो किं केत्तिअं इमादो जणादो इच्छी-अदि त्ति।
चन्दनदासः—अज्ज अलिअं एदं केणवि अणज्जेण अज्जस्स णिवेदिदं। पृ० १९
चन्दनदासः—फलेण संवादिदं सोहादि दे विकप्पिदं। पृ० १७

नाट्यशास्त्रकार भरतना उल्लेख प्रमाणे चेट, राजपुत्र अने शेठनी भाषाने अर्धमागधी कहेवामां आवे छे. एना नमुना उपर आपवामां आव्या छे. उपरना नमुनानी भाषा साथे आपणे आगमोनी भाषाने सरखावीए तो केवळ सांभळवा मात्रथी ज शुं नथी जणातुं के,

ए नाटकोनां पात्रोनी भाषामां अने आगमोनी भाषामां केटलो बधो तफावत छे !

हवे आपणे जोईए के, प्राकृत व्याकरणोनी दृष्टिए आगमोनी भाषाने अर्धमागधीनुं नाम आपी शकाय के केम ?

प्राकृत व्याकरणो तो घणां छे, ए बधांनां नामो पण हवे पछी आपवानां छे. बधां प्राकृत व्याकरणोमां वररुचिनो प्राकृतप्रकाश वधारे प्राचीन छे. एमां 'मागधी' नी प्रकृति तरीके शौरसेनीने कही छे अने शौरसेनी करतां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे बतावी छेः—

१ मागधीमां 'ष' अने 'स' ने बदले 'श' बोलवो.

२ ,, 'ज' ने बदले प्रायः 'य' बोलवो.

३ ,, चवर्गना कोइ अक्षरनो लोप न करतां जेम होय तेम ज बोलवुं.

४ ,, 'र्य' अने 'द्य' नो 'य्य' बोलवो.

५ ,, 'क्ष' ने बदले 'स्क' बोलवो.

६ ,, अकारांत शब्दना प्रथमाना एक वचनमां 'इ' अने 'ए' प्रत्यय वापरवो.

७ ,, मागधीमां अकारान्त भूतकृदंतना प्रथमाना एक वचनमां उपरना बे प्रत्ययो उपरांत 'उ' प्रत्यय पण वापरवो.

८ ,, षष्ठीना एकवचनमां 'ह' प्रत्यय वापरवो.

९ ,, संबोधनना एकवचनमां अन्त्य 'अ' नो 'आ' करवो.

१० ,, 'स्था' ने बदले प्राकृतमां वपराता 'चिट्ठ' ना स्थानमां 'चिष्ठ' धातु वापरवो.

११ „ 'कृत' ने बदले 'कड' 'मृत' ने बदले 'मड' अने 'गत' ने बदले 'गड' रूपो वापरवां.

१२ „ संबंधक भूतकृदंतने सूचवता 'त्वा' प्रत्ययने बदले 'दाणि' प्रत्यय वापरवो.

१३ „ 'हृदय' ने बदले 'हृदक,' 'अह' ने बदले 'हके' 'हगे' 'अहके' अने 'शृगाल' ने बदले 'शिआल' तथा 'शिआलक' शब्दो वापरवां.

वररुचिए बतावेलुं मागधीनुं स्वरूप उपर प्रमाणे छे, आ सिवाय शौरसेनीना जे नियमो वररुचिए आपेला छे तेमाना निरपवाद नियमो मागधीमां पण उमेरी लेवाना छे. आगमोनी[2] भाषाने जोतां तेमां फक्त वररुचिए बतावेली ६ ठी विशेषतानो य अमुक अंश ('ए' नी वपराश) जोवामां आवे छे, तो मागधीना एक ज अंशनी वपराशने लीधे आगमोनी भाषा अर्धमागधी कहेवाय के नहि? ए सारुरो ज विचारी ले.

'वर्तमान आगमोनी भाषामां मागधीभाषानुं स्वरूप केटले अंशे देखाय छे?' ए प्रश्ननी परीक्षा करतां आपणे भास वगेरेनां नाटको जोयां, प्राचीन वैयाकरण वररुचिने तपास्यो. हवे अशोकनी धर्म-लिपिओनी भाषाने पण आपणे जोइ जइए. ए लिपिओनी भाषाने 'कई भाषा कहेवी?' ए प्रश्न हजी विवादग्रस्त छे तो पण एने 'प्राचीनमागधी' कहेवामां कांइ दोष जणातो नथी—बौद्धोनां त्रिपि-

१ मागधीने लगतुं स्वरूप अने उदाहरणो माटे जुओ प्राकृत-प्रकाश पृ० १२८ थी १३२ तथा १३२ थी १३७ अथवा ११ मो परिच्छेद अने बारमो परिच्छेद.

२ आगमोनी भाषानां उदाहरणो माटे जुओ "जैन आगम साहित्यनी मूळ भाषा कई" ए लेख (जैन साहित्यसंशोधक पु० १ अं० १ पृ० २१ थी ३७)

टकनी भाषा ए लिपिओनी साथे सरखामणीमां आवी शके एवी छे. त्रिपिटकमां पण 'मागधी' भाषानो उपयोग थयानुं नीचेनी गाथा जणावे छे[1].

अशोकनी धर्मलिपिओमां वपराएली भाषानुं वेचारण तपासतां आ नीचे जणावेला मुख्य नियमो उपजी शके छे:

१ अद्विर्भाव (वर्णनुं नहि बेवडावुं)

'संयुक्त अक्षर अनादिमां होय अने संयुक्त अक्षरमांनो एक अक्षर लोपाय त्यारे जे शेष अक्षर होय छे ते बेवडाय छे अथवा संयुक्त अक्षरनी पहेलांनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे'

प्राकृत भाषाओनो आ एक साधारण नियम छे. अशोकनी धर्मलिपिओनी भाषामां ए नियम क्वचित् ज सचवाएलो जोवाय छे पण जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतना नियम प्रमाणे ए नियम बराबर सचवाएलो छे.

लिपिओनी भाषामां वपराएलां एवां द्विर्भाव विनानां अने दीर्घस्वर विनानां रूपो[2] आ प्रमाणे छे:

लिपिओनी भाषा	आगमभाषा	संस्कृतरूप
अप	अप्प	अल्प
कप	कप्प	कल्प

१ " सा मागधी मूलभाषा नरा याऽऽदिकप्पिका ।
ब्रह्मणो चस्सुतालापा संबुद्धा चापि भासरे " ॥

२ आमां अशोकनी धम्मलिपिमांथी जे रूपो आप्यां छे ते उदाहरण रूपे छे, एवां बीजां अनेक रूपो छे. पण बधां अहीं विस्तार भयथी आप्यां नथी. बीजी ए एक वात जणाववानी जरूर छे के, अशोकना प्रान्तीय पाठ भेद पण केटलेक ठेकाणे छे; तो के में बने त्यां सुधी सर्व साधारण रूपो लेवानो प्रयत्न कर्यो छे.

युत	जुप	युक्त
निखम	निक्खम	निष्क्रम
कलाण	कल्लाण	कल्याग

२ ' र ' नो वैकल्पिक ' ल '

अशोकनी लिपिओमां ' र ' ना स्थाने सर्वत्र ' ल ' नो प्रयोग वैकल्पिक रीते मळ्लो देखायछे त्यारे जैन आगमोमां प्राकृत भाषाना धोरणनी पेठे ' र ' नो ज प्रयोग कायम रहेलो छे:

लि०	आ०	सं०
आदिकले	आइकरे	आदिकरः
आदिकरे	आइगरे	
परिसा	परिसा	पर्षत्
पलिसा		
चरणं	चरणं	चरणम्
चलनं		
हिलंन	हिरण्ण	हिरण्य
हिरंण		
मरणं	मरणं	मरणम्
मलने		

३ अनादि—असंयुक्त व्यंजननो लोप

अशोकनी धर्मलिपिओमां अनादि–असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, ब, म अने व लोपाता नथी त्यारे आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषानी पेठे ए बधा अक्षरो लोपाएला छे:

लि०	आ०	सं०
सुकतं	सुकयं	सुकृतम्
मिगे	मिए	मृगः

उचावुचछंदो	उच्चावयच्छंदो	उच्चावचच्छन्दः
समानानि	समादम्मि	समाजे
एते	एए	एते
विवादे	विवाओ	विवादः
पापुनाति	पाउणइ	प्राप्नोति
		वगेरे

४ श, स, ष नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमां श, ष, अने स नो उपयोग थएलो छे त्यारे आगमनी भाषामां प्राकृत भाषानी पेठे मात्र एक 'स' नो ज उपयोग थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
पशु पसु	पसु	पशु
दास दाश	दास	दास
दोस दोष	दोस	दोष
ओसढानि ओसधानि	ओसहाणि	औषधानि
[illegible] [illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible] [illegible]	[illegible]	[illegible]

५ विजातीय संयुक्त व्यंजननी वपराश

अशोकनी धर्मलिपिओमां विजातीय संयुक्त व्यजननोनी वै-कल्पिक वपराश घणी छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषाना बंधारण प्रमाणे ए वपराश ज नथी.

लि०	आ०	सं०
प्राण पान	पाण	प्राण
दिव्यानि दिवियानि	दिव्वाइं	दिव्यानि
सेठे सेस्टे	सेट्ठे	श्रेष्ठः
अस्ति अत्थि	अत्थि	अस्ति
सहसानि सहस्रानि	सहस्साइं	सहस्राणि
पुत्र पुत	पुत्त	पुत्र
मित मित्र	मित्त	मित्र
नास्ति नथि	नत्थि	नास्ति
समण श्रमण	समण	श्रमण वगेरे

६ 'ख' 'घ' 'थ' 'भ' नो ह

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'ख' 'घ' 'थ' अने 'भ' कायम

रहे छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत भाषा प्रमाणे ए चारेने स्थाने 'ह' थएलो छेः

लि०	आ०	सं०
लिखित	लिहिअ	लिखित
मुख	मुह	मुख
यथा	जहा	यथा
तथा	तहा	तथा
बहुविध	बहुविह	बहुविध
वध	वह	वध
साधु	साहु	साधु
आलभितु	आलहिउ	आलभताम्
		वगेरे

७ 'न' नो 'ण'

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'न' नो 'ण' नथी थएलो त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतना नियम प्रमाणे 'न' नो 'ण' थएलो छेः

लि०	आ०	सं०
देवानं	देवाणं	देवानाम्
पियेन	पियेण	प्रियेण
अनुदिवसं	अणुदिवसं	अनुदिवसं
बहूनि	बहूणि	बहूनि
दानं	दाणं	दानम्
महानसम्हि	महाणसंसि	महानसे

८ 'ण' नो न

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'ण' ने स्थाने 'न' पण वपराएलो छे त्यारे आगमोनी भाषामां तेम नथी जणातुं:

लि०	आ०	सं०
गननासि गणनसि	गणने	गणने

९ 'त' नो ट

अशोकनी धर्मलिपिओमां एकला 'त' नो के संयुक्त 'त' नो 'ट' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां ए स्थळे प्राकृतनी प्रक्रिया प्रमाणे एकला 'त' नो 'ड' थएलो छे अने संयुक्त 'त' नो 'त' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
पटिवेदना	पडिविअणा	प्रतिवेदना
पटिपाति	पडिवात्ति	प्रतिपत्ति
कट	कड, कय	कृत
मट	मड, मय	मृत
कटव कटविय	कायव्व	कर्तव्य
किति किटी	कित्ति	कीर्ति वगेरे

१० 'प' नो व

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'प' नो 'व' नथी थएलो पण जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतनी पेठे 'प' नो 'व' थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
लिपि	लिवि	लिपि
कूपा	कूवा	कूपाः
पापं	पावं	पापम्

प्रेरक प्रक्रिया ना प्रत्ययो	आप आपे	आव आवे	
	सामींपं	सामींवं	समीपम्
			वगेरे

११ 'द्य' नो य

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'द्य' नो 'य' थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृतनी पद्धति प्रमाणे 'द्य' नो 'ज्ज' करवामां आवेलो छे:

लि०	आ०	सं०
उयान	उज्जाण	उद्यान
उयाम	उज्जम	उद्यम

१२ 'ञ' नो उपयोग

अशोकनी धर्मलिपिओमां 'न्य,' 'ण्य' अने 'ज्ञ' ने स्थाने 'ञ' नो पण उपयोग थएलो छे त्यारे जैन आगमोनी भाषामां ए त्रणेने स्थाने प्राकृतनी प्रमाणे 'न्न,' 'ण' के 'ण्ण' नो ज व्यवहार थएलो छे:

लि०	आ०	सं०
हञंति	हणंति, हन्नंति	घ्नन्ति
मञति मनति	मन्नइ	मन्यते
अञ अन	अण्ण, अन्न	अन्य
हिरञ	हिरण्ण	हिरण्य
पुञ पुन	पुन्न, पुण्ण	पुण्य

लाजिना राजा	रण्णा	राज्ञा
लाजिने लाजाने	रण्णो	राज्ञे
रञो राञो	रण्णो	राज्ञः

आ उपरात--

ए धर्मलिपिओमां अनादि 'ट' नो 'ट' ज रहेलो छे (घटिते) त्यारे जैन आगमोनी भाषामां प्राकृत प्रमाणे 'ट' ने बदले 'ड' थएलो छे (घडिए)

ए धर्मलिपिओमां 'अहं' ने बदले 'हकं' रूप पण वपराएलुं छे त्यारे आगमोनी भाषामां क्याय ए रूपनो उपयोग ज नथी थएलो.

आ रीते अशोकनी धर्मलिपिओनी प्राचीन मागधीनुं स्वरूप पण वर्तमान आगमोनी भाषामां एने अर्धमागधी कहेवराववा पूरतुं य घटी शकतुं नथी, ए हकीकत उपर जणावेलां उदाहरणोथी ज जाणी शकाय एम छे.

ए आगमोनी छेल्ली संकलना थया पहेलां, एमां जेवी भाषा अत्यारे छे तेवी नहि होय ए हकीकत तो आगमोमां रहेलां केटलांक जूनां रूपो उपरथी ज जाणी शकाय एवी छे.

आगमोनी रचनासमयनी भाषाना अने देवर्धिगणिनी संकलनासमयनी भाषाना अंतरने समजवा माटे गूजराती भाषानुं नीचेनुं उदाहरण बस छे:

१७३९ नी भाषा

वमरणनुं हुउं रे मंडाण,
णिक हेम रजत सुप्रमाण ।
हासनी वईठा जिनवीर,
इं देशना अरथ गंभीर ॥
विद्युनमाली सुर तिहां आवइ,
जिन वांदी आनंद बहु पावइ ।
चरम केवली कुण प्रभु थास्यइ,
श्रेणिक पूछइं मन उल्लासइ ॥
प्रभु कहइ सुणि श्रेणिक नृपचंद,
ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।
चउदेवीयुत विद्युनमाली,
सातमेइं दिनि ए चवी शुभशाली ॥
ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामइं,
चरम केवली जंबू नामइं ।
होस्यइ ते सुणि देव अनादी,
हरषइ परखइं निज कुल आदी ॥"

(यशोविजयजीए रचेली अने तेमनी हस्तलिखित प्रतिमांथी उतारेली)

सं. १९८४ नी भाषा

समवसरणनो हुओ रे मंडाण,
माणिक हेम रजत सुप्रमाण ।
सिंहासन बेठा जिन वीर,
दीए देशना अर्थ गंभीर ॥
विद्युन्माली सुर तीहां आवे,
जिन वंदी आनंद बहु पावे ।
चरमकेवली कुण प्रभु थाशे,
श्रेणिक पूछे मन उल्लासे ॥
प्रभु कहे सुण श्रेणिक नृपचंद,
ब्रह्मलोक सामानिक इंद ।
चउदेवीयुत विद्युन्माली,
सातमे दिने ए चवी शुभशाली ॥
ऋषभदत्तसुत तुज पुर ठामे,
चरम केवली जंबू नामे ।
होस्ये ते सुणी देव अनादी,
हरखे परखी निजकुल आदी ॥"

(यशोविजयजीए रचेली अने जंबुस्वामिना रासनी चोपडीमांथी उतारेली)

---

१ जुओ छट्ठी गुजराती साहित्यपरिषदनो रिपोर्ट पृ० ५२ मुनि कल्याणविजयजीनो निबंध.

आ उपरथी वाचको नकी करशे के, वैयाकरणोए अर्धमागधीनुं जे लक्षण नथी कर्युं छे ते आगमोनी भाषामां घटे छे के नहि !

मार्कंडेय वगेरेए नथी करेलुं अर्धमागधीनुं लक्षण आ पुस्तकमां शौरसेनीमां अने मागधीमां आवी जाय छे, एटले पण अहीं अर्ध-मागधीने माटे जुदुं प्रकरण राखवामां नथी आव्युं.

प्राकृतनां केटलांक व्याकरणोनां अने तेनी वृत्तिओनां नामो

नाम	कर्ता	संवाद
१ प्राकृतप्रकाश	वररुचि	प्रसिद्ध छे
२ प्राकृतलक्षण	चंड	,,
३ प्राकृतव्याकरण	हेमचंद्र	,,
४ प्राकृतसंजीवनी	वसंतराज	आनो उल्लेख मार्कंडेयना 'प्राकृत सर्वस्व'मां छे पृ० १ श्लो० ३.
५ प्राकृतकामधेनु	लंकेश्वर	
६ प्राकृतव्याकरण	समंतभद्र	
७ ,, वृत्ति	त्रिविक्रमदेव	
८ प्राकृत प्रक्रियावृत्ति (ढुंढिका)	उदयसौभाग्य	प्रसिद्ध छे
९ प्राकृतप्रबोध	नरचंद्र	
१० प्राकृतकल्पतरु	रामतर्कवागीश	

૧૧	પ્રાકૃતચંદ્રિકા	કૃષ્ણપંડિત (શેષકૃષ્ણ)	
૧૨	„	વામનાચાર્ય	
૧૩	પ્રાકૃતમનોરમા	ભામહ	આનો ઉલ્લેખ માર્કંડેયના 'પ્રાકૃતસર્વસ્વ'માં છે પૃ૦ ૧ શ્લો૦ ૩.
૧૪	પ્રાકૃતરૂપાવતાર	સિંહરાજ	પ્રસિદ્ધ છે
૧૫	પ્રાકૃતદીપિકા	ચંડીશ્વરશર્મા	
૧૬	પ્રાકૃતમંજરી	કાત્યાયન	પ્રસિદ્ધ છે
૧૭	પ્રાકૃતસર્વસ્વ	માર્કંડેય	„
૧૮	પ્રાકૃતાનંદ	રઘુનાથશર્મા	
૧૯	પ્રાકૃતપ્રદીપિકા	નરસિંહ	
૨૦	પ્રાકૃતમણિદીપિકા	ચિક્કબોમ્મભૂપાલ	'ષડ્ભાષાચંદ્રિકા'ની પ્રસ્તાવના પૃ૦ ૧૭ ટિ૦ પૃ૦ ૧૮ ટિ૦
૨૧	પ્રાકૃતમણિદીપ	અપ્પયજ્વન્	„
૨૨	ષડ્ભાષામંજરી		
૨૩	ષડ્ભાષાવાર્તિક		પ્રસિદ્ધ છે
૨૪	ષડ્ભાષાચંદ્રિકા	લક્ષ્મીધર	
૨૫	ષડ્ભાષાચંદ્રિકા	ભામકવિ	
૨૬	ષડ્ભાષાસુબંતાદર્શ		
૨૭	ષડ્ભાષારૂપમાલિકા	દુર્ગણાચાર્ય	ષડ્ભાષાચંદ્રિકા ૨૨-૨-૨- સૂત્રની વૃત્તિ.

विषयानुक्रम

+ 'टि०' एटले टिप्पण

लृ = इलि ७

ऐ = ए ७

ऐ = ए (पालि) टि० २ ७

औ = ओ ७

औ = ओ (पालि) टि० २ ७

अ = इ (अपभ्रंश) ८

अ = ई ,, ८

अ = उ ,, ८

उ = अ ,, ८

उ = आ ,, ८

ऋ = अ ,, ८

ऋ = आ ,, ८

ऋ = इ ,, ८

ऋ = उ ,, ८

ऋ = ऋ ,, ८

लृ = इ ,, ९

लृ = इलि ,, ९

ए = इ ,, ९

ए = ई ,, ९

औ = अउ ,, ९

औ = ओ ,, ९

विषयानुक्रम

+ 'टि०' एटले टिप्पण

लृ	=	इलि	७
ऐ	=	ए	७
ऐ	=	ए (पालि) टि० २	७
औ	=	ओ	७
औ	=	ओ (पालि) टि० २	७
अ	=	इ (अपभ्रंश)	८
अ	=	ई "	८
अ	=	उ "	८
उ	=	अ "	८
उ	=	आ "	८
ऋ	=	अ "	८
ऋ	=	आ "	८
ऋ	=	इ "	८
ऋ	=	उ "	८
ऋ	=	ए "	८
ऌ	=	इ "	९
ऌ	=	इरि "	९
ए	=	इ "	९
ए	=	ई "	९
ओ	=	उ "	९
ओ	=	ऊ "	९

प्रकरण ३ जुं पृ० १०–२८
सामान्य व्यंजनविकार

नियमांक	उद्देश्य	विधेय	पृष्ठ
१	अंत्यव्यंजन	= लोप	१०
	अंत्यव्यंजन	= लोप (पालि) टि० १	१०
२	असंयुक्त'कादि'	= लोप	१०
	(१) त	= द (शौरसेनी, अपभ्रंश)	१२
	त	= द (पालि) टि० १	१२
	(२) ज	= य (मागधी)	१२
	ज	= य (पालि) टि० ३	१२
	(३) त	= त (पैशाची)	१२
	द	= त („)	१२
	द	= त (पालि) टि० ४	१२
	(४) ग	= क (चूलिकापैशाची)	१३
	ग	= क (पालि) टि० १	१३
	ज	= च (चूलिकापैशाची)	१३
	ज	= च (पालि) टि० २	१३
	(५) क	= ग (अपभ्रंश)	१३
	क	= ग (पालि) टि० ३	१३
३	संयुक्त 'कादि'	= लोप	१४
	क्त	= त्त* (पालि) टि० १	१४
	क्थ	= त्थ („) „	१४

* 'क्त' वगेरे संयुक्त अक्षरोने स्थाने 'त्त' वगेरेने स्थापित करवा माटे प्राकृतव्याकरणमां आचार्यश्रीए लोपनी अने द्विर्भावनी प्रक्रिया दर्शावेली छे अने ए ज बाबतने सारु पालिप्रकारमां 'क्त' वगेरेना 'त्त' वगेरे आदेशो करेला छे.

૫૨ ૧૪

= ત્ત (,,) ટિ૦ ૪ ૧૪

[illegible] = ત્ત (,,) ટિ૦ ૫ ૧૪

[illegible] = ગ્ગ (,,) ટિ૦ ૬ ૧૫

[illegible] = ત્ત (પાલિ) ટિ૦ ૧ ૧૫

[illegible] = મ્મ (,,) ટિ૦ ૨ ૧૫

[illegible] = ટ્ટ (,,) ટિ૦ ૨ ૧૫

[illegible] = ટ્ટ (,,) ,, ,, ૧૫

[illegible] = ઠ્ઠ (,,) ,, ,, ૧૫

[illegible] = ત્ત (,,) ,, ,, ૧૫

[illegible] = ગ્ગ (,,) ટિ૦ ૬ ૧૫

[illegible] = દ્ધ (,,) ,, ,, ૧૫

[illegible] = ત્ત (,,) ,, ,, ૧૫

[illegible] = મ્મ (,,) ,, ,, ૧૫

[illegible] = ન્ન (,,) ,, ,, ૧૫

[illegible] = નોંધ ૧૫

સંયુક્તાક્ષરાદિ

૪ = ન્ન* (પાલિ) ટિ૦ ૭ ૧૬

[illegible] = ત્ત (,,) ટિ૦ ૨ ૧૬

[illegible] = ટ્ઠ (,,) ટિ૦ ૨ ૧૬

[illegible] = નોંધ ૧૬

સંયુક્ત - વ્યાદિ'

૫ = ક્ક (પાલિ) ટિ૦ ૪ ૧૬

[illegible] = ઘ (,,) ટિ૦ ૫ ૧૬

[illegible] = દ્દ (,,) ટિ૦ ૬ ૧૭

[illegible] = ક્ક (,,) ટિ૦ ૬ ૧૭

[illegible] = ક્ક (,,) ટિ૦ ૨

[illegible]

---

*. [illegible] આગળ શબ્દનું ટિપ્પન.

	(१) 'र्'	= लोप (अपभ्रंश)	१७
६	'त्र्'	= लोप	१८
	र	= लोप (पालि) टि० २	१८
७	'अंत्यव्यंजन' नो 'अ'		१८
८	'कादि' नो 'ग'		१८
	क	= ग (पालि) टि० ४	१८
	म	= य (पालि) टि० ६	१८
९	'खादि' नो 'ह'		१९
	ख	= ह (पालि) टि० २	१९
	घ	= ह (,,) टि० ४	१९
	भ	= ह (,,) टि० ५	१९
	(१) थ	= ध (शौरसेनी)	२०
	(२) ग	= क (चूलिकापैशाची)	२०
	घ	= ख (,,)	२०
	भ	= फ (,,)	२०
	(३) झ	= छ (,,)	२१
१०	ट	= ड	२१
	ट	= ड (पालि) टि० १	२१
	(१) टु	= तु (पैशाची)	२१
११	ठ	= ढ	२१
१२	ड	= ल	२२
	ड	= ळ (पालि) टि० १	२२
	(१) ड	= ट (चूलिकापैशाची)	२२
	(२) ढ	= ठ (,,)	२२
	(३) ण	= न (पैशाची)	२२

		= न (पालि) टि० १	२३
	ण	= ण	२३
३	न	= ण (पालि) टि० २	२३
	न	= ण	२३
१४	न	= व	२३
१५	प	= व (पालि) टि० ३	२४
	प	= व	२४
१६	प	= व (अपभ्रंश)	२४
	(१) प	= भ	२४
१७	फ	= ह	२४
	फ	= भ (अपभ्रंश)	२५
	(१) फ	= प (चूलिकापैशाची)	२५
	(१) ब	= प (पालि) टि० १	२५
	ब	= व	२५
१८	ब	= व (पालि) टि० २	२५
	व	= वँ (अपभ्रंश)	२६
	(१) म	= ज	२६
१९	य	= ज (पालि) टि० १	२६
	य	= य (मागधी)	२६
	(१) य	= ल (मागधी, पैशाची)	२६
	(१) र	= ळ (पैशाची)	२
	(१) ल	= स	२
२०	श	= स	
	प	= स (पालि) टि० १	
	श	= स (,,) ,, ,,	

[illegible]	= [illegible]	३२
[illegible]	= [illegible]	३२
[illegible]	= [illegible]	३२
[illegible]	= ख	३२
[illegible]	= ख (वृत्ति) टि० १	३२
[illegible]	= ख	३२
[illegible]	= ख (वृत्ति) टि० १	३२
[illegible]	= ख	३२
[illegible]	= ख (वृत्ति) टि० १	३२
[illegible]	= ख	३२
[illegible]	= ख (वृत्ति) टि० १	३२
[illegible]	= [illegible]	३३
(१) [illegible]	= [illegible]	३३
[illegible]	= [illegible]	३३
[illegible]	= [illegible]	३३
[illegible]	= [illegible] (वृत्ति) टि० १	३३
[illegible]	= [illegible] (") " "	३३
[illegible]	= [illegible]	३३
[illegible]	= [illegible]	३४
(१) [illegible]	= [illegible] (वृत्ति) टि० १	३४
[illegible]	= [illegible]	३४
(१) [illegible]	= [illegible] (वृत्ति) टि० १	३४
[illegible]	= [illegible]	३४
[illegible]	= [illegible] (वृत्ति) टि० १	३४
[illegible]	= [illegible]	३४
[illegible]	= [illegible] (वृत्ति) टि० १	३४

२९	र्त	= ट्ट	३५
	त	= ट (पालि) टि० २	३५
	(१) न्त	= न्द (शौरसेनी)	३५
३०	म्न	= ण, ण्ण	३६
	म्न	= न्न (पालि) टि० १	३६
	ज्ञ	= ण, ण्ण	३६
	ज्ञ	= ण (पालि) टि० १	३६
	(१) ज्ञ	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	ज्ञ	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१) ञ्ज	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	(१) ण्य	= ञ्ञ ,,	३६
	ण्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
	(१) न्य	= ञ्ञ (मागधी)	३६
	न्य	= ञ्ञ (पालि) टि० ४	३६
३१	स्त	= थ, त्थ	३७
	स्त	= थ त्थ (पालि) टि० १	३७
	(१) र्थ	= स्त (मागधी)	३७
	स्थ	= स्त (,,)	३७
३२	ष्ट	= ठ, ट्ठ	३७
	ष्ट	= ट्ठ (पालि) टि० ३	३७
	ष्ट	= ट्ट (पालि) टि० ४	३७
	(१) ट्ट	= स्ट (मागधी)	३८
	ष्ठ	= स्ट (,,)	३८
	(१) ष्ट	= सट (पैशाची)	३८
३३	ष्प	= प, प्प	३८

मप = प, प्प ३८

त्म = द्रुप (पालि) टि० १-२ ३८

गम = ग्प (,,) ,, ,, ३८

सम = स्प (पालि) टि० ३ ३८

प्प = प., प्प. ३९

म्प = प., प्प. ३९

प्प = प्प. (पालि) टि० १ ३९

म्प = प., प्प. (,,) ,, ,, ३९

प्प = प्प टि० २ ३९

म्प = प्प टि० २ ३९

प्प = प्प (पालि) टि० २ ३९

म्प = प्प (,,) ,, ,,

ह = भ, ब्भ ३९

ह = भ (पालि) टि० ३ ३९

न्म = म्म ३९

न्म = म्म (पालि) टि० ४ ३९

म्म = म्म ३९

म्म = गुप (पालि) टि० ५ ३९

इम = म्ह ४०

प्म = म्ह ४०

स्म = म्ह ४०

म = म्ह ४०

ह्म = म्ह ४०

इम = म्ह (पालि) टि० १ ४०

प्म = म्ह (,,) ,, ,, ४०

स्म = म्ह (,,) ,, ,, ४०

	(१) म्ह	= म्भ (अपभ्रंश)	४०
३९	श्न	= ण्ह	४०
	ष्ण	= ण्ह	४०
	स्न	= ण्ह	४०
	ह्न	= ण्ह	४०
	ह्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्ण	= ण्ह	४०
	क्ष्म	= ण्ह	४०
	श्न	= ण्ह, ञ्ञ (पालि) टि० ३	४०
	ष्ण	= ण्ह („) „ „	४०
	स्न	= ण्ह (पालि) टि० ३	४०
	ह्न	= ण्ह („) टि० ३	४०
	ह्ण	= ण्ह („) „ „	४०
	क्ष्ण	= ण्ह („) „ „	४०
	(२) स्न	= सिन (पैशाची)	४१
	स्न	= सिन (पालि) टि० १	४१
४०	ह्ल	= ल्ह	४१
	ह्ल	= ल्ह (पालि) टि० २	४१
४१	ज्ञ	= ञ	४१
	ज्ञ	= ञ (पालि) टि० ३	४१
४२	र्ह	= रिह	४१
	र्ह	= रह, रिह (पालि) टि० ४	४१
४३	र्श	= रिस	४२
	र्ष	= रिस	
	र्श	= रिस (पालि) टि० १	४२
	र्ष	= रिस („) „ „	४२

४९ 'आ' विकार ४७–४९

(क) आ = अ
(ख) आ = इ
(ग) आ = ई
(घ) आ = उ
(ङ) आ = ऊ
(च) आ = ए
(छ) आ = ओ
आ = अ (पालि) टि० २ ४७
आ = ए („) टि० २ ४९

५० 'इ' विकार ४९–५१

(क) इ = अ
(ख) इ = ई
(ग) इ = उ
(घ) इ = ए
(ङ) इ = ओ
(च) नि = ओ
इ = अ (पालि) टि० १ ४९
इ = उ („) टि० २ ५०
इ = ए („) टि० १ ५१
इ = ओ („) टि० २ ५१

५१ 'ई' विकार ५१–५२

(क) ई = अ
(ख) ई = आ
(ग) ई = इ

(च) ई = उ
(छ) ई = ऊ
(ज) ई = ए
ई = अ (पालि) टि० ४ ६१

६२–६४

'उ' विकार

(क) उ = अ
(ख) उ = आ
(ग) उ = इ
(घ) उ = ई
(ङ) उ = ऊ
(च) उ = ओ
उ = अ (पालि) टि० १ ६२
उ = इ (पालि) टि० २ ६३
उ = ओ (पालि) टि० १ ६४

६४–६६

'ऊ' विकार

(क) ऊ = अ
(ख) ऊ = इ
(ग) ऊ = ई
(घ) ऊ = उ
(ङ) ऊ = ए
(च) ऊ = ओ
ऊ = अ (पालि) टि० २ ६४
ऊ = अ (संस्कृत) टि० २ ६४
ऊ = ओ (पालि) टि० २ ६६

१४	'ऋ' विकार		११-१९
	(क) ऋ	= आ	
	(ख) ऋ	= इ	
	(ग) ऋ	= उ	
	(घ) ऋ	= ऊ	
	(ङ) ऋ	= ए	
	(च) ऋ	= ओ	
	(छ) ऋ	= अरि	
	(ज) ऋ	= रि	
	(झ) ऋ	= रि	
	(ञ) ऋ	= इ (पैशाची)	१९
	ऋ	= इ (पालि) टि० २	११
	ऋ	= उ (पालि) टि० १	१७
	ऋ	= ए (पालि) टि० २	१७
१५	'ए' विकार		१९
	(क) ए	= इ	
	(ख) ए	= ऊ	१९
	ए	= ओ (पालि) टि० २	१९
१६	'ऐ' विकार		१९-२०
	(क) ऐ	= अअ	
	(ख) ऐ	= इ	
	(ग) ऐ	= ई	
	(घ) ऐ	= अइ	
	ऐ	= इ (पालि) टि० १	२०
	ऐ	= ई (,,) ,, २	२०

प्रकरण ६ वें पृ० ६३–७४

असंयुक्त व्यंजनोंका विशेष फेरफार

'य' विकार ७८–७९

य = आए
य = ज
य = म
य = ए
य = व
य = ए
य = र [illegible] १ ७८
य = ञ (पालि) [illegible] १ ७८
य = द (,,) ,, १ ७८

'र' विकार ७९–८२

र = ड
र = डा
र = ण
र = क

'[illegible]' [illegible] [illegible]

[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible]
[illegible] = [illegible] (पालि, [illegible] १ ८२

'ह' विकार [illegible]

ह = [illegible]
ह = [illegible]

द्ध = ड्ढ

ग्ध = ड्ढ

ब्ध = ड्ढ

(ख) र्ध = ढ

द्ध – ड्ढ (पालि) टि० १ — ७०

र्ध = ड्ढ ,, ,, ,,

ग्ध = ड्ढ ,, ,, ,,

९८ — ण्ट, ण्ड, ण्ण — ७९–८०

न्त = ण्ट

न्द = ण्ड

(क) ज्ञ = ण्ण

(ख) त = ण्ण

(ग) ह्ण = ण्ण

न्त = ण्ट (पालि) टि० २ — ७९

९९ — त्थ — ८०

(क) त्स = त्थ

(ख) त्म = त्थ

१०० — द्ध — ८०

ह्र = द्ध

१०१ — न्त, न्ध — ८०

न्य = न्त

ह्न = न्ध

१०२ — प्प, प्फ, फ — ८०–८१

त्म = प्प

प्म = प्फ

ज्ञ, ञ

९१ न्य = ञ

न्य = न्न (पालि) टि० २ ७६

ज्ञा

९२ न्घ = ञा

ञ्जु

९३ ञि = ञ्जु

ट्ट

९४ (क) त्त = ट्ट

(ख) र्थ = ट्ट

(ग) स्त = ट्ट

त = ट (पालि) टि० २

ट्ठ, ठ

९५ (क) र्थ = ट्ठ

(ख) स्त = ठ

(ग) स्थ = ट

म्य = ट्ठ

र्थ = ट (पालि) टि० २

स्थ = ट (पालि) टि० ४

स्थ = ट्ठ (,,) टि० ४

ड्ड

९६ (क) र्त = ड्ड

(ख) र्द = ड्ड

ड्ढ, ढ

९७ (क) र्ध = ड्ढ

द्ध = ड्ढ

ग्ध = ड्ढ

ब्ध = ड्ढ

(ग) र्ध = ढ

द्ध – ड्ढ (पालि) टि० १ ७९

र्ध = ड्ढ ,, ,, ,,

ग्ध = ड्ढ ,, ,, ,,

९८ ण्ह, ण्ड, ण्ण ७९–८०

न्ह = ण्ह

न्ह = ण्ह

(क) न्द = ण्ण

(ख) ण = ण्ण

(ग) ह्ण = ण्ण

न्न = ण्ड (पालि) टि० २ ७९

९९ त्थ ८०

(क) त्त = त्थ

(ख) न्त = त्थ

१०० द्द ८०

इ = द्द

१०१ न्त, न्न ८०

न्य = न्न

ह्न = न्न

१०२ प्प, प्फ, प्प ८०–८१

त्म = प्प

प = प्फ

ञ्ञ, ञ

न्य = ञ

न्य = ञ्ञ (पालि) टि० २ ७६

७७

ञ्ञा

न्य = ञ्ञा ७७

ञ्ञु

ञ्चि = ञ्ञु ७८

ट्ट

(क) त = ट्ट

(ख) र्थ = ट्ट

(ग) स्त = ट्ट ७७

त = ट (पालि) टि० २ ७७–७८

ट्ठ, ठ

९५

(क) र्थ = ट्ठ

(ख) स्त = ठ

(ग) स्थ = ठ

स्थ = ट्ठ ७७

र्थ = ट्ठ (पालि) टि० २ ७८

स्त = ठ (पालि) टि० ४ ७८

स्थ = ट्ठ (,,) टि० ४

ड्ड

९६

(क) र्त = ड्ड

(ख) र्द = ड्ड

ड्ढ, ढ

९७ ७९

(क) र्ध = ड्ढ

स्वरांतशब्दो १३०-१८१

शुद्धिपत्र

अशुद्ध–	शुद्ध–	पृष्ठ–	पंक्ति–
व्यञ्जनन्	व्यञ्जनम्	१०	११
त्य	थ	१४	२१
न—धृष्टद्युम्नः धट्ठज्जुणो	आ उदाहरण अने ए उपरनुं टिप्पण पृ० ३६मां पं. ४ म्न—न्ना उदाहरणमां मूको	१६	१
	'र' लोप	१७	५ मी पंक्ति पछी मथाळुं वधारवुं.
अपभ्रंशमां	(१) अपभ्रंशमां	१७	७
	ध्य, ध्र. त्स प्स—च्छ	२२	१० मी पंक्ति पछी मथाळुं वधारवुं.
न्न	ए 'न्ह'	४०	१०
टिप्पन	टिप्पन २	४७	२८
पृ० ४८	पृ० ४५	४७	२८
२	३	५१	१२
	उ = आ विद्रुतः विद्दाओ	५६	२१ मी पंक्ति पछी वधारवुं.
दश	दस	७२	१
न्न न्ध	१०१ न्न न्द	८०	११

आ पछी बधा अंको सुधारीने वांचवा.

आ पुस्तकमां वपराएला ग्रंथो अने तेना संकेतोनो सु[ची]

(१)

ग्रंथ	संकेत
अजितशांतिस्तव	
अमरकोश	अमरको०
आचारांगसूत्र	आ०
उत्तराध्ययनसूत्र	
उपासकदशांगसूत्रटीका	
काशिका	का०
चतुर्विंशतिस्तव	
जीवविचार	
पाणिनीय अष्टाध्यायी	पाणि० / पाणिनि०
पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया	वैदिकप्र०
पालिकोश	
पालिप्रकाश	पालिप्र० / पालिप्र० / पा०प्र०
पालिव्याकरण (कात्यायन)	
प्राकृतरूपसंग्रह	
प्राकृतरूपावतार	
भगवतीसूत्र	भग० / भ०
वृत्तिरत्नसूत्र	
ललितविस्तर (चंद्रप्रभ)	ललितवि०
सिद्धहेम	
समवायसूत्र	

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्राकृत-व्याकरण.

प्रकरण १

वर्णपरिचय

प्राकृत भाषाओमां नीचे प्रमाणे स्वरो अने व्यंजनो वपराय छे.

स्वर—

अ, इ, उ. (ह्रस्व)

आ, ई, ऊ, ए, ओ, (दीर्घ)

१ प्राकृतमां 'ऋ' नो विकार अ, इ, के उ थाय छे अने 'लृ' नो विकार 'इलि' थाय छे माटे ए बे स्वतंत्र स्वर नथी. 'ऐ' नो विकार 'ए' के 'अइ' थाय छे अने 'औ' नो विकार 'ओ' के 'अउ' थाय छे तेथी ए बे पण स्वतंत्र स्वर नथी.

२ 'एक्को' 'सेन्ना' 'सोत्तं' 'सो च्चिअ' वगेरे शब्दोमां आवेला 'ए' अने 'ओ' एकमात्रिक छे एम आचार्य शुभचंद्र जणावे छे: (–शुभचंद्रनु प्राकृत व्याकरण अ० १ पा० २–१०—लिखित पृ० ४) आ उपरथी 'ए' अने 'ओ' नी एकमात्रिकता पण व्याजबी जणाय छे. उच्चारणनी दृष्टिए तो द्विमात्रिक पछी आवेला व्यंजननी पूर्वनो द्विमात्रिक स्वर एकमात्रिक ज होवो जोइए; अन्यथा एवे ठेकाणे आवेला द्विमात्रिकनो उच्चार ज द्विमात्रिकनी रीते थइ शकतो नथी. आचार्य हेमचंद्र जणावे छे के, कोइ वैयाकरणो प्राकृतमां पण 'ऐ' अने 'औ' ना उपयोगने इष्ट गणे छे (८–१–१) आचार्य हेमचंद्र पण 'अयि' ना प्राकृतरूप 'ऐ' ने सम्मत गणे छे (८–१–१६९) तो पण तेमने ए सिवाय 'ऐ' अने 'औ' नो व्यवहार इष्ट नथी.

प्राकृत-व्याकरण.

प्रकरण १

वर्णपरिचय

प्राकृत भाषाओमां नीचे प्रमाणे स्वरो अने व्यंजनो वपराय छे.

स्वर—

अ, इ, उ. (ह्रस्व)

आ, ई, ऊ, ए, ओ, (दीर्घ)

---

१ प्राकृतमां 'ऋ' नो विकार अ, इ, के उ थाय छे अने 'ऌ' नो विकार 'इलि' थाय छे माटे ए बे स्वतंत्र स्वर नथी. 'ऐ' नो विकार 'ए' के 'अइ' थाय छे अने 'औ' नो विकार 'ओ' के 'अउ' थाय छे तेथी ए बे पण स्वतंत्र स्वर नथी.

२ 'एक्को' 'सेन्ना' 'सोत्तं' 'सो त्ति' वगेरे शब्दोनां आदेश 'ए' अने 'ओ' एकमात्रिक छे एम आचार्य शुभचंद्र जणावे छे: (शुभचंद्रनुं प्राकृत व्याकरण अ० १-३-४०—लिखित पृ० ४) आ उपरथी 'ए' अने 'ओ' नी एकमात्रिकता पण जणाती जणाय छे. उच्चारनी दृष्टिए तो द्विमात्रिक पछीना अक्षरनी पूर्वनो द्विमात्रिक स्वर एकमात्रिक ज होवो जोइए; अन्यथा एवे ठेकाणे आवेला द्विमात्रिकनो उच्चार ज विनाविघ्ने थइ शकतो नथी. आचार्य हेमचंद्र जणावे छे के, कोइ वैयाकरणो प्राकृतमां पण 'ऐ' अने 'औ' ना प्रयोगने इष्ट गणे छे (८-१-१) आचार्य हेमचंद्र पण 'ऐ' ने सम्मत गणे छे (८-१-१६९) तो पण तेमणे ए सिवाय 'ऐ' अने 'औ' ने स्वतंत्र इष्ट नथी.
…नाप. १

[1]व्यंजन—

क, ख, ग, घ, ङ (कवर्ग)

च, छ, ज, झ, ञ (चवर्ग)

---

[1] आचार्य हेमचन्द्रना जणाव्या प्रमाणे प्राकृतमां स्वररहित व्यंजननो [illegible] व्यंजनना के जे तद्दन विजातीयसंयुक्त व्यंजनो–क्क, क्ख, [illegible] प्रयोग थतो नथी तो पण 'ङ्क' 'ङ्ख' अने 'ङ्ग'नो [illegible] पण स्वीकार्यु छे: (जुओ ८–२–३४–[illegible]) 'अकस्मात्' शब्दने मागधदेशीय होवानुं आचार्य श्रीहेमचन्द्रे [illegible] छे । यथा– " इत्य [illegible] आगओ अकस्मात् " मू० आ० पु० [illegible]) त्यां प्राकृतमां ए ए [illegible] 'ङ्क, ङ्ख अने ङ्ग' उपरान्त मागधीमां [illegible] संयुक्त व्यंजनो पण वपराय छे. ए विषे संयुक्त व्यंजनना [illegible] आगळ जणावीशुं. ए सिवाय [illegible] प्राकृत करतां विशेष [illegible] पुस्तकमां [illegible] ठेकाणे जणावीशुं.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ट, ठ, ड, ढ, ण (टवर्ग)

त, थ, द, ध, न (तवर्ग)

प, फ, ब, भ, म (पवर्ग)

य, र, ल, व (अंतःस्थ)

स, ह (ऊष्माक्षर)

ं अनुस्वार

पण क्यांय स्वतंत्र 'ञ' प्रयोगातो नथी. कञ्चुकः, लाञ्छनम्, अञ्जनम्:–वगेरे प्रयोगोनी पेठे प्राकृतमां कञ्चुओ, लञ्छणं, अञ्जणं वगेरे प्रयोगो सुप्रचलित छे. तथा पालीना ञाति (ज्ञाति), ञाण (ज्ञान), नाण (ज्ञान) वगेरे प्रयोगो संस्कृतना 'ज्ञ'ने बदले जेवा पण मळी आवे छे. संस्कृतना अने प्राकृतना एकला 'ञ' करतां स्ववर्गसंयुक्त 'ञ' नो प्रयोग विशेष प्रचलित छे: अहिमञ्जु (अभिमन्यु) पुञ्ञ (पुण्य), अवञ्ञा (अवज्ञा), अञ्जली (अञ्जलि)–मागधी अने ञ्ञान (ज्ञान) विञ्ञान (विज्ञान)–पैशाची. 'ञ्ञ' ना प्रयोगमां पाली, मागधी अने पैशाची विशेष समानता धरावे छे.– (८–४–२९३ तथा ३०३) तथा (पालिप्र० पृ० ३३–३४)

१ पालीमां 'अनुस्वार' ने व्यंजनमां गणावीने 'निग्गहीत' नी संज्ञा आपेली छे अने नमिनमिस्सअरहुत्तमना तो एने (अनुस्वारने) अने विसर्गने स्वरोनी साथे ज गणावेला छे. आ प्रसंग वर्णवेली

[illegible]

श्व—अश्वः आसो । विश्वमिति वीससइ । विश्वासः वीसासो ।
श्श—दुश्शासनः दूसासणो । मनश्शिला मणासिला ।
ष्य—पुष्यः पूसो । मनुष्यः मणूसो । शिष्यः सीसो ।
र्ष—कर्षकः कासओ । वर्षः वासो । वर्षाः वासा ।
ष्व—विष्वक् वीसुं । विष्वाणः—वीसाणो ।
ष्ष—निष्षिक्तः नीसित्तो ।
स्य—कस्यचित् कासइ । नस्यम् नासं ।
स्र—उस्र उसो । विस्रम्भः वीसंभो ।
स्व—निस्व नीसो । विकस्वरः विकासरो ।
स्स—निस्सह नीसहो ।

आ—अ.

२. संस्कृतना भाववाचक अकारान्त पुंलिंगी शब्दना आदिना 'आ' नो प्राकृतमां विकल्पे 'अ' थाय छे. जेमके:—
प्रकार: पयारो, पयरो । प्रचार: पयारो, पयरो । प्रहार: पहारो, पहरो । प्रवाह: पवाहो, पवहो । प्रस्ताव: पत्थावो, पत्थवो ।

इ—ए.

३. संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्व आवेला 'इ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे. जेमके:—
[illegible]

उ=ऊ.

५. संस्कृत शब्दोमां रहेला 'त्स अने च्छ नी पूर्वना 'उ'नो 'ऊ' थाय छेः—

त्स—उत्सरति ऊसरइ । उत्सव ऊसवो ।

उत्सिक्त ऊसित्तो । उत्सुक ऊसुओ ।

च्छ—उच्छ्वसति ऊससइ । उच्छ्वास. ऊसासो ।

उच्छुक. ऊसुओ ।

उ=ओ.

६. संस्कृतना संयुक्त व्यंजननी पूर्वे रहेला 'उ' नो प्राकृतमां 'ओ' थाय छे. जेमके —

*कुट्टिमम् कोट्टिमं । कुण्ठ कोंठो । कुन्त कोंतो ।

तुण्डम् तोंडं । पुद्गलम् पोग्गलं । पुष्करम् पोक्खरं ।

पुस्तक पोत्थओ । मुण्डम् मोंडं । मुद्गर मोग्गरो । मुस्ता मोत्था ।

लुब्धक. लोद्धओ । व्युत्क्रान्तम् वोक्कंतं ।

*ऋ=अ

७. संस्कृत शब्दना आदिभागमां आवेला 'ऋ' नो प्राकृतमां 'अ' थाय छे.

कृतम् कयं । घृतम् घयं । घृष्ट. घट्ठो ।

तृणम् तणं । मृगः मओ । मृष्टम् मट्ठं । वृषभ. वसहो ।

* आ नियम आ व शब्दोना [illegible] —[illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible]।

१ [illegible]

१ [illegible]

कौञ्चः कोंचो । कौमुदी कोमुई । कौशाम्बी कोसम्बी ।
कौशिकः कोसिओ । कौस्तुभः कोत्थुहो । यौवनम् जोव्वणं ।

उपर जणावेला बधा स्वरविकारो शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने चूलिकापैशाचीमां पण एक सरखी रीते लागु थाय छे, अपभ्रंशमां ए नियमोनुं प्रवर्तन नियत रीते एटले जे रीते जणाव्युं छे ते रीते थतुं नथी. तेमां क्यांय क्यांय 'अ'नो इ, ई, उ; 'उ'नो अ, आ; 'ऋ'नो अ, आ, इ, उ, ऋ; 'लृ'नो इ, इलि; 'ए'नो इ, ई; अने 'ओ'नो अउ अने ओ थाय छे: [स्वरविकारनी दृष्टिए आ प्रवर्तन सरळुं छे, पण अनियतताने लीधे एने प्राकृतथी जुदुं पाडी शकाय छे.]

अ–इ, ई, उ—

सं० प्रा० अ०
वचनम् वअणं (वइणं) वेण ।
(वईणं) वीणं ।
शयनम् सअणं (सइनं) सेनं[1] ।
नयनम् नअण नइण (नइनं) नेन ।
नवनीतम् नअणीअं (नउणीअ) नोणीअ ।

[वस्तुत आ रूपो 'ए' अने 'ओ' ना सप्रमाणथी बनेला छे,]

उ–अ, आ–

बाहु बाहा (स्त्री०) बाहा बाह बाहु ।

ऋ–अ, आ, इ, उ, ऋ

कृष्णम् किस [illegible] किसु कासु ।

[1] [illegible]

६.

कुमर नव निरु. नए. कुरु।

कुहलन कुकर्म कुमिडं. कुमिदु. कुहदु।

न्ह–ह. हरि--

कन्हड: किलिको किलो. किलिकओ।

ऊ–ए. ए—

केना केशा किह. केह. केद।

औ–अउ. ओ—

गोरी गोरी गउरी. गोरी।

संयतीविकलीना प्रसंगना तो त्यां त्यां प्राकृत रूपनां शौरसेनीनां, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशना विशेषता छे तेने ते ते स्थळे जणावशुं.

कौशः कोसो । कौमुदी कोमुई । कौशाम्बी कोसम्बी ।
कौशिकः कोसिओ । कौस्तुभः कोत्थुहो । यौवनम् जोव्वण।

उपर जणावेला बधा स्वरविकारो शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने चूलिकापैशाचीमा पण एक सरखी रीते लागु थाय छे, अपभ्रंशमा ए नियमोनुं प्रवर्तन नियत रीते एटले जे रीते जणाव्युं छे ते रीते थतुं नथी. तेमा क्याय क्याय 'अ'नो इ, ई, उ; 'उ'नो अ, आ; 'ऋ' नो अ, आ, इ, उ, ऋ; 'लृ'नो इ, इलि; 'ए'नो इ, ई; अने 'ओ'नो अउ अने ओ थाय छे: [स्वरविकारनी दृष्टिए आ प्रवर्तन सरखुं छे. पण अनियतताने लीधे एने प्राकृतथी जुदु पाडी शकाय छे.]

अ–इ, ई, उ—

सं० प्रा० अ०
वचनम् वअणं (वइणं) वेण ।
(वईणं) वीणं ।
शयनम् सअण (सइनं) सेनं[1] ।
नयनम् नअण नइण (नइनं) नेन ।
नवनीतम् नअणीअ (नउणीअं) लोणीअ ।

[वस्तुत आ रूपो 'य' अने 'व' ना सप्रसारणथी बनेला छे]

उ–अ, आ—

बाहु —बाहा (स्त्री०) बाहा, बाह, बाहु ।

ऋ–अ, आ, इ, उ, ऋ—

कृत्यम् किच्च कच्च, काच्च ।

---

१ जूओ विसुद्धिमग्गा पा० पृ० २४

क—तीर्थकर: तित्थयरो। लोक: लोओ।
ग—नग: नओ। नगरम् नयरं। मृगाङ्कः मयंको।
च—कचग्रह कयग्गहो। शची सई।
ज—गज: गओ। प्रजापति पयावई। रजतम् रयय।
त—धात्री धत्ती—धाई। यति: जई। रसातलम् रसायलं
गति: गति—गई। वितानम् विआणं।
द—गदा गया। मदन. मयणो।
प—रिपु रिऊ। सुपुरुष: सुउरिसो।
व—विबुध विउहो।
य—वियोग विओओ।
वे—वडवानल: वलयाणलो। लावण्यम् लायण्णं।

(आ बीजो नियम अने एवा बीजा असंयुक्त व्यंजनना विकारने लगता सामान्य के विशेष नियमो पैशाची भाषामां लागता नथी. जेमके;

सं०	प्रा०	पै०
मकरकेतु.—	मयरकेऊ—	मकरकेतू।
सगरपुत्रवचनम्—	सयरपुत्तवयणं—	सगरपुत्तवचनं।
विजयसेनेन लपितम्-	विजयसेणेण लवियं—	विजयसेनेन लपितं।
पापम् —	पावं—	पापं—
आयुधम्—	आउहं—	आयुधं।)

पूर्वोक्त नियम द्वारा प्राकृतना 'क' 'ग' 'त' अने 'द' नो लोप जणावेलो छे तो पण प्राकृतना पेटाभेदरूप शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंश ए वर्णो लोपना ... किन्तु बीजा बीजा वर्गोना ... थाय छे ...

प्रकरण ३.

सामान्य व्यंजनविकार.

[1]अंत्यव्यंजनलोप

१. संस्कृत शब्दना छेवटना व्यंजननो प्राकृतमां लोप थाय छे.

अन्तर्–उपरि अन्त–उपरि अंतोवरि।
अन्तर्–गतम् अन्त–गयं अंतगयं।
जन्मन् जम्म–जम्मो। तमस् तम–तमो।
तावत् ताव। पुनर् पुण। न पुनर् न उण।
यशस् जस–जसो। यावत् जाव।

असंयुक्त 'कादि'लोप.

२. [2]स्वरथी पर आवेला अने एक ज पदमां रहेला असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, र अने व–एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां प्राय लोप थई जाय छे. उदाहरणो क्रमशः नीचे प्रमाणे छे

---

[1] [illegible] विद्युत्–विज्जु। तावत्–ताव। इत्यादि।

[2] आ नियम बधा ठेकाणे लागतो पण नथी. जेमके सुकुसुमम्। [illegible] [illegible]। सुगत। सुगओ। [illegible]। [illegible]। [illegible]। सुगाय। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]। [illegible]।

[illegible]

सं०	प्रा०	पै०–चू० पै०	सं०	[illegible]	[illegible]
भगवती	भगवई	भगवती ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पार्वती	पव्वई	पव्वती ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मतम्	मयं	मतं ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दामोदर	दामोदरो	तामोतरो ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]

'ग–क, ज च.'

(८) चूलिकापैशाचीमां 'ग' नो 'क' थाय [illegible] नो 'च' थाय छे.

सं०	प्रा०	चू० पै०	सं०	प्रा०	चू० पै०
गिरितटम्	गिरितडं	किरितडं ।	जर्जरम्	जज्जर	चच्चर ।
नगरम्	नयर	नकरं ।	जीमूतः	जीमूओ	चीमूतो ।
मार्गण	मग्गणो	मक्कनो ।	नियोजितम्	नियोजिअं	नियोचितं ।
राजा	राया	राचा ।			

क–ग.

(९) अपभ्रंशमां क्वचित् 'क' नो 'ग' थाय छे.

सं०	प्रा०	अ०
विक्षोभकरः	विच्छोहयरो	विच्छोहगरो ।

---

१ जुओ पा० प्र० पृ० ५६ ([illegible]

२ जुओ पा० प्र० पृ० ५७ ([illegible]

३ जुओ पा० प्र० पृ० ५५ ([illegible]).

[1]त–द.

(१) [2]शौरसेनीमां अने क्यांय अपभ्रंशमां ' त ' नो ' द ' थाय छे:

सं०	प्रा०	शौ०, अप०	सं०	प्रा०	शौ०, अप०
कथितम्	कहिअं	कधिदं ।	प्रतिज्ञा	पइण्णा	पदिण्णा ।
ततः	तओ	तदो ।	मारुतिः	मारुई	मारुदी ।
पूरितः	पूरिओ	पूरिदो ।	मन्त्रितः	मंतिओ	मंतिदो ।

[3]ज–य.

(२) मागधीमां आदिस्थित के अनादिस्थित ' ज ' नो ' य ' थाय छे:

सं०	प्रा०	मा०	सं०	प्रा०	मा०
जनपदः	जणवओ	यणवदे ।	दुर्जनः	दुज्जणो	दुय्यणे ।
जानाति	जाणइ	याणदि ।	वर्जितः	वज्जिओ	वय्यिदे ।
गर्जितः	गज्जिओ	गय्यिदे ।			

त, [4]द–त.

(३) पैशाचीमां अने चूलिकापैशाचीमां ' त ' कायम रहे छे अने ' द ' नो पण ' त ' थाय छे

---

[1] जुओ पा० प्र० पृ० ७९ (त=द)

[2] शौरसेनीने लगता दरेक नियमो मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां पण लागु थई शके छे

[3] जुओ पा० प्र० पृ० [illegible] (ज=य)

[4] जुओ पा० प्र० पृ० [illegible] (द=त)

न—धृष्टद्युम्नः धट्ठज्जुणो[1]। [2]म—कुड्यम् कुड—कुड्डं।
[3]नग्नः नग—नग्गो। व्याघ्रः वाघो।
लग्नः लग—लग्गो। श्यामा सामा।

संयुक्त 'लादि' लोप.

१. संयुक्त व्यंजनना पूर्ववर्ती वा परवर्ती ल, व, ब, विसर्ग अने र नो प्रायः लोप थई जाय छे अने लोप थया पछी बाकी रहेला अनादिना व्यंजननो द्विर्भाव थाय छे. उदाहरणः—

ल—उल्का उका—उक्का। [4]ब—अब्दः अद —अद्दो।
वल्कलम् वकल—वक्कलं। लुब्धकः लुधअ—लुद्धओ।
[5]व—विक्लवः विकव—विक्कवो। शब्दः सद— सद्दो।
पक्वम् पक्कं। स्तब्धः—थध —थद्धो।

[6]र—अर्क: अक—अक्को। विसर्ग—दुःखितः दुखिअ—दुक्खिओ।
[illegible] पिक—पिक्कं। दुःसहः दुसह—दुस्सहो।
श्वेटकः सेडओ। निःसहम् निसह—निस्सहं।
स्फोटकः सोडओ। निःसरति निसरइ—निस्सरइ।
[illegible] वओ।

१ आ शब्दमां 'ण' नो द्विर्भाव थतो नथी.
२ प्रा० व्या० [illegible] (नि० [illegible])
३ प्रा० व्या० [illegible] (नि० [illegible])
४ [illegible] (नि० [illegible])
५ [illegible] (नि० [illegible])
६ [illegible] (नि० [illegible])

र—अर्कः अक्क—अक्को । र—क्रिया किया ।

वर्गः वग्ग—वग्गो । ग्रहः गहो ।

दीर्घः दिग्घ—दिग्घो । चक्रम् चक्क—चक्कं ।

वार्ता वत्ता—वत्ता । रात्रिः रत्ति—रत्ती ।

सामर्थ्यम् सामत्थ—सामत्थं । पात्री पत्ति—पत्ती ।

अपभ्रंशमां प्राय: परवर्ती 'र' नो लोप विकल्पे थाय छे:

प्रियः पिओ प्रिउ, पिउ ।

[सूचना—ज्यां पूर्ववर्ती अने परवर्ती एम बे नानना व्यंजननो लो[illegible] प्राप्त होय त्यां प्रयोगो प्रमाणे लोपनुं विधान करवुं जोइए. जेमके

पूर्ववर्तीनो लोप—

द—उद्विग्नः उव्विग—उव्विग्गो ।

द्विगुणः बिउणो ।

द्वितीयः बीओ ।

म—रुक्मम् रुप्प—रुप्पं ।

कुड्मलम् कुंपल—कुंपलं ।

र—सर्वम् सव्व—सव्वं ।

परवर्तीनो लोप—

य—काव्यम् कव्व—कव्वं ।

माल्यम् मल्ल—मल्लं ।

व—द्विजातिः दुआई ।

द्विपः दिओ ।

पूर्ववर्ती अने परवर्तीनो वारा फरती लोप—

ग—उद्विग्न,—उव्विग्ग—उव्विग्गो । द—द्वारम् बार ।

न—उद्विग्नः उव्विण्ण—उव्विण्णो । व—द्वारम् दार ।

आ बधा उदाहरणोमां त्रीजो, चोथो अने पांचमो, ए [illegible] [illegible] निषय बना [illegible] संभव छे.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

'द्र' लोप

६. 'द्र'वाळा संस्कृत शब्दना 'द्र' ना 'र' नो लोप प्राकृतमां विकल्पे थाय छे:

चन्द्रः चन्द्रो, चंदो । द्रवः[1] द्रवो, दवो । द्रहः द्रहो, दहो । द्रुमः द्रुमो, दुमो । भद्रम् भद्रं, भद्दं । रुद्रः रुद्रो, रुद्दो । समुद्रः समुद्रो, समुद्दो ।

'अंत्यव्यंजन' नो 'अ'

७. केटलाक संस्कृत शब्दोना छेवटना व्यंजननो 'अ' थाय छे:— शरत् सरओ । भिषक्[2] भिसओ । इत्यादि.

'कादि' नो 'य'

८. अवर्णथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला, असंयुक्त अने अनादि क, ग, च, ज, त, द, प, य अने व-एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां सामान्य रीते 'य' थाय छे. उदाहरणो आ प्रमाणे छे:

क—तीर्थंकरः तित्थयरो । शकटम् सयडं ।
ग—नगरम् नयरं । मृगाङ्कः मयंको ।
च—कचग्रहः कयग्गहो । काचमणिः कायमणी ।
ज—प्रजापतिः पयावई । रजतम् रययं ।

---

१ आ नियम एक 'चन्द्र' शब्दने लागतो नथी: चन्द्रम् चन्दं ।
२ कु० पा० प्र० पृ० १२ (नि० १५)
३ [illegible]
४ कुमा० पा० प्र० पृ० ५६—(कच्च)
पा० प्र० पृ० [illegible]—([illegible])

त—पातालम् पायालं । रसातलम् रसायलं ।

द—गदा गया । मदनः मयणो ।

य—नयनम् नयणं । दयालुः दयालू ।

व—लावण्यम् लायण्णं ।

ख्यादिनो 'ह'

७. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला अने असंयुक्त ख, घ, थ, ध, अने भ—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां 'ह' थाय छे. जेमके

ख—मुखम् मुहं । मेखला मेहला । लिखति लिहइ । शाखा साहा ।

घ—जघनम् जहणं । माघः माहो । मेघ मेहो । श्लाघते सलाहइ ।

थ—कथयति कहइ । आवसथ आवसहो । नाथ नाहो । मिथुनम् मिहुणं ।

ध—इन्द्रधनु इन्दहणू । बधिर बहिरो । बाधते बाहइ । व्याध वाहो । साधु साहू ।

भ—स्तनभर थणहरो । नभस् नह । सभा सहा । स्वभाव सहावो । शोभते सोहइ ।

[illegible]

'द्र' योग

६. 'द्र'वाळा संस्कृत शब्दना 'द'ना 'र'नो लोप प्राकृतमां विकल्पे थाय छे

चन्द्र चन्द्रो, चंदो । रुद्र[1] रुद्रो, रुदो । द्रहः द्रहो, दहो । द्रुम द्रुमो, दुमो । भद्रम भद्रं, भद्दं । हद्र हद्रो, हदो । समुद्र समुद्रो, समुद्दो ।

'अंत्यव्यंजन' नो 'अ'

७. केटलाक संस्कृत शब्दोना छेडाना व्यंजननो 'अ' थाय छे:— शरद् सरओ । भिषक्[2] भिसओ । इत्यादि.

'कादि' नो 'य'

८. स्वरथी पर आवेला, पहेला न पदमां रहेला, असंयुक्त अने असमानित क, ग, च, ज, त, द, प, य अने व—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां सामान्य रीते 'य' थाय छे. उदाहरणो आ प्रमाणे छे.

क[4]—तीर्थंकरः तित्थयरो । शकटम् सयडं ।

ग—नगरम् नयरं । मृगाङ्कः मयंको ।

च—कचग्रहः कयग्गहो । काचमणिः कायमणी ।

ज[5]—प्रजापतिः पयावई । रजतम् रयय ।

---

१ आ नियम एक 'चन्द्र' शब्दने लागतो नथी: चन्द्रम् चन्दं ।
२ जु० पा० प्र० पृ० १२ (नि० १५)
३ भिषक्=भिषक्को (पाअंकोष)
४ जुओ पा० प्र० पृ० ५६-(क=य)
५ जु० पा० प्र० पृ० ५७-(ज=य)

त—पातालम् पायालं। रसातलम् रसायलं।
द—गदा गया। मदनः मयणो।
यं—नयनम् नयणं। दयालुः दयालू।
वं—लावण्यम् लायण्णं।

खादिनो 'ह'

१. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमा रहेला अने असंयुक्त ख, घ, थ, ध, अने भ—एटला व्यंजनोनो प्राकृतमां 'ह' थाय छे. जेमके:

ख—मुखम् मुहं। मेखला मेहला। लिखति लिहइ। शाखा साहा।
घं—जघनम् जहणं। माघः माहो। मेघ मेहो। श्लाघते सलहइ।
थ—कथयति कहइ। आवसथ आवसहो। नाथ नाहो। मिथुनम् मिहुणं।
धं—इन्द्रधनुः इन्दहणू। बधिरः बहिरो। बाधते बाहइ। व्याध वाहो। साधुः साहू।
भं—स्तनभरः थणहरो। नभस् नहं। सभा सहा। स्वभाव सहावो। शोभते सोहइ।

---

१ आ नियम [illegible]
[illegible]

प्राकृतमां क, ग, थ, ध अने भ नो 'ह' थवानुं बताव्युं छे
पण शौरसेनी, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंशमां पण एम थाय छे.

थ—ध

१. शौरसेनीमां कियापदो अने अपभ्रंशमां स्थाने स्थाने शब्द मध्यस्थित 'थ' नो 'ध' थाय छे

सं०	प्रा०	शौ०	अ०
कथम्	कह	कधं	कधं।
कथयति	कहेइ	कधेदि	कधेइ, कधेदि
कथितम्	कहिअ	कधिदं	कधिअ।
नाथः	नाहो	नाधो	नाधो।
राजपथः	रायवहो	राजपधो	रायवधो।

ग—क, घ—ख, ध—थ[1]

(२) चूलिकापैशाचीमां 'ग' नो 'क', 'घ' नो 'ख' अने 'ध' नो 'थ' थाय छे

	सं०	प्रा०	चू० पै०
ग—	गर्ग	गग्गो	गक्को।
	मेघ	मेहो	मेखो।
	व्याघ्रः	वग्घो	वक्खो।
ध—	मधुरम्	महुरं	मथुरं।
	बान्धव	बन्धवो	पंथवो।
	धूली	धूली	थूली।

---

१ केटलाक वैयाकरणोने मते शब्दनी आदिमां आ नियम लागतो नथी.

	सं०	प्रा०	चू०पै०
भ—	रभसः	रहसो	रफसो ।
	रम्भा	रंभा	रंफा ।
	भगवती	भगवई	फकवती

झ—छ

(२) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमां 'झ' नो 'छ' थाय छे:

झर्झरः	झज्झरो	छच्छरो ।
निर्झरः	निज्झरो	निच्छरो ।

ट—ड

१०. स्वरथी पर आवेला, एक ज पदमां रहेला अने असंयुक्त 'ट' नो प्राकृतमां ड थाय छे:

ट—घटः घडो । घटते घडइ । नटः नडो । भटः भडो ।

टु—तु

(१) पैशाचीमां 'टु' नो 'तु' पण थाय छे:

सं०	प्रा०	पैशाची.	
कुटुम्बकम्	कुडुंबकं	कुतुंबकं, कुटुंबकं ।	
कटुकम्	कडुअं	कतुअं, कटुअं ।	
पटु	पडु	पटु	पतु ।

ठ—ढ

११. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ठ' नो प्राकृतमां 'ढ' थाय छे:

---

१ पालीमां तो क्यांय संयुक्त 'ट' नो पण 'ड' थाय छे:—
…ढः लेड्डु । निघण्टुः निघण्डु । पा० प्र० पृ० २८ (ट=ड)

ट—कमंठः कमढो। कुठारः कुढारो। पठति पढइ। मठः मढो। शठः सढो।

ड—ल.

१२. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ड' नो 'ल' थाय छेः

ड—क्रीडति कीलइ। गरुडः गरुलो। तडागम् तलायं। वडवामुखम् वलयामुहं।

ड—ट

(१) चूलिकापैशाचीमां 'ड' नो 'ट' थाय छे एम केटलाक वैयाकरणो माने छेः

सं०	प्रा०	चू० पै०
डमरुकः	डमरुओ	टमरुको।
तडागम्	तलायं	तटाकं।
प्रतिमा	पडिमा	पटिमा।
मण्डलम्	मंडलं	मंटलं।

ढ—ठ

(२) केटलाकने मते चूलिकापैशाचीमां 'ढ' नो 'ठ' थाय छेः

सं०	प्रा०	चू०पै०	सं०	प्रा०	चू०पै०
गाढम्	गाढं	काठं।	ढक्का	ढक्का	ठक्का।
दंष्ट्रा	दाढा	ताठा	षण्ढः	संढो	संठो।

---

१. पालीभाषामा प्रायः सर्वत्र ड नो ळ थाय छेः-(जु० पा० प्र० पृ० ४३ (ड=ळ)

[1]ण—न

(२) पैशाचीमां 'ण' नो 'न' थाय छे:

सं०	प्रा०	पै०
गणः	गणो	गनो ।
गुणः	गुणो	गुनो ।

[2]न—ण

१३. स्वरपरवर्ती, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'न' नो 'ण' थाय छे:

कनकम् कणयं । नयनम् नयणं । मदनः मयणो । मानते माणइ । वचनम् वयणं । वदनम् वयणं ।

न—ण

१४. संस्कृतमां शब्दनी आदिमां रहेला असंयुक्त 'न' नो विकल्पे 'ण' थाय छे:

नदी णई, नई । नरः णरो, नरो । नयति णेइ, नेइ ।

[3]प—व

१५. स्वरपरवर्ती, असंयुक्त अने एकपदस्थित 'प' नो प्राकृतमां 'व' थाय छे:

उपमा उवमा । उपसर्गः उवसग्गो । गोपतिः गोवई । प्रदीपः पईवो । महिपालः महिवालो ।

१. जुओ० पा० प्र० पृ० ७८ (ण=न)
२. जु० पा० प्र० पृ० ६१ (न=ण)
३. ,, ,, ,, ,, ६३ (प=व)

ठ—कमठः कमढो । कुठारः कुढारो । पठति पढइ । मठः मढो । शठः सढो ।

ड—ल.

१२. स्वरथी पर आवेला, एकपदस्थित अने असंयुक्त 'ड' नो 'ल' थाय छे.

ड—क्रीडति कीलइ । गरुडः गरुलो । तडागम् तलायं । गडवामुखम् वलयामुहं ।

ड—ट

(१) चूलिकापैशाचीमां 'ड' नो 'ट' थाय छे एम केटल वैयाकरणो माने छे:

सं०	प्रा०	चू० पै०
डमरुक.	डमरुओ	टमरुको ।
तडागम्	तलायं	तटाकं ।
प्रतिमा	पडिमा	पटिमा ।
मण्डलम्	मडल	मंटलं ।

ढ—ठ

[illegible] केटलाक मने चूलिकापैशाचीमां 'ढ' नो 'ठ' थाय छे

सं०	प्रा०	चू०पै०	सं०	प्रा०	चू०पै०
गाढम्	गाढं	गाठं ।	ढक्का	ढक्का	ठक्का ।
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मंढो	मंठो ।

१. [illegible] ड नो [illegible] थाय छे:- ([illegible]
[illegible]

ब—प

(१) केटलाक वैयाकरणोने मते चूलिकापैशाचीमां 'ब' ने स्थाने 'प' थाय छे:[1]

सं०	प्रा०	चू०पै०
बालक:	बालओ	पालओ ।
बान्धव:	बन्धवो	पन्धवो ।

[2]ब—व

१८. स्वरपरवर्ती, एक पदस्थित अने असंयुक्त 'ब' नो 'व' थाय छे:

अलाबू: अलावू । शबलम् सवलं ।

म—वँ

(१) अपभ्रंशमां 'म' ने बदले 'वँ' पण बोलाय छे:

सं०	प्रा०	अ०	
कमलम्	कमल	कवँलु,	कमलु ।
तथा	तह तहा.	तिवँ.	तिम ।
भ्रमर	भमरो, भमरो.	भवँरु,	भमरु ।
यथा	जह जहा.	जिवँ,	जिम ।

[1] हे० प्रा० ८. ४. ३२[illegible] (ब=प)

[2] [illegible] (ब=व)

प्रा० ४ [illegible] अलाबु अलाबु ।

प—व

१२. स्वरोनी पर आवेला, असंयुक्त अने अनादिस्थित 'प' नो प्राकृतमां 'व' ज थाय छेः

कलापः कलावो। कपालम् कवालं। कपिलम् कविलं। काश्यपः कासवो। कुणपम् कुणवं। तपति तवइ। पापम् पावं। शपथः सवहो। शापः सावो।

प—ब

(२) अपभ्रंशमां तो 'प' ने स्थाने 'ब' पण बोलाय छेः

सं०	प्रा०	अ०
शपथः	सवहो	सवधु, सबधु।

फ—भ, ह.

१३. स्वरोनी पर आवेला, असंयुक्त अने अनादिस्थित 'फ' नो प्रयोगानुसार 'भ' अने 'ह' थाय छेः

फ—भ—रेफः रेभो। शिफा सिभा।

फ—ह—मुक्ताफलम् मुत्ताहलं।

फ—भ, ह—गुम्फति गुंभइ, गुंहइ। शफरी सभरी, सहरी। सफलम् सभलं, सहलं। शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ।

फ—भ

२, अपभ्रंशमां पण 'फ' नो 'भ' थाय छे

सं०	प्रा०	अ०
सफलम्	सभलं, सहलं	सभलु

[illegible]

नष्टम् नट्टं नट्ठं।
शीष्टम् सट्टं सट्ठं।
मञ्जिष्ठम् मञ्जिट्टं मञ्जिट्ठं।

श–स ष–स

२०. संस्कृतनां वपराता 'श' अने 'ष' नो प्राकृतमां 'स' थाय छे

श—कुशः कुसो। दश दस। नृशंसः निसंसो।
विंशति विसइ। वंशः वंसो। शब्दः सद्दो।
श्यामा सामा। शुद्धम् सुद्धं। शोभते सोहइ।

ष—कषायः कसायो। घोषति घोसइ। निकषः निहसो।
षण्डः संडो।

श, ष—विशेषः विसेसो। शेषः सेसो।

स–श

१. [illegible]
[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
हसः	[illegible]	[illegible]

[1]य=ज

१९. संस्कृत शब्दनी आदिमां आवेला 'य'नो प्राकृतमां 'ज' थाय छे
यमः जमो। यशः जसो। याति जाइ।

य—य

(१) मागधीमां 'य' नो 'ज' न थतां 'य' ज रहे छे:

सं०	प्रा०	मा०
याति	जाइ	यादि।
यथास्वरूपम्	जहासरूवं	यधाशलूवं।
यानपात्रम्	जाणवत्तं	याणवत्तं।

र—ल

(१) मागधीमां 'र' नो 'ल' थाय छे; अने पैशाचीमां तो ए विकल्पे थाय छे:

सं०	प्रा०	मा०	पै०
करः	करो	कलो	करो कलो।
नरः	नरो	नलो	नरो नलो।
विचारः	विआरो	विआलो	विचालो विचारो।

ल—ळ[3]

(१) पैशाचीमां 'ल' नो 'ळ' थाय छे:

कमलम्	कमल	कमळ।
कुलम्	कुल	कुळं।

[1] गवय गवजो गवयो पाली० प्र० पृ० ६२

[2] आ नियम केटलेक ठेकाणे तो लागतो पण नथी यथाख्यातम् अहक्खाय। यथाजातम् अहाजाय। पृ० १०मां जणावेलो बीजो नियम [illegible] शब्दनी आदिमां [illegible] छे [illegible] अहा' यथाख्यात अने यथाजात [illegible] ना आदिना [illegible]

[3] [illegible]

[illegible]

क्षद: खद्धो । [illegible]

क्ष्वोटक: खोडओ ।

क्षण:[3] छणो, (खणो) । [illegible]

क्षार: छारो । क्षीणम् छीणं । [illegible]

छीअं । क्षुध् छुहा । क्षुर: छुरो । [illegible]

क्षीयते झिज्जइ । क्षीणम् झीणं ।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १७ (क्ष=छ, [illegible]) [illegible] पृ० १६.

२ पालीभाषामां 'क्ष' नो 'च' पण थाय छे:-(जु० पा० प्र० पृ० १७ क्ष=च)

३ 'क्षण' शब्दनो 'उत्सव' अर्थ होय त्यारे तेनुं रूप 'छण' थाय छे अने समय अर्थ होय तो 'खण' रूप थाय छे. जु० पा० प्र० पृ. १७-(क्ष=छ, क्षण: खणो छणो)

४ 'क्षमा' शब्दनो 'पृथिवी' अर्थ होय त्यारे तेनुं 'छमा' थाय छे अने क्षमा-क्षमाकरवी-अर्थमां तो 'खमा' रूप ज वपराय छे.

[1]ह–घ

२१. संस्कृतमां अनुस्वारथी पर आवेला 'ह' नो प्राकृतमां विकल्पे 'घ' थाय छे:

संहारः—संघारो, संहारो। सिंहः—सिंघो, सीहो।

—⁂—

[1] एवो पण एकाद प्रयोग मळे छे, ज्यां स्वरथी पर आवेला 'ह' नो पण 'घ' थाय छे दाह—दाघो, दाहो।

प्रकरण ४

संयुक्त व्यंजनोना सामान्य फेरफारो

२२. संस्कृतना 'क्ष' नो विशेषे करीने प्राकृतमां 'ख' थाय छे अने क्यांय क्यांय तो प्रयोगानुसार 'क्ष'नो 'छ' अने 'झ' पण थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'क्ष' नो 'क्ख' 'च्छ' अने 'ज्झ' थाय छेः

[1]क्ष=ख क्ष=छ [2]क्ष=झ

क्षयः खओ। क्षीणम् खीणं। क्षीरम् खीरं। क्ष्वेटकः खेडओ। क्ष्वोटकः खोडओ।

क्षणः[3] छणो, [खणो]। क्षतम् छयं। [4]क्षमा छमा [खमा]। क्षारः छारो। क्षीणम् छीणं। क्षीरम् छीरं। क्षुण्णः छुण्णो। क्षुतम् छीअं। क्षुध् छुहा। क्षुरः छुरो। क्षेत्रम् छेत्तं।

क्षीयते झिज्जइ। क्षीणम् झीणं।

---

१ जु॰ पा॰ प्र॰ पृ॰ १७ (क्ष=ख, क्ष=छ) क्ष=झ–टिप्पण पृ॰ १६.

२ मागधीभाषामां 'क्ष' नो 'क' पण थाय छेः–(जु॰ पा॰ प्र॰ पृ॰ १७ क्ष=क)

३ 'क्षण' शब्दनो 'उत्सव' अर्थ होय त्यारे तेनुं रूप 'छण' थाय छे अने क्षण अर्थ होय तो 'खण' रूप थाय छे. जु॰ पा॰ प्र॰ पृ॰ १७ (क्ष=छ, क्षणः खणो छणो)

४ 'क्षमा' शब्दनो 'पृथ्वी' अर्थ होय त्यारे तेनुं 'छमा' रूप थाय छे अने सहन-क्षमा-अर्थमां तो 'खमा' रूप ज वपराय छे.

[1]ह–घ

२१. संस्कृतमां अनुस्वारथी पर आवेला 'ह' नो प्राकृतमां विकल्पे 'घ' थाय छे:

संहारः—संघारो, संहारो। सिंहः—सिंघो, सीहो।

—⁂—

[1] एवो पण एकाद प्रयोग मळे छे, ज्यां स्वरथी पर आवेला 'ह' नो पण 'घ' थाय छे: दाहः—दाघो, दाहो।

[1]क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ

इक्षुः इक्खू। ऋक्षः रिक्खो[2]। ऋक्षम् रिक्खं। मक्षिका मक्खिआ। लक्षणम् लक्खणं। प्रक्षीणम् पक्खीणं। प्रक्षेपः पक्खेवो। सादृक्ष्यम् सारिक्खं।

अक्षि अच्छि। इक्षुः उच्छू। उक्षा उच्छा। ऋक्षः रिच्छो। ऋक्षम् रिच्छं। कक्षः कच्छो। कक्षा कच्छा। कुक्षिः कुच्छी। कौक्षेयकम् कुच्छेअय। दक्षः दच्छो। प्रक्षीणम् पच्छीणं। मक्षिका मच्छिआ। लक्ष्मीः लच्छी। वक्ष. वच्छं। वृक्षः वच्छो। सदृक्षः सारिच्छो। सादृक्ष्यम् सारिच्छं।

प्रक्षीणम् पज्झीणं।

क्ष=ᳵक

(१) मागधीमां तो 'क्ष' नो ᳵक थाय छेः

यक्षः	जक्खो	यᳵके।
राक्षसः	रक्खसो	लᳵकशे।

२३. संस्कृतना वस्तुवाचक शब्दना 'ष्क' अने 'स्क' नो प्राकृतमां 'ख' थाय छे तथा पदमध्यस्थित ष्क अने 'स्क' नो 'क्ख' थाय छेः

[3]ष्क=ख, क्ख स्क=ख, क्ख

निष्कम् निक्खं। दुष्करम् दोक्करं। पुष्करिणी पोक्खरिणी। अवस्कन्द अवक्खंदो। स्कन्दः खंदो। स्कन्धो खंधो। स्कन्धावारः खंधावारो।

[1] प्रा० पा० प्र० पृ० १७–(क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ–टिप्पण)

[2] ऋक्ष अच्छो, रिक्खो। प्यादृक्षः यक्खो। गाथा ल्हासा। पा० प्र० पृ० १८

[3] प्रा० पा० प्र० पृ० १६–१७ (ष्क=क्ख, स्क=ख, स्क=क्ख)

क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ[1]

इक्षुः इक्खू। ऋक्ष· रिक्खो[2]। ऋक्षम् रिक्खं। मक्षिका मक्खिआ। लक्षणम् लक्खणं । प्रक्षीणम् पक्खीणं । प्रक्षेपः पक्खेवो। सादृश्यम् सारिक्खं।

अक्षि अच्छि। इक्षुः उच्छू। उक्षा उच्छा। ऋक्षः रिच्छो। ऋक्षम् रिच्छं । कक्षः कच्छो । कक्षा कच्छा। कुक्षिः कुच्छी। कौक्षेयकम् कुच्छेअय। दक्षः दच्छो। प्रक्षीणम् पच्छीणं। मक्षिका मच्छिआ। लक्ष्मीः लच्छी। वक्षः वच्छं। वृक्षः वच्छो। सदृक्षः सारिच्छो। सादृक्ष्यम् सारिच्छं।

प्रक्षीणम् पज्झीणं।

क्ष=ᳵक

(१) मागधीमां तो 'क्ष' नो ᳵक थाय छेः

यक्षः	जक्खो	यᳵके।
राक्षसः	रक्खसो	लᳵकशे।

२३. संस्कृतना वस्तुवाचक शब्दना 'ष्क' अने 'स्क' नो प्राकृतमां 'ख' थाय छे तथा पदमध्यस्थित ष्क अने 'स्क' नो 'क्ख' थाय छेः

ष्क=ख, क्ख स्क=ख, क्ख[3]

निष्कम् निक्खं। पुष्करम् पोक्खरं। पुष्करिणी पोक्खरिणी।
अवस्कन्द अवक्खंदो। स्कन्दः खंदो। स्कम्भो खंभो। स्कन्धावारः खंधावारो।

[1] जु० पा० प्र० टू० १७-(क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ-टिप्पण)

[2] ऋच्छ अच्छो इक्को। ध्यादृश धक्को। ... । पा० ट० टू० १८

[3] जु० पा० प्र० टू० ३६–३७ (ष्क=क्ख, स्क=ख, स्क=क्ख)

[1]क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ

इक्षुः इक्खू। ऋक्षः रिक्खो[2]। ऋक्षम् रिक्खं। मक्षिका मक्खिआ। लक्षणम् लक्खणं। प्रक्षीणम् पक्खीणं। प्रक्षेपः पक्खेवो। सादृश्यम् सारिक्खं।

अक्षि अच्छि। इक्षुः उच्छू। उक्षा उच्छा। ऋक्षः रिच्छो। ऋक्षम् रिच्छं। कक्षः कच्छो। कक्षा कच्छा। कुक्षिः कुच्छी। कौक्षेयकम् कुच्छेअय। दक्षः दच्छो। प्रक्षीणम् पच्छीणं। मक्षिका मच्छिआ। लक्ष्मीः लच्छी। वक्ष. वच्छं। वृक्षः वच्छो। सदृक्षः सारिच्छो। सादृक्ष्यम् सारिच्छ।

प्रक्षीणम् पज्झीणं।

क्ष=ॅक

(१) मागधीमां तो 'क्ष' नो ॅक थाय छे:

यक्षः जक्खो यॅके।

राक्षसः रक्खसो लॅकशे।

२३. संस्कृतना वस्तुवाचक शब्दना 'ष्क' अने 'स्क' नो प्राकृतमां 'ख' थाय छे तथा पदमध्यस्थित ष्क अने 'स्क' नो 'क्ख' थाय छे.

[3]ष्क=ख, क्ख स्क=ख, क्ख

निष्कम् निक्खं। पुष्करम् पोक्खरं। पुष्करिणी पोक्खरिणी। अवस्कन्द अवक्खंदो। स्कन्दः खंदो। स्कन्धो खंधो। स्कन्धावारः खंधावारो।

---

[1] प्रा० पा० प्र० पृ० १७-(क्ष=क्ख, क्ष=च्छ, क्ष=ज्झ-टिप्पण)

[2] ऋक्ष. अच्छो, इक्को। ऽादृक्षः भक्को। लाक्षा लाखा। पा० प्र० पृ० १८

[3] प्रा० पा० प्र० पृ० १६-१७ (ष्क=क्ख, स्क=ख, स्क=क्ख)

त्स—उत्सवः उच्छवो। उत्साहः उच्छाहो। उत्सुकः उच्छुओ। निकित्सति निइच्छइ। मत्सरः मच्छरो। संवत्सरः, संवच्छरो।

प्स—अप्सरा. अच्छरा। जुगुप्सति जुगुच्छइ। लिप्सति लिच्छइ।

च्छ—श्च

(१) प्राकृतमां 'श्च' नो 'च्छ' थाय छे त्यारे मागधीमां तो ऊंधी स्थिति थाय छे एटले 'च्छ' नो 'श्च' थाय छे:

उच्छलति	उच्छलइ	उश्चलदि।
गच्छ	गच्छ	गश्च।
तिर्यक्	तिरिच्छि	तिरिश्चि।
पिच्छिलः	पिच्छिलो	पिश्चिले।
पृच्छति	पुच्छइ	पुश्चदि।
वत्सलः	वच्छलो	वश्चले।

[1]द्य, य्य, [2]र्य—ज

२७. पदनी आदिमां रहेला 'द्य', 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'द्य' 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज्ज' थाय छे:

द्य—द्युतिः—जुई। द्योतः—जोओ।

द्य—अवद्यम् अवज्जं। मद्यम् मज्जं। वैद्यः वेज्जो।

य्य—जय्यः जज्जो। शय्या सेज्जा।

र्य—कार्यम् कज्जं। पर्याप्तम् पज्जत्तं। पर्यायः पज्जाओ। भार्या भज्जा। मर्यादा मज्जाया। वर्यम् वज्जं।

---

१ जु० पा० प्र० पृ० १८-(द्य=ज, द्य=ज्ज) पालीमां केटलेक ठेकाणे 'द्य' नो 'य्य' पण थाय छे-पृ० १९-(द्य=य्य, टिप्पण)

२ पालीमां तो 'र्य'नो 'यिर' 'य्य' के 'रिय' थाय छे-(जु० पा० प्र० पृ० १५-१६)

२९. प्रयोगानुसारे क्यांय 'त्व' नो 'च,' 'थ्व' नो 'छ,' 'द्व' नो 'ज' अने 'ध्व' नो 'झ' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'त्व' नो च्च, 'थ्व' नो 'च्छ,' 'द्व' नो 'ज्ज' अने 'ध्व' नो 'ज्झ' थाय छे.

[1]त्व=च्च

कृत्वा किच्चा। चत्वरम् चच्चर। ज्ञात्वा णच्चा। दत्वा दच्चा। भुक्त्वा भोच्चा। श्रुत्वा सोच्चा।

थ्व=च्छ — पृथ्वी पिच्छी।

ध्व=झ — ध्वजः[2] झओ।

द्व=ज्ज — विद्वान् विज्जं।

ध्व=ज्झ — बुध्वा बुज्झा। साध्वसम् सज्झसं।

२१. संस्कृतमां ह्रस्व स्वरथी पर आवेला 'थ्य', 'श्च', 'त्स' अने 'प्स' नो प्राकृतमां 'च्छ' थाय[3] छे.

थ्य–पथ्यम् पच्छ। पथ्या पच्छा। मिथ्या मिच्छा। सामर्थ्यम् सामथ्य–सामच्छ।

[4]श्च—आश्चर्यम् अच्छेरं। पश्चात् पच्छा। पश्चिमम् पच्छिमं। वृश्चिकः विंछिओ।

---

१ जु० पा० प्र० सू० १८ (टिप्पण–चत्वरम् चच्चर)

२ ध्वजः धजो–(पा० प्र० सू० ३२–नि० १८)

३ जु० प० प्र० सू० २१ (थ्य=च्छ) सू० १८–(श्च=च्छ) सू० २९–(त्स=च्छ] सू० १८–(प्स=च्छ)

४ एक मात्र 'निश्चल' शब्दने आ नियम लागतो नथीः निश्चलः=निच्चलो, पाली–निच्चलो

त्स—उत्सव: उच्छवो । उत्साह: उच्छाहो । उत्सुक: उच्छुओ । चिकित्सति चिइच्छइ । मत्सर: मच्छरो । संवत्सर: संवच्छरो ।

प्स—अप्सरा अच्छरा । जुगुप्सति जुगुच्छइ । लिप्सति लिच्छइ ।

च्छ—श्च

(1) प्राकृतमां 'च्छ' नो 'च्छ' थाय छे त्यारे मागधीमां तो पूर्वी तुरत ज थाय छे एटले 'च्छ' नो 'श्च' थाय छे

उच्छलति	उच्छलइ	उश्चलदि ।
गच्छ	गच्छ	गश्च ।
पिच्छिल	पिच्छिल	पिश्चिल ।
विच्छिन्न	विच्छिन्नो	विश्चिन्ने ।
पृच्छति	पुच्छइ	पुश्चदि ।
वत्सल	वच्छलो	वश्चले ।

द्य, य्य, र्य—ज्ज

२७. पदनी आदिमां रहेला 'द्य', 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज' थाय छे तथा पदमध्यस्थित 'द्य' 'य्य' अने 'र्य' नो 'ज्ज' थाय छे.

द्य—द्युति: जुई । द्योत: जोओ ।

द्य—अवद्यम् अवज्जं । मद्यम् मज्जं । वैद्य: वेज्जो ।

य्य—जय्य: जज्जो । शय्या सेज्जा ।

र्य—कार्यम् कज्जं । पर्याप्तम् पज्जत्तं । पर्याय: पज्जाओ । भार्या भज्जा । मर्यादा मज्जाया । वर्यम् वज्जं ।

---

१ हे० प्रा० व्या० सू० १८-(द=ज, न=ज) प्राकृतमां केटलेक ठेकाणे 'द्य' नो 'य्य' पण थाय छे—सू० १९-(द=य्य, हिय्यअ)

२ पालीमां तो 'र्य'नो 'रिय' 'य्य' के 'रिय' थाय छे—(हे० प्रा० व्या० सू० १५-१६)

र्य–य्य[1]

(१) शौरसेनीमां 'र्य' नो विकल्पे 'य्य' थाय छे

आर्यपुत्रः	अज्जउत्तो	अय्यउत्तो,	अज्जउत्तो ।
कार्यम्	कज्जं	कय्यं,	कज्जं ।
पर्याकुलः	पज्जाउलो	पय्याकुलो,	पज्जाकुलो ।
सूर्यः	सुज्जो	सुय्यो,	सुज्जो ।

द्य—य्य[2]

(१) मागधीमां 'द्य' नो 'य्य' थाय छेः

अद्य	अज्ज	अय्य ।
मद्यम्	मज्जं	मय्यं ।
विद्याधरः	विज्जाहरो	विय्याहले ।

[3]ध्य, ह्य–झ

२८. पदादिभूत 'ध्य' अने 'ह्य' नो 'झ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ध्य' तथा 'ह्य' नो 'ज्झ' थाय छेः

ध्य–ध्यानम् झाणं । ध्यायति झायइ ।

उपाध्यायः उवज्झायो । बध्यते बज्झइ । विन्ध्यः विंझो[4] ।

साध्यम् सज्झं । स्वाध्यायः सज्झाओ ।

[5]ह्य–गुह्यम् गुज्झं । नह्यति नज्झइ । मह्यम् मज्झं । सह्य. सज्झो ।

---

१ जूओ टिप्पण २ जुं पृ॰ ३३ ।

२ जूओ टिप्पण १ लुं पृ॰ ३३ ।

३ जु॰ पा॰ प्र॰ पृ॰ १९–(ध्य=झ, ह्य=ज्झ)

४ अनुस्वारथी अने गुरु के दीर्घस्वरथी पर आवेला कोइ पण व्यंजनना स्थानमां अहीं जणावेला द्विरुक्त(क्ख, ज्झ वगेरे) विधानो थतां नथी. माटे ज 'विन्ध्यः' नुं 'विंज्झो' नहि पण 'विंझो' थयु. जूओ पा॰ प्र॰ पृ॰ १९ टि॰ संध्या संझा ।

५ पालीमां 'ह्य' नो 'य्ह' थाय छे–(पा॰ प्र॰ पृ॰ २२–ह्य=य्ह)

र्त—ट्ट

१९. संस्कृतना 'र्त' नो प्राकृतमां आगम्य थीने 'ट्ट' थाय छे।
कैवर्तं केवट्टो। वर्तं वट्टो। नर्तकी नट्टई। प्रवर्तते पवट्टइ। राजवर्तकम् रायवट्टयं। वर्ती वट्टी। वर्तुलम् वट्टुलं। वार्ता वट्टा। संवर्तितम् संवट्टिअं।

न्त—न्द

(१) शौरसेनीमां नवया पदमां 'न्त' नो 'न्द' थाय छे

अन्तःपुरम्	अन्तेउरं	अन्देउरं।
निश्चिन्त	निच्चिन्तो	निच्चिन्दो।
महान्त	महंतो	महंदो।

* १९ नो नियम नीचे प्रमाणे। एटलामां लागतो नथी अर्थात् नीचेना शब्दोना 'र्त' नो 'ट्ट' थतो नथी

आवर्तक: आवत्तओ।	प्रवर्तक: पवत्तओ।
आवर्तनम् आवत्तणं।	प्रवर्तनम् पवत्तणं।
उत्कर्तितम् उक्कत्तिअं।	मुहूर्तः मुहुत्तो।
कर्ता कत्ता।	मूर्तः मुत्तो।
कार्तिक: कत्तिओ।	धूर्तः धुत्तो।
कीर्तिः कित्ती।	वर्तिका वत्तिआ।
मूर्तः मुत्तो।	वार्तिकम् वत्तिअं।
निवर्तक: निअत्तओ।	संवर्तक: संवत्तओ।
निवर्तनम् निअत्तणं।	संवर्तनम् संवत्तणं।
निर्वर्तक निव्वत्तओ।	

(जुओ हे० ८-२-३० [illegible])

१ हे० प्रा० व्या० ८-४-२६० (न्त=न्द)

'म्न, ज्ञ—ण

२० 'संस्कृतना 'म्न' अने 'ज्ञ' नो प्राकृतमां 'ण' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'म्न' अने 'ज्ञ' नो 'ण्ण' थाय छे:

म्न—निम्नम् निण्णं। प्रद्युम्नः पज्जुण्णो।

ज्ञ—प्रज्ञा पण्णा। विज्ञानम् विण्णाणं। आज्ञा आणा[1]।

ज्ञानम् णाणं। संज्ञा संणा[2]।

'ज्ञ, ञ्ज, ण्य, न्य—ञ्ञ

(१) प्राकृतमां 'ज्ञ' नो 'ण' थाय छे त्यारे मागधीमां 'ज्ञ' नो 'ञ्ञ' थाय छे अने 'ञ्ज,' 'ण्य' अने 'न्य' नो पण 'ञ्ञ' थाय छे:

ज्ञ—अवज्ञा	अवण्णा	अवञ्ञा।
प्रज्ञा	पण्णा	पञ्ञा।
सर्वज्ञः	सव्वण्णू	शव्वञ्ञे।
ञ्ज—अञ्जलिः	अञ्जली	अञ्ञली।
धनञ्जयः	धणंजयो	धणञ्ञए।
प्राञ्जलः	पंजलो	पञ्ञले।
ण्य—अब्रह्मण्यम्	अबम्हण्णं	अबम्हञ्ञं।
पुण्यम्	पुण्णं	पुञ्ञं।
पुण्यवान्	पुण्णवंतो	पुञ्ञवन्ते।
न्य—अभिमन्युः	अहिमन्नू	अहिमञ्ञू।
कन्यका	कन्नगा	कञ्ञका।
सामान्यम्	सामन्नं	शामञ्ञं।

[1] [illegible] (अवज्ञा) [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible]

[2] [illegible] यु.

[3] [illegible] ([illegible], [illegible], [illegible])

[1]स्त–थ

२१ संस्कृतना 'स्त'नो प्राकृतमां 'थ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'स्त' नो 'त्थ' थाय छे:[2]

स्तवः थवो । स्तम्भः थंभो । स्तब्धः थद्धो [ठद्धो] स्तुतिः थुई । स्तोकम् थोअं । स्तोत्रम् थोत्तं । स्त्यानम् थीणं ।

अस्ति अत्थि । पर्यन्तः पज्जत्थो । प्रशस्तः पसत्थो । प्रस्तरः पत्थरो । स्वस्ति सत्थि । हस्तः हत्थो ।

र्थ, स्थ—स्त

(१) 'र्थ' अने 'स्थ' नो मागधीमां 'स्त' थाय छे:

अर्थपतिः	अत्थवई	अस्तवदी ।
सार्थवाहः	सत्थवाहो	शस्तवाहे ।
उपस्थितः	उवट्ठिओ	उवस्तिदे ।
सुस्थितः	सुट्ठिओ	सुस्तिदे ।

[3]ष्ट–ठ

२२ संस्कृतना 'ष्ट' नो प्राकृतमां 'ठ' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ष्ट' नो 'ट्ठ' थाय छे:[4]

---

१ जु० पा० प्र० पृ० २७–(स्त=थ, स्त=त्थ)

२ 'समस्त' अने 'स्तम्ब' शब्दना 'स्त' नो 'थ' थतो नथीः समस्तम् समत्तं । स्तम्बः तम्बो ।

३ जु० पा० प्र० पृ० २६ (ष्ट=ठ)

४ इष्ट, उष्ट्र अने संदष्ट शब्दना 'ष्ट' नो 'ठ' थतो नथीः इष्ट इट्ट । उष्ट्रः उट्टो । संदष्टम् संदट्टं । जुओ पा० प्र० पृ० २६ टिप्पण।

अनिष्टम् अणिट्ठं । इष्टः इट्ठो । कष्टम् कट्ठं । काष्टम् कट्ठं । दष्टः दट्ठो । दृष्टिः दिट्ठी । पुष्टः पुट्ठो । मुष्टिः मुट्ठी । यष्टिः लट्ठी । सुराष्ट्राः सुरट्ठा । सृष्टिः सिट्ठी ।

ट्ट, ष्ठ—स्ट

(१) 'ट्ट' अने 'ष्ठ' नो मागधीमा 'स्ट' थाय छेः

ट्ट—पट्टः पट्टो पस्टे । भट्टारिका भट्टारिया भस्टालिका

भट्टिनी भट्टिणी भस्टिणी ।

ष्ठ—कोष्ठागारम् कोट्ठागार कोस्टागालं ।

सुष्ठु सुट्ठु शुस्टु ।

ष्ट–सट

(१) पैशाचीमा 'ष्ट' ना स्थाने 'सट' बोलाय छेः

कष्टम् कट्ठं कसटं ।

दृष्टम् दिट्ठं दिसटं ।

[1]ड्म, [2]क्म–प

३३ संस्कृतना 'ड्म' अने 'क्म'नो[1] प्राकृतमा 'प' थाय छे अने पदमध्यस्थित 'ड्म' अने 'क्म' नो 'प्प' थाय छेः

[3]कुड्मलम् कुप्पलं ।

रुक्मिणी रुप्पिणी ।

१–२ पालीमा तो 'ड्म' नो 'ड्डुम' अने 'क्म' नो 'कुम' थाय छे– (जु० पा० पृ० ८९)

१ कोइ एक ठेकाणे 'क्म' नो 'च्म' पण थाय छे –रुक्मी रुच्मी,

कुड्मलम्–कुडुमलं (पा० प्र० पृ० ८३ टिप्पण)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स—निराशः निराशौ । निरीश निरीशौ । [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] सुन्दर्यौ ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[1]श्म, ष्म, स्म, ह्म, क्ष्म—म्ह.

१८ संस्कृतमां प्रयोजाता 'श्म', 'ष्म', 'स्म', 'ह्म' अने पक्ष्मना 'क्ष्म'नो प्राकृतमां 'म्ह' [2]थाय छे:

श्म—कश्मीराः कम्हारा । कुश्मानः कुम्हाणो ।

ष्म—ऊष्मा उम्हा । ग्रीष्मः गिम्हो ।

स्म—अस्मादृशः अम्हारिसो । विस्मयः विम्हओ ।

ह्म—ब्रह्मा बम्हा । ब्राह्मणः बम्हणो । ब्रह्मचर्यम् बम्हचेरं
सुह्मा सुम्हा ।

क्ष्म—पक्ष्मल्म् पम्हलं । पक्ष्माणि पम्हाइं ।

(१) अपभ्रंशमां 'म्ह' ना स्थाने 'म्भ' पण बोलाय छे:

ग्रीष्म	गिम्हो	गिम्भो,	गिम्हो ।
श्लेष्मा	सिम्हो	सिम्भो,	सिम्हो ।

[3]श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण, क्ष्म—ण्ह

१९ संस्कृतमां प्रयोजाता 'श्न', 'ष्ण', 'स्न', 'ह्न', 'ह्ण', 'क्ष्ण' अने सूक्ष्मना 'क्ष्म'नो 'ण्ह' थाय छे:

श्न—प्रश्न पण्हो । शिश्न सिण्हो ।

ष्ण—उष्णीषम् उण्हीसं । कृष्णः कण्हो । विष्णु विण्हू
विष्णु विण्हू

स्न—ज्योत्स्ना जोण्हा । प्रस्नुत पण्हुओ । स्नात ण्हाओ ।

ह्न—जह्नु जण्हू । वह्नि वण्ही ।

---

१ जुओ पा० व्या० सू० ७४—(श्म=म्ह, ष्म=म्ह, स्म=म्ह)

२ आ नियम कदाचित् ठेकाणे लागतो नथी —रश्मि रस्सी । स्मर सरो —जुओ पा० व्या० सू० ९२—(१०=म)

३ जुओ पा० व्या० सू० ६६ (नियम-९१) तथा सू० ६३ मां ष्ण–ण्ह [illegible] सू० ६८ [illegible] पुण्वण्हो ।

१६— असाहः असाहो। दुर्वहः दुर्वहो
१७— [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]।
१८— [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]।

न—मिन

(१) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ह—ह

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ई—ए

[illegible]

र्श, र्ष–रिस

४३ संस्कृतना 'र्श' अने 'र्ष' नो प्राकृतमां 'रिस' विकल्पे थाय छे:

र्श—आदर्शः आयरिसो, आयंसो । दर्शनम् दरिसणं, दंसणं । सुदर्शनः सुदरिसणो, सुदंसणो ।

र्ष—वर्षम् वरिसं, वासं । वर्षशतम् वरिससयं, वाससयं । वर्षा वरिसा, वासा ।

ल–इल

४४ संस्कृतना संयुक्त 'ल' नो 'इल' थाय छे:

अम्लम् अबिलं । क्लाम्यति किलम्मइ । क्लाम्यत् किलंतं । क्लिष्टम् किलिट्ठं । क्लिन्नम् किलिन्नं । क्लेशः किलेसो । ग्लायति गिलाइ । ग्लानम् गिलाणं । प्लुष्टम् पिलुट्ठं । प्लोषः पिलोसो । म्लायति मिलाइ । म्लानम् मिलाणं । श्लेषः सिलेसो । श्लेष्मा सिलिम्हा । श्लोकः सिलोओ । श्लिष्टम् सिलिट्ठं । शुक्लम् सुइलं ।

र्य–रिअ

४५ संस्कृतना 'र्य' व्यंजननो प्राकृतमां 'रिअ' थाय छे

आचार्यः आयरिओ । गाम्भीर्यम् गंभीरिअं । गाम्भीर्यम् गहीरिअं । चौर्यम् चोरिअं । धैर्यम् धीरिअं । ब्रह्मचर्यम् बम्हचरिअं । भार्या भारिआ । वर्यम् वरिअं । वीर्यम् वीरिअं । स्थैर्यम् थेरिअं । सूर्यः सूरिओ । सौन्दर्यम् सुंदरिअं । शौर्यम् सोरिअं ।

---

१ जु० पा० प्र० सू० ११ टिप्पण–अप्र [illegible] । आर्द्रम् आल्लं ।

२ ,, ,, ,, ,, ३१ (नि० ३०)

३ आ नियम क्यांक क्यांक लागतो नथी —[illegible] । [illegible] ।

४ जुओ पृ० ३३–२ मा नियम उपरनुं टिप्पण

(ख) [1]अ=इ—

नीचे जणावेला शब्दोनां चिह्नित 'अ' नो 'इ' थाय छे—ते क्यांय नित्य थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

ईषत् इसि। उत्तम: उत्तिमो। कृपण: किविणो। दत्तम् दिण्णं। मरिचम् मिरिअं। मध्यम: मज्झिमो। मृदङ्ग: मुइंगो। वेतस: वेडिसो। व्यजनम् विअणं। व्यलीकम् विलिअं। स्वप्न: सिविणो।

वैकल्पिक उदाहरणो:—

अङ्गार: इंगालो, अंगारो। ललाटम् णिडालं, णडालं।
पक्वम् पिक्कं, पक्कं। सप्तपर्ण: छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो।

(ग) अ=ई—

नीचे आपेला शब्दना आद्य 'अ' नो विकल्पे 'ई' थाय छे:

हर: हीरो, हरो।

(घ) [2]अ=उ—

नीचे जणावेला शब्दोनां चिह्नित 'अ' नो 'उ' थाय छे—ते क्यांय नित्य थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

अभिज्ञ:	अहिण्णू।	गवय:	गउओ।
आगमज्ञ:	आगमण्णू।	गवया:	गउआ
कृतज्ञ:	कयण्णू।	ध्वनि:	झुणी।
विज्ञ:	विण्णू।	विष्वक्	वीसुं
सर्वज्ञ:	सव्वण्णू।		[3]इत्यादि।

---

१ जुओ नं० १० ४६-(स्वप्न)

२ जुओ नं० १० ४६-(अ=उ)

३ आगम वगेरे शब्दोमां 'ज्ञ' नो 'ण्ण' थयेलो समजवानो छे.

प्रकरण ५

उपर एटले प्रकरण २-३-४मां आपेला नियमो सामान्य नियमो कहेवाय छे एटले ज्यां कोई बीजो खास नियम न लागतो होय त्यां ए ज नियमो लागू थाय छे. आ नीचे जे नियमो आपवामां आवे छे ते विशेष नियमो छे एटले ज्यां आ नियमोनी प्राप्ति थती होय त्यां सामान्य नियमो न लगाडतां प्रथम आ ज नियमो लगाववाना छे.

स्वरना विशेष विकारो

४८ 'अ' विकार

(क) [1]अ=आ—

नीचे जणावेला शब्दोमां आदिना 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे:

अभियातिः आहिआई, अहिआई। प्रतिस्पर्धी पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी।
अस्पर्श. आफंसो, अफंसो। प्रवचनम् पावयण, पवयणं।
चतुरन्तम् चाउरंत, चउरंतं। प्ररोहः पारोहो, परोहो।
दक्षिण दाहिणो, दक्खिणो। प्रवासी पावासू, पवासू।
परकीयम् पारकेरं, परकेरं। प्रसिद्धिः पासिद्धी, पसिद्धी।
परकीयम् पारक्कं, परक्कं। प्रसुप्तः पासुत्तो, पसुत्तो।
पुनः पुणा, पुण। मनस्वी माणंसी, मणंसी।
प्रकटम् पायड, पयड। मनस्विनी माणंसिनी, मणंसिणी।
प्रतिपत् पाडिवआ, पडिवआ। समृद्धिः सामिद्धी, समिद्धी।
प्रतिसिद्धि पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी। सदृक्ष. सारिच्छो, सरिच्छो
इत्यादि।

---

१ प्रा० व्या० पृ० ५३-(अ=आ)

(ङ) अ=अइ—

'मय' प्रत्ययांत शब्दमां अन्त्य 'म' ना 'अ' नो विकल्पे [illegible] थाय छे

नलमयम्	नलमइअं,	नलमय।
विषमयम्	विसमइअं,	विसमअं।
दुःखमयम्	दुहमइअं,	दुहमय।
सुखमयम्	सुहमइअं,	सुहमय।

(च) अ=आइ—

न पुनः—न उणाइ, न उणो।

पुनः—पुणाइ, पुणो।

(छ) 'अ' लोप—

अरण्यम्—रण्णं, अरण्णं।

अलाबू—लाउ, अलाउ।

४९ 'आ' विकार—

(क) आ=अ—

केटलाक [illegible] शब्दोमां अने [illegible] 'आ' नो 'अ' थाय छे—[illegible] [illegible] थाय छे

[illegible] [illegible]।	[illegible] [illegible]।
कालिक [illegible]।	[illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible]।	[illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible]।	[illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible]।	[illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible]।	[illegible] [illegible]।
	[illegible] [illegible]।

[illegible]

वैकल्पिक उदाहरणोः

खण्डितः	खुडिओ,	खंडिओ।
चण्डम्	चुडं,	चंडं।
प्रथमम्	पुढमं, पढुमं, पुढुमं,	पढमं।
स्वपिति	सुवइ,	सोवइ।

(क) [1]अ=ए—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'ए' थाय छे–ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छेः

अत्र	एत्थ।	ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं।
अन्तःपुरम्	अन्तेउरं।	[2]शय्या	सेज्जा।
अन्तश्चारी	अंतेआरी।	सौन्दर्यम्	सुन्देरं।
कन्दुकम्	गेन्दुअं।		

वैकल्पिक उदाहरणो—

आश्चर्यम् अच्छेरं, अच्छरिअं। पर्यन्तः पेरंतो, पज्जंतो।
उत्करः उक्केरो, उक्करो। वल्ली वेल्ली, वल्ली।

(ख) अ=ओ—

नीचे जणावेला शब्दोमां चिह्नित 'अ' नो 'ओ' थाय छे—ते क्यांय नित्ये थाय छे अने क्यांय विकल्पे थाय छेः

नमस्कारः नमोक्कारो। पद्मम् पोम्म। परस्परम् परोप्परं।

वैकल्पिक उदाहरणो—

अर्पयति ओप्पेइ, अप्पेइ। स्वपिति सोवइ, सुवइ।
अर्पितम् ओप्पिअं, अप्पिअं।

---

१ पाली प्र० ह० ५२–(अ=ए)
२ दम्मा सेय्या (पाली)

(उ) अ=अइ—

'मय' प्रत्ययांत शब्दमां आवेला 'य' ना 'अ' नो विकार थाय छे:

नलमयम्	नलमइअं,	नलमयं।
विषमयम्	विसमइअं,	विसमयं।
दुःखमयम्	दुहमइअं,	दुहमयं।
मुखमयम्	मुहमइअं,	मुहमयं।

(ऊ) अ=आइ—

न पुनः—न उणाइ, न उणो।

पुनः—उणाइ, उणो।

(ऋ) 'अ' लोप—

अरण्यम्—रण्णं, अरण्णं।

अलाबू—लाऊ, अलाऊ।

(ए) अं=अ—

१२. 'आ' विकार—

नीचे सूचवेला शब्दोमां अने [illegible] 'आ' नो 'अ' थाय छे—[illegible] थाय छे:

आचार्यः आयरिओ।	[illegible]
कांचिदः [illegible]।	[illegible]
कांचन [illegible]।	[illegible]
पान्दरः [illegible]।	[illegible]
पांसनः [illegible]।	[illegible]
पांसुः [illegible]।	[illegible]

१ [illegible]

२ [illegible]

३ [illegible]

४ [illegible]

वैकल्पिक उदाहरणो—

उत्खातम् उक्खयं, उक्खायं। पूर्वाह्णः पुव्वण्हो, [1]पुव्वाण्हो।
कालकः कलओ, कालओ। बलाका बलया, बलाया।
कुमारः कुमरो, कुमारो। ब्राह्मणः बम्हणो, बाम्हणो।
खादिरम् खइरं, खाइरं। स्थापितः ठविओ, ठाविओ।
चामरः चमरो, चामरो। (परिष्ठापितः परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ।
तालवृन्तम् तलवेंटं, तालवेंटं। संस्थापितः संठविओ, संठाविओ।)
नाराचः नराओ, नाराओ। हालिकः हलिओ, हालिओ इत्यादि.
प्राकृतम् पययं, पाययं।

अव्ययो—

अथवा अहव, अहवा। तथा तह, तहा।
यथा जह, जहा। वा व, वा। हा ह, हा इत्यादि।

(ख) आ=इ —

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'आ' नो विकल्पे 'इ' थाय छे:

आचार्यः आइरिओ, आयरिओ।
कूर्पासः कुप्पिसो, कुप्पासो।
निशाकरः निसिअरो, निसाअरो।

(ग) आ=ई—

खल्वाटः खल्लीडो।
स्त्यानम् ठीणं (थीणं[2])।

(घ) आ=उ—

आर्द्रम् उल्लं। सास्ना सुण्हा। स्तावकः थुवओ।

---

१ आ बधे रूपो आचार्य हेमचन्द्रने संमत नथी प्रा० व्या० अ० ८-१-६७-वृ० १३

२ जुओ पृ० ३७ नि० ३१

(उ) आ=ऊ—

आर्या अज्जू[1] ।

आसार: ऊसारो, आसारो (वैकल्पिक)

(ए) आ[2]=ए—

ग्राह्यम्[3] गेज्झं ।

वैकल्पिक—

अनर्हार्घ्यः अनहेज्जो, अनहज्जो ।
एतावन्मात्रम् एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं ।
भोजनमात्रम् भोअणमेत्तं, भोअणमत्तं ।
द्वारम् देरं, दारं ।
पारापतः पारेवओ, पारावओ ।
पश्चात्कर्म पच्छेकम्मं, पच्छाकम्मं ।
पुराकर्म पुरेकम्मं, पुराकम्मं ।

(ओ) आ=ओ—

आर्द्रम् ओल्लं । आली ओली[5] ।

१० इ—विकार

(क) इ[6]=अ—

इति[7] इअ । तित्तिरिः तित्तिर–तित्तिरो । पथिन् पह–

---

१ आ शब्दनो प्रयोग 'सासू' अर्थमां ज थाय छे।

२ पा॰ प्र॰ पृ॰ ५३ [आ=ए]

३ वैदिक 'गृभम्' (ऋ॰ ३–१–११८) उपरथी प्रा॰ 'गेज्झं' विशेष सुघट जणाय छे.

४ जुओ पृ॰ ३३ नि॰ २७

५ आ शब्दने 'पंक्ति' अर्थमां ज वापरवानो छे: —ओली— पु॰ ओळ, ओळडुं ।

६ पा॰ प्र॰ पृ॰ ५३– (इ=अ)

७ आ अव्ययने वाक्यनी आदिमां ज वापरवानुं छे.

पहो । पृथिवी पुहई । प्रतिश्रुत् पडंसुआ । बिभीतकः बहेडओ
मूषिकः मूसओ । हरिद्रा हलद्दा ।

वैकल्पिक—

इङ्गुदम् अंगुअं, इंगुअं ।
शिथिलम् सढिलं, सिढिलं ।
[प्रशिथिलम् पसढिलं, पसिढिलं ।]

(ग) इ = ई—

जिह्वा जीहा । त्रिंशत् तीसा ।
विंशति वीसा । सिंहः सीहो ।

वैकल्पिक—

निस्सरति नीसरइ, निस्सरइ ।
निस्सहान् नीसहं, निस्सहं ।

(घ) इ = उ—

इक्षुः उच्छू । द्विविधः दुविहो ।
द्वि दु । नि णु
द्विजाति दुआई । नि नु ।
द्विधा दुहा । निमज्जति णुमज्जइ ।
द्विमात्र दुमत्तो । निमग्नः णुमन्नो ।
द्विरेफ दुरेहो । प्रवासिन् पावासु—पावासू ।
द्विवचन दुवयणं । प्रवासिक पावासुओ ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वैकल्पिक—

युधिष्ठिरः जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो।

द्विगुनः दुउणो, बिउणो।

द्वितीयः दुइओ, बिइओ।

(च) इ=ए—

निरा मेरा

वैकल्पिक—

किंशुकम् केसुअं, किंसुअं।

(छ) इ=ओ—

द्विवचनम् दोवयणं।

वैकल्पिक—

द्विधा दोहा, दुहा।

(ज) नि=ओ—

वैकल्पिक—

निर्झरः ओज्झरो, निज्झरो।

(झ) इ=अ—

११ ई—विकार

हरीतकी हरडई।

---

१ जुओ प्रा० व्या० ८.१.९३–(इ=उ)

२ जुओ प्रा० व्या० ८.१.९३– (इ=ओ)

३ व्याकरण रीते आ बन्ने शब्दनो प्रयोग 'कृ' धातुनी पूर्वे थाय छे:– द्विधा क्रियते दुहा किज्जइ, दोहा किज्जइ। द्विधा कृतम् दुहा क(कि)अं, दोहा क(कि)अं।

४ जुओ प्रा० व्या० ८.१.९३– (इ=अ)

५ हरीतकी हरडकी (पाली)

(ख) ई=आ —

कश्मीराः कम्हारा ।

(ग) ई=इ—

नीचेना शब्दोमा 'ई' नो 'इ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छे:—

अवसीदत् ओसिअंत ।	द्वितीयम् दुइअं ।
आनीतम् आणिअं ।	प्रदीपितम् पलिविअं ।
गभीरम् गहिरं ।	प्रसीद पसिअ ।
जीवतु जिवउ ।	वल्मीकः वम्मिओ ।
तदानीम् तयाणिं ।	व्रीडितम् विलिअं ।
तृतीयम् तइअं ।	शिरीषः सिरिसो ।

वैकल्पिक—

अलीकम्	अलिअं,	अलीअं ।
उपनीतम्	उवणिअं,	उवणीअं ।
करीषः	करिसो,	करीसो ।
जीवति	जिवइ,	जीवइ ।
पानीयम्	पाणिअं,	पाणीअं ।

(घ) ई=उ—

जीर्णम्	जुण्णं,[1]	जिण्णं ।

(ङ) ई=ऊ—

तीर्थम्	तूहं[2]

---

१ जिण्ण (पाली)

२ 'तीर्थ' शब्दनु 'तूह' रूप देतां 'थ' नो 'ह' थया पछी ज थाय छे, अन्यथा–'तित्थं'।

वैकल्पिक—

विहीनः विहूणो, विहीणो।

हीनः हूणो, हीणो।

(च) ई=ए—

आपीडः आमेळो। ईदृशः एरिसो।

कीदृशः केरिसो। पीयूषम् पेऊसं।

बिभीतकः बहेडओ।

वैकल्पिक—

नीडम् नेडं, नीडं।

पीठम् पेढं, पीढं।

६२ उ-विकार

(क) [1]उ=अ—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित 'उ' नो 'अ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:

अगुरु अगरुं।

गुडूची गलोई।

गुर्वी गरुई। मुकुलः मउलो।

मुकुटः मउडो। मुकुलम् मउलं।

मुकुरम् मउरं। युधिष्ठिरः जहुट्ठिलो।

सौकुमार्यम् सोअमल्लं।

वैकल्पिक—

उपरि अवरिं, उवरिं। गुरुकः गरुओ, गुरुओ।

(ख) उ=इ—

[2]पुरुषः पुरिसो। पौरुषम् पउरिसं। भ्रुकुटिः भिउडी।

---

१ मुकुलम् मकुलं (पाली प्र॰ पृ॰ ५२–उ=अ)

२ पाली प्र॰ पृ॰ ५४ (उ=इ)

(ख) ई=आ—

कश्मीराः कम्हारा ।

(ग) ई=इ—

નીચેના શબ્દોમાં 'ई' નો 'इ' થાય છે–તે ક્યાંક નિત્યે અને ક્યાંક વિકલ્પે થાય છે:—

आसीदत् ओसिअंतं ।	द्वितीयम् दुइअं ।
आनीतम् आणिअं ।	प्रदीपितम् पलिविअं ।
गभीरम् गहिरं ।	प्रसीद पसिअ ।
नीवतु निवउ ।	वल्मीकः वम्मिओ ।
तदानीम् तयाणिं ।	व्रीडितम् विलिअं ।
तृतीयम् तइअं ।	शिरीषः सिरिसो ।

વૈકલ્પિક—

अलीकम्	अलिअं,	अलीअं ।
उपनीतम्	उवणिअं,	उवणीअं ।
करीष	करिसो,	करीसो ।
नीवनि	निवइ,	नीवइ ।
पानीयम्	पाणिअं,	पाणीअं ।

(घ) ई=उ—

नीडम्	नुम्म,[1]	निम्मं ।

(ङ) ई=ऊ—

नीडम्	नूढ[2]

---

१ [illegible] ([illegible])

२ [illegible]

वैकल्पिक—

कुतूहलम् कोउहल्लं, कोउहल्लं।
मधूकम् महुअं, महुअ।

(छ) ऊ=ए—

नूपुरम् नेउरं, नूउरं।

(ज) ऊ=ओ—

नीचेना शब्दोमां 'ऊ' नो 'ओ' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छेः—

'कूर्परम् कोप्परं।
कूष्माण्डी कोहण्डी।
'गुडूची गलोई।
ताम्बूलम् तंबोलं।
तूणीरम् तोणीरं।
मूल्यम् मोल्लं।
स्थूलम् थोरं।

वैकल्पिक—

तूणम् तोणं, तूणं।
स्थूणा थोणा, थूणा।

१४ ऋ—विकार

(क) ऋ=आ—

कृशा कासा, किसा।
मृदुकम् माउक, मउअं।
मृदुत्वम् माउक्कं, मउत्तण।

(ख) 'ऋ=इ—

नीचेना शब्दो...
...यांय विक...

(..)

[illegible] (ऊ=उ)

[illegible] (ऊ=र) नियम।

कृच्छ्रम् किच्छं। कृति किई। कृत्ति. किची। कृत्या कि
कृपः किवो। कृपण. किविणो। कृपा किवा। कृपाणम् कि
कृशः किसो। कृशानुः किसाणू। कृपिन किमिओ। कृसरा कि
गृद्धिः गिद्धी। गृद्धि गिद्धी। घुसृणम् घुसिण। घृणा घिण
तृणम् तिणं। दृष्टम् दिट्ठं। दृष्टि दिट्ठी। धृति धिई
नप्तृकः नत्तिओ। नृप. निवो। नृशंस. निसंसो। पृथक् पिहं
पृथ्वी पिच्छी। बृंहितः बिंहिओ। भृङ्ग. भिंगो। भृङ्गार. भिंगारो
भृगुः भिऊ। मातृ माई (मातृणाम् माईण) मृदङ्ग. मिइंगो
मृष्टम् ¹मिट्ठं। वितृष्णः विइण्हो। वृश्चिकः विञ्छुओ। वृत्तम् विंटं
वृत्तिः वित्ती। वृद्धकविः विद्धकई। वृष्टः विट्ठो। वृष्टिः विट्ठी
वृसी विसी। व्याहृतम् वाहिअं (त्तं)। शृगालः सिआलो
शृङ्गारः सिंगारो। सकृत् सइ। समृद्धिः समिद्धी। सृष्टम् सिट्ठं।
सृष्टिः सिट्ठी। स्पृहा छिहा। हृतम् हिअ। हृदयम् हिअय।

वैकल्पिक—

धृष्टः धिट्ठो, धट्ठो। पृष्टम् ²पिट्ठं, पट्ठं। [पृष्टिः पिट्ठी, पट्ठी]
बृहस्पतिः बिहप्फई, बहप्फई। मसृणम् मसिणं, मसण।
³मातृगृहम् माइहरं, माउहरं। मातृमण्डलम् माइमंडलं, माउमंडलं।
⁴कण्डूयनम् कंडुयणं। ...मृगाङ्कः मिअंको। मयंको।

१ पाली प्र० पृ० ५४ (उ=ओ)

२ पाली प्र० पृ० ५५ (ऊ=अ) सरखावो भ्रूकुटिः भ्रकुटिः।

३ 'सूक्ष्म' अर्थने सूचवता 'ऋ' ... ने उतारवुं विशेष सरल लागे छे—("... अमरको० तृतीयकाण्ड)

४ अहीं 'कण्डूय' धातुना बधां रूपो

मृत्युः मिच्चू, मच्चू । वृद्धः विद्धो, वुड्ढो । वृन्तम् विंटं, ...
शृङ्गम् सिंगं, संगं ।

(ग) 'ऋ=उ—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'उ' थाय छे:

ऋजुः उज्जू । ऋतुः उऊ । ऋषभः उसहो ...
जामातृकः जामाउओ । नप्तृकः नत्तुओ । निभृतम् निहुअं ...
निवृतम् निउअं । निर्वृतम् निव्वुअं । निर्वृतिः निव्वुई । परभृतः
परहुओ । परामृष्टः परामुट्ठो । पितृकः पिउओ । पृथक्
पहं । पृथिवी पहई । पृथ्वी पुहुवी । प्रभृति पहुडि । प्रवृत्तिः
... तम् पाहुडं । प्रावृतः पाउओ ।
...तृकः भाउओ । मातृकः माउओ ।
मृदङ्गः मुइंगो । वृत्तान्तः वुत्तंतो ।
... । वृन्दावनः वुंदावणो । विवृतम्
... स्पृष्टः पुट्ठो । संवृतम् संवुअं ।
... । बृहस्पतिः बुहप्फई, बहप्फई ।
...: वुंदारया, वंदारया । वृषभः

... ॰ पृ॰ २ (ऋ=उ)
...ली प्र॰ पृ॰ ३ (ऋ=र) टिप्पण।

(च) ऋ=ओ—

मृषा मोसा, मुसा। वृन्तम् वोंटं विंट। (वै०)

(छ) ऋ=अरि—

दृप्तः दरिओ।

(ज) ऋ=दि—

आदृतः आदिओ।

(झ) ऋ=रि—

नीचेना शब्दोमां 'ऋ' नो 'रि' थाय छे—ने क्यांय नित्ये अने क्याय विकल्पे थाय छेः

[1]अन्यादृशः अन्नारिसो। अन्यादृक्षः अन्नारिच्छो। अन्यादृक् अन्नारि। अमूदृशः अमूरिसो। अमूदृक्षः अमूरिच्छो। अमूदृक् अमूरि। अस्मादृशः अम्हारिसो। अस्मादृक्षः अम्हारिच्छो। अस्मादृक् अम्हारि। ईदृशः एरिसो। ईदृक्षः एरिच्छो। ईदृक् एरि। एतादृशः एआरिसो। एतादृक्षः एआरिच्छो। एतादृक् एआरि। कीदृशः केरिसो। कीदृक्षः केरिच्छो। कीदृक् केरि। तादृशः तारिसो। तादृक्षः तारिच्छो। तादृक् तारि। भवादृशः भवारिसो। भवादृक्षः भवारिच्छो। भवादृक् भवारि। यादृशः जारिसो। यादृक्षः जारिच्छो। यादृक् जारि। युष्मादृशः तुम्हारिसो। युष्मादृक्षः तुम्हारिच्छो। युष्मादृक् तुम्हारि। सदृशः सरिसो। सदृक्षः सरिच्छो। सदृक् सरि।

वैकल्पिक—

ऋजुः रिज्जू, उज्जू। ऋणम् रिणं, अणं। ऋतुः रिऊ, उऊ। ऋषभः रिसहो, उसहो। ऋषिः रिसी, इसी।

---

१ अहीं 'अन्यादृश' वगेरे शब्दोमां स्वतन्त्र 'ऋ' नथी किन्तु 'दृ' मां 'ऋ' छे, 'द्' लोप माटे जुओ पृ० १० नि० २।

ऋ=इ—

(१) उपर्युक्त 'अस्मादृश' थी मांडी 'मदृक्' सुधीना नवा शब्दोना 'दृ' ना 'ऋ' नो पैशाचीमां 'इ' थाय छे:

अस्मादृशः	अम्हारिसो	अम्हादिसो—अम्हातिसो ।
अन्यादृशः	अन्नारिसो	अम्हातिसो ।
ईदृशः	एरिसो	एतिसो ।
कीदृशः	केरिसो	केतिसो ।
तादृशः	तारिसो	तातिसो ।
भवादृशः	भवारिसो	भवातिसो ।
यादृशः	जारिसो	जातिसो ।
युष्मादृशः	तुम्हारिसो	तुम्हातिसो
मदृशः	मरिसो	मतिसो

५५ ए—विकार

(क) [1]ए=इ—

केसरम् किसरं, केसरं । चपेटा चविडा, चवेडा । देवरः दिअरो, देवरो । वेदना विअणा, वेअणा । (वै०)

(ख) ए=ऊ—

स्तेनः थूणो, थेणो । (वै०)

५६ ऐ-विकार—

(क) ऐ=अअ—

उच्चैस् उच्चअं । नीचैस् नीचअं ।

---

१ जुओ पृ० १२ (च, ट—त)

२ पालीमां कोइ ठेकाणे 'ए' नो 'ओ' थाय छे: देरः=दोहो— पा० प्र० पृ० ५५–ए=ओ)

(ख) [1]ऐ=इ—

शनैश्चरः सणिच्छरो। सैन्धवम् सिंधवं।

सैन्यम् सिन्नं, सेन्नं। (वै०)

(ग) [2]ऐ=ई—

धैर्यम् धीरं।

चैत्यवन्दनम् चीवंदणं, चेइयवंदणं। (वै०)

(घ) ऐ=अइ—

नीचेना शब्दोमां 'ऐ' नो 'अइ' थाय छे:

ऐश्वर्यम् अइसरिअं। कैतवम् कइअवं। चैत्यम् चइत्तं। दैत्यः दइच्चो। दैन्यम् दइन्नं। दैवतम् दइअवं। भैरवः भइरवो। वैजवनः वइजवणो। वैतालीयम् वइआलीअं। वैदर्भः वइदब्भो। वैदेशः वइएसो। वैदेहः वइएहो। वैशाखः वइसाहो। वैशालः वइसालो। वैश्वानरः वइस्साणरो। स्वैरम् सइरं। इत्यादि.

वैकल्पिक—

कैरवम् कइरवं, केरवं। कैलासः कइलासो, केलासो। चैत्रः चइत्तो, चेत्तो। दैवम् दइव्वं, देव्वं। वैतालिकः वइआलिओ, वेआलिओ। वैरम् वइरं, वेरं। वैशम्पायनः वइसंपायणो, वेसंपायणो। वैश्रवणः वइसवणो, वेसवणो। वैशिकम् वइसिअं, वेसिअं। इत्यादि.

५७ ओ-विकार—

(क) ओ=अ—

वैकल्पिक—

अन्योन्यम् अन्नन्नं, अन्नुन्नं। आतोद्यम् आवज्जं, आउज्जं। [3]प्रकोष्ठः पवट्ठो, पउट्ठो। मनोहरम् मणहरं, मणोहरं।

---

[1] पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=इ) [2] पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=ई)

[3] ज्यारे आ बे शब्दमां 'ओ' नो 'अ' थाय छे त्यारे ज तेना 'त' अने 'क' नो 'व' पण।

शिरोवेदना	सिरविअणा,	सिरोविअणा।
सरोरुहम्	सररुहं,	सरोरुहं।

(ख) ओ=ऊ—

सोच्छ्वासः ऊसासो।

(ग) ओ=अउ, आअ—

ओ=अउ—गोकः गउओ। गोकाः गउआ। गो गउ—गऊ।

ओ=आअ—गो गाअ—गाओ (पुंलिंग)

गो गाअ—गाई (स्त्रीलिंग)

५८ औ-विकार—

(क) औ=अउ—

नीचेना शब्दोना 'औ' नो 'अउ' थाय छे:

कौक्षेयकम्	कउच्छेअयं।	पौरः	पउरो।
कौरवः	कउरवो।	पौरुषम्	पउरिसं।
कौलः	कउलो।	मौनम्	मउणं।
कौशलम्	कउसलं।	मौलिः	मउली।
गौडः	गउडो।	सौधम्	सउहं।
गौरवम्	गउरवं।	सौराः	सउरा।

(ख) [1]औ=आ—

गौरवम् गारवम्

---

१ पाली प्र० पृ० ५ (औ=आ) टिप्पण. पालीमां कोई कोई ठेकाणे 'औ' नो 'अ' पण थाय छे: (औ=अ)—पालीप्र पृ० ५ टिप्पण.

(ख) [1]ऐ=इ—

शनैश्चरः सणिच्छरो। सैन्धवम् सिंधवं।

सैन्यम् सिन्नं, सेन्नं। (वै०)

(ग) [2]ऐ=ई—

धैर्यम् धीरं।

चैत्यवन्दनम् चीवंदणं, चेइयवंदणं। (वै०)

(घ) ऐ=अइ—

नीचेना शब्दोमां 'ऐ' नो 'अइ' थाय छेः

ऐश्वर्यम् अइसरिअं। कैतवम् कइअवं। चैत्यम् चइत्तं। दैत्यः दइच्चो। दैन्यम् दइन्न। दैवतम् दइअत्र। भैरवः भइरवो। वैजवनः वइजवणो। वैतालीयम् वइआलीअं। वैदर्भः वइदब्भो। वैदेशः वइएसो। वैदेहः वइएहो। वैशाखः वइसाहो। वैशालः वइसालो। वैश्वानरः वइस्साणरो। स्वैरम् सइरं। इत्यादि.

वैकल्पिक—

कैरवम् कइरवं, केरवं। कैलासः कइलासो, केलासो। चैत्रः चइत्तो, चेत्तो। दैवम् दइव्व, देव्वं। वैतालिकः वइआलिओ, वेआलिओ। वैरम् वइर, वेर। वैशम्पायनः वइसंपायणो, वेसंपायणो। वैश्रवण. वइसवणो, वेसवणो। वैशिकम् वइसिअं, वेसिअं। इत्यादि.

[3]१७ ओ-विकार—

(क) ओ=अ—

वैकल्पिक—

अन्योन्यम् अन्नन्नं, अन्नुन्नं। आतोद्यम् आवज्जं, आउज्जं। प्रकोष्ठः पवट्टो, पउट्टो,। मनोहरम् मणहर, मणोहरं।

---

१ पाली प्र० पृ० ८ (ऐ=इ) २ पाली प्र० पृ० ४ (ऐ=ई)

३ ज्यारे आ बे शब्दमां 'ओ' नो 'अ' थाय छे त्यारे ज तेना 'व' अने 'क' नो 'उ' पण थाय छे.

शिरोवेदना सिरविअणा, सिरोविअणा।
सरोरुहम् सररुहं, सरोरुहं।

(ख) ओ=ऊ—

सोच्छ्वासः सूसासो।

(ग) ओ=अउ, आअ—

ओ=अउ—गोकः गउओ। गोकाः गउआ। गो गउ–गउ[illegible]
ओ=आअ—गो गाअ–गाओ (पुंलिंग)
गो गाअ–गाई (स्त्रीलिंग)

५८ औ-विकार—

(क) औ=अउ—

नीचेना शब्दोना 'औ' नो 'अउ' थाय छे:

कौक्षेयकम्	कउच्छेअयं।	पौरः	पउरो।
कौरवः	कउरवो।	पौरुषम्	पउरिसं।
कौलः	कउलो।	मौनम्	मउणं।
कौशलम्	कउसलं।	मौलिः	मउली।
गौडः	गउडो।	सौधम्	सउहं।
गौरवम्	गउरवं।	सौराः	सउरा।

(ख) [1]औ=आ—

गौरवम् गारवम्

१ जुओ [illegible] (औ=आ) टिप्पण. प्राकृतना कोई कोई केटलेक 'औ' नो 'अ' पण थाय छे: (औ=अ)—[illegible]

(ग) औ=उ

नीचेना शब्दोमां 'औ' नो 'उ' थाय छे:

दौवारिकः दुवारिओ। पौलोमी पुलोमी । मौञ्जायनः मुंजायणो । शौण्डः सुंडो । शौद्धोदनिः सुद्धोअणी । सौगन्ध्यम् सुगन्धत्तणं । सौन्दर्यम् सुंदेरं । सौवर्णिकः सुवण्णिओ ।

कौक्षेयकम् कुच्छेअयं, कोच्छेअयं । (वै०)

(घ) औ=आव—

नौः नावा ।

प्रकरण ६

असंयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो

५९ क-विकार—

[1]क=ख—

कर्परम् खप्परं । कीलः खीलो ।
कीलकः खीलओ । [2]कुब्जः खुज्जो ।

[3]क=ग—

अमुकः अमुगो ।
असुकः असुगो ।
आकर्षः आगरिसो ।
आकारः आगारो ।
उपासकः उवासगो ।
एकः एगो ।
एकत्वम् एगत्तं ।
कन्दुकम् गेंदुअं ।
तीर्थंकरः तित्थगरो ।
दुकूलम् दुगुल्लं ।
मदकलः मयगलो ।
मरकतम् मरगयं ।
श्रावकः सावगो ।
लोकः लोगो ।

क=च—

[4]किरातः चिलाओ ।

क=भ—

शीकरः सीभरो, सीअरो । (वै०)

क=म—

चन्द्रिका चंदिमा ।

---

1 जुओ प्र० पृ० ५५ (क=ख)
2 'कुब्ज' शब्द 'कूबडा' अर्थमां ज वपराय छे.
3 जुओ प्र० पृ० ५५ (क=ग)
4 'किरात' शब्द 'भील' अर्थमां ज वपराय छे.

क=व—

[1]प्रकोष्ठः पवट्ठो, पउट्ठो ।

क=ह—

निकुरः निहुरो । निकषः निहसो । स्फटिकः फलिहो ।

शीकरः सीहरो, सीभरो । (वै०)

६० ख-विकार—

ख=क—

शृङ्खलम् संकलं । शृङ्खला संकला ।

६१ ग-विकार—

ग=म—

पुंनामानि पुंनामाइं । भागिनी भामिणी ।

ग=ल—

छाग: छालो । छागी छाली ।

ग=व—

दुर्भगः [2]दूहवो । सुभगः सूहवो ।

६२ च-विकार—

च=ज—

पिशाची पिसाजी, पिसाई । (वै०)

च=ट—

आकुञ्चनम् आउंटण ।

च=ल—

पिशाच पिसल्लो, पिसाओ । (वै०)

१ जुओ पृ० ६० टिप्पण १।

२ ज्यारे 'दु'ना 'दू' अने 'सु'ना 'सू' थतो नथी त्यारे 'अ' [illegible]

नो 'व' [illegible] [illegible]-[illegible] ३-[illegible] ([illegible]) [illegible]

३ [illegible] ([illegible])

लक्षितः लक्खिओ, लइओ। (वै०)

६३ न-विकार

न=ण—

नटितः णटिओ, नटिओ। (वै०)

६४ ट-विकार

ट=ढ—कैटभः केढवो। शकटः सयढो। सटा सढा।

[1]ट=ड—स्फटिकः फलिहो।

चपेटा चविला, चविडा। (वै०)

[2]पाटयति फालेइ, फाडेइ। „

६५ ठ-विकार

ठ=ल—अङ्कोठः अंकोल्लो।

अङ्कोठतैलम् अंकोल्लतेल्लं।

ठ=ढ—पिठरः पिहडो, पिढरो (वै०)

६६ ण-विकार

[3]ण=ल—वेणुः वेलू, वेणू। (वै०)

६७ त-विकार

त=च— तुच्छम् चुच्छं।

त=छ— तुच्छम् छुच्छं।

त=ट— तगरः टगरो। तूबरः टूबरो। त्रसरः टसरो।

---

1 पाली प्र० पृ० ५८–(ट=ळ) पालीमां केटलेक ठेकाणे 'ट'नो
2 'ळ' पण थाय छे:—(ट=ळ पृ० ५८)
3 अहीं 'पाटि' धातुनां रूपो लीधां छे। मळतारूपो माटे जुओ
4 पाली प्र० पृ० ५८ (ण=ळ) वेणु=वेळु—पाली
ना. १

त=ड—

नीचेना शब्दोमां 'त' नो 'ड' थाय छे–ते क्यांय नित्ये अ
क्यांय विकल्पे थाय छे:—

पताका पडाया।
[1]प्रति पडि।

[प्रतिकरोति पडिकरइ। प्रतिनिवृत्तम् पडिनिअत्तं। प्रतिप
पडिवया। प्रतिपन्नम् पडिवन्नं। प्रतिभासः पडिहासो। प्रतिम
पडिमा। प्रतिश्रुत् पडंसुआ। प्रतिसारः पडिसारो। प्रतिस्पर्
पाडिप्फद्धी। प्रतिहासः पडिहासो। प्रतिहारः पडिहारो।]

प्रभृति पहुडि।
प्राभृतम् पाहुडं।
बिभीतकः बहेडओ।
मृतकम् मडय।
व्याप्तः वावडो।
सूत्रकृतम् सुत (सूअ) गडं।
हरीतकी हरडई। इत्यादि.

वैकल्पिक—

अवहृतम्	अवहडं,	अवहयं।
अवहृतम्	ओहडं,	ओहयं।
आहृतम्	आहड,	आहयं।
कृतम्	कड,	कयं।
दुष्कृतम्	दुक्कडं	दुक्कय।
मृतम्	मडं,	मयं।
वेतसः	वेडिसो,	वेअसो।
सुकृतम्	सुकडं	सुकय।

१ प्रति=पडि. (१-ड) पाली प्र० पृ० ५८.

न=ण—

अनिष्पन्नम् अणिप्पन्नं । [illegible]

त=र —

न=ञ— मनोज्ञः मणुण्णो ।

अनघी अन्नघी । मानगाहन: मानगाहनी मान्नगाहणी— [illegible]

वैकल्पिक—

पल्लिनम् पल्लिन्नं, पल्लिअं ।

न=र— आनंद्यम् आनद्धं, आइद्धं ।

पीनद्धम् पीनद्धं, पीअद्धं ।

न=ह—

[1] विनाभि. विहत्थी ।

वैकल्पिक—

कानर काहलो, कायरो ।

भरतः भरहो, भरओ ।

मातुलिङ्गम् माहुलिंगं, माउलिंगं ।

वसतिः वसही, वसई ।

१८ थ-विकार

थ=ढ—

प्रथम पढमो । मेथि. मेढी । शिथिरः (लः) सिढिलो ।

वैकल्पिक—

निशीथः निसीढो, निसीहो ।

[3] पृथिवी पुढवी, पुहवी ।

---

[1] देखो पृ० ६०, ३ टिप्पन ।

[2] [illegible] विहत्थि–(न=ह) पाली प्र० पृ० ५२ ।

[3] पृथिवी पठवी–(थ=ठ) पाली प्र० पृ० ५२ ।

थ=ध—

पृथक् पिधं, पिहं।

६९ द-विकार

[1]द=ड—

[2]दंश डंस इत्यादि.

[2]दह डह इत्यादि.

वैकल्पिक—कदनम् कडणं, कयणं। दग्धः डड्ढो, दड्ढो। दण्डः डंडो, दंडो। दम्भः डम्भो, दम्भो। दर्भः डब्भो, दब्भो। दष्टः डट्ठो दट्ठो। दरः डरो, दरो। दशनम् डसणं, दसण। दाहः डाहो, दाहो। दोला डोला, दोला। दोहदः डोहलो, दोहलो।

द=ध—दीप्[3] धीप्, दीप्। दीप्यते धिप्पइ, दिप्पइ। (वै०)

(क) द=र—संख्यावाचक शब्दना अनादिभूत, असंयुक्त अने एकपदस्थित एवा 'द' नो 'र' थाय छे:

एकादश एआरह। द्वादश बारह। त्रयोदश तेरह।

(ख) द=र—कदली करली[4]। गद्गदम् गग्गर।

[5]द=ल—प्रदीपयति पलीवेइ[6]। प्रदीप्तम् पलित्तं। दोहद. दोहलो।

कदम्बः कलम्बो, कयम्बो। (वै०)

द=व—कदर्थित कवट्टिओ।

द=ह—ककुदम् कउहं।

---

१ पाली प्र० पृ० ५९-(द=ड)

२ अहीं आ बन्ने धातुना बधा रूपो समजवानां छे.

३ अहीं 'दीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

४ आ शब्दनो अर्थ 'केळ' थतो नथी.

५ पाली प्र० पृ० ६०-(द=ळ-दोहद दोहळो)

६ अहीं 'प्रदीप्' धातुना बधा रूपो समजवाना छे.

७५ म-विकार

म=ह—विषमः विसहो, विसमो। (वै०)

म=व—मन्मथः वम्महो।

अभिमन्युः अहिवन्नू, अहिमन्नू। (वै०)

म=स—भ्रमरः भसलो, भमरो। (वै०)

७६ म-अनुनासिक

નીચેના શબ્દોમાં 'મુ' ના 'મ' નો લોપ થાય છે અને 'મ'નો લોપ થયા પછી શેષ રહેલ ('મુ' ના) 'ઉ' ને સ્થાને અનુનાસિક 'ઉ' (ઉં) થાય છે:

अनिमुक्तकम् अणिउँतयं। कामुकः काउँओ।

चामुण्डा चाउँण्डा। यमुना जउँणा।

७७ [1]य-विकार

य=आह—कतिपयम् कइवाहं।

य=ज्ज—उत्तरीयम् उत्तरिज्जं, उत्तरीअं। (वै०)

तृतीय तइज्जो, तइओ। द्वितीय बिइज्जो, बीओ। (वै०)

य=न—युष्मदीयः तुम्हकेरो। युष्मादृश.—तु[illegible] [2] युष्मद्–तुम्ह। इत्यादि।

[3]य=ल—यष्टिः लट्ठी।

[4]य=व—कतिपयम्–कइअवं (वै०)

---

१ कोई प्रकार शब्दमां 'य' नो 'र' पण थाय —[illegible]— [पाली-[illegible]]

२ अहीं 'युष्मद्' शब्दना बधी जातनां रूपोने [illegible] युष्मत्पुत्र —तुम्हपुत्तो इत्यादि

३ पा॰ प्र॰ पृ॰ ६२—(य=ल)

४ पाली प्र॰ पृ॰ ६२—(य=व)

य=ह—छाया [1]छाही, छाया । मच्छायन मच्छ...
मच्छाअं (वै०)

७८ र-विकार

र=ड—गिरि गिडी । पिठर [2]पिहडो । भेर भेडो ।

र=डा—पर्याणम् पडायाणं, पल्लाणं ।

र=ण—करवीर कणवीरो ।

[3]र=ल—नीचेना शब्दोमां 'र' नो 'ल' थाय छे—ने क्यांक नित्य अने क्यांक विकल्पे थाय छे:

अपद्वारम् अवद्दालं ।
अङ्गार इंगालो ।
करुण कलुणो ।
कातर काहलो ।
किरात चिलाओ ।
चरणः चलणो ।
दरिद्रः दलिद्दो ।
दरिद्राति दलिद्दाइ ।
दारिद्र्यम् दालिद्दं ।
परिखा फलिहा ।
परिघः फलिहो ।
पारिभद्रः फालिहद्दो ।
भ्रमरः[4] भसलो ।
मुखरः मुहलो ।
युधिष्ठिरः जहुट्ठिलो ।
रुग्णः लुक्को ।
वरुणः वलुणो ।
शिथिरः सिढिलो ।
सत्कारः सक्कालो ।
सुकुमारः सोमालो ।
स्थूरः थूलो ।
स्थूरभद्रः थूलभद्दो ।
हरिद्रः हलिद्दो ।
हरिद्रा हलिद्दा । इत्यादि.

---

1 आ शब्दनो अर्थ 'छांयडो' के 'छाया' ज थाय छे.

2 'पिठर' शब्दनुं रूप 'पिहड' थाय छे, पण 'पिढर' थतुं नथी—जुओ पृ० ६५ (ठ=ढ)

3 सरखावो मागधी र=ल (पृ० ७६)

4 'भ्रमर' शब्दनुं रूप 'भसल' थाय पण 'भमल' न थाय.

७५ म-विकार

म=ह—विषमः विसढो, विसमो। (वै०)

म=व—मन्मथः वम्महो।

अभिमन्युः अहिवन्नू, अहिमन्नू। (वै०)

म=स—भ्रमरः भसलो, भमरो। (वै०)

७६ म-अनुनासिक

नीचेना शब्दोमां 'मु' ना 'म' नो लोप थाय छे अने 'म'नो लोप थया पछी शेष रहेल ('मु' ना) 'उ' ने स्थाने अनुनासिक 'उ' (उँ) थाय छेः

अतिमुक्तकम् अणिउँतयं। कामुकः काउँओ।

चामुण्डा चाउँण्डा। यमुना जउँणा।

७७ [1]य-विकार

य=आह—कतिपयम् कइवाहं।

य=ञ्ज—उत्तरीयम् उत्तरिज्जं, उत्तरीअं। (वै०)

तृतीय तइज्जो, तइओ। द्वितीय बिइज्जो, बीओ। (वै०)

य=ह—[2]युष्मदीयः तुम्हकेरो। युष्मादृशः—तुम्हारिसो। युष्मद्—तुम्ह। इत्यादि।

[3]य=ल—यष्टिः लट्ठी।

[4]य=व—कतिपयम्—कइअवं (वै०)

---

१ कोई प्रकार शब्दमां 'य' नो 'र' पण थई जाय छे. स्नायु —ण्हारु—[पाली–सिनेह]

२ अहीं 'युष्मद्' शब्दना यनी जगतना स्थाने पण समजवाना छे. युष्मत्पुत्र —तुम्हपुत्तो इत्यादि

३ पाली प्र० पु० ६३–(य=ल)

४ पाली प्र० पु० ६३–(य–व)

द=ह—एकादश एआरह, एआरस। दश दह, दस। दशवक्त्रः दहवक्त्रो, दसवक्त्रो। दशमुखः दहमुहो, दसमुहो। दशरथः दहरहो, दसरहो। द्वादश बारह, बारस। त्रयोदश तेरह, तेरस इत्यादि।

८२ ष-विकार.

[1]ष=छ—षट् छ। षट्पदः छप्पओ। षण्मुखः छंमुहो। षष्ठः छट्ठो। षष्ठी छट्ठी।

ष=ह—स्नुषा सुण्हा, सुसा[2]। (वै०)

ष=ह—पाषाणः पाहाणो, पासाणो। मनुष्यः मणूहो, मणूसो (वै०)

८३ स-विकार

स=छ—सप्तपर्णः छत्तिवण्णो। सुधा छुहा।

स=ह—दिवसः दिवहो, दिवसो। (वै०)

८४ ह-विकार

ह=[illegible]—उत्साहः [illegible], उच्छाहो।

८५ लोप

नीचेना शब्दोमां वच्चे आवेला व्यंजननो लोप विकल्पे थाय छे:

'क' लोप—प्राकारः पारो, पायारो।

व्याकरणम् वारणं, वायरणं।

'ग' लोप—आगतः आओ, आगओ

---

१ जुओ नं० पृ० ६८—(द=ड) [illegible]।

२ अहीं 'दह' [illegible] छे.

३ जुओ पृ० ८१ [illegible]।

४ 'उत्साह' [illegible].

'न' लोप—दनुजः दणू, दणुओ । दनुजवधः दणुवहो, दणुअवहो।
भाजनम् भाणं, भायणं । राजकुलम् राउलं, रायउलं।

'द्' लोप—उदुम्बरः उम्बरो, उउंबरो । दुर्गादेवी दुग्गावी, दुग्गादे (ए) वी । पादपतनम् पावडणं, पायवडणं।
पादपीठम् पावीढं, पायवीढं ।

'य' लोप—किसलयम् किसलं, किसलयं।
कालायसम् कालासं, कालायसं ।
हृदयम् हिअं, हिअयं। सहृदयः सहिओ, सहिअयो ।

'व' लोप—

अवटः अडो, अवडो । आवर्तमानः अत्तमाणो, आवत्तमाणो। एवमेव एमेव, एवमेव। जीवितम् जीअं, जीविअं। तावत् ता, ताव। देवकुलम् देउलं, देवउलं । प्रावारकः पारओ, पावारओ । यावत् जा, जाव ।

लोप—

केटलेक ठेकाणे शब्दना आदि व्यंजननो पण लोप थई जाय छे:

च अ । चिह्नम् इंध । पुनः उणो इत्यादि ।

प्रकरण ७

संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफार

[सूचना:—आ नीचे संयुक्त व्यंजनोना विशेष फेरफारो आपवाना छे अने साथे ते ते शब्दोनां वैकल्पिक रूपो पण थाय छे तेओनुं ... पण अहीं आपी [ ] कौंसमां जणावी दीधुं छे.]

८६ क्क

(क) [1]क्त=क्क—

शक्तः सक्को [सत्तो] । मुक्तः मुक्को [मुत्तो] ।

(ख) ग्ण=क्क—

[2]रुग्णः लुक्को [लुग्गो] ।

(ग) त्व=क्क—

मृदुत्वम् माउक्कं [माउत्तणं] ।

(घ) ष्ट=क्क—

दष्टः डक्को [दट्ठो] ।

८७ क्ख, ख

(क) क्ष्ण=क्ख—

तीक्ष्णम् तिक्खं [तिण्हं] ।

(ख) स्त=ख—

स्तम्भः खंभो [थंभो]

---

१ जुओ नं० सू० ८१ (टिप्पण)

२ रुग्णः लुग्गो (जुओ नं० सू० ८१, टिप्पण ग=ण)

३ जुओ सू० ८०–३ टिप्पण

(ग) स्थ=ख—

स्थाणुः खाणू।

(घ) स्फ=ख—

स्फेटकः खेडओ।

स्फेटिकः खेडिओ।

स्फोटकः खोडओ।

८८ ग्ग, ङ्ग

(क) क्त=ग्ग—

रक्तः रग्गो [रत्तो]·

(ख) ल्क=ङ्ग—

शुल्कम् सुङ्ग, (चुंगी-हिं०) [सुक्कं]

८९ च्च

(क) त्त=च्च—

कृत्तिः किच्ची।

(ख) थ्य=च्च—

तथ्यम् तच्चं [तच्छं]

९० च्छ, छ

(क) स्थ=छ—स्थगितम् छइअं [थइअं]

(ख) स्प=छ—स्पृहा छिहा।

(ग) स्प=च्छ—निस्पृहः निच्छिहो [निप्पिहो]।

९१ ज्ज, ञ्ञ

न्य=ञ्ञ, ञ—

अभिमन्यु· अहिमञ्ञू, अहिमञ्ञू [आहिमञ्जू]

---

१ आ शब्द 'महादेव' न सूचवतो होय त्यारे तेनु खाणु' न बदले 'थाणु' रूप थाय छे।

२ शुल्कम् सुङ्कं–(पाली प्र० पृ० ३०–टिप्पण)

३ अभिमन्युः अभिमञ्ञू (न्य=ञ्ञ–पाली प्र० पृ० ३१)

९२ ञ्ञ

न्य=ञ्ञ—

(धातु) इन्ध् इञ्झा (समिन्ध् समिञ्झाइ । विइन्ध् विञ्झाइ)

९३ च्छु

श्चि=च्छु—

'वृश्चिकः विच्छुओ, [विंछिओ]

९४ ट्ट

(क) र्त=ट्ट—पत्तनम् पट्टणं । मृत्तिका मट्टिआ ।

वृत्तः वट्टो ।

(ख) र्थ=ट्ट—कदर्थितः कवट्टिओ ।

(ग) स्त=ट्ट—पर्यस्तः पल्हट्टो ।

९५ ठ, ड

(क) र्थ=ट्ठ—

'अर्थः	'अट्ठो	[अत्थो]
चतुर्थः	चउट्ठो	[चउत्थो]

(ख) स्त=ठ—

स्तम्भ्यते ठंभिज्जइ ।

'स्तब्धः ठड्ढो [थद्धो]

---

१ वृश्चिकः विच्छिको (पाली)

२ पाली प्र० पृ० ५.८—(त=ट)

३ अर्थः अत्थो, अट्ठो, अट्ठो—(पाली प्र० पृ० १० टिप्पण)

४ 'अट्ठ' शब्दनो प्रयोग 'प्रयोजन' अर्थमां थाय छे अने 'अत्थ' शब्दनो 'धन' अर्थमां थाय छे.

५ स्तब्धः थद्धो । स्तम्भः थंभो—(स्त=थ पाली प्र० पृ० २७)

[1]स्तम्भ ठंभ (धातु)

[2]स्तम्भः ठंभो ।

स्त्यानम् ठीणं । [थीणं]

(ग) [3]स्थ=ठ—विसंस्थुलम् विसंठुलं ।

स्थ=ढ— अस्थि[4] अट्ठिं ।

९६ ड्ड

(क) र्त=ड्ड—

गर्तः गड्डो ।

(ख) र्द=ड्ड—

कपर्दः कवड्डो ।

गर्दभः गड्डहो [गद्दहो]

छर्द छड्ड (धातु)

छर्दयति छड्डेइ ।

छर्दिः छड्डी ।

मर्दितः मड्डिओ ।

विच्छर्दः विच्छड्डो ।

वितर्दिः विअड्डी ।

संमर्दः संमड्डो ।

---

१ आ ' स्तम्भ ' धातुने अहीं अस्पंदार्थक ज लेवानो छे.

२ ' स्तम्भ ' शब्दनो अर्थ पण ' स्तम्भ ' धातुनी जेवो ज समजवानो छे

३ पाली प्र० पृ० २८–(स्थ=ठ)

४ अट्ठि अट्ठि (पाली प्र० पृ० २९–स्थ=ट्ठ)

९७ [1]ड्ढ, ढ

नीचे जणावेला शब्दोमां संयुक्त 'ध' नो ड्ढ अने ढ थाय छे:—

(क) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध=ड्ढ—

अर्धम् अड्ढं [अद्धं]

ऋद्धिः इड्ढी, [इद्धी]

दग्धः दड्ढो ।

विदग्धः विअड्ढो

वृद्धः वुड्ढो, [विद्धो]

वृद्धिः वुड्ढी ।

श्रद्धाः सड्ढा, [सद्धा]

स्तब्धः ठड्ढो ।

(ख) र्ध=ढ—मूर्धा मुंढा, [मुद्धा]

९८ ण्ट, ण्ड, ण्ण

न्त=ण्ट—

[2]वृन्तम् वेण्टं (तालवृन्तम् तालवेण्टं)

न्द=ण्ड—

कन्दरिका कण्डलिआ ।

भिन्दिपालः भिण्डिवालो ।

(क) ञ्च=ण्ण —

पञ्चदश पण्णरह ।

पञ्चाशत् पण्णासा ।

---

[1] पाली प्र० पृ० ८२ – (द्ध=ड्ढ, र्ध=ड्ढ, ब्ध=ड्ढ)

[2] वृन्त=वण्ट– पाली प्र० पृ० ५८. न्त=ण्ट)

(ख) त्त=ण्ण—

[1]दत्तम् दिण्णं ।

(ग) ह्न=ण्ण—

मध्याह्नः मज्झण्णो, [मज्झण्हो]

९९ त्थ

(क) त्स=त्थ—

[2]उत्साहः उत्थारो ।

(ख) त्म=त्थ—

अध्यात्म अज्झत्थं [अज्झप्पं]

१०० द्ध

ष्ट=द्ध— आश्लिष्ट. आलिद्धो ।

न्त, न्थ

[3]न्य=न्त—

मन्युः मन्तू । [मन्नू]

ह्न=न्थ—

निह्नम् चिन्धं [चिण्हं]

१०१ प्प, प्फ, फ

[4]त्म=प्प—

आत्मा अप्पा । [अत्ता]

आत्मानः अप्पाणो [अत्ताणो]

---

१ 'दत्त' शब्दनुं 'दत्त.' के 'दित्त' रूप थतुं नथी.

२ उत्साह.=उस्साहो–(पाली प्र० पृ० ३०)

३ जूओ पृ० ३६, ६ नें एनु चोथुं टिप्पण।

४ पालीभाषामा 'त्म' नो 'तुम' थतो उपाय छे.–आत्मा आतुमा, अत्ता–(पाली प्र० पृ० ५०)

ष्म=प्फ, फ—

भीष्मः भिप्फो ।

श्लेष्मा¹ सेफो [सिलिम्हो]

स्म=प्प—

भस्म भप्पो [भस्सो]

१०२ म्भ, म्ब, म्भ

ध्व=म्भ—

ऊर्ध्वम् उम्भं [उद्धं]

म्र²=म्ब—

आम्रम् अंबं ।

ताम्रम् तंबं ।

(क) श्म=म्भ—

कश्मीराः कम्भारा [कम्हारा]

(ख) ह्म=म्भ—

ब्राह्मणः बम्भणो [बम्हणो]

ब्रह्मचर्यम् बम्भचेरं [बम्हचेरं]

१०३ र

(क) र्य=र—

आश्चर्यम् अच्छेरं । तूर्यम् तूरं । धैर्यम् धीरं, [धिज्जं] पर्यन्तः पेरंतो । [पज्जंतो] ब्रह्मचर्यम् बम्हचेरं । शौण्डीर्यम् सोंडीरं । सौन्दर्यम् सुन्देरं ।

(ख) र्ह=र—

दशार्हः दसारो ।

(ग) त्र=र—

धात्री धारी ।

---

१ श्लेष्मा=सिलेसुमा, सेम्हो—(पाली प्र० पृ० ४९, म=उम्)

२ पाली प्र० पृ० ३५—(म्र=म्ब नि० १८)

१०४ ल्ह, ळ

ण्ड=ळ—

कुष्माण्डी कोहळी [कोहण्डी]

र्य=ळ–

[1]पर्यन्तम् पल्लट्ट, [पल्लत्थं]

पर्याणम् पल्लाणं।

सौकुमार्यम् सोअमल्लं।

१०५ स्स

स्प=स्स—

बृहस्पतिः बहस्सई [बहप्फई]

वनस्पतिः वणस्सई [वणप्फई]

१०६ ह

(क) क्ष=ह— दक्षिण. दाहिणो [दक्खिणो]

(ख) ख=ह — दुःखम् दुह [[3]दुक्ख]

दुःखितः दुहिओ [दुक्खिओ]

(ग) र्थ=ह— तीर्थम् तूहं [तित्थं]

(घ) र्घ=ह– दीर्घ. दीहो, [दिग्घो]

(ङ) र्प=ह— कार्षापणः काहावणो।

(च) ष्प=ह– [4]बाष्पः बाहो

---

१ पर्यस्तिका पल्लत्थिका–(पाली प्र० पृ० १६–टिप्पण)

२ वनस्पति' वनप्पति–(पाली प्र० पृ० ३९–स्प=प्प)

३ पाली प्र० पृ० ८–नियम १० (ख)

४ आ शब्द, बे अर्थमा प्रसिद्ध छे–एक तो आसु अने बी
बाफ; तेमा ज्यारे ए बाफ–गरमी–नो वाचक होय त्यारे तेनु 'बाह
बदले 'बप्फ' रूप थाय छे।

(छ) ष्म=ह– कुष्माण्डी कोहण्डी।

कुष्माण्डम् कोहण्डं।

१०७ द्विर्भाव

(क) नीचे जणाव्या प्रमाणे विभिन्न व्यंजनोनो द्विर्भाव थाय छे— ते क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे थाय छे:—

ऋजुः उज्जू।	यौवनम् जुव्वणं।
तैलम् तेल्लं।	विचकिलम् वेइल्लं।
प्रभूतम् बहुत्तं।	क्रीडा खिड्डा इत्यादि।
प्रेम पेम्मं।	
मण्डूकः मंडुक्को।	

वैकल्पिक:—अस्मदीयम् अम्हक्केरं अम्हक्केरं, अम्हकेरं।

एकः	एक्को,	एओ।
कर्णिकारः	कण्णिआरो,	कनिआरो।
कुतूहलम्	कोउहल्लं,	कोउहलं।
चिअ	[1]च्चिअ,	चिअ (एव)
चेअ	च्चेअ,	चेअ (एव)
तूष्णीकः	तुण्हिक्को,	तुण्हिओ।
दैवम्	दइव्वं,	दइवं।
नखः	नक्खो,	नहो।
निहितम्	निहित्तं,	निहिअं।
नीडम्	नेड्डं,	नीडं।

---

१. 'चिअ' अने 'चेअ' ए बंने अवधारण सूचक अव्यय छे (हे० ८-२-१८४) अने संस्कृतना प्रचलित 'एव' साथे विशेष समानता धरावे छे—उच्चारणना कारणने लीधे ए बंने 'चेव' मांथी बन्या हशे छे.

मूकः मुक्को, मूओ।
मृदुकम् माउक्कं, माउअं।
व्याकुलः वाउल्लो, वाउलो।
व्याहृतः वाहित्तो, वाहिओ।
सेवा सेव्वा, सेवा।
स्रोतम् सोत्तं, सोअं।
स्त्यानम् थिण्णं, थीणं।
स्थूलः थुल्लो, थोरो।
स्थाणुः खण्णू, खाणू।
हूतम् हुत्तं, हूअं इत्यादि।

ख) समासमा आवेला उत्तरपदना आदिना व्यंजननो द्विर्भाव विकल्पे थाय छे:—

आलान-स्तम्भः आणाल-खंभो, आणाल-क्खंभो।
कुसुम-प्रकरः कुसुम-पयरो, कुसुम-प्पयरो।
दुः-सहः दु-सहो, दु-स्सहो।
देव-स्तुतिः देव-थुई, देव-त्थुई।
नदी-ग्रामः नइ-गामो, नइ-ग्गामो।
निः-सहम् नि सहं, नि-स्सहं।
हर-स्कन्दाः हर-खंदा, हर-क्खंदा।

१०८ शब्द-विशेष विकार

ने शब्दोमां कोई पण सामान्य के विशेष नियम न लागु तां भिन्न भिन्न भागना केटलाक विशेष विकारो थाय छे, ते आ नीचे वामां आवे छे:—

स्कारः एक्कारो।
र्यम् अच्छअरं, अच्छरिअं, अच्छरिज्जं अच्छरीअं।

---

१ जुओ पृ० १-टिप्पण २ जु।

२ आश्चर्यम्=अच्छरियं, अच्छरिरं, अच्छेर-(पाली प्र० ४४ टिप्पण)

उदूखलः	ओहलो	[उऊहलो]
उलूखलम्	ओक्खलं	[उलूहलं]
कदलम्	केलं,	[कयलं]
कदली	केली,	[कयली]
कर्णिकारः	कण्णेरो,	[कण्णिआरो]
कुतूहलम्	कोहलं,	[कोउहलं]
चतुर्गुणः	चोग्गुणो,	[चउग्गुणो]
चतुर्थः	चोत्थो,	[चउत्थो]
चतुर्थी	चोत्थी,	[चउत्थी]
चतुर्दश	चोद्दह,	[चउद्दह]
चतुर्दशी	चोद्दसी,	[चउद्दसी]
चतुर्वारः	चोव्वारो,	[चउव्वारो]
त्रयस्त्रिंशत्	तेत्तीसा ।	
त्रयोदश	तेरह ।	
त्रयोविंशतिः	तेवीसा ।	
त्रिंशत्	तीसा ।	
नवनीतम्	णोणीअं, लोणीअं ।	
[1]नवफलिका	णोहलिआ ।	
नवमालिका	णोमालिआ ।	
निषण्णः	णुमण्णो,	[णिसण्णो]
पूगफलम्	पोप्फलं ।	
पूगफली	पोप्फली ।	
पूतरः	पोरो ।	
प्रावरणम्	पङ्गुरणं, पाउरणं,	[पावरणं]

१ अव=ओ-[illegible] प्र० पृ० ४४ नि० ५३

बदरम्	बोरं।	
बदरी	बोरी।	
मयूखः	मोहो,	[मऊहो]
रुदितम्	रुण्ण।	
लवणम्	लोणं	[लवण]
विचकिलम्	वेइल्ल।	
विंशतिः	वीसा।	
सुकुमारः	सोमालो	[सुकुमालो]
[1]स्थविरः	थेरो।	

१०९ शब्द—सर्वथाविकार—

आ नीचे ते शब्दो आपवामां आवे छे जे केटलेक अंशे के सर्वथा (पोताना मूळ रूपथी) अन्य रूपवाळा थई जाय छेः—

अधस् हेट्ठं।	त्रस्तम् हित्थं, तट्ठं [तत्थ]
अप ओ, [अव]	दिश् दिसा।
अप्सरस अच्छरसा, अच्छरा।	दुहिता धूआ, [दुहिआ]
अयि ऐ[2]।	दंष्ट्रा दाढा।
अव ओ, [अव]	द्रहः हरो।
आयुः आउसं, [आऊ]	द्रहकः हरओ।
आरब्ध. आढत्तो, [आरद्धो]	धनुष धणुह, [धणू]
इदानीम् एण्हि, एत्ताहे, दाणिं[इआणिं] शौ० दाणिं।	धृति· दिही, [धिइ]

---

१ स्थविरः=थेरो-(पाली)

२ आ सिवाय बीजे क्यांय 'ऐ' नो प्रयोग थइ नथी-(जुओ १-टिप्पण)

[1]ईषत् कूर, [ईसि]

उत ओ, [उअ]

उप ऊ, ओ, [उव]

उभयम् अवहं. उवहं, [उभयं]

ककुभ् कउहा ।

क्षिप्तम् छूढं [खित्तं]

क्षुध् छुहा ।

गृहम्[2] घरं ।

क्षुप्तः छिक्को [छुत्तो]

तिर्यक्[3] तिरिआ, तिरिच्छि ।

पदातिः पाइक्को [पयाई]

प्रावृष् पाउसो ।

[4]पितृष्वसा पिउच्छा, पिउसिआ।

पूर्वम् पुरिमं पुव्वं । शौ० पुरवं ।

बहिस् बाहिं, बाहिरं ।

बृहस्पतिः भयस्सई [बहस्सई]

भगिनी बहिणी, [भइणी]

मलिनम् मइलं[मलिणं]

मातृष्वसा माउच्छा, माउसिआ ।

मार्जारः मंजरो, वंजरो [मज्जारो]

वनिता विलया, [वणिआ]

विद्रुतः विड्डाओ ।

वृक्षः रुक्खो, [वच्छो]

वैडूर्यम् वेरुलिअं, वेडुज्जं ।

शुक्तिः सिप्पी, [सुत्ती]

[5]स्तोकम् थेवं, थोवं, थोकं [थोअं]

स्त्री इत्थी [थी]

[6]श्मशानम् सीआणं, सुसाणं [मसा...

हृदयम् हिअयं पै० हितपं, हितपकं

---

१ विशेषणसूचक 'ईषत्' शब्दनुं ज 'कूर' रूप थाय छे, किं...

विशेषणसूचकनुं नहि.

२ 'गृहपति' शब्दनुं 'घरवइ' ने बदले 'गहवइ' रूप थाय छे...

३ तिर्यक्=तिरियो-(पाली) पा० प्र० पृ० १६ नि० १...

४ पितृष्वसा पितुच्छा-(पा० प्र० पृ० ३८ टिप्पन)

५ स्तोकम् थोकं-(स्त=थ-पा० प्र० पृ० २३)

६ श्मशानम् मस.न. सुसानं-(पा० प्र० पृ० ५१-टिप्पन...

११० अन्तः स्वरवृद्धि—

नीचेना शब्दोमां चिह्नित संयुक्त व्यंजननी वच्चे नीचे जणाव्या प्रमाणे स्वरो उमराय छे:—

			उमेरानो स्वर:
अग्नि[1]	अगणी	[अग्गी]	अ
अर्हन्	अरहन्तो अरिहंतो, अरहतो ।		अ, इ, उ
अर्ह[2]	अरह, अरिह, अरुह ।		,,
कृत्स्नः[3]	कसिणो ।		इ
कृष्णः	कसणो[4], कसिणो	[किण्हो]	अ, इ
क्रियाः	किरिया	[किया]	इ
क्ष्मा	छमा ।		अ
चैत्यम्	चेइअं ।		इ
छद्म	छउम	[छम्मं]	उ
ज्या[5]	जीआ ।		ई
तप्तः	तविओ	[तत्तो]	इ
द्वारम्[6]	दुवारं	[दारं]	उ
द्वादश	दुवालस ।		,,
दिष्ट्या	दिट्ठिआ ।		इ
पद्मम्[7]	पउमं	[पोम्मं]	उ

[1] अग्नि अगणि, अग्गिणि, गिणि–(पा० प्र० पृ० ४९)

[2] अहीं 'अर्ह' धातुना नवां रूपो समजवाना छे.

[3] कृत्स्न कसिणो, किण्हो, सिण्णो–(पा० प्र० पृ० ८७)

[4] आ बने कृष्ण वर्ण के रंग अर्थमां ज वपराय छे.

[5] ज्या जिया–(पा० प्र० पृ० ८८–य=इ)

[6] द्वार दुवार, दार (पा० प्र० पृ० १२ टिप्पण)

[7] पा० प्र० पृ० ८१–(मज्झिम पद्दम पदुम)

			उमेरातो स्वरः
[1]प्लक्षः	पलक्खो।		अ
भव्यः	भविओ।	[भव्वो]	इ
मूर्खः	मुरुक्खो,	[मुक्खो]	उ
रत्नं	रयणं।		अ
[2]वज्रम्	वइरं	[वज्जं]	इ
शार्ङ्गम्	सारंगं।		अ
[3]श्री	सिरी।		इ
[4]भ्रूः	भुवे।		उ
[5]श्लाघा	सलाहा।		अ
[6]स्निग्धम्	सणिद्धं, सिणिद्धं, [निद्धं]		अ, इ
स्नुषा	[7]सुनुसा [सुण्हा, ण्हुसा सुसा]		उ
[8]सूक्ष्मम्	सुहुमं, सुहमं।		उ, अ
[9]स्नेहः	सणेहो नेहो।		अ
स्याद्	सिआ		इ

---

१ प्लक्षः पिलक्खो-(पा० प्र० पृ० २१ नि० २७)
२ वज्रः वजिरो-(पा० पृ० २२ टिप्पण)
३ श्रीः सिरी-(पा० पृ० २२ टिप्पण)
४ भ्रूः भुवे, भं-(पा० पृ० २२ टिप्पण) भ्रूः भुव=भुवे-
सूओ पृ० ४६ अ-ए.
५ श्लाघा सिलाघा-(पा० पृ० २१)
६ स्निग्धम् सिनिद्धो, सिद्धो-(पा० पृ० ४६ नि० ५२)
७ देखो पृ० ७२ तथा ४१
८ सूक्ष्मः- सुखुमो-(पा० पृ० १८ टिप्पण)
९ स्नेहः सिनेहो, नेहो, सनेहो-(पा० पृ० ४६ नि० ५२

		उमरातो स्वरः
स्याद्वादः	सिआवाओ ।	इ
स्तुघ्नम्	सुरघं ।	उ
[1]स्वः	सुवो ।	,,
स्वे	सुवे ।	,,
स्वप्नः	सिविणो ।	इ
[2]ह्यः	हिओ [ह्यो]	,,
[3]ह्रीः	हिरी	इ

१११ अक्षर-व्यत्यय—

आ नीचे जे शब्दोमां चिह्नित अक्षरोनो परस्पर व्यत्यय-पूर्वापरभाव-थइ जाय छे ते आपवामां आवे छेः—

अचलपुरम्	अलचपुरं ।	
आलानः	आणालो	
करेणुः	कणेरू ।	
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठं ।	
लघुकम्	हलुअं	[लहुअं]
[4]ललाटम्	णडालं	[णलाडं]
वाराणसी	वाणारसी ।	
हरितालः	हलिआरो	[हरिआलो]
ह्रदः	दहो	[हरो]

१ समासान्तर्गत 'स्व' ना बदले 'सुर' ने बदले 'स' रूप थाय छेः स्वजनः सअणो

२ ह्यः हीओ, हिज्जो—(४ • पृ० २२ टिप्पण)

३ [illegible] (४ • पृ० १३ टिप्पण)

अपभ्रंश-आदेशो

(१) नीचे जणावेला शब्दोनां आदेश रूपो आ प्रमाणे छे:

अन्यादृश	([1]अन्नादि (इ) स)	अन्नाइस । [2]अवराइस ।
ईदृक्		एह ।
ईदृश	(एदि (इ) स)	अइस ।
कीदृक्		केह ।
कीदृश	(कादि (इ) स)	कइस ।
तादृक्		तेह ।
तादृश	(तादि (इ) स)	तइस ।
यादृक्		जेह ।
यादृश	(जादि (इ) स)	जइस ।
वर्त्म		विच्च ।
विषण्ण		वुन्न ।

अपभ्रंशनां उदाहरणो

(१) अपभ्रंशमां कोइ कोइ शब्दनां कोइ कोइ अक्षरनो वधारो कोइक ठेकाणे थइ जाय छे:—

ऊर्ध्वम्	उद्धं	उव्वं	('व' नो वधारो)
परस्परं	परोप्परं	अवरोप्परं	('अ' नो वधारो)
प्रायः	पाओ	प्राउ, प्राउ	('र' नो वधारो)

---

१ आ ( ) [illegible] पृ० ५८ [illegible] पृ० ५९ [illegible] ।

२ [illegible]

संधि प्रकरण ८

१ प्राकृतमां जूदां जूदां बे [1]पदोना स्वरोनो संधि थाय छे अने ते पण प्रयोगानुसारे विकल्पे थाय छेः—

स्वरसंधि—

अ+अ=आ—मगह+अहिवई=मगहाहिवई, मगहअहिवई [मगधाधिपतिः]

दंड+अहीसो=दंडाहीसो, दण्डअहीसो [दण्डाधीशः]

अ=आ=आ—विसम+आयवो=विसमायवो,विसमआयवो [विषमातपः]

आ+अ=आ—रमा+अहीणो=रमाहीणो, रमाअहीणो [रमाधीनः]

आ+आ=आ—रमा+आरामो=रमारामो, रमाआरामो [रमारामः]

इ+इ=ई —मुणि+इणो-मुणीणो, मुणिइणो [मुनीनः]

इ+ई=ई—मुणि+ईसरो-मुणीसरो, मुणिईसरो [मुनीश्वरः]

दहि+ईसरो-दहीसरो, दहिईसरो [दधीश्वरः]

---

१ जे बे पदोना स्वरोमा संधि थवानो छे, ते बे पदो सामासिक होय के असामासिक होय अर्थात् कोई प्रकारे जूदां जूदां होवां जोईए.

जेमके; सामासिक–दंड+अहीसो दंडाहीसो, दंडअहीसो ।

असामासिक–दंडस्स+ईसो–दंडस्सेसो, दंडस्स ईसो ।

प्राकृत साहित्यमां विशेषे करीने सामासिक पदोना स्वरोमां संधि थएलो जणाय छे अने असामासिक पदोमां तो तेनो प्रयोग घणो ज विरल थएलो छे. असामासिक पदोमां संधि करवा जतां घणे ठेकाणे अर्थबोध दुर्लभ थई जाय छे माटे ज असामासिक करतां सामासिक पदोमां संधि–प्रयोगनो प्रचार वधु थएलो लागे छे अने ए अनुसारे अहीं उदाहरणोमां पण सामासिक पदोनी ज नोंध विशेष करेली छे. कोई ठेकाणे तो फक्त एक ज पदमां पण संधि थएलो छेः—

काहि+इ–काही, काहिइ [करिष्यति]

बि+इओ–बीओ बिइओ [द्वितीयः]

२ जूओ पालिप्र॰ संधिकल्प नि॰ १–पृ॰ ५८

ई+इ=ई—गामणी+इइहासो—गामणीइहासो, गामणी इइहासो [ग्रामणीतिहासः]

ई+ई=ई—गामणी+ईसरो—गामणीसरो, गामणीईसरो [ग्रामणीश्वरः]

उ+उ=ऊ—भाणु+उवज्झाओ—भाणूवज्झाओ, भाणुउवज्झाओ [भानूपाध्यायः]

साउ+उअयं—साऊअयं, साउउअयं [स्वादूदकम्]

उ+ऊ=ऊ—साहु+ऊसवो—साहूसवो, साहुऊसवो [साधूत्सवः]

ऊ+उ=ऊ—बहू+उअरं—बहूअरं, बहूउअरं [वधूदरम्]

ऊ+ऊ=ऊ—कणेरू+ऊसिअं—कणेरूसिअं, कणेरूऊसिअं [करेणूच्छ्वसितम्]

अ+इ=ए—बाल+इसी—बालेसी, बालइसी [बालर्षिः]

आ+इ=ए—रमा+इअरो—रमेअरो रमाइअरो [रमेतरः]

अ+ई=ए—वासर+ईसरो—वासरेसरो, वासरईसरो [वासरेश्वरः]

आ+ई=ए—विलया+ईसो—विलयेसो, विलयाईसो [वनितेशः]

अ+उ=ओ—गूढ+उअरं—गूढोअरं, गूढउअरं [गूढोदरम्]

आ+उ=ओ—रमा+उवचिअं—रमोवचिअं, रमाउवचिअं [रमोपचितम्]

अ+ऊ=ओ—सास+ऊसासा—सासोसासा, सासऊसासा [श्वासोच्छ्वासौ]

आ+ऊ=ओ—विज्जुला+ऊसुंभिअं—विज्जुलोसुंभिअं, विज्जुलाऊसुंभिअं [विद्युदुल्लसितम्]

ह्रस्व-दीर्घ विधान—

१ प्राकृतमां सामासिक शब्दोमां प्रयोगानुसार (क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे) ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर थाय छे अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर थाय छे:—

---

१ जुओ प्राकृत व्या० संधि० नि० २ पृ० ९३

ई+इ=ई—गामणी+इइहामो–गामणीइहामो, गामणी इइहामो

[ग्रामणीतिहासः]

ई+ई=ई—गामणी+ईसरो–गामणीसरो, गामणीईसरो [ग्रामणीश्वरः]

उ+उ=ऊ–भाणु+उवज्झायो–भाणूवज्झायो, भाणुउवज्झायो

[भानूपाध्यायः]

साउ+उअयं–साऊअयं, साउउअयं [स्वादूदकम्]

उ+ऊ=ऊ—साहू+ऊसवो,–साहूसवो, साहुऊसवो [साधूत्सवः]

ऊ+उ=ऊ—वहू+उअरं–वहूअरं, वहूउअरं [वधूदरम्]

ऊ+ऊ=ऊ–कणेरु+ऊसिअं–कणेरूसिअं,कणेरूऊसिअं[करेणूच्छ्रितम्]

अ+इ=ए—वास+इसी–वासेसी, वासइसी [व्यासर्षिः]

आ+इ=ए—रामा+इअरो,–रामेअरो रामाइअरो [रामेतरः]

अ+ई=ए—वासर+ईसरो–वासरेसरो, वासरईसरो [वासरेश्वरः]

आ+ई=ए—विलया+ईसो–विलयेसो, विलयाईसो [वनितेशः]

अ+उ=ओ–गूढ+उअरं–गूढोअरं, गूढउअरं [गूढोदरम्]

आ+उ=ओ–रमा+उवचिअं–रमोवचिअं,रमाउवचिअं [रमोपचितम्]

अ+ऊ=ओ–सास+ऊसासा–सासोसासा,सासऊसासा,[श्वासोच्छ्वासौ]

आ+ऊ=ओ–विज्जुला+ऊसुंभिअं–विज्जुलोसुंभिअं,विज्जुलाऊसुंभिअं

विद्युदुल्लसितम्]

ह्रस्व-दीर्घ विधान—

२ प्राकृतमां सामासिक शब्दोमां प्रयोगानुसार (क्यांय नित्ये अने क्यांय विकल्पे) ह्रस्व स्वरनो दीर्घ स्वर थाय छे अने दीर्घ स्वरनो ह्रस्व स्वर थाय छेः—

१ जुओ पाइ॰ प्र॰ संधि॰ नि॰ २ पृ॰ ५७

[1]स्वरलोप—

६ स्वर पर रहेतां पूर्ववर्ती स्वरनो प्रयोगानुसारे लोप थाय छे:

तिअस+ईसो–तिअसीसो [त्रिदशेशः]

नीसास+ऊसासा–नीसासूसासा [निश्श्वासोच्छ्वासौ]

७ पदथी पर आवेला 'अपि' शब्दना 'अ' नो लोप विकल्पे थाय छे:

केण+अवि–केणावि, केणावि [केनापि].

कहं+अपि–[2]कहंपि, कहमवि [कथमपि]

किं+अपि–किं पि, किमवि [किमपि]

तं+अपि–तं पि, तमवि [तदपि]

८. स्वरांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ' नो लोप थई 'ति' ने स्थाने 'त्ति' थाय छे:

तहा+इति–तहात्ति, तहात्ति [तथेति]

पिओ+इति–पिओ त्ति, पिउत्ति [प्रिय इति]

पुरिसो इति पुरिसोत्ति, पुरिसुत्ति [पुरुष इति]

९. व्यंजनांत पदथी पर आवेला 'इति' शब्दना 'इ'नो लोप थाय छे:

किं+इति–किंति [किमिति]

जं+इति–जंति [यदिति]

दिट्ठं+इति–दिट्ठंति [दृष्टमिति]

न जुत्तं+इति–न जुत्तं ति [न युक्तमिति]

१० त्यदादि अने अव्ययथी पर आवेला त्यदादि अने अव्ययना आदि स्वरनो प्राय. लोप थई जाय छे:—

त्यदादि–त्यदादिः एस+इमो–एसमो [एषोऽयम्]

---

१ जुओ पा० सं० नि० १ (क) पृ० ५९।

२ जुओ ,, ,, ,, २६ पृ० ८३।

त्यदादि-अव्ययः अम्हे[1] एत्थ अम्हेत्थ [वयमत्र]

अव्यय-अव्ययः जइ एत्थ जइत्थ [यद्यत्र]

अव्यय-त्यदादिः जइ अहं जइहं [यद्यहम्]

जइ इमा जइमा [यदीयम्]

व्यंजनसंधि

विसर्ग=ओ

११ अकारथी पर आवेला 'विसर्ग'नो ओ थाय छे:—

अग्रतः=अग्गओ।
अन्तः+विस्रम्भः=अंतोवीसंभो।
पुरतः=पुरओ।
मनःशिला=मणोसिला।
मार्गतः=मग्गओ।
सर्वतः=सव्वओ।

म=अनुस्वार

१२ पदने अंते रहेला मकारनो अनुस्वार थाय छे:—[2]
गिरिम्=गिरिं। जलम्=जलं। फलम्=फलं। वृक्षम्=वच्छं।

१३ स्वर पर रहेतां अन्त्य 'म' नो अनुस्वार विकल्पे थाय[3] छे:
उसभम्+अजिअं=उसभं अजिअं, उसभमजिअं [ऋषभमजितम्]

---

१ पालि प्र० सं० नि० १-(ख) पृ० ६५-ते+अहं=तेहं।

२ कोई ठेकाणे द्वत्व 'म्म' नी आदिमां रहेला 'म्' नो पण अनुस्वार थई जाय छे. जेमके-वणम्मि=वणंमि (वने)

३ जुओ पालि प्र० सं० पृ० ७७-यं+आहु=यमाहु (यदाहुः) धनं+एव=धनमेव।

ङ, ञ, ण, न=अनुस्वार

१४ व्यंजन पर रहेतां 'ङ', 'ञ', 'ण' अने 'न' ने स्थाने अनुस्वार थाय छे:

ङ—पङ्क्ति=पंति—पंती। पराङ्मुख=परंमुह—परंमुहो।
ञ—कञ्चुक=कंचुअ—कंचुओ। लाञ्छन=लंछण—लंछणं।
ण—षण्मुख=छंमुह—छंमुहो। उत्कण्ठा=उक्कंठा।
न—विन्ध्य=विंझ—विंझो। सन्ध्या=संझा।

(१) शोरसेनीमां 'इ' अने 'ए' पर रहेतां अन्त्य 'म' पछी विकल्पे 'ण' उमेराय छे:*

युक्तम् इदम्	जुत्त+इणं / जुत्तमिणं	= जुत्तं णिणं, जुत्तं इणं।
सदृशम् इदम्	सरिसं+इणं / सरिसमिणं	= सरिसं णिणं, सरिसं इणं।
किम् एतत्	किं + एअं / किमेअं	= किंणेदं किमेदं।
एवम् एतत्	एवं + एअं / एवमेअं	= एवं णेदं, एवमेदं।

अनुस्वार आगम.

१५ नीचे जणावेला शब्दोना अन्त्य व्यंजननो लोप थई अंत्य स्वर उपर अनुस्वार थाय छे

ऋधक् इदं। ऋत्थक् इत्थं। तत् तं। पृथक् पिहं। यत् जं। विष्वक् वीसुं। सम्यक् सम्मं। साक्षात् सक्खं।

* जुओ शा॰ प्र॰ सं॰ नि॰ २॰ सू॰ ८---[illegible] णत्तो, विकल्पते।

१६ नीचे जणावेला शब्दोना प्रथम स्वर उपर, द्वितीय स्वर उपर अने तृतीय स्वर उपर प्रयोगानुसारे (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वार थाय छे:

प्रथम स्वर उपर—अश्रु अंसु। कर्कोटः कंकोडो। कुड्मलम् कुंपलं। गुच्छम् गुंछं। गृष्टिः गिंठी, गिट्ठी। त्र्यस्रम् तंसं। दर्शनम् दंसणं। पुच्छम् पुंछं। पर्शुः पंसू। बुध्नम् बुंधं। मार्जारः मंजारो, मज्जारो। मूर्धा मुंढा। वक्रम्-वंकं। वृश्चिकः-विंछिओ। श्मश्रु मंसू।

द्वितीय स्वर उपर—इह इहं [इहमेगेसिं] प्रतिश्रुत् पडंसुआ। मनस्वी-मणंसी। मनस्विनी मणंसिणी। मनःशिला मणंसिला, मणासिला। वयस्यः वयंसो।

तृतीय स्वर उपर—अतिमुक्तकम्-अणिउँतयं, अइमुंतयं, अइमुत्तयं। उपरि-अवरिं।

कोइ स्थळे मात्र छंदनी पूरवणी माटे पण अनुस्वार थाय छे:

देवनागसुवण्णकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए—

देवंनागसुवण्णकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए[१]।

[देवनागसुवर्णकिन्नरगणसद्भूतभावार्चिते]

१७ जे स्थळे स्वरथी शरु थतुं पद बेवडायुं होय त्यां वचे 'म' विकल्पे उमेराय छे:

एक+एकं एकमेकं, एकेकं (एकैकम्)

एक+एकेण एकमेकेण, एकेकेण (एकैकेन)

अंग+अंगम्मि अंगमंगम्मि, अंगअंगम्मि (अङ्गअङ्गे) इत्यादि।

१ जुओ पा० प्र० मं० नि० १८ पृ० ७८, नि० २४-पृ०८१

२ 'श्रुतस्तव'ना छेला श्लोकनुं चोथुं चरण छे—

जुओ पुक्खरवरदीवड्ढे-(प्रतिक्रमण)

अनुनासिकविधान—

१८ कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग अने पवर्ग पर रहेतां अनुस्वारने स्थाने अनुक्रमे ङ, ञ, ण, न अने म विकल्पे थाय छे:[1]

कवर्ग—अङ्गणम् अंगणं, अङ्गणं। पङ्कः पंको, पङ्को ।
लङ्घनम् लंघणं, लङ्घणं । शङ्खः संखो, सङ्खो ।

चवर्ग—कञ्चुकः कंचुओ, कञ्चुओ। लाञ्छनम् लंछणं, लञ्छणं।
अञ्जितम् अंजिअं, अञ्जिअं । सन्ध्या संझा, सञ्झा

टवर्ग—कण्टकः कंटओ, कण्टओ। उत्कण्ठा उक्कंठा, उक्कण्ठा।
काण्डम् कंडं, काण्डं। षण्ढः संढो, सण्ढो।

तवर्ग—अन्तरम् अंतरं, अन्तरं । पन्थः पंथो, पन्थो ।
चन्द्रः चंदो, चन्दो । बान्धवः बंधवो, बन्धवो ।

पवर्ग—कम्पते कंपइ, कम्पइ । वंफइ, वम्फइ [काङ्क्षति]
कदम्बः कलंबो, कलम्बो । आरम्भः आरंभो, आरम्भो ।

'अनुस्वार' लोप

१९. नीचे जणावेला शब्दोमां प्रयोगानुसार (विकल्पे के नित्ये) अनुस्वारनो लोप[2] थाय छे

त्रिंशत्–तीसा । विंशति वीसा । संस्कृतम्–सक्कयं ।
संस्कारः—सक्कारो । इत्यादि ।

वैकल्पिक—

इदानीं इआणिं, इआणि । एवं एवं, एव ।

---

१ आ नियमने [illegible] स्वीकारे छे.

२ [illegible]

३ [illegible]

४ [illegible]

कथम् कह, कहं ।

कांस्यम् कासं, कंसं ।

किं कि, किं ।

किमुक्तम् केमुअं, किमुअं ।

दाणिं दाणि, दाणिं [इदानीम्]

नूनं नूण, नूणं ।

पांसुः पांसु, पंसू ।

मांसलम् मासलं, मंसलं ।

मांसम् मासं, मंसं, ।

संमुखम्—समुहं, संमुहं ।

सिंहः—सीहो, सिंघो ।

इत्यादि ।

प्रकरण ९

उपसर्ग–अव्यय निपात

उवसग्गा—

प–प्र—परूवेइ (प्ररूपयति) पभासेइ (प्रभापते)

परा–परा—पराघाओ (पराघातः) पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अव–अप— ओसरइ, अवसरइ (अपसरति)
ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं–सम्—संखिवइ (संक्षिपति) संखित्तं (संक्षिप्तम्)

अणु, अनु–अनु—अणुमाणइ (अनुमानाति) अनुमई (अनुमतिः)

ओ, अव–अव—ओअरइ (अवतरति) ओआरो (अवतारः)
ओआसो, अवयासो (अवकाशः)

ओ, नि, नी–निर्[1]—ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्यम्)
निग्गओ (निर्गतः) नीसहो (निस्सहः)

दु, दू–दुर्—दुन्नयो (दुर्नयः) दूहवो (दुर्भगः)

अभि, अहि–अभि–अभिहणइ (अभिहन्ति) अहिप्पाओ (अभिप्रायः)

वि–वि —विकुव्वइ (विकुर्वति) विणओ (विनयः) वेणइआ (वैनयिकी)

अज्झि, अहि–अधि—अज्झायो (अध्यायः) अहीइ (अधीते)

सु, सू–सु—सुकरं (सुकरम्) सूहवो (सुभगः)

उ–उत्—उग्गच्छइ (उद्गच्छति) उग्गओ (उद्गतः) उप्प-
त्तिआ (औत्पत्तिकी)

अइ, अति–अति—अईओ (अतीतः) वइक्कंतो (व्यतिक्रान्तः)
अतिमओ (अतिमुक्त) अच्चन्तं (अत्यन्तम्)

णि, नि–नि—णिवेसो (निवेशः) सन्निवेसो (संनिवेश) निवि-
सइ (निविशते)

---

[1] क्वचित् 'मल्य' शब्दनी पूर्वमां 'निर्' नो 'ओ' थाय छे.

पडि, पति, परि—प्रति—पडिमा (प्रतिमा), पतिट्ठा (प्रतिष्ठा)
परिट्ठा (प्रतिष्ठा)

परि, पलि—परि—परिवुडो (परिवृतः) पलिहो (परिघः)

इ, पि, वि, अपि अवि—अपि—पिहेइ (पिदधाति) पिहित्ता (पिधाय)
किंपि, किमवि, किमपि (किमपि) कोइ, कोवि (कोऽपि)

उ, ओ, उव—उप—उज्झायो, ओज्झायो, उवज्झायो (उपाध्यायः)

आ—आ—आवासो (आवासः) आयंतो (आचान्तः).

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्योऽनर्थकोऽन्यः प्रयुज्यते ॥

अव्वयाइं (अव्ययानि)

अहो, हंहो, हा, हे, नाम, अहह, हीसि, अहह अने अरिरिहो वगेरे अनेक अव्ययो छे अने ते बधानो प्रयोग संस्कृतनी पेठे प्राकृतमां पण थाय छे. तो पण अहीं नीचे केटलाक विशेष अव्ययोनी नोंध करीए छीए:—

अइ	अति	अतिशय.
अइ	अयि	संभावना.
अईव	अतीव	विशेष.
अओ	अतः	आथी, एथी.
अकट्टु	अकृत्वा	नहि करीने.
अग्गओ	अग्रतः	आगळथी.
अग्गे	अग्रे	आगे, आगळ.
अंग	अङ्ग	संबोधन.
अज्ज	अद्य	आज.

१ फक्त 'स्था' धातुनी पूर्वना ज 'प्रति' नो 'परि' थाय छे.

अण (नञ्-)	अन	निषेध.
अण्णमण्णं	अन्योऽन्यम्	अन्योन्य.
अण्णहा	अन्यथा	विपरीत.
अणंतरं	अनन्तरम्	आतरा विना.
अतीव	अतीव	
अत्थं	अस्तम्	अदर्शन, आथमवुं.
अत्थि	अस्ति	सत्तासूचक.
अत्थु	अस्तु	विधिसूचक, निषेधसूचक.
अदु	अदः	
अदुवा / अदुव	अथवा	पक्षांतर.
अद्धा	अद्धा	समय.
अंतरं	अन्तरम्	आंतरुं.
अंतो	अन्तर्	अंदर, वच्चे.
अन्नहा	अन्यथा	विपरीत
अनु / अन्नह (अप०)	अन्यथा	
अप्पणो	आत्मनः	आपणे जाते-पोते.
अपरज्जु	अपरेद्युः	परमदिवसे.
अप्पेव	अप्येवम्	संशय.
अभिक्खं	अभीक्ष्णम्	वारंवार.
अभितो	अभितः	चारे बाजु.
अम्मो		आश्चर्य.
अम्महे (शौ०)		'एं हैं हं' हर्षनुं सूचन.
अरे	अरे	संभाषण.

एकइआ एक्कइआ एक्कया	एकदा	एक वखत.
एक्कमरिअं	एकमृतम् (?)	संप्रति.
एक्कसि इक्कसि (अप०)	एकशः	एकवार.
एक्कसि इक्कसि	एकदा	एक वखत.
एक्कसिअं इक्कसिअं	,,	,,
एगइआ एगया	एकदा	एक वखत.
एगयओ	एकैकतः	एक एक.
एगंनतो	एकान्ततः	एक तरफी.
एगज्झं	एकत्यम्	एक प्रकार.
एतावता एयावया	एतावता	एटले.
एत्थं एत्थ	अत्र	अहीं.
एत्थु एत्तहे (अप०)	अत्र	,,
एतहे (अप०)	इतः	आथी, एथी, वाक्यारंभ.
एव	एव	नक्की, ए ज प्रमाणे.
व्येव[1] (शौ०)	,,	,,

१ जुओ पा० प्र० पृ० ७८ नि० १७

वा + एव= वा वेव । तेनु + एव=तेनु वेव ।

न + एव=न वेव । ते + एव=ते वेव ।

जि (अप०)		ज "तासु जि" तेनो ज.
एवं	एवम्	एम, ए प्रमाणे.
एम्व (अप०)	,,	,,
एवमेव	एवमेव	एम ज.
एमेव	,,	,,
एम्वइ (अप०)	,,	,,
ए	अयि	संभावना.
ओ		सूचना, पश्चात्ताप.
कओ	कुतः	क्यांथी.
कउ कहंतिहु (अप०)	,,	,,
कत्थइ	कुत्रचित्	कोइ ठेकाणे.
कल्लं	कल्यम्	काले.
कह कहं	कथम्	केम, केवी रीते.
केम, केम्व, किम, किम्व, किह, किव (अप०)	,,	,,
कहि कहिं	कुत्र	क्यां.
केत्थु (अप०)	,,	,,
कालओ	कालतः	काले करीने, वखते.
काहे	काहि (?)	क्यारे.
किं		प्रश्न, गर्हा.
किंचि	किंचित्	काई.

अरे	अयि (अरे)	रतिकलह.
अलं	अलम्	सादृश्य. निषेध. पुरतें.
अलाहि	अलंहि	निवारण. निषेध.
अवस्सं	अवश्यम्	अवश्य.
अवसें (अप०)	अवशीन	,,
अवस	अवश्यम्	,,
अवरिं	उपरि	उपर.
अव्वो		सूचना, पश्चात्ताप. संभाषण, विस्मय. संताप, आदर. भय, अपराध. खेद, दुःख, आनंद.
असइ	असकृत्	अनेकवार.
अह	अथ	आरंभ.
अहत्ता	अधस्तात्	नीचें.
अहवइ (अप०)	अथवा	पक्षांतर.
अहव / अहवा	अथवा	,,
अहा	यथा	जेम.
अहे	अधः	नीचें.
अहो	अहो	ओहो (आश्चर्य)
आम	ओम	स्वीकार.
आवि	आविः	प्रकट.
आहच्च	आहत्य	बलात्कार.
आहरजाहर (अप०)	एहिरेयाहिरे	आवरेजावरे.
इ		पादपूरक.
इओ	इतः	आगी. पुरी, वाक्यारंभ.

इक्कमरिअं	एकमृनम् (?)	संप्रति.
इत्थत्तं	इत्थंत्वम्	ए प्रकारे.
इत्थत्थो	इत्यर्थः	ए अर्थ.
इयाणि	इदानीम	हमणां.
एम्वहि(अप०)	,,	,,
इर	किल	निश्चय.
इह	इह	अहीं.
इह	ऋषभक	सत्य.
इहय	ऋषभकक्	,,
इहरा	इतरथा	अन्यथा.
इ	किम्	प्रश्न, गर्हा.
ईसिं	ईषत्	थोडुं.
ईसि	,,	,,
उ	तु	तो.
उअ	उत	पश्य—जो.
उट्ठवइस (अप०)	उत्तिष्ठविश	उठबेश.
उत्तरओ	उत्तरतः	उत्तरथी, उत्तरमां.
उत्तरसुवे	उत्तरश्व.	आवती काल पछी.
उद	उत	विकल्प, अपि.
उदाहु	उताहो	विकल्प.
उप्पिं	उपरि	उपर.
उवरिं	.	,,
उवरि	,,	,
उ		गर्हा, क्षेप, विस्मय, सूचना.
एअ	एतत्	ए.

ण		वाक्यालंकार.
णं (स्त्री०)	ननु	वितर्क.
णमो	नमः	नमस्कार.
णवर		केवल.
णवरि		अनंतर.
णवरं	नवरम	विशेष, विपरीतता.
णवि	नैव (?)	निषेध.
णाइ	,,	,,
णाइं		
णाणा	नाना	जुदुंजुदुं.
णिच्चं	नित्यम्	नित्य.
णूण	नूनम्	नक्की. तर्क.
णुण	,,	,,
णो	नो	निषेध.
तं	तत्	वाक्यारंभ, ते.
तंजहा	तद्यथा	जेमके.
तए	तदा	त्यारे, त्यारपछी.
तओ	ततः	तेथी.
ततो	,,	,,
तदो	,,	,,
तणेण (अप०)		तादर्थ्यसूचन.
तत्थ	तत्र	त्यां. तेमां.
तत्तह (अप०)	,,	,,
तप्पभिइं	तत्प्रभृति	त्यारथी.
तह, तहा	तथा	तेम, तेवी रीते.

जणि, जणु (अप०)		जाण्ये, 'इव'नुं सूचन.
जत्थ	यत्र	ज्यां–जेमां.
जेत्तु, जत्तु (अप०)	यत्र	ज्यां–जेमां.
जति	यदि	जो.
जदि	यदि	,,
जह, जहा	यथा	जेम, जे रीते.
जेम, जेम्व, जिम, जिम्व, जिह, जिध (अप०)	,,	,,
जहेव	यथैव	,,
जं	यत्	जे, के.
जाव	यावत्	ज्यांसुधी.
जाम, जाउं, जामहिं (अप०)	,,	,,
जावज्जीव	यावज्जीवम्	जीवना सुधी.
जुअंजुअं	युतंयुतम् (?)	पृथक्पृथक्–जूदुंजूदुं.
जेण	येन	जे तरफ.
जे	ये	पादपूरक.
झगिति		सप्रति.
झत्ति	झटिति	शीघ्र-झट.
ण	न	निषेध.
णइ		अवधारण,

हहओ	क्रिया	खेद वाचक.
हहा	,,	खेद रीते. हे भाग.
हे	,,	संमुखीकरण, संबोधन.
चणियं		बाद.
धुवं	ध्रुवम्	ध्रुव, चोक्कस.
ध्रुवु (अप०)	,,	,,
न	न	निषेध.
नउ, नाइ, नवइ, नं (अप०)	नायते (?)	गु० नो. नाण्य, ... इव अर्थनुं सूचन. हिं० नांइ.
नत्थि	नास्ति	नथी.
नहि	नहि	निषेध.
नाहिं (अप०)	,,	,,
निच्चं	नित्यम्	नित्य.
नूनं, नूणं	नूनम्	वितर्क.
	,,	
नेव	नेव	नहि ज.
नो	नो	निषेध.
पच्चुअ	प्रत्युत	उलटुं.
पच्चल्लिउ (अप०)	,,	
पगे	प्रगे	प्रातःकाले.
पच्छा	पश्चात्	पछी.
पच्छइ (अप०)	,,	,,

पडिरूवं (पं) पतिरूवं (पं) पदिरूवं (पं)	प्रतिरूपम्	सरखुं.
परज्जु	परेद्युः	परम दिवसे.
पर	परम्	परंतु.
पर (अप०)	,,	,,
परंमुहं	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख, विमुख.
परसवे	परश्वः	आवता परम दिवसे.
परितो	परितः	चारे बाजु.
परोप्परं परुप्परं	परस्परम्	परस्पर.
अवरोप्परं अवरुप्पर (अप०)	,,	,,
पसज्झ	प्रसह्य	हठात्.
पाडिक्कं	प्रत्येकम्	एकएक.
पाडिएक्कं	,,	,,
पातो	प्रातः	सवारे.
पायो पाओ	प्रायः	प्रायः, घणुं करीने.
प्राउ प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व (अप०)	,,	,,
पिव	अपि+इव	सरखु, जेवु.
पि	अपि	पण.
पुण	पुनः	फरीने, वळी.

[illegible]	[illegible]	„ [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible]
[illegible] ([illegible])	„	„
[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	„
[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	„	„
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible]
		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	„
[illegible]	„	„
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible] !	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible] ([illegible])	„	„
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

पडिरूवं (पं) पनिरूवं (पं) पडिरूवं (पं)	प्रतिरूपम्	सरखुं
परज्जु	परेद्युः	परम दिवसे.
पर	परम्	परंतु.
पर (अप०)	,,	,,
परंमुहं	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख. विमुख.
परसवे	परश्वः	आवता परम दिवसे.
परितो	परितः	चारे बाजु.
परोप्परं परुप्परं	परस्परम्	परस्पर.
अवरोप्परं अवरुप्परं (अप०)	,,	,,
पसय्ह	प्रसह्य	हठात्.
पाडिक्कं पाडिएक्कं	प्रत्येकम् ,,	एकएक. ,,
पातो	प्रातः	सवारे.
पायो पाओ	प्रायः	प्रायः, घणुं करीने.
प्राउ प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व (अप०)	,,	,,
पिव	अपि+इव	सरखुं, जेवुं.
पि	अपि	पण.
पुण	पुनः	फरीने. वळी.

पुरत्थं	पुरस्तात्	.. पूर्वकाल.
पुणो	पुनः	फरीने, वळी.
पुणु (अव्य०)	..	..
पुणरवि	पुनरपि	फरीथी, वळीथी.
पुरओ	पुरतः	आगळ.
पुरत्था	पुरस्तात्	..
पुरा	पुरा	पहेलां, पूर्वकाळ.
पुढं	पृथक्	जुदुं.
पिह	..	..
पेच्च	प्रेत्य	परलोक.
बले	बले	निर्धारण–चूंटी काढवुं. निश्चय.
बहिद्धा	बहिर्धा	बहार.
बहिया	बहिर्	"
बहिं	"	"
भुज्जो	भूयः	फरीने.
भो !	भोः	आमंत्रण.
मग्गओ	मार्गतः	पाछळ.
मणयं	मनाक्	थोडुं.
मणाउं (अव्य०)	"	"
मन्ने	मन्ये	विमर्श.
माइ	माऽति	निषेध.
मामि		सखीनुं संबोधन.
मिव	मा+इव	जेवुं
मुहा	मुधा	मोडुं.

पडिरूवं (पं) पतिरूवं (पं) पटिरूवं (पं)	प्रतिरूपम्	सरखें.
परज्जु	परेद्युः	परम दिवसे.
परं	परम्	परंतु.
पर (अप०)	,,	,,
परंमुहं	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख. विमुख.
परसवे	परश्वः	आवता परम दिवसे.
परितो	परितः	चारे बाजु.
परोप्परं परुप्परं	परस्परम्	परस्पर.
अवरोप्परं अवरुप्परं (अप०)	,,	,,
पसय्ह	प्रसह्य	हठात्.
पाटिक्कं	प्रत्येकम्	एकएक.
पाडिएक्कं	,,	,,
पातो	प्रातः	सवारे.
पायो पाओ	प्रायः	प्राय , घणु करीने.
प्राउ प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व (अप०)	,,	,,
पिव	अपि+इव	सरखु, जेवु.
पि	अपि	पण.
पुण	पुनः	फरीने. वळी.

, }

पुणरुत्तं	पुनरुक्तम्	,, पुनरुक्त.
पुणो	पुनः	फरीने, वळी.
पुणु (अप०)	,,	,,
पुणरवि	पुनरपि	फरीपण, वळीपण.
पुरओ	पुरः	आगळ.
पुरत्था	पुरस्तात्	,,
पुरा	पुरा	पहेलां, भूतकाळ.
पुहं	पृथक्	जुदुं.
पिहं	,,	,,
पेच्च	प्रेत्य	परलोके.
बले	बले	निर्धारण—जुदी काढवुं.
बाढ्ढा		निश्चय.
बाहिया	बहिर्वा	बहार.
बहिं	बहिर्	,,
भुज्जो	,,	,,
भो !	भूयः	फरीने.
मग्गतो	भोः	आमंत्रण.
मग्गयं	मार्गतः	पाछळ.
मणाउं (अप०)	मनाक्	थोडुं.
मणे	,,	,,
माइं	मन्ये	विमर्श.
मामि	माऽति	निषेध.
मिव		सखीनुं संबोधन.
मुसा	मा+इव	जेवु.
	मृषा	खोटुं.

पडिरूवं (पं) पतिरूवं (पं) पटिरूवं (पं)	प्रतिरूपम्	सरखुं.
परज्जु	परेद्युः	परम दिवसे.
परं	परम्	परंतु.
पर (अप०)	,,	,,
परंमुहं	पराङ्मुखम्	पराङ्मुख, विमुख.
परसवे	परश्वः	आवता परम दिवसे.
परितो	परितः	चारे बाजु.
परोप्परं परुप्पर	परस्परम्	परस्पर.
अवरोप्परं अवरुप्पर (अप०)	,,	,,
पसय्ह	प्रसह्य	हठात्.
पाटिक्कं पाडिएक्कं	प्रत्येकम् ,,	एकएक. ,,
पातो	प्रातः	सवारे.
पायो पाओ	प्रायः	प्रायः, घणुं करीने.
प्राउ प्राइव प्राइम्व पग्गिम्व (अप०)	,,	,,
पिव	अपि+इव	सरखु, जेवु.
पि	अपि	पण.
पुण	पुनः	फरीने. वळी.

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	पुनः	[illegible]
[illegible] (अव्य०)	..	..
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	..
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	..	..
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
		निश्चय.
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	..
[illegible]	..	..
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible] (अव्य०)	..	..
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

मुहु	मुहु	वारंवार.
मुसा	मृषा	खोटुं.
मा	मा	निषेध.
म (अप०)	मा	,,
मोग्उला	मुधा.	फोकट.
मोसा	मृषा	खोटुं.
य	च	अने.
हो	ह्यः	गई काले.
र	र	पादपूरक.
रहो	रहः.	गुप्त.
रे	रे	संभाषण.
रे	रति+रइ=रे	रतिकलह.
रेगि, रेगि (अप०)	,,	तादर्थ्यसूचन.
लहु	लहु	शीघ्र.
व	वा	विकल्प, जेवुं.
व्व	इव	जेवुं.
वणे	वने	अनुकंपा, निश्चय, विकल्प, संभावना.
वरिल (अप०)	शीघ्रम् परमिल(?)	वहेलुं.
वा	वा,	विकल्प, जेवुं.
वि	अपि	पण.
विअ	इव	जेवुं.
विणा	विना	वगर.
विणु (अप०)	,,	,,
विव	इव	जेवुं.
वंद्रं	[illegible]	[illegible].

वे	वै	निश्चय.
वेव्व		आमंत्रण.
वेव्वे	,,	भय. वारण. विषाद, आमंत्रण.
सइ	सदा	सदा.
सइं	सकृत्	एकवार.
सक्खं	साक्षात्	प्रत्यक्ष.
सज्जो	सद्यः	शीघ्र.
सणियं	शनैः	धीरे.
सद्धिं	सार्धम्	साथे.
समक्खं	समक्षम्	बराबर सामे
सपडिदिसिं	सप्रतिदिग	,,
समं	समम्	साथे.
समाणं (अप०)	समानम्	,,
सम्मं	सम्यक्	ठीक. सारुं.
सयं	स्वयम्	जाते. पोते.
सया	सदा	सदा
सव्वओ	सर्वतः	बधे, बधेथी.
सव्वत्थ	सर्वत्र	बधे.
सव्वहिं (अप०)	,,	,,
सह	सह	साथे.
सहुं (अप०)	,,	,,
सहसा	सहसा	अविमर्श, शीघ्र, त्वरा.
सायं	सायम्	संध्या, सांज.
सिय (अ)	स्यात्	कदाच.

*गोणो	गौः	
*गावी	,,	
*गायणो	गायनः	
चविक्को	चाक्रिक	कुंभारनुं एक जातनुं उपकरण.
छिछि	छिछिक्	
छिनई	पुंश्चली	छिनाळ.
*जम्मा	जन्म	
जगुरि	जाम्बूलम्	
जासुमणिं	कांचम्	
झेडरो	षण्ढक	नपुंसक. हीजडो.
*तेयालीसा	त्रयश्चत्वारिंशत्	तेताळीस.
*तेवण्णा	त्रिपञ्चाशत्	त्रे (त्रे) पन.
तिंतिणि	तीक्ष्ण रसः	पुष्पनी रज.
*डिंडि	डिंडिम	
*दिग्घु	दिग्धु	
*निहेलणं	निलयनम्	घर.
*पक्कलो	पक्कलः	समर्थः.
*पंचावण्णा	पञ्चपञ्चाशत्	पचावन.
*पणपन्ना	,,	,,
पल्ही	कर्पास	कपास.
*पडिसिद्धी / पाडिसिद्धी	प्रतिस्पर्धा	
* भिमोरो	हिमोर.	
*बइल्लो	बलीवर्द.	बळद.
*भट्टिओ	भर्तृकः	विष्णु.

*आ निशानीवाळा शब्दो संस्कृत शब्दो साथे समानता धरावे छे.

मवंतो	मवान्	नम.
वहिल्ला	वहितो	मैथुन, वाहि.
मवांगो	मवता	इन्द्र.
महन्तो	महान्	
उन्नहट	उद्धहति	
रुज्झ्रुर्णो	...वर्ता	
विठन्नो	सुन्मर्णः	आनर्वतीनो छोड.
वेमिन्नं	सुन्मर्णित्	न्याय.
वन्दलो	अवन्मार्गः	गंगाविरोद्र—वाहि.
वट्टय	बृहदम्न्	वडेनं.
वंडं	वृत्तः	
मल्लिन्नो	मार्शी	
माहुली	मान्या	

अपभ्रंशमां आवता केटलाक निपातो—
देश्य शब्दो

अम्मा		
केहु	अन्नेय	आनन्दुं.
नेहु	कौतुक	केटु.
...डिआ	कीटा	नेत्र. नयन.
मड्डु	वड्डदिवस	ने ने मोटुं.
दवि		
ददरद	अहर्त्त	
द्रेह	अन्त्यन्त	ददरदुं.
हेरि	न्न	
	हरि	

नवग्ग	नवक	नोखुं. नवुं. हिं० अनोखा
माल्जिअ	मूढ	
निचड्ड	(नित्यक्ष-निचड्ड) गाढ.	
मऊभीस	मा भैषीः	मा वीश-भय न पाम.
रवण्ण	रमण	रम्य.
वेट	(वट !)	मूढ.
विट्टाल[1]		वटाळ, वटलावुं.
सड्डूल		असाधारण.
हेल्लि	(हे आलि !)	हे सखी.

आ उपरान्त बीजा पण देश्यप्राकृत शब्दो छे अने ते अनेक छे. ते माटेनी विशेष माहिती, हेमचंद्रकृत 'देशीनाममाला' ने जोवाथी मळी शके तेम छे. आवा केटलाक शब्दो 'षड्भाषाचंद्रिका' मां पण नोंधाएला छे.

---

१ आ शब्दनो विशेष संबंध सं० 'विवर्तितं' के 'वलितं' साथे होइ शके. वटलावुं, पटलावुं अने वटलावुं ए बधानी उत्पत्ति एक सरखी लागे छे.

नाम प्रकरण १०

नामना प्रकारो

संस्कृत भाषामां नामोना बे विभाग छे. जेमके—स्वरांत नाम अने व्यंजनांत नाम. पण प्राकृतभाषामां तेम नथी. कारण के, व्यंजनांत नाममात्र कोइ रीते स्वरांत थया सिवाय प्राकृतभाषामां प्रयोजातुं ज नथी, एथी प्राकृतमां बधां नामो स्वरांत होय छे माटे प्राकृत नामोनो विभाग आ प्रमाणे छेः

अकारांत, आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत, एकारांत अने ओकारांत. [संस्कृत ऋकारांत नामो प्राकृतमां रूपाख्यानने प्रसंगे अकारांत, आकारांत, इकारांत के उकारांत थतां होवाथी एने उपरनी गणत्रीमां जुदां गण्यां नथी.]

नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार.

१ 'ग्रामणी,' 'खलपू' ए ज प्रकारना बीजा अनेक शब्दो (सेनानी, सुधी; कारभू, कटप्रू वगेरे) नो अन्त्य स्वर रूपाख्यानने प्रसंगे ह्रस्व थाय छे.

२ नान्यतरजातिमां वपरातां नामोनो अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

नामनी जातिओ

प्राकृत नामोनी जातिओ संस्कृत नामोनी जेवी छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छेः

१ नकारांत अने सकारांत नामो प्राकृतमां नरजातिमां गणाय छे.

२ शरद्, प्रावृष् अने तरणि ए त्रण नामो प्राकृतमां नरजातिमां रहे छे.

३ नेत्रवाचक शब्दो नेत्रँ साम जाति उपरांत नरजातिमां पण वपराय छे.

४ वचन, विद्युत्, कुल, छन्दस् माहात्म्य, दुःख अने भाजन वगेरे शब्दो पोत पोतानी साम जाति उपरान नरजातिमां पण रहे छे.

५ गुण, देव, बिंदु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह अने वृक्ष वगेरे शब्दो पोतानी जाति उपरांत नान्यतरजातिमा पण वपराय छे.

६ गरिमन्, महिमन् वगेरे 'इमन्' छेडावाळां नामोने अने पीणिमा (पीनत्व), पुष्फिमा (पुष्पत्व) वगेरे 'इमा' छेडावाळां नामोने तेओनी साम जाति उपरान नारीजातिमा पण समजवाना छे.

७ अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि अने ग्रन्थि वगेरे नामो पोत पोतानी जाति उपरात नारीजातिमा पण वपराय छे.

वचन—विभक्तिओ

१ गुजरातीनी पेठे प्राकृतमा द्विवचननो प्रयोग ज नथी, तेने बदले सर्वत्र बहुवचनथी काम चलावाय छे अने 'द्वित्व' अर्थनी विशेष स्पष्टता माटे बहुवचनांत नामनी साथे तेना विशेषणरूपे विभक्त्यन्त 'द्वि' शब्दनो व्यवहार थाय छे.

२ चतुर्थी अने षष्ठी ए बन्ने विभक्तिना प्रत्ययो एक सरखा होवाथी चतुर्थी विभक्ति, षष्ठी विभक्तिमा समाई जाय छे तो पण कोइ स्थळे अर्थविशेषमा नाममात्रनुं चतुर्थीनुं एकवचन संस्कृतनी जेवुं पण थतुं होवाथी ए बन्ने विभक्तिओने जूदी जूदी गणावेली छे एथी विभक्तिओनी संख्यामा प्राकृत अने संस्कृतनी समानता छे.

प्रत्ययो

नीचे जणावेला प्रत्ययो नरजातिना अने नान्यतरजातिनां हरेक अकारांत नामोने योजी शकाय छे.

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो

विभक्ति.	एकवचन.	बहुवचन.
पढमा	०	०.
बीआ	म्	०.
तइआ	ण	हि, हिं, हिँ.
चउत्थी / छट्ठी	स्स, ०	ण.
पंचमी	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, ०	त्तो, ओ, उ, हि, हिंतो, सुंतो.
सत्तमी	मि, म्मि, ०	सु.
संबोहण (संबोधन)	०	०.

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां प्रत्ययोनी विशेषता आ प्रमाणे छे:

शौरसेनी

पंचमी	दो, दु.

मागधी

पढमा	०	
चउत्थी / छट्ठी	ह	हं.

पैशाची

पंचमी	तो, तु.	

अपभ्रंश

पढमा	उ, ०	०.
बीआ	उ, ०	०.
तइआ	ण, म्	हिं.
चउत्थी / छट्ठी	सु, स्सु, हो, ०	हं, ०.
पंचमी	हु, हे	हुं.
सत्तमी	०	हिं.
संबोहण	उ, ०	हो,०.

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

ज्यां ज्यां प्राकृत प्रत्ययोमां ० छे त्यां आ प्रमाणे समजवानुं छे.

पढमा—पुंलिंगी प्रत्येक अकारांत नामनुं प्रथमानुं एकवचन ओकारांत थाय छे, अने बहुवचन आकारांत थाय छे.

बीआ—पुंलिंगी अकारांत नामनुं द्वितीयानुं बहुवचन आकारांत अने एकारांत थाय छे.

चउत्थी—मात्र तादर्थ्यने सूचववा माटे अकारांत नामनुं चोथीनुं एकवचन संस्कृतनी जेवुं पण थाय छे. मात्र एक 'वह' शब्दथी तादर्थ्य अर्थमां संस्कृतना 'आय' प्रत्ययनी जेवो वधारानो 'आइ' प्रत्यय पण लागे छे. आर्षप्राकृतमां तो केटलेक स्थळे आ 'आइ' प्रत्ययने बदले 'आए' प्रत्यय पण वपराय छे अने ते हरकोई शब्दने लागी शके छे.

पंचमी—अकारांत नामनुं पंचमीनुं एकवचन आकारांत पण थाय छे.

सप्तमी—अकारांत नामनुं सप्तमीनुं एकवचन एकारांत पण थाय छे.

संबोधन—पुंलिंगी अकारांत नामनुं संबोधननुं एकवचन आकारांत अने ओकारांत थाय छे तथा संबोधनमां विभक्ति विनानुं ए अकारांत नाम पण वपराय छे अने संबोधनना बहुवचनना रूपो प्रथमा (पढमा) नी जेवां थाय छे.

प्रत्ययो लागतां नामना मूळ अंगमां थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्रत्ययो पर रहेतां अकारांत नामना अन्त्य ' अ ' नो ' ए ' थाय छे.

पंचमी—पंचमीना एकवचननी पूर्वेना अकारांत नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे अने बहुवचनना स्वरादि प्रत्ययो पर रहेतां पण अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' थाय छे.

पंचमीना बहुवचनना ' म ' अने ' ह ' थी शरु थता प्रत्ययो पर रहेतां अकारांत नामना अन्त्य ' अ ' नो ' आ ' अने ' ए ' थाय छे.

तइया, छट्ठी, सत्तमी — तृतीयाना एकवचनना ' ण ' उपर अने षष्ठीना तथा सप्तमीना बहुवचन उपर अनुस्वार विकल्पे थाय छे.

छट्ठी—छट्ठीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेतां पूर्वेना नामनो कोई पण अन्त्य स्वर दीर्घ थाय छे.

सत्तमी—सप्तमीना एकवचननो ' सि ' प्रत्यय लागतां मूळ अंगना छेवटना स्वर उपर अनुस्वार थाय छे. आ ' सि ' प्रत्ययवाळुं रूप विशेष करीने [1]आर्षप्राकृतमां वपरायुं छे.

---

१ " एगयंसि मज्झयंसि कोगंसि "—आ० [illegible]

[illegible] २. " लोगंसि [illegible] " [illegible]

सप्तमीना बहुवचननो प्रत्यय पर रहेतां अकारांत नामना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे.

शौरसेनी—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—प्राकृतमां पंचमीना एकवचनना प्रत्ययो लागतां मूळ अंगनो जे फेरफार जणाव्यो छे ते शौरसेनीमां पण लागु थाय छे. बाकी बधा शौरसेनीनां रूपाख्यानो प्राकृतनी प्रमाणे छे.

मागधी—प्रत्ययने लगता नियमो

पढमा—ज्यां शून्य छे त्यां मागधीमां पुंलिंगी अकारांत नामनुं प्रथमानुं अने संबोधननु एकवचन 'एकारान्' थाय छे. मागधीनुं आ एकारांत रूप आर्षप्राकृतमा पण वपराएलुं छे अने आ एक ज रूपनी वपराशने लीधे ए आर्षप्राकृतने पण 'अर्धमागधी' तरीके जणाववामा आवेलुं छे.[1]

चउत्थी, छट्ठी—मागधीमा चोथी अने छट्ठी विभक्तिमां अकारांत के आकारात नामथी एकवचनमां 'ह' अने बहुवचनमां 'हँ' प्रत्यय विकल्पे लागे छे अने ते बन्ने प्रत्ययो लागता पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे. बाकीनां बधा मागधी रूपो शौरसेनी प्रमाणे समजी लेवाना छे. उपर जणावेलो बहुवचननो 'हँ' प्रत्यय प्राकृतमा पण वापरी शकाय छे.

पैशाची—प्रत्ययने लगता नियमो

पंचमी—शौरसेनीमां पंचमीना एकवचनमां जे फेरफार जणाव्यो छे ते पैशाचीमा पण समजवानो छे. बाकी बधां पैशाचीना

× × × × ×

रूपाख्यानो शौरसेनी प्रमाणे समजवाना छे.

---

[1] जुओ हे० प्रा० व्या० अ० ८, पा० ४, सू० २८७.

अपभ्रंश—प्रत्ययने लगता नियमो

पढमा, बीआ—ज्यां शून्य छे त्यां अपभ्रंशमां प्रथमा अने द्वितीया विभक्तिमां (एकवचन अने बहुवचनमां) अकारांत नाम आकारांत थइने वपराय छे अने एमने एम पण वपराय छे. तथा प्रथमाना एकवचनमां पुंलिंगी अकारांत नाम प्राकृतनी पेठे ओकारांत थइने पण वपराय छे.

चउत्थी, छट्ठी—ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंग जेमनुं तेम वपराय छे अने दीर्घांत थइने पण वपराय छे.

सत्तमी—ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंग इकारांत अने एकारांत थइने वपराय छे.

संबोहण—ज्यां शून्य छे त्यां संबोधननां बधां रूपाख्यानो प्रथमा विभक्ति जेवां समजवानां छे.

अपभ्रंश-प्रत्यय लागतां अंगमां थता फेरफारो

तइया—तृतीया विभक्तिना प्राकृत प्रत्ययो लागतां मूळ अंगमां के प्रत्ययोमां जे फेरफार थाय छे ते ज फेरफार अपभ्रंशना ए प्रत्ययो लागतां पण समजवानो छे अने ए उपरांत तृतीयाना बहुवचननो प्रत्यय लागतां मूळ अंग आकारांत थाय छे अने एमनुं एम पण वपराय छे.

चउत्थी, पंचमी, छट्ठी, सत्तमी—चोथी, पांचमी अने छट्ठी विभक्तिना एकवचनना अने बहुवचनना प्रत्ययो लागतां मूळ अंगना अंत्यस्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे तथा सातमीना बहुवचननो ज प्रत्यय लागतां पण मूळ अंगमां पूर्वोक्त फेरफार थाय छे.

संबोहण—अपभ्रंशनुं (एकवचन अने बहुवचननुं) संबोधनी रूप प्रथमानी पेठे समजवानुं छे अने बहुवचननो 'हो' प्रत्यय लागतां मूळ अंगना अंत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे.

पुंलिंग अने नपुंसकलिंग

अकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (पुंलिंग–नरजाति)

वीर[1]

	एकव०	बहुव०
प०	वीरो, (वीरे)[2]	वीरा.
बी०	[3]वीरं	वीरे, वीरा.
त०	वीरेण, वीरेणं	वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ.
च०छ०	वीरस्स	वीराण, वीराणं, (वीराहँ.)
ता० च०	वीराय, वीरस्स	” ”

---

१ 'वीर'नां पालिरूपो

१	वीरो	वीरा (वीरसे).
२	वीरं	वीरे.
३	वीरेन	वीरेहि, वीरेभि.
४	वीराय, वीरस्स	वीरानं.
५	वीरा, वीरस्मा, वीरम्हा	वीरेहि, वीरेभि.
६	वीरस्स	वीरान
७	वीरे, वीरस्मि, वीरम्हि	वीरेसु.
८ स०	वीर, वीरा	वीरा.

जुओ पालिप्र० नामकल्प अकारांत 'बुद्ध' शब्द अने ते रूपो उपरना टिप्पणो.

२ ( ) आ निशानमां आपेलां रूपो वाकल्पिक छे

३ वीर+म – वीरं (जुओ प्रकरण ८, म – अनुस्वार–१२)

प०	धीरत्तो,	धीरत्तो,
	धीराओ, धीराउ,	धीराओ, धीराउ,
	धीराहि,	धीराहि, धीरेहि,
	धीराहिंतो,	धीराहिंतो, धीरेहिंतो,
	धीरा	धीरासुंतो, धीरेसुंतो,
स०	धीरंसि, धीरम्मि,[1]	धीरेसु, धीरेसुं,
	धीरे	
संबो०	धीरो, (धीर)	धीरा.
	धीर, धीरा	

'वह' (वध) शब्दना रूपो 'धीर' शब्दनी जेवां ज समजी लेवां. जे विशेष छे ते आ प्रमाणे.

ना० च० वहाय, वहाए, वहस्स (एकवचन)

आर्षप्राकृतमां ए शब्दने ना० चतुर्थीनो सूचक 'आए' प्रत्यय लागेलो छे तेनुं रूप आ प्रमाणे छे:

ना० च० मोक्ख—मोक्खाए,[3] मोक्खाय, मोक्खस्स (एकवचन)
.. हिअय—हिअयाए[4] हिअयाय, हिअयस्स ,,

१ जुओ प्रकरण २. दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर–१.

२ जुओ प्रकरण ८, म=अनुस्वार–११. (टिप्पण)

३ जुओ सूत्रकृतांगसूत्र प्र० श्रु० तृ० अ० तृ० उ० गा० ६१– "इणमन्नो निसामित्ता आमोक्खाए परिव्वएज्जा" इत्यादि.

४ जुओ आचारांगसूत्र प्र० श्रु० प्र० अ० छ० ६–" से बेमि: अप्पेगे अजिणाए वहंति, मंसाए ० सोणियाए ० एवं हिययाए " इत्यादि.

वीर (अपभ्रंशरूपो)

	एकव०	बहुव०
१	वीरु, वीरो, वीर, वीरा	वीर, वीरा.
२	वीरु, वीर, वीरा,	वीर, वीरा.
३	वीरेण, वीरेणं, वीरें.	वीरहिं, वीराहिं, वीरहिं.
४–६	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु वीराहो, वीरहो. वीर, वीरा	वीराहं, वीरहं, वीर, वीरा.
५	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे	वीराहुं, वीरहुं.
७	वीरि, वीरे	वीराहिं, वीरहिं.
८ (सं०)	वीरु ! वीरो ! वीर ! वीरा !	वीराहो ! वीरहो ! वीर ! वीरा !

'वीर' शब्दनां उपर जणावेलां बधी जातनां रूपो प्रमाणे प्रत्येक पुंलिंगी अकारांत शब्दनां शौरसेनी रूपो, मागधीरूपो, पैशाची रूपो अने अपभ्रंश रूपो समजी लेवानां छे.

अकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नपुंसकलिंग-नान्यतरजाति)

अकारांत नपुंसक नामोनां बधी जातनां रूपाख्यानो बनाववानी सघळी प्रक्रिया उपर प्रमाणे छे. जे कांइ खास भेद छे ते आ प्रमाणे छे:

---

१ वीर+उ=वीरु–जुओ स्वरांत–३ पृ० १६.

कुलअ (कुलक)

१	[1]कुलउं	कुलआइं, कुलअइं.
२	,,	,, ,,

बाकी बधा रूपो 'वीर' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे समजी लेवानां छे.

अकारांत-सर्वादि-शब्द

नीचेना शब्दोने 'सर्वादि' तरीके गणवामां आवे छेः सव्व-अप० साहु, सव्व (सर्व), वीस (विश्व), उह, उभ (उभ), अवह, [2]उवह, उभय (उभय), अण्ण, अन्न (अन्य), अण्ण (त्र) यर (अन्यतर), इअर (इतर), कयर (कतर), कइम (कतम), णेम, नेम (नेम), सम, सिम, [3]पुरिम, पुव्व (पूर्व) अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दक्षिण), उत्तर, अवर. अहर (अधर), स,सुव (स्व), अंतर, [4]त (तद्), ज (यद्) [5]अमु (अदस्), इम (इदम्), एत

१ कुलअ + उं = कुलउं-जुओ स्वरलोप-६ पृ० ९६.

२ 'उवह' रूप आ० हेमचंद्रने संमत नथी-हे० प्रा० व्या० ८-२-१३८ पृ० ६५. आर्षप्राकृतमां 'उभयोकालं' प्रयोगमां 'उभय' ने बदले 'उभयो' के 'उभओ' ("उभओकालं पि अजिअसंतिथयं"-अजितशांतिस्तवन गा० ३९) रूप पण वपराएलुं छे.

३ जुओ पृ० ८७ शब्द-सर्वथा विकार.

४ जेम संस्कृतमां 'तद्' नी जेवुं 'त्यद्' पण एक सर्वनाम छे तेम ए सर्वनाम पालिमां पण छे, एनां रूपो 'त' नी जेवां थाय छेः

स्यो ने

त्य त्ये -पालिप्र० पृ० १४३ नुं हेठलुं टिप्पण. प्राकृतमां तो आ 'त्य' सर्वनाम मळतुं नथी.

५ आ शब्दनां रूपो उकारांत शब्दोना प्रसंगे आववानां छे.

रूपाख्यानो

कुल

१	कुलु, कुलं, कुला	कुलाइं, कुलइं.
२	,, ,, ,,	,, ,,

म० छ० ए० मनसो	म० छ० ए० मनसो	(मनसः)
स० ए० मनसि	स० ए० मणसि	(मनसि)

कम्म (कर्मन्)

पालि	आर्षप्रा०	संस्कृत
तृ० ए० कम्मना, कम्मुना	तृ० ए० कम्मणा, कम्मुणा	(कर्मणा)
म० छ० ए० कम्मुनो	म० छ० ए० कम्मुणो	(कर्मणः)
पं० ए० कम्मना, कम्मुना	पं० ए० कम्मणा, कम्मुणा	(कर्मणः)
स० ए० कम्मनि	स० ए० कम्मणि	(कर्मणि)

उदाहरण " सिरसा, मणसा मत्थएण वंदामि "–मुनिवंदनसूत्र.

मणसि काउ गुलिय माइ " प्राकृतकथासंग्रह–उदायननी कथा पृ० ४८, पं० २२.

" कम्मुणा बंभणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ "–

उत्तराध्ययन अ० २५, गा० ३३.

आ आर्ष रूपोनी सिद्धि माटे आ० हेमचंद्रे " [illegible] [illegible] [illegible] " ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible].

'[illegible]' [illegible] शब्दना पालिरूपोनी सिद्धि माटे जुओ पालि प्र० पृ० १३०, [illegible].

[illegible] [illegible] [illegible] ' [illegible] ' [illegible] शब्दना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

[illegible]

कुलअ (कुलक)

१	[1]कुलउं	कुलआइं, कुलअइं.
२	,,	,, ,,

बाकी बधां रूपो 'वीर' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे समजी लेवानां छे,

---

अकारांत–सर्वादि–शब्द

नीचेना शब्दोने 'सर्वादि' तरीके गणवामां आवे छे: सव्व—अप० साहु, सव्व (सर्व), वीस (विश्व), उह, उभ (उभ), अवह, उवह[2], उभय (उभय), अण्ण, अन्न (अन्य), अण्ण (न्न) यर (अन्यतर), इअर (इतर), कयर (कतर), कइम (कतम), णेम, नेम (नेम), सम, सिम, [3]पुरिम, पुव्व (पूर्व) अवर (अपर), दाहिण, दक्खिण (दक्षिण), उत्तर, अवर, अहर (अधर), स,सुव (स्व), अंतर, त[4] (तद्), ज (यद्) अमु[5] (अदस्), इम (इदम्), एत

---

१ कुलअ + उं = कुलउं—जुओ स्वरलोप—६ पृ० ९६.

२ 'उवह' रूप आ० हेमचंद्रने संमत नथी—हे० प्रा० व्या० ८–२–१३८ पृ० ६५. आर्षप्राकृतना 'उभयोकालं' प्रयोगमां 'उभय' ने बदले 'उभयो' के 'उभओ' ("उभओकालं पि अजिअसंतिथयं"—अजितशांतिस्तवन गा० २९) रूप पण वपराएलुं छे.

३ जुओ पृ० ८७ शब्द—स्वरोना विकार.

४ जेम संस्कृतमां 'तद्' नी जेवुं 'त्यद्' पण एक सर्वनाम छे तेम ए सर्वनाम पालिमां पण छे, एनां रूपो 'त' नी जेवां थाय छे:

स्यो ते

स्य ते —पालिप्र० पृ० १४३ नुं टिप्पण. प्राकृतमां तो आ 'त्य' सर्वनाम मळतुं नथी.

५ आ शब्दना रूपो उकारांत शब्दोना प्रमाणे समजवानां छे.

(एतद्), इक, एक, एग, एअ (एक), दु (द्वि) तुम्ह (युष्मद्), अम्ह (अस्मद्)कि, अप० काइं, कवण (किम्), भवन्त (भवत्).

१ सर्वादि शब्दो विशेषणरूप होवाथी त्रणे लिंगे वापरी शकाय छे.

२ 'अमु' अने 'दु' शब्द सिवाय ए बधा सर्वादि शब्दो अकारांत छे, तेथी तेना त्रणे जातना बधां रूपाख्यानो पुंलिंगमां 'वीर' अने नपुंसकमा 'कुल' नी जेवां समजवानां छे. ज्यां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे:

३ प्रथमाना बहुवचनमां सर्वादि शब्दोना अन्त्य 'अ' नो 'ए' थाय छे अने ए एक ज रूप प्रथमाना बहुवचनमां वपराय छे.

४ सर्वादि शब्दोने छट्ठीना बहुवचनमां 'एसिं' प्रत्यय विकल्पे लागे छे.

५ सर्वादि शब्दोने सप्तमीना एकवचनमा 'त्थ' 'सिं' 'हिं' अने 'म्मि' प्रत्यय लागे छे.

रूपाख्यानो (नरजाति)

सव्व[1] (प्राकृत)

एकव०	बहुव०
प०—सव्वो (सव्वे)	सव्वे.
बी०—सव्वं	सव्वे, सव्वा.

१ संख्यावाचक शब्दोना प्रकरणमा 'उभ' अने 'दु' शब्दना रूपो आवशे.

२ जुओ पृ० १२१ भवतो ।

३ 'सव्व' शब्दना पालि रूपो माटे जुओ पृ० २३० उपरनुं पेजुं टिप्पण. खास भेद आ छे.

प० तथा स० बहुव० सव्वे.

छ० ,, सब्बेसं, सब्बेसानं.

तथा पंचमीना एकवचनमा 'वीरा' नी पेठे 'सव्वा' अने सप्तमीना एकवचनमां 'वीरे' नी पेठे 'सव्वे' रूप थता नथी.

त०—सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि. सव्वेहिँ. सव्वेहिं.
च० छ०—सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण. सव्वाणं,
	(सव्वाहँ).
पं०—सव्वत्तो.	सव्वत्तो.
सव्वाउ. सव्वाओ,	सव्वाउ. सव्वाओ,
सव्वाहि,	सव्वाहि. सव्वेहि.
सव्वाहिंतो.	सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो
सव्वा	सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो.
स०—सव्वत्थ, सव्वम्मि, सव्वहिं. सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं.

सव्व (शौरसेनी)

शौरसेनीमां ' सव्व ' शब्दनां बधां रूपो ' सव्व ' नां प्राकृत रूपो जेवां छे. पंचमीना एकवचनमां विशेषता छे ते ' वीर '[1] ना शौरसेनीरूप प्रमाणे समजवी.

शव्व (मागधी)

प्रथमाना एकवचनमां अने छट्ठी विभक्तिमां ' शव्व ' नां मागधी रूपो ' वीर '[2] नां मागधी रूपो जेवां जाणवां अने बाकी बधां 'सव्व' नां शौरसेनी रूपो प्रमाणे समजवां.

---

१. जुओ पृ० १३२.   २. जुओ पृ० १३०.

सव्व (पैशाची)

पंचमीनुं एकवचन ' 'वीर ' ना पैशाचीरूप प्रमाणे अने बाकी बधां ' सव्व ' नां शौरसेनी रूपो प्रमाणे.

सव्व, साह (अपभ्रंश)

	एकव०	बहुव०
१	सव्वु, सव्वो, सव्व, सव्वा	सव्वे, सव्व, सव्वा.
२	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा.
३	सव्वेण, सव्वेणं, सव्वें	सव्वेहिं, सव्वाहिं, सव्वहि.
४–६	सव्वस्सु, सव्वासु, सव्वसु, सव्वहो, सव्वाहो, सव्व, सव्वा	सव्वेसिं, सव्वहं, सव्वाहं, सव्व, सव्वा.
५	सव्वहा, सव्वाहा	सव्वहु, सव्वाहु.
७	सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं.

बाकी बीजा बधा सर्वादिओनां रूपो पण ए ' सव्व ' (प्राकृत, शौरसेनी) शब्द (मागधी) अने सव्व (अपभ्रंश) नी पेठे करी लेवाना छे. तो पण केटलाक प्रसिद्ध प्रसिद्ध सर्वादिनां रूपो नीचे प्रमाणे आपीए छीए:

१ जुओ पृ० १३२.

२ अपभ्रंशमां ' सव्व ' ने स्थाने ' साह ' शब्द पण वपराय छे अने एनां बधां रूपो ' सव्व ' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे थाय छे.

न, णं (नन्)

	एकवचन	बहुवचन
१	न, नो (मा० नो)	ने. णे.
२	नं. णं	ने, ना, णे. णा.
३	नेण. नेणं. निणा णेण. णेणं (पै० नेन)	नेहि, नेहिं, नेहिँ.[1] णेहि. णेहिं. णेहिँ.[1]
४–६	नस्स. नास (मा० नाह) णस्स से	नेसि. नेसिं, नाण. नाणं, णेसिं. णाण. णाणं. सिं (मा० नाहँ).
५	नो, नम्हा, नत्तो. नाओ. नाउ नाहि. नाहिंतो ना (शौ० मा० नादो, नादु) (पै० नातो. नातु)	नत्तो. नाओ. नाउ. नाहि. नेहि. नाहिंतो, नेहिंतो. नासुंतो. नेसुंतो.

[1] केटलाक प्रयोगोने अनुसारे 'न' ने बदले 'ण' पण वपराय छे: जुओ हे० प्रा० व्या० ८–३–[illegible] [illegible].

'न' ना पालिरूपो माटे जुओ पालिप्र० पृ० १८३–१८५ त (तद्) शब्द:

प०	नो	
बी०	नं, नं	ने.
त०	नेन, नेन	ने, ने.
		नेहि, नेभि,
		नेहि, नेभि इत्यादि.

२ आ 'म्म' ने बदले 'ह' [illegible] [illegible] हे० प्रा० व्या० ८–३–८१–वृ० [illegible].

णत्तो,	णत्तो,
णाओ, णाउ,	णाओ, णाउ,
णाहि,	णाहि, णेहि,
णाहिंतो,	णाहिंतो, णेहिंतो,
णा	णासुंतो, णेसुंतो.
७ तेहि, ताला, तइआ	तेसु, तेसुं.
तम्मि, तस्सि, तहिं, तत्थ,	
णम्मि, णस्सि, णहिं, णत्थ	णेसु, णेसुं.

'त' शब्दना प्राकृतरूपो साथे शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीना पण विशेष रूपो जणावेलां छे.

'सव्व' नां अपभ्रंशरूपोनी पेठे 'त' शब्दनां अपभ्रंशरूपो पण समजी लेवां, जे फेर छे ते आ प्रमाणे:

प० ए०	सु, सो, स, सा, ध्रं.*
बी० ए०	सु, स, सा, त्र.

जं (यत्)

प०	जो (मा० जे)	जे.
बी०	ज	जा, जे.
त०	जेण, जेणं, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ.
च० छ०	जस्स, जास (मा० जाह)	जेसि, जाण, जाणं, (मा० जाहँ).

* आ रूप [illegible] 'तद्' ना अर्थमां ज [illegible]

२ आ '[illegible]' [illegible]

३ '[illegible]' ना [illegible] माटे [illegible] १४१ [illegible] ([illegible]) [illegible].

प०	जम्हा, जत्तो.	जत्तो,
	जाओ जाउ	जाओ, जाउ,
	जाहि, जाहिंतो, जा	जाहि, जेहि,
	(शौ० मा० जादो. जादु)	जाहिंतो. जेहिंतो,
	(पै० जातो. जातु)	जासुंतो. जेसुंतो.
स०	जम्मि, जस्सि. जहिं, जत्थ	
	जंहि जाला, जइआ.	जेसु. जेसुं.

'ज' नां अपभ्रंशरूपो 'सव्व' नां अपभ्रंशरूपोनी पेठे करी लेवां. विशेषता आ प्रमाणे.

प० ए०—जु. जो. ज, जा, ध्रुं[2]

बी० ए०—,, ,, ,, ,,

---

[3](क) किम्

प०—को (मा० के)	के.
बी०—कं	क, का.
त०—केण, केणं, किणा	केहि, केहिं, केहिँ.
च० छ०—कस्स, कास	काम, केसिं, काण, काणं.
(मा० काह)	(मा० काहँ)

---

१ आ त्रणे रूपो 'यदा' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ आ रूप त्रणे लिंगमां सरखुं छे.

३ जेवां 'सव्व' नां पालिरूपो छे तेवां 'क' नां पण छे. विशेषता एटली छे के, च० छ० ए० किस्स, स० ए० किस्मि, किम्हि—आ रूपो वधारानां थाय छे—पालिप्र० पृ० १४०.

पं०—कम्हा, किणो, कीस, कत्तो,	कत्तो,
काओ, काउ,	काओ, काउ,
काहि, काहिंतो, का	काहि, केहि,
(शौ० मा० कादो, कादु)	काहिंतो, केहिंतो,
(पै० कातो, कातु)	कासुंतो, केसुंतो.
स० कम्मि, कस्सि, कहिं, कत्थ	
[1]काहे, काला, कइआ	केसु, केसुं.

क, कवण, काइं (किम्) अपभ्रंश

अपभ्रंश रूपाख्यानने प्रसंगे 'क' ने स्थाने 'कवण' अने [2]'काइं' शब्द पण वपराय छे.

'क' ना अपभ्रंशरूपो अने 'सव्व' नां अपभ्रंशरूपो बन्ने सरखा छे. जे विशेषता छे ते आ प्रमाणेः

प० ए० कु, को, क, का
 कवणु, कवणो, कवण, कवणा

बी० ए० कु, क, का
 कवणु, कवण, कवणा

पं० ए० किहे कहा, काहा
 कवणिहे, कवणहा, कवणाहां

---

१. आ त्रण रूपो 'कदा' ना अर्थमां ज वपराय छे.

२ 'काइं' (काइं) ना रूपाख्यानो इकारान्त नामना अपभ्रंश रूपोनी जेवा जाणवाना छे.

[1]इम (इदम्)

प०—अयं, इमो (मा० इमे)	इमे
बी०—इमं, इणं, णं	इमे, इमा, णे, णा.
त०—इमेण, इमेणं, इमिणा	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ.
णेण, णेणं	(एहि, एहिं, एहिँ)
(पै० नेन)	णेहि, णेहिं, णेहिँ.
च० छ०—इमस्स, अस्स, से	सिं, इमेसिं,
(मा० इमाह)	इमाण, इमाणं.
	(मा० इमाहँ)
पं०— इमत्तो, इमाउ, इमाओ	इमत्तो, इमाउ, इमाओ,
इमाहि, इमाहिंतो	इमाहि, इमेहि,
इमा	इमाहिंतो, इमेहिंतो
(शौ० मा० इमादो, इमादु)	इमासुंतो, इमेसुंतो.
(पै० इमातो, इमातु)	
स०— इमस्सि, इमम्मि, अस्सि, इह	इमेसु, इमेसुं.
	(एसु, एसुं).

---

१ 'इम'ना [illegible] 'इण'ना [illegible] [illegible] 'इण'ना [illegible] [illegible] [illegible] छे ते आ छे:

प०—[illegible]

द्वि०—[illegible], [illegible]

त०—[illegible], [illegible]   [illegible], [illegible], [illegible], [illegible].

च० छ०—[illegible], [illegible]   [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],

पं०—[illegible], [illegible]   [illegible], [illegible], [illegible], [illegible].

[illegible], [illegible]

स०—[illegible], [illegible]   [illegible], [illegible]

[illegible], [illegible]

[illegible] १४०–१४९, [illegible] ([illegible]) [illegible].

आय (इदम्) अपभ्रंश

'सव्व' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'आय' नां अपभ्रंश रूपो समजी लेवां.

प०—आयु, आयो आय, आया — आये, आय, आया.

बी०—आयु, आय, आया — आय, आया.

आयेण, आयेणं, आयँ — आयेहिं, आयहिं, आयाहिं वगेरे.

एअ[1] (एतद्)

प०—एस, एसो, इणं, इणमो (मा० एशे, एश[2]) — एए (शौ० मा० एदे) (पै० एते)

बी०—एअं (शौ० मा० एदं) (पै० एतं) — एए, एआ. (शौ० मा० एदे, एदा) (पै० एते, एता)

त०—एएण, एएणं, एइणा — एएहि, एएहिं, एएहिँ.

---

१ आ 'एअ' शब्दने शौरसेनी अने मागधीमां रूपाख्यानने प्रसंगे 'एद' शब्द समजवानो छे अने पैशाचीमां 'एत' शब्द समजवानो छे.

'एत' ना पालिरूपो 'सव्व' ना पालिरूपोनी जेवां छेः

प० एसो — एते.

बी० एत — एते वगेरे.

जेम संस्कृतमां अन्वादेशने सूचववा 'एत' ने बदले 'एन' रूप वपराय छे तेम पालिमां पण छे—जुओ पालिप्र० पृ० १४४ एत (एतद्) शब्द अने ए उपरनुं टिप्पण.

२ एस=एश—जुओ स—श. पृ० २७

(शौ० मा० एदेण, एदेणं, एदिणा)	(शौ० मा० एदेहि, एदेहिं, एदेहिँ)
(पै० एतेन, एतिना)	(पै० एतेहि, एतेहिं, एतेहिँ)
च० छ०—से, एअस्स	सिं, एएसिं, एआण, एआणं.
(शौ० एदस्स)	(शौ० एदेसिं, एदाण, एदाणं)
(मा० शे, एदाह)	(मा० शिं, एदाहँ,
(पै० एतस्स)	एदाण, एदाणं)
	(पै० एतेसिं, एतान)
पं०—एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो	एअत्तो,
एआउ, एआओ,	एआउ, एआओ,
एआहि, एआहिंतो, एआ	एआहि, एएहि,
(शौ० मा० एदादु, एदादो)	एआहिंतो, एएहिंतो,
(पै० एतातु, एताता)	एआसुंतो, एएसुंतो.
स०—एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि	एएसु, एएसुं.
एअम्मि, एअस्सि	

एद, एअ (एतत्) अपभ्रंश

'सव्व' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे 'एद' के 'एअ' नां अपभ्रंश रूपो करी लेवां. जे फेरफार छे ते आ प्रमाणे:

प०—एहो	एइ
बी०—,,	,,

अकारांत-सर्वादि-शब्द (नान्यतर जाति)

सर्वादि शब्दनां बधी जातनां नपुंसकलिंगी रूपाख्यानो पुंलिंगी सर्वादि प्रमाणे छे. मात्र प्रथमा अने द्वितीयामां जे विशेष छे ते 'कुल' नी पेठे समजी लेवानो छे. जेमके;

सव्व (सर्व)

प०—	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाइँ, सव्वाइं.
बी०—	"	" " "

बाकीनां, 'सव्व' नां प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाची रूपो प्रमाणे.

सव्व (अपभ्रंश).

प०—	सव्वु, सव्व, सव्वा	सव्वाइं, सव्वइं.
बी०—	" " "	" "

सव्वअ (सर्वक–अपभ्रंश)

प०—	सव्वउं,	सव्वआइं, सव्वअइं.
बी०—	"	" "

बाकीनां, 'सव्व' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

त (तद्)

प०—	तं, णं	ताणि, ताइँ, ताइं.
		णाणि, णाइँ, णाइं.
		" " "
बी०—	तं, णं	" " "

बाकी बधा 'पुंलिंगी 'त' प्रमाणे.

---

१ जुओ पृ० १३८. २ जुओ पृ० १३८–१४०. ३ जुओ पृ० १४०. ४ जुओ पृ० १४१.

त (अपभ्रंश)

प०—	अं, तु, त, ता	ताइं, तइं.
बी०—	,, ,, ,, ,,	,, ,,

तअ (तक–अपभ्रंश)

प०—	अं, तउं	तआइं, तअइं.
बी०—	,, ,,	,, ,,

बाकी सर्वां, 'त' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

ज (यत्)

प०—	जं	जाणिं, जाइँ, जाइं.
बी०—	जं	जाणि, जाइँ, जाइं.

बाकीनां, पुंलिंगी 'ज' प्रमाणे.

ज (अपभ्रंश)

प०—	अुं, जु, ज, जा	जाइं, जइं.
बी०—	,, ,, ,, ,,	,, ,,

जअ

प०—	अुं, जउं	जआइं, जअइं
बी०—	,, ,,	,, ,,

बाकीनां, 'ज' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

---

१ जुओ पृ० १४२. २ जुओ पृ० १४२. ३ जुओ पृ १४२–१४३. ४ जुओ पृ० १४३. ५ जुओ पृ० १४३.

किं

प०—	किं	काणि, काइँ, काइं.
बी०—	,,	,, ,, ,,

बाकीनां, पुंलिंगी 'क' नी पेठे

किं (अपभ्रंश)

प०—	किं, काइं, कवणु, कवण, कवणा	काइं, कइं, कवणाइं, कवणइं, काईइं, काइइं, कीइं, किइं.
बी०—	किं, काइं, कवणु, कवण, कवणा	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

बाकी बधां, 'क' ना अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

इम (इदम)

प०—	इणं, इणमो, इदं	इमाणि, इमाइँ, इमाइं.
बी०—	,, ,, ,,	,, ,, ,,

शेष, पुंलिंगी 'इम' नी जेवां.

इम, इमअ (अपभ्रंश)

प०—	इमु	आयाइं, आयइं.
बी०—	,,	,, ,,

बाकीनां, 'इम' ना अपभ्रंश रूपोनी पेठे.

---

१ जुओ पृ० १८३-१८४. २ जुओ पृ० १८८. ३ का + ईं=काईं—जुओ पृ० ९३ आगळ. ४ जुओ पृ० १८८. ५ जुओ पृ० १८०. ६ जुओ पृ० १८६.

एअ (एतद्)

प०—	एम, एअं, इणं, इणमो	एआणि, एआइँ, एआइं.
बी०—	एअं	,, ,, ,,

शेष, पुंलिंगी 'एअ' नी पेठे.

एद, एअ (अपभ्रंश)

प०—	एहु	एईइं, एइइं.
बी०—	,,	,, ,,

शेष 'एअ' नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे.

'युष्मद्' अने 'अस्मद्' ना रूपो त्रणे लिंगमां एक सरखां थाय छे अने ए आ प्रमाणे छे.

तुम्ह (युष्मद्)

प— एकव०—तं, तुं, तुव, तुह, तुमं (त्वम्)

---

१ जूओ पृ० १४६. २ जूओ पृ० १४७.

३ तुम्ह (युष्मद्)-पालिरूपो

१	त्वं तुव	तुम्हे (वो)
२	त्वं (तुम्हं) तुवं तवं तं	तुम्हे, तुम्हाकं (तुम्हं) (वो)
३–५	त्वया, तया (पं०—त्वम्हा) (त०—ते)	तुम्हेहि, तुम्हेभि (त०—वो)
४–६	तव, तुम्हं, तुम्हं (ते)	तुम्हाकं (,,
७	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

—जूओ पालिप्र० पृ० १५१.

बहुव०—भे, ¹तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे (यूयम्)

द्वि- एकव०—तं, तुं, तुम, तुवं, तुह, तुमे, तुए (त्वाम्)

बहुव०—वो, तुज्झ, तुब्भे, तुय्हे, उय्हे, भे (युष्मान्-वः)

तृ- एकव०—भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ (त्वया)

बहुव०—भे, तुब्भेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं-(युष्माभिः)

पं- एकव०—तुय्ह, तुब्भ, तहिंतो, (त्वत्)

तइत्तो, तइओ, तइउ, तईहिंतो.

तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिंतो, तुवा.

तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि, तुमाहिंतो, तुमा.

तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि, तुहाहिंतो, तुहा.

तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भा.

बहुव०—तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहिंतो, तुब्भेहिंतो, तुब्भासुंतो, तुब्भेसुंतो. (युष्मत्)

तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हेहि, तुय्हाहिंतो, तुय्हेहिंतो, तुय्हासुंतो, तुय्हेसुंतो.

उय्हत्तो, उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हेहि, उय्हाहिंतो, उय्हेहिंतो, उय्हासुंतो, उय्हेसुंतो.

उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हेहि, उम्हाहिंतो, उम्हेहिंतो, उम्हासुंतो, उम्हेसुंतो.

---

१ युष्मद्-शब्दना रूपोमां आवेला 'ब्भ' नो विकल्पे 'ज्झ' अने 'म्ह' थाय छे: तुब्भे, तुज्झे, तुम्हे इत्यादि.

च० छ०—एकव०—तइ, तु, ते तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह (तुभ्यम्-तव-ते)

बहुव०—तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुब्भाणं, तुवाण, तुवाणं, तुमाण, तुमाणं, तुहाण, तुहाणं, उम्हाण, उम्हाणं, तुम्हाहँ (युष्मभ्यम्–युष्माकम्–वः)

स०—एकव०—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए (त्वयि) तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि

बहुव०—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु (युष्मासु) [1]तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, [2]तुब्भासु.

---

[2]अम्ह (अस्मद्)

प०—एकव०—म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं (अहम्) (मा० हगे)

१-२ आ रूपो आ० हेमचंद्रनां मते थतां नथी—हे० प्रा० व्या० ८-३-१०३, पृ० १०२.

२ अम्ह (अस्मद्)—पालिरूपो

१ अहं	मयं, अम्हे (अम्ना) (नो)
२ मं, ममं (अम्हं)	अम्हाकं, अम्हे (अम्हं) (अम्ना) (नो)
३-५—मया (तृ०—मे)	अम्हेहि, अम्हेभि (तृ०—नो)
४-६—मम, मय्हं (मे) ममं, अम्हं	अम्हाकं, अस्माकं (च०—नो)
७ मयि	अम्हेसु (अस्मासु)

—जुओ पालिप्र० पृ० १५३-१५४

बहुव०—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, मे (वयम्)
(मा० हगे)

दु– एकव०—णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं, अहं–(माम्–मा)

बहुव०—अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे (अस्मान्–नः)

त– एकव०—मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे (मया)

बहुव०—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभिः)

पं– एकव०—मइत्तो, मइओ, मइउ, मईहिंतो. (मत्)
ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिंतो, ममा.
महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिंतो, महा.
मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिंतो, मज्झा.

बहुव०—ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि,–(अस्मत्)
ममाहिंतो, ममेहिंतो, ममासुंतो, ममेसुंतो.
अम्हत्तो, अम्हाउ, अम्हाओ, अम्हाहि, अम्हेहि,
अम्हाहिंतो, अम्हेहिंतो, अम्हासुंतो, अम्हेसुंतो.

च, छ– एकव०–मे, मइ, मम, मह, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं
(मह्यम्–मे–मम)

बहुव०–णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं अम्हे, अम्हो,
अम्हाण,–णं, ममाण,–णं, महाण,–णं, मज्झाण–णं,
अम्हाहं (अस्मभ्यम्–अस्माकम्–नः)

स– एकव०—मि, मइ, ममाइ, मए, मे (मयि)
अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि.

बहुव०—[1]अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु (अस्मासु)
[1]अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु, [2]अम्हासु.

तुम्ह (युष्मद्) अपभ्रंश

	प०—तुहुं	तुम्हइं, तुम्हे.
	बी०—पइं, तइं	,,
	त०—,, ,,	तुम्हेहिं.
च०	छ०—तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं.
	पं०—,, ,,	,,
	स०—पइं, तइं	तुम्हासु, तुम्हासुं

अम्ह (अस्मद्) अपभ्रंश

	प०—हउं	अम्हइं, अम्हे.
	बी०—मइं	,, ,,
	त०—मइं	अम्हेहिं.
च०	छ०—महु, मज्झु	अम्हहं.
	पं०—,, ,,	,,
	स०—मइं,	अम्हासु, अम्हासुं.

आकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

आकारांत नामोनां रूपाख्यानोनो प्रयोग विशेष विरल छे तो पण प्रसंगवशे तेनां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जणावीए छीए:

---

१ जुओ पृ० १२७–तइया छ ? सत्तमी.

२–३ जुओ पृ० १५३ नुं टिप्पण: हे० प्रा० व्या० ८–३–११७, पृ० १०४.

१· अकारांत नामने लागता प्रत्ययो आकारांत नामने लगाडवाथी तेनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे.

२ मात्र एक पंचमीनो 'हि' प्रत्यय आकारांत नामने लागतो नथी.

३ प्रत्यय विनाने स्थळे एटले ज्यां शून्य छे त्यां मूळ अंगने ज रूपाख्यान तरीके समजवुं.

४ संबोधननां रूपो प्रथमानी जेवां थाय छे.

हाहा

प०—हाहा	हाहा.
बी०—हाहा	,,
त०—हाहाण, हाहाणं	हाहाहि, हाहाहिं, हाहाहि॑.
च० छ०—हाहस्स	हाहाण, हाहाणं.
[ता० च० हाहे, हाहस्स	,, ,,]
पं०—हाहत्तो, हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो	हाहत्तो हाहाओ, हाहाउ, हाहाहिंतो. हाहासुंतो.
स०—हाहा (ह) म्मि	हाहासु, हाहासुं.
स०—हे हाहा !	हे हाहा !

ए रीते किलालवा ('किलालपा) गोवा (गोपा) अने सोमवा (सोमपा) वगेरे शब्दोना रूपो समजवां.

---

[1] षड्भाषाचंद्रिकाने मते कृदंतथी बनेला नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व थाय छे एथी 'किलालपा' 'गोपा' अने 'सोमपा' नु प्राकृत

नान्यतर जातिमां तो कोइ शब्द आकारांत होतो ज नथी
(जूओ पृ० १२३—नामना अन्त्यस्वरनो फेरफार—नि० २)

आकारांत शब्दनां शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपो 'हाहा 'नां प्राकृत रूपो जेवां थाय छे, ज्यां जे विशेष छे ते 'वीर ' नी पेठे समजवानो छे.

आकारांत शब्दनां अपभ्रंशनां रूपो 'वीर' नां अपभ्रंश रूपोनी जेवां प्रायः बनाववानां छे.

इकारांत, उकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति) प्रत्ययो.

नरजातिनां अने नान्यतरजातिनां दरेक इकारांत अने उकारांत नामोने नीचे जणावेला प्रत्ययो लगाडवाना छे.

प्राकृत भाषाना प्रत्ययो.

	एकवचन	बहुवचन
प्र०—	०	अउ, अओ, णो. ०
बी०—	+	णो, ०

सूत्र ' विग्गलव ' ' गोण ' अने ' गोणिय ' बने छे अने आम थवुं होवाथी ए त्रणे शब्दोनां रूपो बराबर ' वीर ' नी जेवां थाय छे:
" स्त्रियः " २–२–४७. पृ० ८५. पद्मनाभव्या०

पद्मना०	हे०
प्र० ए० विग्गलवो.	प्र० ए० विग्गलवा.
,, गोणो.	,, गोणा.
,, गोणियो.	,, गोणिया.

पद्मनाभना उपर्युक्त नियमने बदले आ० हेमचंद्र जे नियम बांधे छे ते माटे जूओ पृ० १२३—नामना अंत्यस्वरनो फेरफार—नि० १.

तृ०—	णा	+
च० छ०—	णो, +	+
पं०—	णो. +	+
स०—	+	+
सं०—	*	अउं, अओ, णो, ०

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो.

१ ज्यां ज्यां ० छे त्यां मूळ अंगने, अंते दीर्घ करीने वापरवानु छे.

२ ज्यां ज्या + छे त्यां अकारांत नामने लागता [1]प्रत्ययो पण समजवाना छे. मात्र पंचमीनो एक 'हि' प्रत्यय लेवानो नथी.

३ ज्या * छे त्यां (संबोधनना एकवचनमां) मूळ अंगने अंते विकल्पे दीर्घ करवानो छे.

४ पंचमीना स्वरादि, सकारादि अने हकारादि प्रत्ययो पर रहेतां अंत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे.

५ तृतीया, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनना प्रत्ययो पर रहेतां अंत्य 'इ' अने 'उ' नो दीर्घ थाय छे.

६ उकारांत नामोने प्रथमाना बहुवचनमां एक 'अवो' प्रत्यय पण वधारे लागे छे:—भाणु + अवो=भाणवो (सं० मानवः)

---

१ जूओ पृ० १२५. 'प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो' ना मथाळा नीचे (पृ० १२६ मां) जणावेलु कार्य अहिं—इकारांत अने उकारांतमां—थतुं नथी.

रूपाख्यानो

इसि (ऋषि)

प०	[1]इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी.
बी०	इसिं	इसिणो, इसी.
त०	इसिणा	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ.
च०, छ०	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं.

---

१ कोईने मते इकारांत अने उकारांत शब्दोनुं प्रथमानुं एक-वचन द्वितीयाना एकवचननी जेवुं पण थाय छे:–जेमके–इसी, इसिं। बिंदू, बिंदुं। हे० प्रा० व्या० ८-३-१९, पृ० ८४.

इकारांतनां पालिरूपो.

इसि

१	इसि	इसी, इसयो.
२	इसिं	इसी, इसयो.
३	इसिना	इसीहि, इसीभि.
४-६	इसिनो, इसिस्स	इसीनं.
५	इसिना, इसिस्मा, इसिम्हा	इसीहि, इसीभि.
७	इसिस्मिं, इसिम्हि	इसिसु, इसीसु.
सं०	इसि !, इसे !	इसी !, इसयो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी जेम पालिमां पण प्रथमाना अने द्विती-याना बहुवचनमां 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे: "सारमतिनो, सम्मादिट्ठिनो, मिच्छादिट्ठिनो, वजिरबुद्धिनो, ओदपत्तिनो, जातिपत्तिनो" वगेरे.

पालिमां अग्गि (अग्नि), मुनि, आदि, गिरि, रंसि (रश्मि) यति (यति) अने गामनि (ग्रामणी) शब्दोनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

[ता० व० इसये, इसिणो, इसिस्स इसीण, इसीणं]
च० छ०– (माग० इशिह) · (मा० इशिहँ)
पं० इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसित्तो, इसीओ, इसीउ,
 इसीउ, इसीहिन्तो इसीहिन्तो, इसीसुंतो.

अग्गि.

एकव०	बहुव०
प०–अग्गिनि, ग्गिनि	अग्गियो (बधारानां रूपो)
स०–अग्गिनि	”
सं०–अग्गि !	

मुनि

छ०–मुने (मुनेः)	(बधारानां रूपो)

आदि

स०–आदो (आदौ)	(बधाराना रूपो)
आदु	
आदि	
आदिनि	

गिरि

स०– गिरे	(बधाराना रूपो)

रश्मि

स०– रमन	(बधारानां रूपो)

सम्मि

प०—सम्मा	सम्माओ, सम्मानो, सम्मिनो, सम्मा.
बी०—सम्माण	
सम्मानं	सम्मानो, सम्मिनो,
सम्माय	सम्माओ, सम्मी.
सम्मं	

पं०—(शौर० इसिदो, इसिदु)

(माग० इशिदो, इशिदु)

(पैशा० इसितो, इसितु)

स० इसिंसि, इसिम्मि — इसीसु, इसीसुं.

सं० हे इसि ! हे इसी ! — हे इसउ ! हे इसओ ! हे इसिणो ! हे इसी !

त० एं०—सामिणा (प०—सामाण, सामाणा) सामीहि,

सामीहिं; सामाणेहि, सामाणेहिं.

च० छ०—सामिस्स — सामीण, सामाणाण.

सामिणो

स०—सामे — सामीसु, सामाणेसु.

सं०—साम !, सामे !. — सामाणो !

साम !, सामि ! — सामाणो !,

सामी ! — सामिणो !

गामणी

प० गामणी — गामणी, गामणिणो.

बी० गामणिं, गामणि — ,, ,,

पं०—गामणिणा

स०— — गामणीसु

सं०— गामणि ! — गामणी !, गामणिणो !

बाकीनां 'इसि' प्रमाणे.

[illegible] पृ० ८७–९,१ [illegible]

[illegible]

१ [illegible] पृ० १२७, [illegible] 'नि' [illegible]—

" [illegible] " [illegible]

[illegible]

[ता० न०–भाणवे भाणुणो, भाणुस्स]

(माग० भाणुह)	(माग० भाणुहँ)
पं०–भाणुणो, भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ, भाणूहिंतो	भाणुत्तो, भाणूओ, भाणूउ, भाणूहिंतो भाणूसुंतो.
(शौर० भाणुदो, भाणुदु)	
(माग० भाणुदो, भाणुदु)	
(पैशा० भानुतो, भानुतु)	

---

७ भानुम्हि, भानुम्हि	भानूसु.
स० भानु !	भानू ! भानवे ! भानवो !

प्राकृतना 'णो' प्रत्ययनी पेठे पालिमां पण प्रथमाना अने द्वितीयाना बहुवचनमां 'नो' प्रत्यय वपराएलो छे: "हेतुनो, जन्तुनो, गरुनो" वगेरे.

पालिमां हेतु, जन्तु, अभिभू, सहभू, सब्बञ्ञू शब्दोना रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे–

हेतु, जंतु

बहुवचन

१ हेतुयो, जन्तुया	(भाणुनां रूपो)
२ ,, ,,	

एकवचन

५ हेतुना प० (हेतो)	(भाणुनां रूपो)

अभिभू (भाणुनां रूपो)

१ अभिभू	अभिभू, अभिभुवो
२ अभिभुं	,, ,,

स०—माणुंसि, माणुम्मि	माणूसु, माणूसुं.
सं०—माणु ! माणू !	माणुणो ! माणवो ! माणओ !
	माणउ ! माणू !

ए प्रमाणे जड (जडु), धम्मण्णु (धर्मज्ञ), सव्वण्णु (सर्वज्ञ), दइवण्णु (दैवज्ञ), गुरु, गउ (गो), साहु (साधु), बन्धु, वपु (वपुष्), मेरु, कारु, धणु (धनुष्), भिचु, केउ (केतु), विज्जु (विद्युत्), राहु, संकु (शङ्कु), हणु (हनु), पवासु (प्रवासिन्), वेलु (वेणु), सेउ (सेतु), मच्चु (मृत्यु), खउ (खड्ग्?), गोत्तभु (गोत्रभू), सरभु (शरभू), अभिभु (अभिभू), अने सयंभु (स्वयंभू) वगेरे शब्दोनां प्राकृत, शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपो समजवानां छे.

---

५. अग्गि[illegible]

सं० . अग्गि ! अग्गिणो !

बाकीनां 'माणु' प्रमाणे.

महत्, मघवन्

([illegible])

१-२-प्र० बहुवचन महन्तो

१-२-प्र० ,, मघवन्त, मघवन्तो

—प्राकृत० सू० ९.२-९.३.

बाकीनां 'अग्गि' प्रमाणे.

---

१. आ [illegible] बीजा शब्दोना संबोधन एकवचनमां जे ते शब्दनुं मूळ रूप पण [illegible] : हे [illegible] ! हे [illegible] ! हे [illegible] ! वगेरे.

[1]अमु (अदम्)

[आ शब्द सर्वादिमां छे छतां एना रूपो विशेषे करीने 'भाणु' नां रूपो साथे मळतां आवे छे माटे एने 'भाणु' ना रूपो पछी मूकवामां आव्यो छे.]

	एकवचन	बहुवचन
प०—	अह, अमू, [2]असो	अमुणो, अमवो, अमउ, अमओ, अमू.
बी०—	अमुं	अमुणो, अमू.
स०—	अमम्मि, इअम्मि, अमुम्मि	अमूसु, अमूसुं.

शेष रूपो 'भाणु' नी जेवां

---

१ अमु (अदस्) नां पालिरूपो

१	अमु	अमू, अमुयो
२	अमु	,, ,,
३	अमुना	अमूहि, अमूभि.
४–६	अमुनो, अमुस्स (सं० अमुष्य)	अमूसं, अमूसानं.
५	अमुना, अमुम्हा (सं० अमुष्मात्), अमुस्मा	अमूहि, अमूभि.
७	अमुम्हि (सं० अमुष्मिन्), अमुस्मिं	अमूसु.

जुओ पालिप्र० पृ० १६७.

२ आ आपभ्रंश सं० 'अमी' उपरथी घडेलुं छे. जुओ पृ० [illegible] टि० [illegible] [illegible]. " [illegible] " [illegible] प्रकर० अ० १, ३० १, [illegible] ८.

'इसि' अने 'भाणु' शब्दनां प्राकृत रूपोनी माफे ज शौर-सेनी. मागधी अने पैशाचीनां बधांनां रूपो समजवां छे.

अपभ्रंशनां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे:

अपभ्रंशभाषाना प्रत्ययो.

	एकव०	बहुव०
प०—	०	०.
बी०—	०	०.
त०—	ए, एं, ण्	हिं.
च० छ०—	०	हुं, हं.
पं०—	हे	हुं.
स०—	हि	हिं, हुं.
सं०—	०	हो, ०.

ज्यां ज्यां ० छे त्यां मूळ अंगने ज अंते विकल्पे दीर्घ करीने वापरवानुं छे.

अपभ्रंशना बधा प्रत्ययो पर रहेलां मूळ अंगने अंते विकल्पे दीर्घ थाय छे.

अपभ्रंश-रूपाख्यानो

इसि

प०—	इसि, इसी	इसि, इसी.
बी०—	,, ,,	,, ,,
त०—	इसिन, इसिणं, इसीन, इसीणं, इसिएं, इसीएं. इसि, इसी	इसिहिं, इसीहिं.

च० छ०—	इसि, इसी	इसिहुं, इसीहुं; इसिहं, इसीहं.
पं०—	इसिहे, इसीहे	इसिहुं, इसीहुं.
स०—	इसिहि, इसीहि	इसिहिं, इसीहिं; (इसिहुं, इसीहुं)
सं०—	इसि ! इसी !	इसिहो ! इसीहो ! इसि ! इसी !

ए प्रमाणे दरेक इकारांत पुंलिंगी शब्दनां अपभ्रंश रूपो समजवानां छे.

भाणु.

प०—	भाणु, भाणू	भाणु, भाणू.
बी०—	,, ,,	,, ,,
त०—	भाणुण, भाणुणं, भाणूण, भाणूणं, भाणूए, भाणूएं, भाणुं, भाणूं	भाणूहिं, भाणूहिं.
च० छ०—	भाणु, भाणू	भाणुहुं, भाणूहुं; भाणुहं, भाणूहं.
पं०—	भाणुहे, भाणूहे	भाणुहुं, भाणूहुं.
स०—	भाणुहि, भाणूहि	भाणुहिं, भाणूहिं, (भाणुहुं, भाणूहुं)
सं०—	भाणु ! भाणू !	भाणुहो ! भाणूहो ! भाणु ! भाणू !

ए प्रमाणे दरेक उकारांत पुंलिंगी शब्दनां अपभ्रंश रूपो समजवानां छे.

इकारांत अने उकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो
(नान्यतर जाति)

[1]दहि (दधि)

१ दहिं	दहीणि, दहीइँ, दहीइं.
२ ,,	,, ,, ,,
सं०—दहि !	,, ! ,, ! ,, !

बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे इकारांत पुंलिंगी 'इसि'नी जेवां.

---

१ जूओ अकारांत नपुंसक नामोनुं प्रकरण अने तेने लगता प्रत्ययो तथा नियमो—पृ० १२३–१२४

२ कोइने मते इकारांत अने उकारांत नपुंसक नामोनां प्रथमाना अने द्वितीयाना एकवचननां आवां बे रूपो थाय छे:

दहिं, दहिँ (सं० दधि, दधिँ)

महुं, महु (सं० मधु, मधुँ)

—हे० प्रा० व्या०–८–३–२५, पृ० ८५.

तादर्थ्य अर्थना संस्कृतना रूपने मळतुं 'दहिने' (दध्ने) अने 'महुने' (मधुने) रूप पण वपराय छे.

नपुंसकलिंगी इकारांतनां अने उकारांतनां पालिरूपो

'दधि'

१ दधि (दधि) दधी, दधीनि.

२ दधिं ,, ,,

शेष, इकारांत पुंलिंगी 'अग्गि' प्रमाणे.

१ '[illegible]'नां पालिरूपो

[illegible] [illegible], [illegible]

[illegible] ,, ,,

शेष इकारांत पुंलिंगी '[illegible]' प्रमाणे.

एे प्रमाणे सत्थि (सक्थि), वारि, अच्छि (अक्षि), सुरि (सुरि), अइरि (अतिरि) अने गामणि (ग्रामणी) वगेरे शब्दोनां रूपो पण समजवां.

मेहु (मधु)

१	महुं	महूणि, महूइँ, महूइं.
२	,,	,, ,, ,,
सं०	महु !	,, ,, ,,

बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे उकारांत पुंल्लिंगी 'भाणु' नी जेवां.

ए प्रमाणे दारु, वत्थु (वस्तु), चित्तगु (चित्रगु), सुगु, वसु, अंसु, अंसु–अस्सु (अश्रु) जउ (जतु), मह्‍ अने लहु (लघु) वगेरे शब्दोनां रूपो पण समजवां.

---

१ 'मधु'

१ मधु	मधू, मधूनि.
२ मधु	,, ,,

शेष, उकारांत पुंल्लिंगी 'भानु' प्रमाणे.

'गोत्रभू' ना पालिरूपो

गोत्रभु	गोत्रभू, गोत्रभूनि.
गोत्रभु	गोत्रभू, गोत्रभूनि.

शेष, उकारांत पुंल्लिंगी 'अभिभू' प्रमाणेः–

जुओ पालिप्र० पृ० ११३–११५ अने एना टिप्पण.

[1]अमु (अदस्)

न०— अमु, अमुं   अमूइं, अमूइँ, अमूणि

नी०— अमुं   „ „ „

बाकी बधां पुंलिंगी 'अमु' नी पेठे.

दहि (अपभ्रंश)

१ दहि   दहीइं, दहिइं

२ „   „ „

बाकी बधां 'दृमि' नां अपभ्रंश रूपोनी जेवां.

महु (अपभ्रंश)

१ महु   महूइं महुइं

२ „   „ „

बाकी बधां 'भाणु' नां अपभ्रंश रूपोनी जेवां.

---

[2]ऋकारांत शब्दनां प्राकृत रूपाख्यानो (नरजाति)

ऋकारांत नामोनी बे जात छे—केटलांक ऋकारांत नाम विशेष्यरूपे वपराय छे अने केटलांक ऋकारांत नाम विशेषणरूपे वपराय छे:

---

१ 'अमु' नां पालिरूपो

१ अमु   अमू

२ „   „

शेष पुंलिंगी ' 'अमु' पेठे—जूओ पालि० ।

२ जूओ पृ० १६६

३ जूओ पृ० १२२ नामना प्रकारो.

विशेष्यरूप—जामायर (जामातृ), पियर (पितृ), भायर (भ्रातृ) वगेरे ।

विशेषणरूप—कत्तार (कर्तृ), दायार (दातृ), भत्तार (भर्तृ) वगेरे ।

[आ भेदने लीधे एक जातनां पण ए बन्ने नामोनां रूपोमां विशेष अंतर छे.]

ऋकारांत (विशेष्यवाचक).

१. प्रथमानुं अने द्वितीयानुं एकवचन बाद करतां बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ'नो विकल्पे 'उ' थाय छे.

२. प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य 'ऋ' नो 'अर' थाय छे.

३. प्रथमाना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामनुं आकारांत रूप पण विकल्पे वपराय छे.

४. संबोधनना एकवचनमां विशेष्यवाचक ऋकारांत नामना अन्त्य ऋ नो 'अ' अने 'अर' विकल्पे थाय छे.

[सूचना-उपर जणाव्या प्रमाणे प्रथमाथी लइने बधी विभक्तिओमां ऋकारांत नाम अकारांत अने उकारांत बने छे माटे तेनां रूपाख्यानोनी प्रक्रिया, 'जिण' अने 'भाणु' ना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी समजवानी छे. अहीं तो मात्र सरळता माटे तेनां रूपाख्यानो आपीए छीए.]

पिअरचो, पिअराओ,	पिअरत्तो, पिअराओ,
पिअराउ,	पिअराउ.
पिअराहि,	पिअराहि, पिअरेहि,
पिअराहितो.	पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो,
पिअरा	पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो.

(शौ० पिअरादो, पिअरादु)

(मा० पिअलादो, पिअलादु)

(पै० पिअरातो. पिअरातु)

स० –	पिअरे,	पिअरेसु, पिअरेसु,
	पिअरंमि. पिअरम्मि,	पिऊसु, पिऊसु.
	पिउंमि पिउम्मि,	
सं०	हे पिअ ' पिअर ' पिअरो '	पिअरा ' पिउणो ' पिअवो.
	पिअरा ' पिअर '	पिअओ, पिअउ. पिऊ ।

([illegible] जामायर जामाउ जामातृ), भायर भाउ (भ्रातृ) [illegible] समझना चाहिए

[illegible] ([illegible])

[illegible] विभक्ति

[illegible] विकृति

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दाउणो, दाउचो, दाउचो,
दाऊओ, दाऊउ, दाऊओ, दाऊउ,
दाऊहिंतो दाऊहिंतो, दाऊसुंतो.

(शौ० दायारादो, दायारादु)

(मा० दायालादो, दायालादु)

(पै० तायारातो, तायारातु)

स०— दायारे, दायारंसि, दायारम्मि, दायारेसु, दायारेसुं,
दाउंसि दाउम्मि दाऊसु, दाऊसुं.

सं०— हे दाय !, दायार !, दायारा, दाउणो, दायवो,
दायारो !, दायारा ! दायओ, दायउ, दाऊ.

ए रीते कत्तार, कत्तु, (कर्तृ), भत्तार, भत्तु (भर्तृ) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवानां छे.

ऋकारांतना प्राकृत रूपाख्यानोनी साथे ज (तेनां) शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां पण विशेषतावाळां रूपाख्यानो आपेलां छे.

ऋकारांतना अपभ्रंशरूपाख्यानो आ प्रमाणे छे:

आगळ कह्या प्रमाणे दरेक ऋकारांत अंग, अकारांत अने उकारांत थया पछी ज प्राकृतमां वापरी शकाय छे. तो ए–मूळ ऋकारांतनां–अकारांत अंगनां अपभ्रंशरूपो 'वीर'ना अपभ्रंशरूपो जेवां करवानां छे अने ए उकारांत अंगनां, 'माणु'ना अपभ्रंशरूपो जेवां समजवानां छे. कदाच कोई मूळ ऋकारांत अंग प्राकृतमां आवतां इकारांत थयुं होय तो तेनां अपभ्रंशरूपो 'इसि'ना अपभ्रंशरूपो जेवां जाणी लेवां.

जेमके-सं० सुरे-प्रा० सुरेअ'। स० स्त्री-प्रा० गिलोअ। यादि।

सुरेअ	
सुरेओ	सुरेआ।
सुरेअं,	सुरेए, सुरेआ।
सुरेएण, सुरेएणं	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे.

४–६ गावस्स	गोनं, गुन्न,
गवस्स	गव.
५ गावा, गावम्मा, गावम्हा	गोहि, गोभि.
गवा, गवस्मा, गवम्हा	गवेहि, गवेभि.
७ गावे, गावंसि, गावम्हि	गावेसु
गवे, गवंसि, गवम्हि	गवेसु
	गोसु.
स०–गो !	गावो, गवो–

जूओ पालिप्र० पृ० ९७–९८

आर्षप्राकृतनुं उदाहरण—" अवले होइ गवं पचोइए "–
सूत्र० प्र० श्रु० अ० २, उ० ३ गा० ५.
" गो–महिस–गवेलयप्पभूया "–
-भगव० शत० २, उ० ५ तुंगियानो
अधिकार. (पृ० २७७ रा० जि०)

औकारांत 'नौ' शब्दनु प्राकृत अंग 'नाव' बने छे (जूओ पृ० .२ औ=आव) " एग महं नाव सयासवं [illegible] (ना)वा तेहि "=
गव० श० १, उ० ६ (प्रश्नोत्तर–२२७ पृ० १७१ रा० जि०)

२ जूओ षड्भाषाच० पृ० ९६.

गिलोअ

गिलोओ	गिलोआ।
गिलोअं	गिलोए, गिलोआ।
गिलोएण, गिलोएणं,	गिलोएहि, गिलोएहिं
	गिलोएहिँ।

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी समान छे.

---

२. केटलेक ठेकाणे एकारांत अने ओकारांत नामोनुं प्राकृतरूप, संस्कृतना सिद्धरूप उपरथी पण बनाववामां आवे छेः सुराहि (सं० सुराभिः) सुरासु (सं० सुरासु) इत्यादि.

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतना रूपाख्यानने प्रसंगे कोइ शब्द व्यंजनांत संभवी शकतो नथी. [illegible] ते ते भाषाना [illegible] पूर्वोक्त स्वरांत शब्दोने [illegible] 'अन्' [illegible] 'अन्' [illegible] [illegible] प्रमाणे [illegible]

[illegible] षड्भाषाचंद्रिका [illegible]

संपाइअवं
संपाद्दिवं (संपादितवान्)

रूपाख्यानो

'भगवंत (भगवत्)
भयवंत

१ भगवंतो भगवंता.
(शौ० मा० पै० भगवं)
(मा० भगवंते)
२ भगवंतं भगवंते, भगवंता.

'अत्' छेडावाळां नामनां पालिरूपो:

१ भगवंत

१ भगवा
२ भगवंतं भगवंतो, भगवंता.
३ भगवता भगवंते.
भगवंतेन भगवंतेहि, भगवंतेभि.
४–६ भगवतो
भगवंतस्स भगवतं, भगवंतानं.
५ भगवता, भगवंता भगवंतेहि, भगवंतेभि.
भगवंतस्मा, भगवन्ता
७ भगवति, भगवंते भगवन्तेसु.
भगवंतम्हि भगवन्तम्हि
स० भगव भगव
भगवा (भगवा) भगवंतो
[illegible] भगवता.

[illegible]
—जुओ पालिप्र० पृ० ११६–११७–११८ [illegible]

३ भगवंतेण, भगवंतेणं — भगवंतेहि, भगवंतेहिं, भगवंतेहिँ.

सं०— भगवंत !, — भगवंता.
भगवंता !, भगवंतो !

(शौ० मा० पै० भगवं, भगव !)

ए प्रमाणे बधा, ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी प्रमाणे.

---

[1]भवंत (भवतु)

१ भवंतो — भवंते.
(शौ० मा० पै० भवं)
(मा० भवंते)

२ भवंतं — भवंते, भवंता.

३ भवंतेण, भवंतेणं — भवंतेहि, भवंतेहिं
भवंतेहिँ.

सं० भवन्त, — भवंता !
भवंता, भवंतो

---

१ पालिमा 'भवंत' शब्दनां विशेष रूपो आ प्रमाणे छेः

१ भवतो, भोंतो, भवता (बहुवचन)
३ भवता, भोता, भवंतेन (एकवचन)
४–६ भवतो, भोतो, भवंतस्स (,,)
सं०–भो !, भंते !, भोंत ! (,,)
,, भवतो, भोतो, भवंता, भोता (बहुवचन)

'संत' शब्दनुं पालिमां (सं० 'सद्भिः' उपरथी) 'सब्भि' रूप पण वपराय छे.—जुओ पालिप्र० पृ० ११८–११९–१२० अने तेनां टिप्पणो.

(शौ० मा० पै० भवं, भव)

(मा० भवंते, भंते)

ए प्रमाणे बधां, ने ते भाषा प्रमाणे ' सत्व ' नी पेठे.

भवंत (भवत्—वर्तमानकृदंत)

	एकवचन	बहुवचन
१	भवंतो (मा० भवंते)	भवंता.
२	भवंतं	भवंते, भवंता.
३	भवंतेण, भवंतेणं	भवंतेहि, भवंतेहिं, भवंतेहिँ.
सं०	भवन्त ! भवंतो ! भवंता ! (मा० भवंते !)	भवंता.

ए प्रमाणे बधा [illegible] ने भाषा प्रमाणे ' वीर ' नी जेवां.

' अत ' छेडावाळां वर्तमानकृदंतनां पालिरूपो

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible],
[illegible].
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible],
[illegible].

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible].

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible].

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible].

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible].

[illegible]

भगवंत (न्तान्तनामानि)

१ भगवंतु, भगवंत. भगवन्ताइ, भगवन्तं.
 भगवन्ता

२ भगवन्तु, भगवन्त, भगवन्ताइं, भगवन्तइं.
 भगवन्ता

बाकी बधां 'भगवन्त'ना अकारांतनी प्रमाणे.

'अन्' छेडावाळां नामो (नन्तानि)

१ 'अन्' छेडावाळां नामोना नकारांत अंगना छेवटना 'अन्'नो 'आण' विकल्पे थाय छे:

अद्धाण, अद्ध (अध्वन्), अप्पाण, अप्प (आत्मन्), उच्छाण, उच्छ (उक्षन्), गावाण, गाव (ग्रावन्) जुवाण, जुव (युवन्) तक्खाण, तक्ख (तक्षन्) पूसाण, पूस (पूषन्) बम्हाण, बम्ह (ब्रह्मन्), महवाण, महव (मघवन्), मुद्धाण, मुद्ध (मूर्द्धन्) रायाण, राय (राजन्) साण, स (श्वन्), सुकम्माण, सुकम्म (सुकर्मन्) इत्यादि.

२ 'अन'नो 'आण' थया पछी ए 'आण' छेडावाळा नामोनां रूपो तेना भाग प्रमाणे 'वीर'नां जेवां जाणवानां छे. जेमके,

अद्धाण

१ अद्धाणो अद्धाणा

 सं० [illegible]

२ अद्धाणं अद्धाणे, अद्धाणा इत्यादि.

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]
	([illegible])	
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]
	([illegible])	
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]

३. 'णो' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना स्वरनो दीर्घ थाय छे.

४. 'इणं' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वनो स्वर लोपाय छे.

पूस (पूसन्)

प०– पूसा, पूसो (मा०–पूशे) — पूसाणो, पूसा।

बी०– पूसिणं, पूसं — पूसाणो, पूसे, पूसा।

त०– पूसणा, पूसेण, पूसेणं — पूसेहि. पूसेहिं, पूसेहिँ।

च०, छ०–पूसाणो, पूसस्स (मा० पूशाह) — पूसिणं, पूसाण, पूसाणं। (मा० पूशाहँ)

पं०– पूसाणो, पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसाहिंतो, पूसा (शौ० पूसादो, पूसादु) (मा० पूशादो, पूशादु) (पै० पूसातो, पूसातु) — पूसत्तो, पूसाओ, पूसाउ, पूसाहि, पूसेहि, पूसाहिंतो, पूसेहिंतो, पूसासुंतो, पूसेसुंतो।

०– पूसे, पूसम्मि, पूसंसि — पूसेसु, पूसेसुं।

– हे पूसा! हे पूसो, पुस! — हे पूसाणो, हे पूसा।

महव

१ महवा, महवो (शौ० महवं) (मा० महवे) — महवाणो, महवा.

---

१ 'मघव' पण थाय छे. आ रूप आर्षप्राकृतमां पण वपरायुं
...मघवं पागसासणे"—कल्पसूत्र.

[illegible] [illegible], [illegible] — [illegible], [illegible], [illegible],

[illegible] [illegible], [illegible], — [illegible], [illegible],

[illegible] — [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] — [illegible], [illegible], [illegible],

([illegible]) ([illegible])

[illegible]

[illegible] ([illegible])

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible])

[illegible]

प०	अप्पा, अप्पो	अप्पाणो, अप्पा।
	(मा० अप्पे)	
बी०	अप्पिणं, अप्पं	अप्पाणो, अप्पे, अप्पा।
त०	अप्पणिआ, अप्पणइआ, अप्पणा, अप्पेण, अप्पेणं	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ।
च०,-छ०-	अप्पाणो, अप्पस्स (मा० अप्पाह)	अप्पिणं, अप्पाण, अप्पाणं। (मा० अप्पाहँ)

इत्यादि बधां रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'पूम' नी समान छे.

---

२ राय (राजन्)

१. तृतीया, पंचमी, षष्ठी अने सप्तमीना बहुवचनमां 'राजन्' शब्दनो 'राइ' आदेश विकल्पे थाय छे.

६	अत्तना	अत्तनेहि, अत्तनेभि,
	अनस्सा, अनम्हा,	अत्तेहि, अत्तेभि,
	आतुमस्सा, आतुमम्हा	आतुमेहि, आतुमेभि
७	अत्तनि, अत्ते,	अत्तनेसु
	अत्तस्मिं, अत्तम्हि	आतुमेसु
	आतुमे, आतुमस्मिं,	
	आतुमम्हि	
८ स०	अत्त ! अत्ता !	अत्तानो ! अत्ता !
	आतुम ! आतुमा !	आतुमानो !

२ राज (राजन्)

१	राजा	
२	राजानं राजं	राजानो, राजा.
३	रञ्ञा. राजेन.	राजानो.
	राजिना	राजूहि, राजूभि,
२५		राजेहि, राजेभि.

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

३. 'टा', 'ङि' अने सप्तमीना एकवचनमां ' राजन् ' शब्दनो ' राइ ' आदेश विकल्पे थाय छे.

विशेषता:

[शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां ' अन् ' छेडा-वाळां नामोना अंत्य ' न् ' नो संबोधनना एकवचनमां विकल्पे अनुस्वार थाय छे.

जुव (जुवन्=सं० युव)

१	जुवा (जुवो)	जुवा, जुवानो, जुवाना
२	जुवानं, जुवं	जुवाने, जुवे.
३	जुवाना, जुवानेन, जुवेन	जुवानेहि, जुवानेहिं. जुवेहि, जुवेहिं.
४–६	जुवानस्स, जुवस्स	जुवानानं, जुवानं.
५	जुवाना, जुवानस्मा, जुवानम्मा	जुवानेहि. जुवानेहिं. जुवेहि, जुवेहिं.
७	जुवाने, जुवानम्मि, जुवानंसि, जुवे, जुवम्मि, जुवंसि	जुवानेसु जुवानेसु, जुवेसु.
८ सं०	जुव, जुवा, जुवान, जुवाना	जुवानो जुवाना.

['मघव' (मघवन्)नां रूपो 'जुव' जेवां अने 'मघवंत' (मघवन्)नां रूपो 'गुणवंत'नी जेवां.]

मुद्ध (मूर्धन्=सं० मूर्धा)

१	मुद्धा	मुद्धा, मुद्धाणो.
२	मुद्धं	मुद्धाने.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	
[illegible]	[illegible]

[illegible]

	एक०	बहु०
प० —	राया,	रायाणो, राइणो,
	रायो	राया.
	(मा० राये)	
बी० —	राइणं,	रायाणो, 'राइणो,
	रायं	राये, राया.
त० —	राइणा, रण्णा	राईहि, राईहिं, राईहिँ.
	रायेण, रायेणं	रायेहि, रायेहिं, रायेहिँ.
च० छ० —	रण्णो, राइणो	राईण, राईणं.
	रायस्स	रायाण, रायाणं.
	(ता० — रण्णे)	
	(मा० लायाह)	(मा० लायाहँ)
पं० —	रण्णो, राइणो,	राइत्तो, राईओ,
	रायत्तो, रायाओ,	राईउ, राईहि,
	रायाउ, रायाहि,	राईहिंतो, राईसुंतो,
	रायाहिंतो, राया	रायत्तो, रायाओ,
		रायाउ,
		रायाहि, रायेहि,
		रायाहिंतो, रायेहिंतो,
		रायासुंतो, रायेसुंतो.

(अन्)नी जेवां थाय छे. 'विस्सकम्म'थी 'अद्धन' सुधीना शब्दोनां रूपो 'वीर'नी जेवां थाय छे अने बाकी रहेला 'दक्खधम्म' अने 'वत्तह'नां रूपोमां थोडी विशेषता छे ते पाणिनीयमाकडथी समजी लेवी—जुओ पाणि० पृ० १२१—१२९ अने एनां टिप्पणो.

१ सं० 'राज्ञः' उपरथी 'रण्णो' रूप पण थाय छे—ज्ञ = ण्ण, ण—ण्ण पृ० ३६ तथा पृ० ९७ विवरणजुओ.

(शौ० रायादो, रायादु)
(मा० लायादो, लायादु)
(पै० रायातो, रायातु)

स०– राइंसि, राइम्मि राईसु, राईसुं
रायंसि, रायम्मि, राये रायेसु, रायेसुं.

सं०– राया, रायो, राय, रायाणो, राइणो, राया.
(शौ० पै० रायं, राय, राया, रायो)
(मा० लायं, लाय, लाया, लाये)

'अन्' छेडावाळां नामोनां प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां साधारण रूपो आपेलां छे फक्त 'राजन्' शब्दनां पैशाचीरूपोमां आ एक नाम विशेषता छे:

पैशाची:

एकवचन	बहुवचन
त०–'राचिना, रञ्ञा' (राज्ञा)	बी०–राचिनो, रञ्ञो (राज्ञः)
च० छ०–राचिनो, रञ्ञो (राज्ञः)	
पं०– ,, ,, ,,	
स०– राचिनि, रञ्ञि (राज्ञि)	

नान्यतरजाति

उपर बतावेलां 'अन' छेडावाळां नामोनां क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्वितीयामां बराबर 'कुल' नी जेवां थाय छे अने बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी रूपोनी जेवां थाय छे. जेमके;

१ सरखावो 'राजन्' ना पालिरूपो–पृ० १९१

२ जुओ उक्त मागधी (पृ० ३६) मागधीनी पेठे पैशाचीमां पण 'ज्ञ,' 'न्य' अने 'ण्य' नो 'ञ्ञ' थाय छे.

सुराय, सुरायाण (सुराजन्)

१	सुरायं.	सुरायाणि. सुरायाइं सुरायाइँ
	सुरायाणं	सुरायाणाणि, सुरायाणाइं सुरायाणाइँ
२	सुरायं,	सुरायाणि, सुरायाइं सुरायाइँ
	सुरायाणं	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ सुरायाणाइँ

शेष रूपो. ते ते वचन प्रमाणे 'राय' नी पेठे.

सुअप्प सुअप्पाण (सुआत्मन्)

१	सुअप्पं[2]	सुअप्पाणि. सुअप्पाइं, सुअप्पाइँ
	सुअप्पाणं	सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइं, सुअप्पाणाइँ.
२	सुअप्पं	सुअप्पाणि. सुअप्पाइं. सुअप्पाइँ
	सुअप्पाणं	सुअप्पाणाणि. सुअप्पाणाइं. सुअप्पाणाइँ.

शेष. पुंल्लिंगी 'अप्प' नी पेठे

---

१ सुरायं सरं.

२ सुअप्पं सुअं.

सुपुस, सुपुसाण (सुपुमन्)

१ सुपुमं[1]

सुपुमाणि, सुपुमाइँ

सुपुमाणं सुपुमाइं

सुपुमाणाणि, सुपुमाणाइँ

२ सुपुमं, सुपुमाणाइं

सुपुमाणि, सुपुमाइँ

सुपुमाणं सुपुमाइं

सुपुमाणाणि, सुपुमाणाइँ

सुपुमाणाइं

शेष रूपो, ते ते भाषा प्रमाणे 'पुम'नी पेठे.

सुअप्प सुअप्पाण (सुआत्मन्)

१ सुअप्पं[2]

सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ,

सुअप्पाणं सुअप्पाइं

सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ,

२ सुअप्पं सुअप्पाणाइं.

सुअप्पाणि, सुअप्पाइँ,

सुअप्पाणं सुअप्पाइं

सुअप्पाणाणि, सुअप्पाणाइँ,

सुअप्पाणाइं.

शेष, पुंल्लिंगी 'अप्प'नी पेठे

---

१ सुपुमं गयं.

२ सुअप्पं कुलं.

(शौ० रायादो, रायादु)
(मा० लायादो, लायादु)
(पै० रायातो, रायातु)

स०– राइंसि, राइम्मि — राईसु, राईसुं
रायंसि, रायम्मि, राये — रायेसु, रायेसुं.

सं०– राया, रायो, राय, — रायाणो, राइणो, राया.
(शौ० पै० रायं, राय, राया, रायो)
(मा० लायं, लाय, लाया, लायो)

'अन्' छेडावाळां नामोनां प्राकृत रूपोनी साथे ज शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां साधारण रूपो आपेलां छे फक्त 'राजन्' शब्दना पैशाचीरूपोमां आ एक खास विशेषता छे:

पैशाची:

एकवचन	बहुवचन
त०–[1]राचिञा, रञ्ञा[2] (राज्ञा)	बी०–राचिञो, रञ्ञो (राज्ञः)
च० छ०–राचिञो, रञ्ञो (राज्ञः)	
पं०– ,, ,, ,,	
सं०– राचिञि, रञ्ञि (राज्ञि)	

नान्यतरजाति

उपर जणावेला 'अन्' छेडावाळा नामोना क्लीबलिंगी रूपो प्रथमा अने द्वितीयामां बराबर 'कुल'नी जेवां थाय छे अने बाकी बधां ते ते भाषा प्रमाणे पुंलिंगी रूपोनी जेवां थाय छे. जेमके;

१ सरखावो 'राजन्' ना पालिरूपो–पृ० १९३

२ जुओ ज्ञ–ञ्ञ मागधी (पृ० ३६) मागधीनी पेठे पैशाचीमां पण 'ज्ञ,' 'न्य' अने 'ण्य'नो 'ञ्ञ' थाय छे.

५-६ पूनासु, पूनसु, पूनस्सु
पूनाहो, पूनहो, पूनाहं, पूनहं
पून, पूना, पून, पूना
पूनागासु, पूनागसु,
पूनागस्सु, पूनागाहो, पूनागहो, पूनागाहं, पूनागहं
पूनाग, पूनागा पूनाग, पूनागा.

१ पूनाहु, पूनहु,
पूनाहे. पूनहे पूनाहुं, पूनहुं
पूनागाहु, पूनागहु, पूनागाहुं, पूनागहुं
पूनागाहे, पूनागहे

७ पूनि, पूने
पूनागि, पूनागे पूनाहिं, पूनहिं
पूनागाहिं, पूनागहिं.

८ (सं०) पूनु. पूनो, पूनाहो, पूनहो
पून, पूना पून, पूना
पूनागु, पूनागो, पूनागाहो, पूनागहो,
पूनाग, पूनागा पूनाग, पूनागा.

तुपूस, तुपूसाण (नान्यतरजाति)

१ तुपूतु,
तुपून, तुपूना तुपूनाइं, तुपूनइं

२ तुपूतु,
तुपून, तुपूना तुपूनाइं, तुपूनइं

बाकी बधां, ' पून ' नां अरबंग नो प्रमाणे.

सुराय, सुरायाण (सुराजन्)

१	सुराय[1]	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइं
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइं.
२	सुरायं	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइं
	सुरायाणं	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइं.

शेष बधां पुंलिंगी 'राजन्' नी जेवां

अपभ्रंशरूपो

ए नामोना अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल' नी जेम थाय छे. जेमके;

पूस, पूसाण (पूसन्–नरजाति)

१	पूसु, पूसो, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण, पूसाणा.
२	पूसु, पूस, पूसा पूसाणु, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण, पूसाणा
३	पूसेण, पूसेण, पूसें पूसाणेण, पूसाणेण पूसाणें	पूसेहिं, पूसाहिं, पूसहिं पूसाणेहिं, पूसाणाहिं पूसाणहिं.

---

१ सुरायं नरा.

	एकवचन	बहुवचन
४-६	पुमासु, पुमसु, पुमस्सु	
	पुमाहो, पुमहो,	पुमाहं, पुमहं
	पुम, पुमा,	पुम, पुमा
	पुमाणासु, पुमाणसु,	
	पुमाणस्सु, पुमाणाहो, पुमाणहो,	पुमाणाहं, पुमाणहं
	पुमाण, पुमाणा	पुमाण, पुमाणा.
५	पुमाहु, पुमहु,	
	पुमाहे, पुमहे	पुमाहुं, पुमहुं
	पुमाणाहु, पुमाणहु,	पुमाणाहुं, पुमाणहुं
	पुमाणाहे, पुमाणहे	
७	पुमि, पुमे	
	पुमाणि, पुमाणे	पुमाहिं, पुमहिं
८ (सं०)	पुमु, पुमो,	पुमाणाहिं, पुमाणहिं.
	पुम, पुमा	पुमाहो, पुमहो
	पुमाणु, पुमाणो,	पुम, पुमा
	पुमाण, पुमाणा	पुमाणाहो, पुमाणहो,
		पुमाण, पुमाणा.

सुपुम, सुपुमाण (नान्यतरजाति)

	एकवचन	बहुवचन
१	सुपुमु,	
	सुपुम, सुपुमा	सुपुमाइं, सुपुमइं
२	सुपुमु,	
	सुपुम, सुपुमा	सुपुमाइं, सुपुमइं

बाकी बधां, ' पुम ' नां अपभ्रंश रूपो प्रमाणे.

सुराय, सुरायाण (सुराजन्)

	एकवचन	बहुवचन
१	सुराय[1]	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइं
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइं.
२	सुरायं	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइं
	सुरायाणं	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइं.

शेष बधां पुंलिंगी 'राजन्' नी जेवां

अपभ्रंशरूपो

ए नामोना अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल' नी जेम थाय छे जेमके;

पूस, पूसाण (पूषन्-नरजाति)

	एकवचन	बहुवचन
१	पूसु, पूसो, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण. पूसाणा.
२	पूसु, पूस, पूसा पूसाणु, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण, पूसाणा
३	पूसेण, पूसेणं, पूसें पूसाणेण, पूसाणेणं पूसाणें	पूसेहिं, पूसाहिं, पूसहिं पूसाणेहिं, पूसाणाहिं पूसाणहिं.

---

१ सुराय नम.

सुराय, सुरायाण (सुराजन्)

१	सुरायं[1]	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइं
	सुरायाण	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइं.
२	सुरायं	सुरायाणि, सुरायाइँ, सुरायाइं
	सुरायाणं	सुरायाणाणि, सुरायाणाइँ, सुरायाणाइं.

शेष बधां पुंलिंगी 'राजन्' नी जेवां

अपभ्रंशरूपो

ए नामोना अपभ्रंशरूपो पण 'वीर' अने 'कुल' नी जेम थाय छे जेमके;

पूस, पूसाण (पूसन्-नरजाति)

१	पूसु, पूसो, पूस, पूसा, पूसाणु, पूसाणो, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण, पूसाणा.
२	पूसु, पूस, पूसा पूसाणु, पूसाण, पूसाणा	पूस, पूसा पूसाण, पूसाणा
३	पूसेण, पूसेणं, पूसें पूसाणेण, पूसाणेणं पूसाणें	पूसेहिं, पूसाहिं, पूसहि पूसाणेहिं, पूसाणाहिं पूसाणाहि.

[1] सुराय नपुं.

ए म प्रमाणे राय, अप्प वगेरे 'अन्' छेडावाळां नामोनां बधां अपभ्रंश रूपो करी लेवानां छे.

[पूस, अप्प, राय वगेरे शब्दोनां शौरसेनीरूपोनो पण अपभ्रंशमां उपयोग थइ शके छे]

'अस्' छेडावाळां नामो ([1]नरजाति)

प्राकृतमां अने पालिमां 'अस्' छेडावाळां नामोनां रूपो [2]अकारांत शब्दोनी जेवां थाय छे.[3] जेमके;

सुमण (सुमनस्)

१	सुमणो	सुमणा
२	सुमणं	सुमणे, सुमणा
३	सुमणेण, सुमणेणं	सुमणेहि, सुमणेहिं, सुमणेहिँ

इत्यादि बधां ते ते भाषा प्रमाणे 'वीर' नी जेवां समजवां.

---

१ जुओ पृ० १२१ (नामनी जातिओ)

२ पृ० १०—अंत्यव्यंजनलोप.

३ पालिमां 'पुमस्' (सं० पुंस्) शब्दनां रूपोमां विशेषता छे ते आ प्रमाणे

पुम (पुमस्)

१	पुमा	पुमा
	पुमां	पुमानो
२	पुमानं	पुमानो
	पुमं	पुमाने, पुमे
३	पुमाना	पुमानेहि,
	पुमुना	पुमानेभि,
	पुमेन	पुमेहि, पुमेभि

ए प्रमाणे सुवय (सुवचम्) सुमेह (ध) (सुमेधम्) विमण (विमनम्) पवय (प्रवदम्) अने दुव्वय (दुर्वनम्) वगेरे शब्दोनां रूपो समजवां.

स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग नामो पांच प्रकारनां छे, जेमके—आकारांत, इकारांत, ईकारांत, उकारांत, ऊकारांत ।

आकारांत

१ प्राकृतमां आकारांत नामो बे जातनां छे, जेमके—केटलांक आकारांत नामोनुं मूळरूप (संस्कृतमां) अकारांत होय छे ते अने केटलांक आकारांत नामोनुं मूळरूप (संस्कृतमां) अकारांत नथी

४-६	सुमुणो	सुमाणं
	सुमणस	
५	सुमाणा	सुमाणेहि, सुमाणेभि
	सुमुणा	
	सुमा, सुमणसा	सुमेहि, सुमेभि
	सुमण्हा	
७	सुमाणे	सुमाणेसु
	सुमे	सुमाणसु, सुमेसु
	सुमणंसि, सुमम्हि	
८ सं०—	सुमं,	सुमाणो
	सुम	सुमा

'चन्द्रमस्' शब्दनुं प्रथमाना एकवचनमां 'चंदिमा' थाय छे अने बाकीनां रूपो अकारांतनी जेवां थाय छे:—जुओ पा० पृ० १३०-१३१ अने एनां टिप्पणो.

होतुं ते. [ए बन्ने जातनां आकारांत नामोनां रूपोमां थोडुं अंतर छे माटे ज अहीं ए विभाग जणाव्यो छे.]

२ स्त्रीलिंगे थनार (संस्कृत) अकारांत नामना छेवटना 'अ'नो 'आ' थाय छेः रम=रमा इत्यादि।

३ 'विद्युत्' शब्दने वर्जीने स्त्रीलिंगी व्यंजनांत शब्दना छेवटना व्यंजननो 'आ' के 'या' थाय छेः वाच्=वाआ, वाया इत्यादि।

४ स्त्रीलिंगी रकारांत शब्दना छेवटना 'र' नो 'रा' थाय छेः गिर्=गिरा। धुर्=धुरा। पुर्=पुरा इत्यादि।

५ नीचेना संस्कृत नामोना प्राकृत रूपो आ रीते थाय छेः

[1]अप्सरस्–अच्छरसा। आशिष्–आसिसा। दुहितृ–दुहिआ, धूआ। ननान्दृ–नणंदा। नौ–नावा। पितृष्वसृ–पिउसिआ, पिउच्छा। बाहु–बाहा। माता–माआ[2], [3]माय (अ) रा। मातृष्वसृ-माउसिआ, माउच्छा। श्वश्रू–सासा।

ईकारांत

१ स्त्रीलिंगे थनारा विशेषणवाचक अने व्यक्तिवाचक शब्दो प्राकृतमां आकारांत अने ईकारांत बने छेः

नीला, नीली (नीला), हसमाणी, हसमाणा (हसमाना) मत्ती, मत्ता (मत्ता) सुप्पणही, सुप्पणहा (शूर्पणखा) इत्यादि।

२ संस्कृतमां जे शब्दो आ जणावेला (हेम० २-४-२० अने पाणि० ४-१-१९ (सूत्रांक ४७०) सूत्रथी ईकारांत बने छे ते शब्दोने प्राकृतमां आकारांत अने ईकारांत समजवाना छे

[1] आ शब्दोमांना केटलाक शब्दो तो थागळ आवी गया छे–जुओ शब्दविकार पृ० ८४–८६ नि० १०८–१०९

[2] आ शब्दनो मातृ–जननी–अर्थ छे.

[3] आ शब्दनो देवी अर्थ छे.

सीमन्तीं, सीमन्तया (सीमन्ती), कहं, क[illegible]
कुमारीणी, कुमारीया (कुमारीणी), अहिन्नई, अहिन्न[illegible]
पेनी, पेना (पेनी) धूई, धूया (धूनी), मा[illegible]
(सापनी) कुमनी, कुमना (कुमनी) इत्यादि ।

३ छाया अने रत्रि शब्द प्राकृतमां ईकारांत प[illegible]
छाही, छाया (छाया), रत्ती, रत्ता (रत्रि)

स्त्रीलिंगी नामोने लागता प्राकृत प्रत्ययो

प्र० –	०	[1]आ, उ, ओ, ०
द्वि० –	म्	[1]आ, उ, ओ, ०
त० –	अ, [1]आ, इ, ए	हि, हिं, हि[2]
च०, छ० –	अ, [1]आ, इ ए	ण, णं
पं० –	अ, [1]आ, इ, ए, तो, ओ, उ, हिंतो	तो, ओ, उ, हिंतो, सुंतो
स० –	अ, [1]आ, इ, ए	सु, सुं

प्राकृत प्रत्ययोने लगता नियमो

१ 'तो' अने 'म्' सिवायना प्रत्ययो पर रहेतां पूर्वनो ह्रस्व स्वर दीर्घ थाय छे.

२ 'म्' प्रत्यय पर रहेता पूर्वनो दीर्घ स्वर ह्रस्व थाय छे.

३ ज्यां शून्य (०) छे त्यां शब्दोनुं मूळरूप पण वपराय छे अने जो मूळरूप ह्रस्वांत होय तो तेने दीर्घांत करीने वापरवानुं छे.

---

१ आ प्रत्यय ईकारांत नामने ज लागी शके छे.
२ आ प्रत्ययने आकारांत नामने लगाडवानो नथी.

४ संबोधनना एकवचनमा ईकारांत अने ऊकारांत नामोनो अंत्य स्वर ह्रस्व, थाय छे अने बहुवचन, प्रथमानी जेवुं थाय छे.

५ संबोधनना एकवचनमां इकारांत अने उकारांत नामोना अंत्य स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे.

६ जे आकारांत शब्दोनुं मूळ (संस्कृत) रूप अकारांत होय छे, ते शब्दोना अंत्य 'आ'कारनो, संबोधनना एकवचनमा 'ए' विकल्पे थाय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे.

७ संबोधनना एकवचनमा, बीजा आकारांत शब्दोनुं मूळ-रूप ज वपराय छे अने बहुवचन प्रथमानी सरखुं थाय छे.

विशेषता

शौरसेनी, पैशाची अने मागधीमां पण स्त्रीलिंगी नामोने प्राकृतना ज प्रत्ययो लगाडवाना छे. मात्र मागधीमा छट्ठी विभक्तिमा फेर छे अने ए आ प्रमाणे छे:

फक्त आकारांत नामोने मागधीमां छट्ठीना एकवचनमा 'ह' प्रत्यय अने बहुवचनमा 'हँ' प्रत्यय लागे छे जेमके,

मालाह	मालाहँ

स्त्रीलिंगी नामोने लागता अपभ्रंश प्रत्ययो

	एकव०	बहुव०
प०	०	उ, ओ, ०
बी०	०	उ, ओ, ०

१ जुओ पृ० २०४ नि० ५.

तं०—	ए	हिं
च० छ०—	हे, ०	हु, ०
पं०—	हे	हु
स०	हि	हिं
सं०—	०	हो, ०

अपभ्रंश प्रत्ययने लगता नियमो:

१ अपभ्रंशना प्रत्ययो लागतां नामनो अंत्य स्वर ह्रस्व अने दीर्घ थाय छे.

२ ज्यां शून्य छे त्यां पण उपरनो नियम लागु थाय छे.

प्राकृत रूपाख्यानो

[1]माला

प०—	माला	मालाउ, मालाओ, माला
बी०—	मालं	मालाउ, मालाओ, माला

---

१ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो:

माला

१	माला	माला, मालायो.
२	मालं	माला, मालायो.
३–५	मालाय	मालाहि, मालाभि.
४–६	मालाय	मालानं.
७	मालाय मालायं	मालासु.
८ सं०—माले		माला, मालायो.

—जुओ पालिप्र० पृ० ९९–१००–१०१

त०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिं, मालाहिँ
च०,छ०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	[1]मालाण, मालाणं
	(मा० मालाह)	(मा० मालाहँ)
पं०—	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो मालासुंतो
स०—	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु, मालासुं
सं०—	[2]माले !, माला !	मालाउ !, मालाओ !, माला !

ए रीते नावा (नौ) गउआ (गोका) सद्धा (श्रद्धा), मेहा (मेधा) पण्णा (प्रज्ञा), तण्हा (तृष्णा), विज्जा (विद्या), पुच्छा (पृच्छा) निंता. छुहा (क्षुध्-छुह) कउहा (ककुभ्-कउह), निसा (निशा) अने दिसा (दिशा) वगेरे आकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो 'माला' नी पेठे छे.

---

१ आकारांत स्त्रीलिंगी शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां मागधीनो 'हँ' प्रत्यय पण लागे छे. जेमके–सरिआ + सरिआणं, सरिआहँ। माला+ मालाणं, मालाहँ।

२ 'अम्मा' शब्दनुं संबोधननुं एकवचन 'अम्मो' पण थाय छे.

वाया (वाचा)

प०— वाया वायाउ, वायाओ, वाया.
सं०— वाया वायाउ, वायाओ, वाया.

शेष रूपो ' माला 'नी जेवां.

ए रीते अच्छरसा (अप्सरस्), आसिसा (आशिष्), धूआ, दुहिआ ((दुहितृ), नणंदा (ननान्द), नावा (नौ), पिउच्छा, पिउसिआ (पितृष्वसृ), बाहा (बाहु), माआ, माअ(य) रा, (मातृ) माउसिआ, माउच्छा (मातृष्वसृ) अने ससा (स्वसृ) वगेरे आकारांत शब्दोनां रूपाख्यानो समजवानां छे.

गइ[1] (गति)

प०— गई गईउ, गईओ, गई
बी०— गई , गईउ, गईओ, गई

---

१ इकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो :

रत्ति (रात्रि)

१ रत्ति रत्ती, रत्तियो
२ रत्तिं ,, ,,
५ रत्तिया रत्तीहि, रत्तीभि.
६ रत्तिया रत्तीनं
रत्तिया रत्तीसु
रत्तियं
रत्ति रत्ती, रत्तियो

—जुओ पालिप्र० पृ० १०१—१०२

	एकवचन	बहुवचन
त०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईहि, गईहिं, गईहिँ
च०, छ०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईण, गईणं
पं०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए, गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो	गइत्तो, गईओ, गईउ, गईहिंतो, गईसुंतो
स०—	गईअ, गईआ, गईइ, गईए	गईसु, गईसुं ([1]गइसु, गइसुं)
सं०—	गई ! गइ !	गईउ, गईओ, गई

ए प्रमाणे जुत्ति (युक्ति) माइ (मातृ) भूमि, जुवइ (युवति) धूलि, रइ (रति), बुद्धि, मइ (मति), दिहि, धिइ (धृति) अने सिप्पि, सुत्ति (शुक्ति) वगेरे इकारांत शब्दोना रूपाख्यानो समजवाना छे

[सं० 'रात्र.' उपरथी पालिमा 'रत्यो,' 'रात्र्या' अने 'रात्र्याः' उपरथी 'रत्या,' 'रात्र्याम्' उपरथी रत्यं अने 'रत्ति' तथा 'रात्री' उपरथी 'रत्तो' रूपो पण बने छे]

1 जूओ हे० प्रा० -गा० ८-३-१६

धेणु (धेनु)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०—	धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
बी०—	धेणुं	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
त०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि, धेणूहिं, धेणूहिँ
च०, छ०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
पं०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए, धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो	धेणूत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो, धेणूसुंतो
स०—	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
सं०—	धेणू ! धेणु !	धेणूउ, धेणूओ, धेणू

---

१ उकारांत स्त्रीलिंगी शब्दनां पालिरूपो:

धातु (धातु)

१	धातु	
२	धातुं	धातू, धातुयो.
३–५	धातुया	,, ,,
४–६	धातुया	धातूहि, धातूभि.
७	धातुया	धातूनं.
	धातुय	धातूसु.
८ सं०	धातु	धातू, धातुयो.

—जुओ पालिप्र० पृ० १०६–१०७

ए प्रमाणे गउ, कन्तु, विज्जु (विद्युत्), उज्जु (ऋजु), पियंगु (प्रियङ्गु) माउ (मातृ) दद्दु (दद्रु) पड्डु (पटु), गुरु, लहु (लघु) अने तण्तु वगेरे उकारांत शब्दोनां रूपो 'धेणु' नी पेठे समजवानां छे.

'नई (नदी)

प०–	नई	नईआ, नईउ, नईओ, नई
बी०–	नइ	नईआ, नईउ, नईओ, नई
त०–	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईहि, नईहिं, नईहिँ

' ईकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना संस्कृतरूपोः

नदी

१	नदी	नदी, नदिओ (नइओ)
२	नदि, नदिअं	,, ,, ,,
३-५	नदिआ (नइआ)	नदीहि, नदीहिं.
६-७	नदिआ (नइआ)	नदीनं
७	नदिआ नइआ (नइए)	नदीसु
८ सं	नदि	नदी, नदिओ (नइओ)

—जुओ [illegible] १०३–१०८ [illegible] तथा [illegible].

[illegible] नदी, नदी अने [illegible] [illegible] उपर्युक्त [illegible] [illegible] ३३ [illegible]

ष०.छ०— नईए, नईआ,
नईइ, नईए — नईण, नईणं

पं०— नईए, नईआ,
नईइ, नईए,
नईतो, नईओ,
नईउ, नईहिंतो — नईणो, नईओ, नईउ,
नईहिंतो, नईसुंतो

स०— नईअ, नईआ,
नईइ, नईए — नईसु, नईसुं

सं०— नइ ! — नईअ, नईउ, नईओ, नई

ए प्रमाणे नाई (नदी), वाणी (वाणी), कयली (कदली), नारी, कुमारी, नयरी, समणी (श्रमणी), माहुली, माहणी (माहनी), पुहवी (पृथ्वी), बायगणी, नत्तुणी (नप्त्री), इत्थी भी (स्त्री) अने बहिणी (भगिनी) वगेरे ईकारांत शब्दोना रूपाख्यानो 'नई' नी पेठे छे.

वहू (वधू)[1]

प०— वहू — वहूउ, वहूओ, वहू
बी०— वहू — वहूउ, वहूओ, वहू

---

१ जुओ पृ० ८३–नी–टिप्पणी तथा ते उपरनुं टिप्पण.

२ ऊकारांत स्त्रीलिंगी शब्दना पालिरूपो:

वधू (प्रा० वहू)

१	वधू	वधू, वधुयो.
२	वधुं	,, ,,
३–५	वधुया	वधूहि, वधूभि,
४–६	वधुया	वधूनं.

४–६	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु.
	मइ, मई	मइ, मई.
५	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु.
७	मइहि, मईहि	मइहिं, मईहिं.
८ सं०	मइ, मई	मइहो, मईहो,
		मइ, मई.

पइडी (प्रतिष्ठा–पतिट्ठा)

१	पइडी, पइडि	पइडिउ, पइडीउ,
		पइडिओ, पइडीओ,
		पइडी, पइडि.
२	पइडी, पइडि	पइडिउ, पइडीउ,
		पइडिओ, पइडीओ,
		पइडी, पइडि.
३	पइडिए, पइडीए	पइडिहिं, पइडीहि.
४–६	पइडिहे, पइडीहे	पइडिहु, पइडीहु,
	पइडी, पइडि	पइडी, पइडि.
५	पइडिहे पइडीहे	पइडिहु, पइडीहु.
७	पइडिहि पइडीहि	पइडिहिं, पइडीहिं
८ सं०	पइडि पइडी	पइडिहो, पइडीहो
		पइडी, पइडि

धेणु

१	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ
		धेणुओ, धेणूओ

[illegible] पइडिओ [illegible] पृ० [illegible]

		धेणु, धेणू.
२	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ. धेणु, धेणू.
३	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं.
४–६	धेणुहे, धेणूहे धेणु, धेणू	धेणुहु, धेणूहु, धेणु, धेणू.
५	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु.
७	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं.
८	सं०—धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो, धेणु, धेणू.

वहू

१	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ वहुओ, वहूओ, वहु, वहू.
२	वहू, वहु	वहुउ, वहूउ वहुओ, वहूओ, वहु, वहू.
३	वहुए, वहूए.	वहुहिं, वहूहिं.
४–६	वहुहे, वहूहे, वहु, वहू	वहुहु, वहूहु, वहु, वहू.
५	वहुहे, वहूहे	वहुहु, वहूहु

७ बहुहि, बहूहि	बहूहिं, बहूहिं
८ सं०–बहु, बहू	बहुहो, बहूहो
	बहु, बहू.

ए प्रमाणे बधा आकारांत, इकारात, ईकारांत, उकारांत अने ऊकारांत शब्दोनां अपभ्रंशरूपो बनावी लेवानां छे.

[1]सर्वादि (स्त्रीलिंग)

स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोनां प्राकृतरूपो, शौरसेनीरूपो, मागधीरूपो, पैशाचीरूपो, अने अपभ्रंशरूपो पूर्वे जणावेला साधारण स्त्रीलिंगी शब्दो प्रमाणे समजवाना छे.

केटलाक स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना प्राकृत रूपोनी विशेषता आ प्रमाणे छे.

[स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना 'आकारात' अंगना रूपो 'माला'नी जेवा करवाना छे. ईकारात अंगना रूपो 'नई'नी जेवा करवाना छे अने उकारान्त अंगना रूपो 'धेणु'नी जेवा करवाना छे।

---

१ स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दोना पालिरूपो—

सब्बा (सर्वा) ना बधारना रूपो:

४–६ सब्बस्सा (सं० सर्वस्या) सब्बासं (सं० सर्वासाम्)

सब्बासानं

७ सब्बस्सं (सं० सर्वस्याम्)–जुओ पालिप्र० पृ० १४० अने टिप्पण.

बाकी बधा 'माला'ना पालिरूपो जेवा.

ती, ता, णी, णा (तद्)

१	ता	तीआ, तीइ, तीओ, ती, ताइ, ताओ, ता.

१ पहेली अने बीजीना एकवचनना तथा छट्ठीना बहुवचनना आ ईकारांत अंगनो प्रयोग थतो नथी.

२ जुओ पृ० १८१ नुं '८' नंबरनुं टिप्पण.

३ ता (तद्) ना वधाराना रूपो:

१	ता	
३–५	तम्हा (सं० तस्मात्)	
	ताद	ताहि, ताहिं.
	नम्हा	नाहि, नाहिं.
	नाद	
	यम्हा	
४–६	तस्साद, तस्सा { सं० तस्यै तस्याः }	तासं (सं० तासाम्) तासानं
	ताद	
	नस्साद, नस्सा	
	नाद	नासं, नासानं
	यस्साद, यस्सा	
	तिस्साद, तिस्सा	आसं, आसानं
७	तस्सं (सं० तस्याम्)	सानं
	तस्सा	
	नस्सं, नस्सा	
	यस्सं, यस्सा	
	तिस्सं, तिस्सा	
	तादं, ताद	
	नादं, नाद	

बाकी बधां 'माला' नी जेम.

—जुओ पालि० पृ० १४३ अने टिप्पण.

ऋकारांत (स्त्रीलिंग)

ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दनां 'माआ' अने 'मायरा' आवां बे रूपो जूदा जूदा अर्थमां थाय छे ए आगळ जणावेलुं छे, एथी एनां शौरसेनी वगेरेना बधां रूपो 'वाया'नी जेवां समजवानां छे, जेमके,

माआ, मायरा (मातृ)

प० माआ, — माआउ, माआओ, माआ.

मायरा — मायराउ, मायराओ, मायरा.

---

७ अमुय — अमूसु

अमुसं

—जुओ पालिप्र० पृ० १४८

१ जुओ पृ० २०४, नि० ५–'मायर' ने बदले 'माअर' पण थइ शके छे.

२ ऋकारांत स्त्रीलिंगी 'मातृ' शब्दनां पालिरूपो.

मातु (मातृ)

१	माता	माता, मातरो.
२	मातर	माता, मातरे.
३–५	मातरा	मातरेहि, मातरेभि.
	मातुया	मातूहि, मातूभि.
	मत्या	
४–६	मातु	मातरानं, मातान,
	मातुया	मातून
	मत्या	
७	मातरि	मातरेसु,
	मातुया	मातूसु.
	मत्या	
	मातुयं, मत्यं	
८	सं०–मात, माता	माता, मातरो.

—जुओ पालिप्र० पृ० १०८–१०९–११० अने एनां टिप्पण.

	एकवचन	बहुवचन
बी०—	माअं	माआउ, माआओ, माआ,
	मायरं	मायराउ, मायराओ, मायरा.
त०—	माआअ, माआइ, माआए.	माआहि, माआहिं, माआहिँ,
	मायराअ, मायराइ, मायराए	मायराहि, मायराहिं, मायराहिँ.
च० छ०—	माआअ, माआइ, माआए.	माआण, माआणं ([1]माईणं)
	मायराअ, मायराइ, मायराए	मायराण, मायराणं.
पं०—	माआअ, माआइ, माआए, माअत्तो, माआओ, माआउ, माआहिंतो.	माअत्तो, माआओ, माआउ, माआहिंतो, माआसुंतो,
	मायराअ, मायराइ, मायराए, मायरत्तो, मायराओ, मायराउ, मायराहिंतो	मायरत्तो, मायराओ, मायराउ, मायराहिंतो, मायरासुंतो.
स०—	माआअ, माआइ माआए,	माआसु, माआसुं
	मायराअ, मायराइ, मायराए	मायरासु, मायरासुं.
सं०—	माआ.	माआउ, माआओ, माआ,
	मायरा	मायराउ. मायराओ, मायरा.

[माआ (मातृ=माता+माआ) नुं [2]'माया' बनावीने पण 'माआ' नी जेवां ज रूपो बनावी शकाय छे.]

---

१ जुओ पृ० ५२ मातृ=माइ+माईणं (सं० मातॄणाम्)

२ जुओ पृ० ५८ 'कादि' नो 'द' नं० ८

... ['मातृ' शब्दनां 'माइ' अने 'माउ' एवां पण बे अंगो बने छे, पण रूपाख्यानने प्रसंगे ते बन्नेनो प्रयोग विरल जणाय छे[1].]

सं० 'दुहितृ'नुं प्राकृत रूप 'धूआ' थाय छे ए आगळ जणावेलुं छे एथी एनां बधां रूपो 'माळा'नी जेवां थाय छे.

ओकारांत 'गो' शब्दनां स्त्रीलिंगी अंगो त्रण थाय छे जेमके; गोणी, गाई अने गउ. एमांना 'गउ'नां शौरसेनी वगेरेनां बधा

---

१ जुओ हे० प्रा० व्या० ८–३–४६–"माईण" "माऊए समन्निअं वंदे" 'षड्भाषाचंद्रिका'मां तो ए बन्ने अंगोने रूपाख्यानने प्रसंगे बधी विभक्तिओमां वापरेला छे–"इदुद् मातुः" १–२–८३ पृ० १०८. 'माइ नां रूपो 'गइ'नी जेवां अने 'माउ'नां रूपो 'धेणु'नी जेवां थाय छे.

२ धीतु (दुहितृ) नां पालिरूपो

१	धीता	धीता, धीतरो.
२	धीतर, धीतं	धीतरो, धीतरे.
३–५	धीतरा,	धीतरेहि, धीतरेभि,
	धीतुया	धीतूहि, धीतूभि.
४–६	धीतु,	धीतूनं
	धीतुया	धीतानं, धीतरानं
७	धीतरि,	धीतूसु,
	धीतुयः	धीतरेसु.
	धीतुयं	

जुओ पालिप्र० पृ० ११०–१११

३ जुओ पृ० २०४ टि ५.

४ 'गो' शब्दनां प्राकृत रूपांतरोमां 'गावी' 'गोणी' 'गोता' अने 'गोपोतलिका'ने पण गणावेलां छेः–महाभाष्य पृ० ५०

रूपो बराबर 'धेणु'नी जेवां थाय छे अने 'गोणी' 'गाई'नां पण शौरसेनी वगेरेनां बधां रूपो बराबर 'नई'नी जेवां बने छे; जेमके,

गउ (गो)

प०—	गऊ	गऊउ, गऊओ, गऊ.
बी०—	गउं	गऊउ, गऊओ, गऊ.
त०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊहि, गऊहिं, गऊहिँ
च० छ०—	गऊअ, गऊआ. गऊइ, गऊए	गऊण, गऊणं.
पं०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए गऊत्तो, गऊओ गऊउ, गऊहिंतो	गऊत्तो, गऊओ, गऊउ, गऊहिंतो, गऊसुंतो.
स०—	गऊअ, गऊआ गऊइ, गऊए	गऊसु, गऊसुं.
सं०—	गऊ, गउ,	गऊउ. गऊओ, गऊ.

---

[1]गाई, गोणी

प०—	गाई,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई.

---

१ स्त्रीलिंगी 'गो' शब्दनां पालिरूपो:

गो

१	गो, गावी	गावी. गावो, गवे
२	गाविं, गावं, गवं	गावी, गावो, गवे

	गोणी	गोणीआ, गोणीउ, गोणीओ, गोणी.
बी०—	गाई,	गाईआ, गाईउ, गाईओ, गाई.
	गोणि	गोणीआ, गोणीउ, गोणीओ, गोणी.
त०—	गाईअ, गाईआ, गाईइ, गाईए	गाईहि, गाईहिं, गाईहिँ.
	गोणीअ, गोणीआ, गोणीइ, गोणीए	गोणीहि, गोणीहिं, गोणीहिँ.

इत्यादि बधां 'नई' नी जेवां.

'नौ' शब्दनुं स्त्रीलिंगी प्राकृत अंग 'नावा' थाय छे अने एनां बधां रूपो बराबर 'माला' नी जेवां बने छे, जेमके;

प०—	नावा	नावाउ, नावाओ, नावा
बी०—	नावं	नावाउ, नावाओ, नावा
त०—	नावाअ, नावाइ, नावाए	नावाहि, नावाहिं, नावाहिँ

इत्यादि बधा 'माला' नी जेवां.

३	गाविं, गाव, गव	गोहि, गोभि.
४	गावि, गाव, गव	गवं, गोनं, गुन्न.
५	गावि, गाव, गवं	गोहि, गोभि.
६	गावि, गाव, गव	गव, गोनं, गुन्न.
७	गावि, गाव, गवं	गोसु.
८ सं०	गो!, गाव, गव	गावी, गावो, गवो.

—जुओ पालिप्र० पृ० १११ नुं टिप्पण

संख्यावाचक शब्दो

विशेषता:

१ अट्ठारस (अष्टादश) सुधीना संख्यावाचक शब्दोने षष्ठीना बहुवचनमां 'ण्ह' अने 'ण्हं' प्रत्यय लागे छे: एगाण्ह, एगाण्हं। दुण्ह, दुण्हं। उभयण्ह, उभयण्हं वगेरे.

इक, एक, एग, एअ (एक)

आ शब्दनां जे जे भाषाना पुंलिंगी रूपो 'वृक्ष'नी जेवां थाय छे, स्त्रीलिंगी रूपो 'माला'नी जेवां थाय छे अने नपुंसकलिंगी रूपो 'वन'नी जेवां थाय छे. ए प्रमाणे बधा संख्यावाचक शब्दोमां यथासंभव समजवानुं छे.

उभ, उह (उभ)

आ शब्दना रूपो बहुवचनमां ज थाय छे अने ए 'वन'नी पेठे छे.

१ संख्यावाचकशब्दनां रूपाख्यानो

(प्राकृतप्रकाशमां पृ० १०५ थी १०८ सुधीमां संख्यावाचक शब्दोना रूपो आपेला छे.)

'उभ'ना रूपाख्यो

१–२ उभो।
उभे।
३–५ उभेहिं, उभेहि,
उभेहिं, उभेहिं।
४–६ उभण्हं;
७ उभेसु, उभेसुं।

—१ प्राकृतप्रकाश पृ० १०५

प०— उभे ।
बी०— उभे, उभा ।
त०— उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ ।
च० छ०—उभण्ह, उभण्हं ।
पं०— उभत्तो, उभाओ, उभाउ,
उभाहि, उभेहि,
उभाहिंतो, उभेहिंतो,
उभासुंतो, उभेसुंतो ।
स०— उभेसु, उभेसुं ।

' उभ ' नां अपभ्रंश रूपो ' सव्व 'नां अपभ्रंश रूपोनी पेठे छे.

दु[1] (द्वि) त्रणे लिंगना रूपो

आ शब्दनां रूपो बहुवचनमां ज थाय छे.

प०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे ।
बी०— दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे ।
त०— दोहि, दोहिं, दोहिँ,
वेहि, वेहिं, वेहिँ ।

---

[1] ' द्वि 'ना पालिरूपो

१–२ दुवे,
द्वे ।
३–५ द्वीहि, द्वीभि ।
४–६ दुविन्न, द्विन्नं ।
७ द्वीसु ।

—जुओ पालिप्र० पृ० १७६

च० छ०—दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं,
वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं ।

पं०— दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिंतो, दोसुंतो,
वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो, वेसुंतो ।

स०— दोसु, दोसुं,
वेसु, वेसुं ।

'दु' नां अपभ्रंश वगेरेनां रूपो 'भाणु' नां बहुवचनांत रूपो जेवां छे.

---

[1]ति (त्रि) त्रणे लिंगनां रूपो

प०— } तिण्णि ।
बी०— }

च० छ०— तिण्ह, तिण्हं ।

शेष रूपो ते ते भाषा प्रमाणे 'इसि' नां बहुवचन रूपो जेवां छे.

---

१ पालिमां तो 'ति' (त्रि) शब्दनां रूपो पुंल्लिंगमां, स्त्रीलिंगमां अने नपुंसकलिंगमां जुदां जुदां थाय छे, जेमके.

	ति (पुंलिंग)	ति (स्त्रीलिंग)	ति (नपुंसकलिंग)
१—२	तयो ।	तिस्सो ।	तीनि
३—५	तीहि,	तीहि,	तीहि,
	तीभि ।	तीभि ।	तीभि ।
४—६	तिण्णं	(तिस्सं)	तिण्णं
	तिण्णन्नं	तिस्सन्नं ।	तिण्णन्नं ।
७	तीसु	तीसु ।	तीसु

—जुओ पालि० पृ० २८७

[illegible] (સોળ), [illegible] (સત્તર) અને અઢાર, [illegible] (અઢાર) એ બધા શબ્દોના અર્થ [illegible] છે.

[illegible] (કૃતિ)

(આ શબ્દના અર્થ બહુવચનમાં જ થાય છે)

[illegible]

[illegible] 'કૃતિ'ના બહુવચનના અર્થ [illegible]

[illegible]

[illegible] (કૃતિ)

[illegible]

બાવીસા	(દ્વાવિંશતિ)	તેત્તીસા તિત્તીસા	(ત્રયસ્ત્રિંશત્)
તેવીસા	(ત્રયોવિંશતિ)		
¹ચઉવીસા ચોવીસા	(ચતુર્વિંશતિ)	ચઉત્તીસા ચોત્તીસા	(ચતુસ્ત્રિંશત્)
પણવીસા	(પંચવિંશતિ)	પણતીસા	(પંચત્રિંશત્)
છવ્વીસા	(ષડ્વિંશતિ)	છત્તીસા	(ષટ્ત્રિંશત્)
સત્તાવીસા	(સપ્તવિંશતિ)	સત્તતીસા	(સપ્તત્રિંશત્)
અટ્ઠાવીસા અટ્ઠવીસા અટ્ટવીસા	(અષ્ટાવિંશતિ)	અટ્ઠતીસા અટ્ટતીસા	(અષ્ટાત્રિંશત્)
એગૂણતીસા	(એકોનત્રિંશત્)	એગૂણચત્તાલિસા	(એકોનચત્વારિંશત્)
તીસા	(ત્રિંશત્)	ચત્તાલિસા	(ચત્વારિંશત્)
એગતીસા એક્કતીસા એક્તીસા	(એકત્રિંશત્)	એગચત્તાલિસા ઇગચત્તાલિસા એક્કચત્તાલિસા ઇગયાલા	(એકચત્વારિંશત્)
બત્તીસા	(દ્વાત્રિંશત્)		

---

¹ પાલિભાષામાં 'ચઉવીસા' શબ્દનું પ્રથમાનું એકવચન 'ચઉવીસં' થાય છે (જુઓ પાલિપ્ર૦ પૃ૦ ૧૬૦ નિ૦ ૧૬૭) અને એ રૂપ પ્રાકૃતસાહિત્યમાં પણ વપરાએલું છે. જેમકે; "ચઉવીસં પિ જિણવરા" (ચતુર્વિંશતિસ્તવ)

આચાર્ય હેમચંદ્ર એ 'ચઉવીસં' રૂપને 'દ્વિતીયા વિભક્તિનું' સમજે છે અને ઉપર્યુક્ત વાક્યમાં 'દ્વિતીયા'નો અર્થ ઘટતો નથી પણ 'પ્રથમા'નો અર્થ ઘટે છે તેથી "ક્યાંક 'પ્રથમા'ને બદલે 'દ્વિતીયા' પણ વપરાય છે" એમ એ વાક્ય આપીને જણાવે છે.-(જુઓ પ્રા૦ વ્યા૦ ૮-૩-૧૩૭ પૃ૦ ૧૦૮)

प्राकृत	संस्कृत
बेआलिसा बेआला दुचत्तालिसा	(द्विचत्वारिंशत्)
तिचत्तालिसा तेआलिसा तेआला	(त्रिचत्वारिंशत्)
चउचत्तालिसा चोआलिसा चोआला चउआला	(चतुश्चत्वारिंशत्)
पणचत्तालिसा पणयाला	(पञ्चचत्वारिंशत्)
छचत्तालिसा छायाला	(षट्चत्वारिंशत्)
सत्तचत्तालिसा सत्तयाला	(सप्तचत्वारिंशत्)
अट्ठचत्तालिसा अडयाला	(अष्टचत्वारिंशत्)
एगूणपण्णास्सा	(एकोनपञ्चाशत्)
पण्णासा	(पञ्चाशत्)
एगपण्णासा इक्कपण्णासा एक्कपण्णासा एगावण्णा	(एकपञ्चाशत्)
बावण्णा दुपण्णासा	(द्विपञ्चाशत्)
तेवण्णा तिपण्णासा	(त्रिपञ्चाशत्)
चोवण्णा चउपण्णासा	(चतुष्पञ्चाशत्)
पणपण्णा पणपण्णासा पंचावण्णा	(पञ्चपञ्चाशत्)
छप्पण्णा छप्पण्णासा	(षट्पञ्चाशत्)
सत्तावन्ना सत्तपण्णासा	(सप्तपञ्चाशत्)
अट्ठावन्ना अडवन्ना अट्ठपण्णासा	(अष्टपञ्चाशत्)
एगूणसट्ठि	(एकोनषष्टि)
सट्ठि	(षष्टि)
एगसट्ठि इगसट्ठि	(एकषष्टि)
बासट्ठि	(द्विषष्टि)
तेसट्ठि	(त्रिषष्टि)
चउसट्ठि चोसट्ठि	(चतुष्षष्टि)
पणसट्ठि	(पञ्चषष्टि)
छासट्ठि	(षट्षष्टि)
सत्तसट्ठि	(सप्तषष्टि)
अडसट्ठि अट्ठसट्ठि	(अष्टषष्टि)
एगूणसत्तरि	(एकोनसप्तति)

सत्तरि (सप्तति)

एग'सत्तरि
इक्कसत्तरि } (एकसप्तति)

बा(बि)सत्तरि
बावत्तरि } (द्विसप्तति)

तिसत्तरि (त्रिसप्तति)

चोसत्तरि
चउसत्तरि } (चतुस्सप्तति)

पण्णसत्तरि (पञ्चसप्तति)

छसत्तरि (षट्सप्तति)

सत्तसत्तरि (सप्तसप्तति)

अट्ठसत्तरि (अष्टसप्तति)

एगूणासीइ (एकोनाऽशीति)

असीइ (अशीति)

एगासीइ (एकाशीति)

बासीइ (द्व्यशीति)

तेसीइ (त्र्यशीति)

चउरासीइ
चोरासीइ } (चतुरशीति)

पणसीइ (पञ्चाशीति)

छासीइ (षडशीति)

सत्तासीइ (सप्ताशीति)

अट्ठासीइ (अष्टाशीति)

नवासीइ (नवाशीति)

एगूणनवइ (एकोननवति)

नवइ (नवति)

एगणवइ
इगणवइ } (एकनवति)

बाणवइ (द्विनवति)

तेणवइ (त्रिनवति)

चउणवइ
चोणवइ } (चतुर्नवति)

पण्णणवइ
पञ्चणवइ } (पञ्चनवति)

छण्णवइ (षण्णवति)

सत्त(त्ता)णवइ (सप्तनवति)

अट्ठ(ट्ठा)णवइ (अष्टनवति)

ण(न)वणवइ (नवनवति)

एगूणसय (एकोनशत)

सय (शत)

दुसय (द्विशत)

तिसय (त्रिशत)

बे सयाइं—बसें— (द्विशत)

* 'सत्तरि' ने बदले 'हत्तरि' शब्द पण प्रयोगानुसार वपराय छे.

तिण्णि सयाइं–त्रणसें (त्रिशत)
चत्तारि सयाइं–चारसें (चतुश्शत)
इत्यादि.

सहस्स (सहस्र)
दह(स)सहस्स (दशसहस्र)
अयुअ(त) (अयुत)
लक्ख (लक्ष)
दस(ह)लक्ख (दशलक्ष)
पयुअ(त) (प्रयुत)
कोडि (कोटि)
कोडाकोडि (कोटाकोटि)

प्रकरण ११

कारक–विभक्त्यर्थ

जेम संस्कृतमां छ कारक छे तेम अहीं प्राकृतमां पण छे अने तेनी बधी व्यवस्था संस्कृतने अनुसारे समजी लेवानी छे. परंतु जे केटलाक खास विभक्त्यर्थो छे तेने अहीं जणावी दईए छीए:

१. प्राकृतमां केटलेक ठेकाणे द्वितीया, तृतीया, पंचमी अने सप्तमीने स्थाने पण षष्ठी [1]विभक्ति वपराय छे:–

सीमाधरस्स वंदे [सीमाधरं वन्दे]

धणस्स लद्धो [धनेन लब्धः]

चोरस्स बीहइ [चौराद् बिभेति]

[1]अंतेउरस्स रमिउं आअओ [अन्तःपुरे रन्तुमागतः]

२. कोई कोई ठेकाणे द्वितीया अने तृतीयाने बदले सप्तमी वपराय छे:–

---

१ संस्कृतमां पण षष्ठी विभक्तिनो आवो ज उपयोग थएलो छे:

मातरं स्मरति	ने बदले	मातुः स्मरति ।
अन्नं नो देहि	,,	अन्नस्य नो देहि ।
फलैस्तृप्तः	,,	फलानां तृप्तः ।
अक्षैर्दीव्यति	,,	अक्षाणां दीव्यति ।
कुशान् दर्भं वहति	,,	कुशस्य दर्भं वहति ।
मन्तुं विमार्ष्टि	,,	मन्तोः विमार्ष्टि ।

—जुओ "षष्ठी शेषे" (पाणि० २–३–५०) तथा "शेषे" (है० सं० २–२–८१)

२. जुओ पद्मनाभसूरिकृत "क्वचिद्द्वितीयादेः" ३–३–१३८ पृ० ११२ ।

¹नयरे न जामि [नगरं न यामि]

²तेसु अलंकिआ पुहवी [तैरलंकृता पृथ्वी]

३. क्यांय क्याय पंचमीने बदले तृतीया अने सप्तमी वपराय छे:—

³चोरेण बीहइ [चौराद् बिभेति]

⁴अंतेउरे रमिउं आगओ राया [अन्तःपुराद् रन्त्वा आगतो राजा]

४. कोई ठेकाणे तो ⁵सप्तमीने स्थाने द्वितीया पण वपराय छे:—

विज्जुज्जोयं भरइ रत्तिं [विद्युदुद्योते स्मरति रात्रिम्]

---

१ संस्कृतनी रीते पण आ वाक्यमां 'नगर'ने 'कर्म' कही शकाय अने 'आधार' पण कही शकाय एटले 'नगरे न यामि' अने 'नगरं न यामि' ए बन्ने वाक्यो शिष्टसंमत छे.

२ आ वाक्यमां जो 'तेषु सत्सु' ('तेओनी विद्यमानतामां') एवो अर्थ विवक्षित होय तो संस्कृतमां पण 'तैः अलंकृता पृथ्वी' आ वाक्यने बदले 'तेषु अलंकृता पृथ्वी' आवुं सप्तमीवाळुं वाक्य थई शके छे.

३–४ अहीं आ 'चोर'ने 'भयना कारण' तरीके अने 'अंतःपुर'ने 'गमनारना आधार' तरीके कहेवानो आशय होय तो संस्कृतमां पण 'चौरेषु बिभेति' तथा 'अन्तःपुरे रन्त्वा' वगेरे प्रयोग थई शके छे

५ आर्षप्राकृतमां ठेकठेकाणे आ 'तेण कालेणं तेणं समएणं' प्रयोग वपराएलो छे, एनो अर्थ 'ते काळे अने ते समये' थाय छे, तेथी आ अने आवा बीजा प्रयोगोमां 'सप्तमी' विभक्तिने बदले 'तृतीया' विभक्ति वपराएली छे एम आचार्य हेमचन्द्र जणावे छे. —(जुओ हे० प्रा० व्या० ८-३-१३७ पृ० १०८) ज्यां आ प्रयोगनुं

विवरण करतां नवांगी टीकाकार आचार्य अभयदेव ए प्रयोगमां आवेला 'णं'ने वाक्यालंकाररूपे मानी ए प्रयोगने 'सप्तमी' विभक्तिवाळो पण जणावे छे. आचार्य अभयदेवनी दृष्टिए ए पदोनो पदच्छेद आ प्रमाणे छेः 'ते णं काले णं, ते णं समए णं'—" 'ते' इति प्राकृतशैलीवशात् 'तस्मिन्' × × × 'णं' शब्दोऽन्यत्रापि वाक्यालंकारार्थः, × × काले × अवसर्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे, × × × समये कालस्यैव विशिष्टे भागे"—जुओ भगवती सूत्र श० पृ० १८ टीका, ज्ञाता० सूत्र टीका पृ० १ वगेरे, उपासकदशासूत्र टीका पृ० १ वगेरे.

ए प्रयोगनुं विवरण करतां आचार्य मलयगिरि पण आचार्य अभयदेवनी पेठे पूर्व प्रमाणे जणावे छेः—जुओ सूर्यप्रज्ञप्ति टीका पृ० १ वगेरे.

आचार्य अभयदेव ए पदोनुं संस्कृत 'तेन कालेन तेन समयेन' पण करे छे अने आ पक्षमां तेओ आ वाक्यना तृतीयानो अर्थ बतावे छे पण 'तृतीया'ने स्थाने 'सप्तमी' होवानी सूचना करता नथी — "अथवा तृतीयैवेयम्, ततः 'तेन कालेन हेतुभूतेन, तेन समयेन हेतुभूतेनेव' "—जुओ भगवतीसूत्र श० पृ० १८ टीका.

प्रकरण १२

आख्यात

संस्कृतभाषामां धातुओना अनेक प्रकार छे, जेमके, पेला गणना, बीजा गणना, चोथा गणना, छट्ठा गणना वगेरे. तेमां पण प्रत्येक गणमां धातुओना त्रण पेटा प्रकार छेः परस्मैपदी, आत्मनेपदी अने उभयपदी. आम होवाथी संस्कृतमां धातुनां रूपाख्यानो अनेक प्रकारनां थाय छे. कारण के, तेमां प्रत्येक गणनी निशानीओ (विकरण प्रत्ययो) जुदी जुदी छे, प्रक्रियाओ जुदी जुदी छे, आत्मनेपद तथा परस्मैपदना प्रत्ययो पण जुदा जुदा छे.

पालिमां केटलेक अंशे संस्कृतनी जेवुं छे पण तेमां वैदिक संस्कृतनी पेठे आत्मनेपद अने परस्मैपदनो नियम अचोकस छे. प्राकृतमां तो आत्मनेपद अने परस्मैपदनो कोई नियम ज नथी. जो के प्राकृतमां वर्तमानकाळना केटलाक प्रत्ययो संस्कृतना आत्मनेपदी प्रत्ययो साथे मळता आवे छे पण ए प्रत्ययो दरेक धातुने लगाडी शकाय छे.

पालिव्याकरणमां[1] आपेला नियमो उपरथी समजी शकाय छे के, संस्कृतनी पेठे गणभेदने लीधे पालिमां ते ते धातुनां रूपो जुदां जुदां बने छे पण प्राकृत व्याकरणना नियमोमां तेम नथी. प्राकृत-व्याकरणमां तो पेला गणना के चोथा गणना धातुनी एक सरखी प्रक्रिया छे [illegible] ते ते धातुना रूपो उपरथी [illegible] आपण संस्कृतमां दशगणना ए धातुना गण नक्की करी शकीए.[2]

[1] [illegible]

[2] [illegible] ([illegible])

[illegible]

[illegible]

एकंदर रीते संस्कृत करतां पालिनी आख्यानप्रक्रिया सरळ छे अने प्राकृतमां तो ए सविशेष सरळ छे.

विभक्तिओ

वर्तमाना, सप्तमी, पंचमी, ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, आशीः (आशिरर्थ), श्वस्तनी, भविष्यन्ती अने क्रियातिपत्ति एम [1] दस विभक्तिओ संस्कृतमां छे, पालिमां आशिरर्थ अने श्वस्तनीनो प्रयोग नथी अने प्राकृतमां पंचमी अने सप्तमी एक सरखी छे, ह्यस्तनी, अद्यतनी अने परोक्षा एक सरखी छे, श्वस्तनी अने भविष्यन्ती एक सरखी छे एटले वर्तमाना, आज्ञार्थ–विध्यर्थ, भूतकाळ, भविष्यत्काळ अने क्रियातिपत्ति ए पांच ज विभक्तिओ क्रियापदने लगती छे. आख्यातने लगतो विभक्तिप्रयोग संस्कृतमां जे झीणवटथी करवामां आवे छे तेवी झीणवट पालि के प्राकृतमां नथी. पालिमां ए दरेक विभक्तिना प्रत्ययो जुदा जुदा छे पण प्राकृतमां तो आगळ जणाव्या प्रमाणे ए पांच विभक्तिओमां ज संस्कृतनी बधी विभक्तिओ समाएली छे.

आ चालु प्रकरणमां आख्यात विषे अने केटलांक कृदंत विषे समजाववानुं छे पण धातुओथी बनतां दरेक नामो विषे कांई कहेवानुं नथी माटे ज धातुना उपयोगनो विभाग करतां अहीं जणाववामां आवे छे के, साहित्यमां धातुओनो उपयोग खास करीने बे प्रकारे थएलो छे: क्रियापदरूपे अने कृदंतरूपे.

---

१ पाणिनिना संकेत प्रमाणे ए दस विभक्तिओनां नाम आ प्रमाणे छे: लट्, विधिलिङ्, लोट्, लङ्, लिट्, आशीर्लिङ्, लुट्, लृट्, लृङ्, अने

क्रियापदरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननुं नाम 'आख्यात' छे अने कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानने 'नाम' कहेवामां आवे छे.

आख्यातरूपे वपराता धातुना रूपाख्याननी विविधता आ प्रमाणे छे:

कर्तरिरूप, कर्मणिरूप, भावेरूप (सद्यभेद), प्रेरककर्तरिरूप, प्रेरककर्मणिरूप, प्रेरकभावेरूप (प्रेरक सद्यभेद) इत्यादि ।

कृदंतरूपे वपराता धातुना रूपाख्यानना अनेक प्रकार आ रीते छे:

कर्तरि } वर्तमानकृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदत, कर्तृसूचकरूप, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदंत ।

कर्मणि अने भावे-सद्यभेद } वर्तमानकृदंत, भविष्यत्कृदंत, प्रेरकवर्तमानकृदंत, प्रेरकभविष्यत्कृदत, भूतकृदंत, विध्यर्थकृदंत, प्रेरकभूतकृदंत, प्रेरकविध्यर्थकृदंत ।

भावेरूप } हेत्वर्थकृदंत अने संबंधकभूतकृदंत ।

आ प्रकरणमा अहीं जणावेला क्रम प्रमाणे रूपाख्यानोनी समजूती आपवानी छे.

कर्तरिरूप

प्राकृतमां धातुओनी बे जात छे: व्यंजनांत धातु अने स्वरांत धातु

१ व्यंजनांत धातुना छेवटना व्यंजनमा 'अ'कार उमेराया पछी ज तेनां रूपाख्यानो थाय छे अने ए उमेरातो 'अ'कार विकरणरूप लेखाय छे:

मग् + अ–मग–मगइ (मगति)

कह् + अ–कह–कहइ (कथयति)

मम् + अ–ममइ (शाम्यति)

हस् + अ–हस–हसइ (हसति)

आव् + अ–आव–आवइ (आप्नोति)

सिंच् + अ–सिंच–सिंचइ (सिञ्चति)

रुन्ध् + अ–रुन्ध–रुन्धइ (रुणद्धि)

मुस्+अ–मुस–मुसइ (मुष्णाति)

तण् + अ–तण–तणइ (तनोति)

२ अकारांत सिवाय बाकीना स्वरांत धातुओने पण विकरण 'अ' विकल्पे लागे छे:

पा + अ–पाअ–पाअइ, पाइ (पाति)

जा + अ–जाअ–जाअइ, जाइ (याति)

धा + अ–धाअ–धाअइ, धाइ (धयति, धावति, दधाति)

झा + अ–झाअ–झाअइ, झाइ (ध्यायति)

जम्मा + अ–जम्माअ–जम्माइ (जृम्भते)

वाअ + अ–वाअ–वाअइ, वाइ (वाति)

मिला + अ–मिलाअ–मिलाअइ, मिलाइ–(म्लायति)

विक्की+विक्के + विक्केअ–विक्केअइ, विक्केइ (विक्रीणाति)

हो + अ–होअ–होअइ, होइ (भवति)

हो + अ–होअ–होइऊण, होऊण (भूत्वा)

३ उवर्णांत धातुना अंत्य उवर्णनो 'अव्' थाय छे:

ण्हु–ण्हव्+अ–ण्हव–ण्हवइ (ह्नुते)

निण्हवइ (निह्नुते)

हु–हव्– हव–हवइ (जुहोति)
निहवइ (निजुहोति)
चु–चव्–चव–चवइ (च्यवते)
रु–रव्–रव–रवइ (रौति)
कु–कव्–कव–कवइ (कौति)
सू–सव्–सव–सवइ (सूते)
पसवइ (प्रसूते)

४ ऋवर्णांत धातुना अंत्य ऋवर्णनो 'अर्' थाय छे:
कृ–कर्–कर–करइ (करोति)
धृ–धर्–धर–धरइ (धरति)
मृ–मर्–मर–मरइ (म्रियते)
वृ–वर्–वर–वरइ (वृणोति, वृणुते)
सृ–सर्–सर–सरइ (सरति)
हृ–हर्–हर–हरइ (हरति)
तृ–तर्–तर–तरइ (तरति)
जृ–जर्–जर–जरइ (जीर्यति)

५ उपांत्यमां ऋवर्णवाळा धातुना ऋवर्णनो 'अरि' थाय छे:
कृष्–करिस्–करिस–करिसइ (कर्षति)
मृष्–मरिस्–मरिसइ (मृष्यते)
वृष्–वरिस्–वरिसइ (वर्षति)
हृष्–हरिस्–हरिसइ (हृष्यति)

६ धातुना 'इवर्ण' अने 'उवर्ण'नो अनुक्रमे 'ए' अने 'ओ' थाय छे:
नी–नेइ (नयति)
नेंति (नयन्ति)

उड्डी–उड्डेइ (उड्डयते)

उड्डेंति (उड्डयन्ते)

जि–जेऊण (जित्वा)

नी–नेऊण (नीत्वा)

७ केटलाक धातुना उपांत्य स्वरनो दीर्घ थाय छे:

रुप्–रूस्–रूस–रूसइ (रुप्यति)

तुप्–तूस्–तूस–तूसइ (तुष्यति)

शुप्–सूस्–सूस–सूसइ (शुष्यति)

दुप्–दूस्–दूस–दूसइ (दुष्यति)

पुप्–पूस्–पूस–पूसइ (पुष्यति)

सीसइ (शिष्यते) इत्यादि।

८ धातुना नियत स्वरने स्थाने प्रयोगानुसारे बीजो स्वर प[illegible]
थाय छे:

दि०–हवइ–हिवइ (भवति)

चिणइ–चुणइ (चिनोति)

सद्दहणं–सद्दहाणं (श्रद्धानम्)

धावइ–धुवइ (धावति)

रुवइ–रोवइ (रोदिति) इत्यादि।

दि०–दा–दे–देइ (ददाति, दाति, [illegible])

ला–ले–लेइ (लाति)

विहा–विहे–विहेइ (विदधाति, [illegible])

ब्रू–बे–बेमि (ब्रवीमि) इत्यादि।

९ केटलाक धातुओने अंत्य व्यंजन प्रयोगानुसार बेवडो थाय छे:

दि०–फुट्टइ, फुडइ (स्फुटति)

चलइ, चल्लइ (चलति)

पमीलइ पमिल्लइ (प्रमीलति)
निमीलइ, निमिल्लइ (निमीलति)
संमीलइ, संमिल्लइ, (संमीलति)
उम्मीलइ, उम्मिल्लइ (उन्मीलति) इत्यादि।

नि०—जिम्मइ (जेमति) परिअट्टइ (पर्यटति)
सक्कइ (शक्नोति) पलोट्टइ (प्रलोटति)
लग्गइ (लगति) तुट्टइ (त्रुटति)
मग्गइ (मृगयते)। नट्टइ (नटति)
नस्सइ (नश्यति) सिव्वइ (सीव्यति)
कुप्पइ (कुप्यति) इत्यादि।

१० केटलाक धातुओना (प्रायः संस्कृतनो विकरण उमेराया पछी 'य' छेडावाळा धातुओना) अंत्य व्यंजननो प्रयोगानुसारे 'ज्ज' थाय छे:

संपज्जइ (संपद्यते) सिज्जइ (स्विद्यति)
खिज्जइ (खिद्यते) सिज्जिरी (स्वेत्री, स्वेदयित्री) इत्यादि।

११ उपरना नियमोथी तैयार थएला धातुना अंगने वर्तमानकाळमां नीचे जणावेला कर्तृबोधक प्रत्ययो लागे छे:—

---

१ जुओ पृ० ३३—द्य, य्य, र्य—ज्ज (नि० २७)

२ पालिमां 'वर्तमान' ना प्रत्ययो आ प्रमाणे छे:

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१	मि	म	ए	म्हे
२	सि	थ	से	व्हे
३	ति	अंति	ते	अंते

—जुओ पालिप्र० पृ० २०२ नि० ११.

	एकव०—	बहुव०—
१ पुरुष	[1]मि,	मो, मु, म.
२ पुरुष	सि, से,[2]	इत्था, ह.
३ पुरुष	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे[4].

सर्वपुरुष—सर्ववचन—ज्ज, ज्जा.

१ 'मि' प्रत्यय पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' थाय छे.

२ 'मो', 'मु' अने 'म' प्रत्यय पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'आ' अने 'इ' थाय छे.

३ उपर जणावेला बधा प्रत्ययो पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो विकल्पे 'ए' थाय छे.

[नामनां रूपोमां पालिमां अने प्राकृतमां सविशेष समानता छे तेथी नामना प्रकरणमां स्थळे स्थळे समानता बतावबा पालिनां रूपो सविस्तर मूकेलां छे पण धातुनां रूपोमां तेम नथी, तेथी आ प्रकरणमां ज्यां ज्यां जेटली समानता छे तेटलो उल्लेख करवामां आवशे पण धातुनां पालिरूपोनी वीगतथी नोंध नहि करवामां आवे]

१ केटलेक ठेकाणे 'मि' प्रत्ययने बदले 'म्' प्रत्यय पण वपराएलो छेः—मरं, मरामि (म्रिये)। सक्कं, सक्कामि (शक्नोमि)।

२ 'से' अने 'ए' तथा शौरसेनीनो 'दे' अने पैशाचीनो 'ते' प्रत्यय, धातुना अकारांत अंगनेज लगाडवाना छे अर्थात् अकारांत सिवायना धातुना अंगने ए बधे प्रत्ययो लागता नथीः—

पा + सि—पासि। पा + इ—पाइ (पासे, अने पाए, रूप थाय नहि).

३ कोई ठेकाणे आ 'इत्था' प्रत्यय त्रीजा पुरुषना एकवचनमां पण वपराएलो छेः—रोइत्था, रोयइ, रोयए—(रोवते).

४ आ 'इरे' प्रत्यय क्वचित् क्वचित् त्रीजा पुरुषना एकवचनमां पण वपराएलो छे. जेमके—सूसइ, सूसइरे—(शुष्यति).

४ 'ज्ज' अने 'ज्जा' प्रत्यय पर रहेतां तो धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'ए' थाय छे.

शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशभाषामां वर्तमानकाळने लगती विशेषतावाळी प्रक्रिया आ प्रमाणे छे:—

शौरसेनी—मागधी

१ पु०	मि	मो, मु, म ।
२ पु०	'सि, से'	इत्था, ध, ह ।
३ पु०	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे ।

पैशाची

१ पु०	शौरसेनी प्रमाणे
२ पु०	"
३ पु० ति, ते	शौरसेनी प्रमाणे

अपभ्रंश

१ पु०	उं, मि	हु, मो, मु, म ।
२ पु०	हि, सि, से	हु, ह, ध, इत्था ।
३ पु०	दि, दे, इ ए	हिं, न्ति, न्ते, इरे ।

प्राकृतमां वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागतां धातुना अंत्य अ मां जे फेरफार थवानुं बताव्युं छे ते बधुं शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययो लागतां पण समजी लेवानुं छे.

धातुने लागता कोई पण प्रत्ययो लागता पहेलां पण प्राकृत धातुने लगती जे जे प्रक्रिया (विकरण जोडेनी प्रक्रिया)

१ जुओ पृ० २४७ ५-६.

२ जुओ पृ० २४६, ३ नियम.

जणावी छे ते बधी शौरसेनी, पैशाची, मागधी अने अपभ्रंशमां समजी लेवानी छे.

व्यंजनांत धातुनां रूपाख्यानो

हस्

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— [1]मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—	हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा ।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसउं, हसेउं, हसमि, हसामि, हसेमि, हसेज्ज, हसेज्जा ।
२ पुरुष—	हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा ।	प्राकृत प्रमाणे	प्राकृत प्रमाणे	हसहि, हसेहि, हससि, हसेसि, हससे, हसेसे, हसेज्ज, हसेज्जा ।
३ पुरुष—	हसइ, हसेइ,	हसदि, हसेदि,	हसति, हसेति,	हसदि, हसेदि,

१ जुओ ट-न पृ० २७ नि० (१)—हसमि वगेरे.

हसए,	हसेदे,	हसने,	हसदे,
हसेए,	हसेदे,	हसेते,	हसेदे,
हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसेज्ज,	हसए,
हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेज्जा।	हसेए,
			हसए,
			हसेए,
			हसेज्ज,
			हसेज्जा।

बहुवचन

प्राकृतरू०–	शौरसेनीरू०– मागधीरू०–	पैशाचीरू०–	अपभ्रंशरू०–
१ पुरुष–हसमो,	प्राकृत	प्राकृत	हसहुं,
हसामो,	रूपो	प्रमाणे	हसेहुं;
हसिमो,	प्रमाणे		हसमो,
हसेमो;			हसामो,
हसमु,			हसिमो,
हसामु,			हसेमो,
हसिमु,			हसमु,
हसेमु,			हसामु,
हसम,			हसिमु,
हसाम,			हसेमु;
हसिम,			हसम,
हसेम,			हसाम,

हसेज्ज,
हसेज्जा।

२ पुरुष–हसइत्था, हसइत्था,
हसित्था, हसित्था,
हसेइत्था, हसेत्था,
हसह, हसध,
हसेह, हसेध,
हसेज्ज, हसह,
हसेज्जा। हसेह,
हसेज्ज,
हसेज्जा।

शौरसेनी प्रमाणे

हसिम,
हसेम;
हसेज्ज,
हसेज्जा।
हसइत्था,
हसित्था,
हसेत्था,
हसध,
हसेध,
हसह,
हसेह,
हसहु,
हसेहु,
हसेज्ज,
हसेज्जा।

३ पुरुष–हसन्ति,
हसेंति,
हसिंति,
हसंते,

प्राकृत रूपो प्रमाणे

शौरसेनी रूपो प्रमाणे

हसहिं,
हसेहिं,
हसंति,
हसेंति,

---

१ जुओ पृ० १६ स्वरलोप नि० ६–हस + इत्था=हसित्था।

२ प्राकृतनां हसंति, हसंते वगेरे रूपो उपरथी शौरसेनीमां हसंदि, वगेरे रूपो पण प्रायः यथासंभव थइ शके छे–जुओ नि० (१) न्त=न्द।

३ जुओ पृ० ४ नि० १–हसंति + हसिंति।

होएइत्था	होएइत्था		होएज्जेह, होएज्जेध
होएज्जइत्था	होएज्जइत्था		होएज्जाह, होएज्जाध
होएज्जेइत्था	होएज्जेइत्था		होज्जह, होज्जध
होएज्जाइत्था	होएज्जाइत्था		होज्जेह, होज्जेध
होज्जइत्था	होज्जेइत्था		होज्जाह, होज्जाध
होज्जेइत्था	होज्जइत्था		होह, होध
होज्जाइत्था	होज्जाइत्था		होअइत्था
होइत्था (होत्था[1])	होइत्था		होएइत्था
होज्ज	होज्ज, होज्जा		होएज्जइत्था
होज्जा			होएज्जेइत्था
			होएज्जाइत्था
			होज्जेइत्था
			होज्जइत्था
			होज्जाइत्था
			होइत्था
३ पुरुष–होअंति	[2]प्राकृत	शौरसेनी	होअहिं
होएंति	रूपो	प्रमाणे	होएहिं
होअंते	प्रमाणे		होएज्जहिं
होएंते			होएज्जेहिं
होअइरे			होएज्जाहिं
होएइरे			होज्जहिं
होएज्जंति			होज्जेहिं

१ आ प्रयोग [illegible] 'भूत' अर्थमां वपरायो छे— [illegible]

२ [illegible]

होएज्जेंति
होएज्जंते
होएज्जेंते
होएज्जइरे
होएज्जेइरे
होएज्जांति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुंति)
होंते (हुंते)
होइरे
होज्जंति, होज्जेंति
होज्जेंते, होज्जंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जांति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा ।

होज्जाहि
होहि
होअंति, होएंति
होअंते, होएंते
होअइरे, होएइरे
होएज्जंति, होएज्जेंति
होएज्जंते, होएज्जेंते
होएज्जइरे, होएज्जेइरे
होएज्जांति
होएज्जाते
होएज्जाइरे
होंति (हुंति)
होंते (हुंते)
होइरे
होज्जंति, होज्जेंति
होज्जंते, होज्जेंते
होज्जइरे, होज्जेइरे
होज्जांति
होज्जाते
होज्जाइरे
होज्ज
होज्जा

गने दरेक स्वरांत धातुनी (ठा, पा, नी, जा, झू वगेरेनी)
रूपनी बधी प्रक्रिया 'हो'नी पेठे समजवानी छे.

भूतकाळ

(स्वरांत अने व्यंजनांत धातुने लागता प्रत्ययो)

१ संस्कृतमां भूतकाळना त्रण प्रकार छे, जेमके–ह्यस्तनभूत, अद्यतनभूत अने परोक्षभूत. ए त्रणे काळना प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण संस्कृतमां तद्दन जूदां जूदां छे. परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंश भाषामां तेम नथी. तेमा तो ते त्रणे काल माटे एक सरखा ज प्रत्ययो छे. एटलुं ज नहि पण ते त्रणे काळना, त्रणे पुरुषोना अने त्रणे वचनोना पण एक सरखा ज प्रत्ययो छे अर्थात् भूतकाळनी प्रक्रिया के रूपमां प्राकृत, शौरसेनी वगेरे भाषामां क्यांय कशो भेद जणातो नथी.

प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां भूतकाळना ए प्रत्ययो आ प्रमाणे छे:–

१ पु०
२ पु० } ईअ[1] (व्यंजनांत धातुने लागतो प्रत्यय)
३ पु०

,, } सी[2], ही, हीअ[3] (स्वरांत धातुने लागता प्रत्ययो)

---

१ कोईनो मत एवो छे के, वर्तमानकाळनी पेठे भूतकाळमां पण 'ज्ज' अने 'ज्जा' प्रत्यय वपराय छेः–होज्ज, होज्जा–(अभूत्)

२ पालिमां त्रीजा पुरुषना एकवचनमां 'ई' अने 'इ' एम ब परस्मैपदी प्रत्ययो छे अने ए, प्राकृतना 'ईअ' प्रत्यय साथे मळता आवे छे. पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७६

३ पालिमां बीजा पुरुषना अने त्रीजा पुरुषना एकवचनमां परस्मैपदी 'सि' प्रत्यय वपराएलो छे अने ए, प्राकृतना 'सी' प्रत्यय साथे मळतो आवे छे. जेम प्राकृतमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो 'सी' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे तेम पालिमां त्रणे पुरुषमां एक सरखो 'सि' प्रत्यय स्वरांत धातुने लगाडवामां आवे छे. मात्र पालिनो ए 'सि' प्रत्यय प्रथम पुरुषना एकवचनमां अनुस्वारवाळो (सिं) वपराय छे एटलो ज भेद छे पालिप्र० २१८ नि० १७९

व्यंजनांत धातु–हस + ईअ–हसीअ।

कर + ईअ–करीअ।

भण + ईअ–भणीअ।

ए रीते व्यंजनांत धातुनां भूतकाळनां रूपो साधवानां छे.

स्वरांत धातु–हो + सी–होसी होअसी	हो + ही–होही होअही	हो + हीअ–होहीअ होअहीअ
पा + सी–पासी पाअसी	पा + ही–पाही पाअही	पा + हीअ–पाहीअ पाअहीअ
ठा + सी–ठासी ठाअसी	ठा + ही–ठाही ठाअही	ठा + हीअ–ठाहीअ ठाअहीअ
ने + सी–नेसी नेअसी	ने + ही–नेही नेअही	ने + हीअ–नेहीअ नेअहीअ

लासी, लाही, लाहीअ, लाअसी, लाअही, लाअहीअ।

उड्ड + सी–उड्डसी, उड्डअसी, उड्डही, उड्डअही, उड्डहीअ, उड्डअहीअ।

ए रीते स्वरांत धातुनां भूतकाळनां रूपो साधवानां छे.

[उपर जणावेला भूतकाळना प्रत्ययो करतां केटलाक जूदा प्रत्ययो पण आर्षग्रंथोमां वपराएला छे, आर्षरूपोमां विशेष करीने

पालिरूपो

एकव०

१ अहोसि

त्था, इत्थ, इत्था, इंसु अने अंसु; ए चार प्रत्ययो वपराएला छे. तेमां 'त्था' अने 'इत्था,' घणे ठेकाणे एकवचनमां वपराया छे अने 'इंसु' तथा 'असु' घणे ठेकाणे बहुवचनमां वपराया छे. ए जातनां केटलांएक आर्षरूपो जोवाथी एवुं अनुमान बांधी शकाय छे के, त्रीजा पुरुषना एकवचनमा 'त्था' अने 'इत्था' वपराया छे अने बहुवचनमा 'इंसु' अने 'अंसु' वपराया छे. जेमकेः—

[1]हो + त्था–होत्था (अभवत्, अभूत्, बभूव)

मुञ + इत्था–मुञ्जित्था (मुक्तवान्)

---

१ आ 'होत्था' 'पहारित्थ' 'विहरित्था' वगेरे एकवचनी रूपोनी अने 'करिंसु' 'पुच्छिंसु' 'आहंसु' वगेरे बहुवचनी रूपोनी साधना पालिव्याकरण द्वारा शोधी शकाय छे. पालिभाषामां त्रीजा पुरुषना एकवचनमा आत्मनेपदी 'इत्थ' अने बहुवचनमा परस्मैपदी 'इंसु,' 'इंसुं,' अने 'अंसु' प्रत्ययो वपराएला छे. उपर्युक्त आर्षरूपोमां वपराएलो 'इत्था' पालिना ए 'इत्थ'नुं रूपांतर जणाय छे, 'पहारित्थ' रूपमां तो पालिनी जेवोने तेवो 'इत्थ' प्रत्यय ज वपराएलो छे अने पालिना 'इंसु' अने 'अंसु' ए बे प्रत्ययो एमने एम ए आर्षरूपोमा वपराया छे. जेम संस्कृतमा ह्यस्तनी, अद्यतनी अने क्रियातिपत्तिनां रूपाख्यानोमा धातुनी पूर्वे 'अ' उमेराय छे तेम पालिमां छे पण प्राकृतमा नथी.

पालिरूपो मू

एकव० ३ अभवित्थ ('इत्थ' प्रत्ययवाळुं)

बहुव० ३ अगमिंसु, अगमसु ('इंसु' अने 'अंसु' प्रत्ययवाळुं)

—जुओ पालिप्र० पृ० २१७ नि० १७६–१७७ तथा पृ० ३२० 'गम'नां रूपो अने टिप्पण.

गै + इत्था—गैइत्था (अगासिष्ट)

विहर् + इत्था—विहरित्था (विहृतवान्)

सेव् + इत्था—सेवित्था (सेवितवान्)

पहार् + इत्थ—पहारेत्थ (प्रधारितवान्)

गम्—गच्छ + इंसु—गच्छिंसु (अगच्छन्, अगमन्, जग्मुः)

प्रच्छ—पुच्छ + इंसु—पुच्छिंसु (पृष्टवन्तः)

कृ—कर + इंसु—करिंसु (अकुर्वन्, अकार्षुः, चक्रुः)

नृत्—नच्च + इंसु—नच्चिंसु (नृत्तवन्तः)

ब्रू—आह + अंसु—आहंसु (आहुः)

संस्कृतमां भूतकाळनां जे रूपाख्यानो तैयार थाय छे, ते उप-रथी सीधी रीते पण वर्णविकारना नियमो द्वारा प्राकृतरूपाख्यानो बनावी शकाय छे. जेमके:—

सं०— अब्रवीत्—	अब्बवी (प्रा०)	
अकार्षीत्—	अकासी (,,)	
अभूत्—	अहू (,,)	
अवोचत्—	अवोच (,,)	
अद्राक्षुः—	अदक्खु (,,)	
अकार्षम्—	अकरिस्सं (,,)	इत्यादि.

प्राचीन प्राकृतमां—आर्षप्रयोगोमां—आवां रूपाख्यानो घणां वपराएलां छे.

---

१ श्रीहेमचंद्रे पोताना प्राकृत-व्याकरणमां आ आर्षरूपो माटे कोई भातनो उल्लेख कर्यो जणातो नथी.

भविष्यत्काळ

संस्कृतमां भविष्यत्काळना त्रण प्रकार छे, जेमके–श्वस्तन-भविष्य, अद्यतनभविष्य अने परोक्षभविष्य (क्रियातिपत्ति). ए त्रणे भविष्यना पुरुषबोधक प्रत्ययो अने प्रक्रिया पण जूदां जूदां छे. परंतु प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची के अपभ्रंशमां तेम नथी–तेमां तो मात्र परोक्षभविष्यना ज प्रत्ययो अने प्रक्रिया नोखां नोखां छे अने श्वस्तन तथा अद्यतन भविष्यनी प्रक्रिया, प्रत्ययो तो तद्दन सरखां छे.

प्राकृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

	एकवचन	बहुवचन
१ पु०	स्सं, स्सामि, हामि, हिमि[1]	स्सामो, हामो, हिमो, स्सामु, हामु, हिमु; स्साम, हाम, हिम, हिस्सा, हित्था

१ भविष्यत्काळना उपर जणावेला प्रत्ययो धातुमात्रने लागे छे त्यारे पालिमां तो एवा प्रत्ययो मात्र 'भू' धातुनेज लागेला छेः–

भू पालिरूपो (भविष्यत्काळ)

१	होहामि, होहिस्सामि	होहाम, होहिस्साम.
२	होहिसि, होहिस्ససि	होहिथ, होहिस्सथ.
३	होहिति, होहिस्सति	होहिंति, होहिस्संति. वगेरे

जुओ पालिप्र० पृ० २०६ 'होहिति' वगेरे रूपो.

२ पु० हिसि, हिसे[1]   हित्था, हिह
३ पु० हिइ, हिए   हिंति, हिंते, हिइरे

सर्वपुरुष }
सर्ववचन } ज्ज, ज्जा

शौरसेनी अने मागधीना भविष्यत्काळना प्रत्ययोः

शौरसेनीना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमां 'स्सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. ए उपरांत पहेला पुरुषना एकवचनमां एक 'स्सं' प्रत्यय जुदो पण छे. जेमके;

१ पु० स्सं, स्सिमि[2]   स्सिमो, स्सिमु, स्सिम।
२ पु० स्सिसि, स्सिसे   स्सिह, स्सिध, स्सित्था।
३ पु० स्सिदि, स्सिदे   स्सिंति, स्सिंते, स्सिइरे।

---

१ प्राकृत, शौरसेनी वगेरेना 'से' 'द' तथा 'दे' प्रत्ययो माटे जुओ पृ० २४०, ३ टिप्पण

२ संस्कृतना भविष्यत्काळना प्रत्ययो अने पालिना भविष्यत्काळना प्रत्ययो एक सरखा छे, मात्र संस्कृतना 'स्य' ने बदले पालिमां 'स्स' वपराय छेः

परस्मैपद	१ स्सामि	स्साम
	२ स्ससि	स्सथ
	३ स्सति	स्सन्ति
आत्मनेपद	१ स्सं	स्सामहे
	२ स्ससे	स्सव्हे
	३ स्सते	स्सन्ते

शौरसेनीना [illegible] प्रत्ययो साथे पालिना प्र०
सरखा जेवा छेः—

जुओ पालिप्र० २०४ नि० ११०

पैशाचीना भविष्यत्कालना प्रत्ययोः

१ पु०	शौरसेनी प्रमाणे	
२ पु०	,,	
३ पु०	एय्य	शौरसेनी प्रमाणे.

अपभ्रंशना भविष्यत्कालना प्रत्ययोः

अपभ्रंशना वर्तमानकाळना प्रत्ययोनी आदिमां 'स' अने 'सि' उमेरवाथी ते बधा प्रत्ययो भविष्यत्काळना थाय छे. जेमके,

१ पु०	सउं, सिसउं, समि, सिसमि	सहुं, सिसहुं, समो, सिसमो, समु, सिसमु, सम, सिसम ।
२ पु०	सहि, सिसहि, ससि, सिससि, ससे, सिससे	सहु, सिसहु, सह, सिसह, सध, सिसध, सइत्था, सिसइत्था ।
३ पु०	सदि, सदे, सइ, सए, सिसदि, सिसदे, सिसइ, सिसए	सहिं, संति, संते, सइरे । सिसहिं, सिसंते, सिसंते, सिसइरे,

---

उपर जणावेला भविष्यत्काळना बधा प्रत्ययो पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

रूपाख्यानो—

भण

एकवचन

	प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष–	भणिस्सं,	भणिस्सं	शौरसेनी	भणिसउं,
	भणेस्सं,	भणेस्सं	प्रमाणे	भणेसउं,
	भणिस्सामि,	भणिस्सिमि		भणिस्सिउं
	भणेस्सामि,	भणेस्सिमि		भणेस्सिउं
	भणिहामि,			भणिसमि
	भणेहामि,			भणेसमि
	भणिहिमि,			भणिस्सिमि
	भणेहिमि			भणेस्सिमि
सर्व पुरुष अने सर्व वचन	भणेज्ज, भणेज्जा			
२ पुरुष–	भणिहिसि	भणिस्सिसि	शौरसेनी	भणिसहि,
	भणेहिसि	भणेस्सिसि	प्रमाणे	भणेसहि,
	भणिहिसे	भणिस्सिसे		भणिस्सिहि
	भणेहिसे	भणेस्सिसे		भणेस्सिहि
				भणिससि
				भणेससि
				भणिस्सिसि
				भणेस्सिसि
				भणिससे
				भणेससे

			मणिस्सिसे
			मणेस्सिसे
२ पुरुष—भणिहिइ	मणिस्सिदि	[1]मनेय्य	भणिसदि
मणेहिइ	मणेस्सिदि		मणेसदि
भणिहिए	भणिस्सिदे		मणिसदे
मणेहिए	मणेस्सिदे		मणेसदे
			भणिसइ
			भणेसइ
			भणिसए
			भणेसए
			मणिस्सिदि
			मणेस्सिदि
			भणिस्सिदे
			भणेस्सिदे
			मणिस्सिइ
			भणेस्सिइ
			मणिस्सिए
			मणेस्सिए

वहुवचन

प्राकृतरू०—	शौरसेनीरू०— मागधीरू०—	पैशाचीरू०—	अपभ्रंशरू०—
१ पुरुष—भणिस्सामो	मणिस्सिमो	शौरसेनी प्रमाणे	मणिसहुं
भणेस्सामो	मणेस्सिमो		मणेसहुं
मणिहामो	मणिस्सिमु		मणिस्सिहुं
भणेहामो	मणेस्सिमु		मणेस्सिहुं

१ जुओ पृ० २१ नि० (१)

भणिहिमो भणिस्सिम भणिसमो
भणेहिमो भणेस्सिम भणेसमो
भणिस्सामु भणिस्सिमो
भणेस्सामु भणेस्सिमो
भणिहामु भणिसमु
भणेहामु भणेसमु
भणिहिमु भणिस्सिमु
भणेहिमु भणेस्सिमु
भणिस्साम भणिसम
भणेस्साम भणेसम
भणिहाम भणिस्सम
भणेहाम भणेस्सिम
भणिहिम
भणेहिम
भणिहिस्सा
भणेहिस्सा
भणिहित्था
भणेहित्था

२ पुरुष–भणिहित्था भणिस्सिह शौरसेनी भणिसह
भणेहित्था भणेस्सिह प्रमाणे भणेसह
भणिहिह भणिस्सिध भणिस्सिह
भणेहिह भणेस्सिध भणेस्सिह
भणिस्सिहत्था भणिसह
भणेस्सिहत्था भणेसह
भणिस्सिह

			भणेस्सिह
			भणिसत्र
			भणेसत्र
			भणिस्सित्र
			भणेस्सित्र
			भणिसइत्था
			भणेसइत्था
			भणिस्सिइत्था
			भणेस्सिइत्था
३ पुरुष–भणिहिंति	भणिस्सिंति	शौरसेनी	भणिसहिं
भणेहिंति	भणेस्सिंति	प्रमाणे	भणेसहिं
भणिहिंते	भणिस्सिते		भणिस्सिहिं
भणेहिंते	भणेस्सिते		भणेस्सिहिं
भणिहिइरे	भणिस्सिइरे		भणिसंति
भणेहिइरे	भणेस्सिइरे		भणेसंति
			भणिस्संति
			भणेस्संति
			भणिसंते
			भणेसंते
			भणिस्संते
			भणेस्संते
			भणिसइरे
			भणेसइरे
			भणिस्सइरे
			भणेस्सइरे

['ज्ज' अने 'ज्जा' नो उपयोग प्राकृतनी पेठे शौरसेनी वगेरे बधी भाषाओनां करवानो छे]

ए रीते, व्यंजनांत धातुनां भविष्यत्कालनां बधी जातनां रूपो समजवानां छे अने प्राकृतरूपोनो (भणिहिइ वगेरेनो) उपयोग अपभ्रंशनां यथासंभव थइ शके छे.

हो (भू)

स्वरांत धातु अने पुरुषबोधक प्रत्यय—ए बेनी—वच्चे भविष्यत्कालमां पण 'ज्ज' अने 'ज्जा' विकल्पे आवे छे.

आगळ जणावेला नियमो प्रमाणे 'हो' धातुनां (बधा स्वरांत धातुनां) छ अंगो थाय छे अने ते छ अंगोने भविष्यत्कालना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी अने ए प्रत्ययनिमित्तक थतो फेरफार ए अंगोमां करवाथी स्वरांत धातुनां बधां रूपाख्यानो तैयार थाय छे.

छ अंगो: हो—हो, होअ, होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा.

पा—पा, पाअ, पाएज्ज, पाएज्जा, पाज्ज, पाज्जा.

नी—नी, नीअ, नीएज्ज, नीएज्जा, निज्ज, निज्जा.

[बधा स्वरांत धातुनां छ छ अंगो उपर्युक्त रीते करी लेवानां छे]

जे रीते 'भण्'नां बधी जातनां रूपो आगळ बताववामां आव्यां छे ते ज रीते आ छ ए अंगनां प्रत्येकनां बधी जातनां रूपो बनावी लेवानां छे. जेमके;

एकवचन

प्राकृतरू०— शौरसेनीरू०— पैशाचीरू०— अपभ्रंशरू०— मागधीरू०—

१ पुरुष—होस्सं होस्सिमि शौरसेनी होसउं
होइस्सं होइस्सिमि प्रमाणे होइसउं

होएस्सं	होएस्सिमि	होएसउं
होएज्जिस्सं	होएज्जिस्सिमि	होएज्जिसउं
होएज्जेस्सं	होएज्जेस्सिमि	होएज्जेसउं
होएज्जास्सं (ज्जस्सं)	होएज्जा (ज्ज) स्सिमि	होएज्जासउं
होज्जिस्सं	होज्जिस्सिमि	होज्जिसउं
होज्जेस्सं	होज्जेस्सिमि	होज्जेसउं
होज्जास्सं (ज्जस्सं)	होज्जा (ज्ज) स्सिमि	होज्जासउं

[प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशनो मात्र एक ज प्रत्यय लगाडीने नमूनारूपे 'हो' नां ए छए अंगनां रूपो उपर आपेलां छे, ए ज प्रकारे दरेक प्रत्यय लगाडीने 'हो'नां (स्वरांत धातुनां) बधां रूपो समजी लेवानां छे.]

ए ज रीते 'हो'नी पेठे पा, ला, दा, सिज्झा, मिला अने धा वगेरे स्वरांत धातुओनां दरेकनां छ छ अंगो करी बधां रूपाख्यानो बनावी लेवानां छे.

भविष्यत्काळना संस्कृत सिद्धरूपोने पण वर्णविकारना नियमो लगाडी प्राकृतमां वापरी शकाय छे. जेमके:—

सं०— मोक्ष्यामः=मोक्खामो (प्रा०)
भविष्यति=भविस्सइ (,,)
करिष्यति=करिस्सइ (,,)
गमिष्यति=गमिस्सइ (,,)
भविष्यामि=भविस्सामि (,,) इत्यादि.

अपभ्रंशमां केटलीक वार तो आ ज प्रकारनां वपराय छे.

જ્યારે શરતવાળાં બે વાક્યોનું એક સંયુક્ત વાક્ય બનેલું હોય અને તેમાં દેખાતી બન્ને ક્રિયાઓ કોઇ સાંકેતિક ક્રિયા જેવી જણાતી હોય ત્યારે આ 'ક્રિયાતિપત્તિ' નો પ્રયોગ થાય છે.

પ્રાકૃત, શૌરસેની, માગધી, પૈશાચી અને અપભ્રંશના પ્રત્યયોઃ

સર્વ પુરુષ, સર્વ વચન } ज्ज, ज्जा, न्त, माण

ધાતુને 'न्त,' 'माण' પ્રત્યય લગાડ્યા પછી તૈયાર થએલ અકારાંત અંગનાં તે તે ભાષા પ્રમાણે નામની પ્રથમા વિભક્તિ જેવાં જ રૂપાખ્યાનો થાય છે.

વ્યંજનાંત—भणेज्ज, भणेज्जा, भणंतो, भणमाणो } સર્વ પુરુષ, સર્વ વચન.

સ્વરાંત—होज्ज, होज्जा, होंतो, होमाणो } ,, ,,

---

[1]આજ્ઞાર્થ

૧ પુરુષ—	मु	मो

---

[1] પાલિમાં વપરાતા આજ્ઞાર્થ અને વિધ્યર્થ પ્રત્યયો આ પ્રમાણે છેઃ

	આજ્ઞાર્થ		વિધ્યર્થ	
પરસ્મૈપદ	१ मि	म.	एय्यामि (प्रा० एज्जामि) ए,	एय्याम (प्रा० एज्जाम).
	२ हि	थ.	एय्यासि (प्रा० एज्जासि) ए,	एय्याथ (प्रा० एज्जाथ).
	३ तु	अंतु.	एय्य (प्रा० एज्ज) ए,	एय्युं.
આત્મનેપદ	१ ए	आमसे.	एय्यं, ए	एय्यामहे.
	२ स्सु	व्हो.	एथो	एय्यव्हो.
	३ तं	अंतं.	एथ	एरं.

—જુઓ પાલિપ્ર૦ પૃ૦ ૧૫૧ [illegible] પૃ૦ ૧૫૦ —

२ पुरुष— सु, *इज्जसु, *इज्जहि, *इज्जे, हि   ह
(अप० इ, उ, ए)
३ पुरुष— उ (शौ० दु)   न्तु
सर्व पुरुष, सर्व वचन—ज्ज, ज्जा

उपरना बधा प्रत्ययो पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो ए[†] थाय छे.

'मु' अने 'मो' प्रत्यय पर रहेतां धातुना अकारांत अंगना अंत्य 'अ' नो 'आ' अने 'इ' विकल्पे थाय छे.

अकारांत अंगने लागेला 'हि' प्रत्ययनो लोप थाय छे.

हस—

१ पु०—	हसामु, हसिमु, हसेमु, हसमु.	हसामो, हसिमो, हसेमो, हसमो.
२ पु०—	हससु, हसेसु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस.	हसह, हसेह.
३ पु०—	हसउ, हसेउ.	हसंतु, हसेंतु.

सर्व पु० सर्व वचन—हसेज्ज, हसेज्जा.

पश्चिमा [illegible] थोडा फेरफार साथे प्राकृतमां वपराय छे: प्राकृतमां [illegible] 'वज्ज' अने 'वज्जा' नो अंश [illegible] पश्चिमा 'वज्ज' अने 'वज्जा' नुं [illegible] [illegible] छे.

* आ त्रण प्रत्ययो धातुना अकारांत अंगने ज लागे छे.

† कोई ठेकाणे तो 'उ' ने बदले 'आ' पण थई जाय छे. [illegible] 'ने बदले [illegible] ([illegible])

हो–

१ पु०–	होआमु, होइमु.	होआमो, होइमो,
	होएमु, होअमु,	होएमो, होअमो,
	[1]होएज्जामु, होएज्जिमु,	होएज्जामो, होएज्जिमो,
	होएज्जेमु, होएज्जमु,	होएज्जेमो, होएज्जमो,
	होज्जामु, होज्जिमु,	होज्जामो, होज्जिमो,
	होज्जेमु, होज्जमु,	होज्जेमो. होज्जमो,
	होमु, होज्ज, होज्जा.	होमो, होज्ज, होज्जा.

पूर्व प्रमाणे 'हो' नां छ अंगो बनावी आज्ञार्थनां बधां रूपाख्यानो 'हस'नी पेठे साधवानां छे. अने ए रीते बधा स्वरांत धातुनां (दा, ला, पा वगेरेनां) रूपाख्यानो समजवानां छे.

[शौरसेनीनो प्रत्यय मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशमां पण वापरवानो छे]

शौरसेनी, मागधी अने पैशाचीनां रूपाख्यानो

हस्

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे.
२ पु०	हससु वगेरे ,, ,,	हसह वगेरे ,, ,,
३ पु०	हसदु, हसेदु	हसंतु वगेरे ,, ,,

अपभ्रंशनां रूपाख्यानो

१ पु०	हसामु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसामो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	हसि, हसु, हसे, हससु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	हसह वगेरे ,,

---

१ जुओ पृ० २५४ 'ज्ज' अने 'ज्जा'नी चरचा.

३ पु०	हसउ, हसेउ, हसउ, हसेउ	हसंतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

हो

१ पु०	होआमु वगेरे प्राकृत प्रमाणे होइ, होउ, होए,	होआमो वगेरे प्राकृत प्रमाणे
२ पु०	होअसु वगेरे प्राकृत प्रमाणे	होअह वगेरे प्राकृत प्रमाणे
३ पु०	होअदु, होएदु होअउ, होएउ	होअंतु वगेरे प्राकृत प्रमाणे

ए रीते दरेक व्यंजनांत अने स्वरांत धातुओनां रूपो करी लेवानां छे.

विध्यर्थनी बधी प्रक्रिया आज्ञार्थना जेवी छे, विशेष ए छे के, सर्वपुरुष अने सर्ववचनमां एक 'ज्जइ' प्रत्यय वधारे लागे छे, ए 'ज्जइ' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ' 'ए' थाय छे.

सर्वपुरुष } होज्जइ, होज्ज, होज्जा (भवेत्)
सर्ववचन } हसेज्जइ, हसेज्ज, हसेज्जा (हसेत्)

(आर्षप्रयोगोमां वि[illegible] केटलांक [illegible] बीजां पण मळे छे, ते आ छे:—

१ जुओ पृ० १० [illegible]
२ जुओ पृ० १९ [illegible] (१)

सिया	(स्यात्)
[1]चरे	(चरेत्)
पठे	(पठेत्)
अच्छे	(आच्छिन्द्यात्)
अब्भे	(आभिन्द्यात्)

आ रूपो विध्यर्थसूचक संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी सीधी रीते वर्णविकारना नियमो द्वारा सधाएलां छे. ते हकीकत तेने पडखे ( ) आ निशानमां आपेलां रूपो उपरथी जणाइ आवे छे. ए रीते बीजां संस्कृतरूपो उपरथी पण प्राकृतरूपो साधी शकाय छे.]

अनियमित रूपाख्यान

[2]अस्—थवुं

वर्तमानकाळ

१ पुरुष	अत्थि, म्हि, [1]अंसि	अत्थि, म्हो, म्ह.
२ पुरुष	अत्थि, सि	अत्थि.
३ पुरुष	अत्थि	अत्थि.

---

१ पालिमां पण त्रणे पुरुषना एकवचनमां विध्यर्थसूचक 'ए' प्रत्यय वपराएलो छे (जुओ पृ० २७५ १ टिप्पण) ए अनुसारे पण आ आर्षरूपो साधी शकाय छे.

२ प्राकृतमां 'अस्' धातुनां घणां थोडां रूपो थाय छे, भूतकाळ सिवाय बीजा अर्थमां एक मात्र 'अत्थि' रूपथी पण काम चाली शके छे. पालिमां 'अस्' नां दरेक काळवार नोखां नोखां रूपो थाय छे अने पालिनां ए रूपो, संस्कृत रूपो साथे घणां मळतां आवे छे:

भूतकाळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } आसि, अहेसि ।

विध्यर्थ, आज्ञार्थ, भविष्यत्काळ

सर्व पुरुष, सर्व वचन— } अत्थि ।

अस् (पालिरूपो)

वर्तमाना—१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह (अम्हसे).
२	असि, अहि	अत्थ.
३	अत्थि	संति.
सत्तमी—१	अस्सं	अस्साम.
(विध्यर्थ) २	अस्स	अस्सथ.
३	अस्स,	अस्सु,
	सिया	सियुं.
पंचमी—१	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह.
(आज्ञार्थ) २	अहि,	अत्थ.
३	अत्थु,	संतु.
अज्जतनी—१	आसिं	आसिम्ह
(भूतकाळ) २	आसि	आसित्थ
३	आसि	आसुं, आसिंसु (आसु)

—बुद्ध पालि० पृ० १३८-१९८-१९२-२११

'अस' नां रूपो

१ जुओ आल्हाभाकृतनी आव—

"कुलिनमांथी वा विभाओ आनली अहं आसि" इत्यादि. आ प्रयोगमां वैदिक 'आसि' प्रयोग उपयोग थयेल छे.

[1]कृ—करवुं

मात्र भूतकाळ अने भविष्यत्काळमां 'कृ' धातुनो 'का' आदेश थाय छे:

भूतकाळ

कासी, काही, काहीअ, काअसी, काअही, काअहीअ.

भविष्यत्काळ

फक्त प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'काहं' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधां रूपो 'हो' धातुनी सरखां छे:

[2]काहिइ, काहिसि, काहिमि इत्यादि।

दा—देवुं.

मात्र भविष्यत्काळमां प्रथम पुरुषना एकवचनमां 'दा' धातुनुं 'दाहं' रूप वधारे थाय छे, बाकी बधां रूपो 'हो' धातुनी सरखां छे:

दाहं, दाहिमि, दाहिसि, दाहिइ, इत्यादि।

---

१ 'कृ'नुं भूतकाळसूचक 'अकासि' अने 'अकासि' (बीजा पुरुषनुं एकवचन अने प्रथम पुरुषनुं एकवचन) रूप पालिमां थाय छे, ए, प्राकृतना 'कासी' रूप साथे मळतुं गणाय खरुं:—जुओ पालिप्र० पृ० २२५ 'कृ'ना रूपो.

२ प्राकृतरूपो साथे मळता आवतां 'कृ'ना भविष्यत्काळनां पालिरूपो आ प्रमाणे छे:

१	काहामि	काहाम.
२	काहिसि	काहिथ.
३	काहिति	काहिन्ति.

—जुओ पालिप्र० पृ० २०९ 'कृ'नां रूपो

मात्र भविष्यत्काळमां नीचेना धातुओना नीचे प्रमाणे आदेशो थाय छे:

[1]श्रु– सोच्छ।	दृश–दच्छ।	भिद्–भेच्छ।
गम– गच्छ।	मुच–मोच्छ।	भुज्–भोच्छ।
रुद्– रोच्छ।	वच–वोच्छ।	
विद्– वेच्छ।	छिद्–छेच्छ।	

आ धातुओनां भविष्यत्काल संबंधी रूपाख्यानो 'भण' धातुनी जेवां थाय छे. विशेषता ए छे के, आ धातुओने लागता भविष्यत्-

---

१ प्राकृतमां 'श्रु' वगेरे धातुओना 'सोच्छ' वगेरे अंगो बने छे तेम पालिमां पण बने छे:

पालिअंगो

श्रु—	सोस्स–	प्रथम पुरुषनुं एकवचन–	सोस्सं.
गम—	गच्छ–		
रुद्—	रुच्छ	,,	[illegible]
		,,	[illegible]
दृश	{ दक्ख / दिच्छ	तृतीय पुरुषनुं एकवचन–	दिच्छति.
मुच	मोक्ख	,,	मोक्खति.
वच	वक्ख	,,	वक्खति.
छिद	छेच्छ	,,	छेच्छति.
भुज	भोक्ख	,,	भोक्खति.

—जुओ पालिप्र० पृ० २०६–२०७.

[[illegible] 'श्रु' [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] पृ० १२ [illegible] पृ० १५]

ळना जेटला प्रत्ययो 'हि' आदिवाळा छे तेमांना 'हि' नो लोप विकल्पे थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एकवचनमां ए बधा धातुओनुं एक अनुस्वारांत रूप पण वधारे थाय छे:

१ पुरुष—सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि, सोच्छिस्सं, सोच्छेस्सं, सोच्छिस्सामि, सोच्छेस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छेहामि।

२ पुरुष—सोच्छिसि, सोच्छेसि, सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि, सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे।

३ पुरुष—सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ। सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए। इत्यादि।

[सूचना—आख्यातने लगता बधी भाषाना (प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंशना) प्रत्ययो आगळ जणावेला छे, आ चालु प्रकरणमां प्रेरकभेदी, सन्नभेदी वगेरे आख्यातने लगती हकीकत जणाववानी छे, तेमां मात्र प्राकृतना ज एक एक प्रत्ययद्वारा बधां उदाहरणो देखाडेलां छे तो अभ्यासीए पोतानी मेळे प्रेरकभेदी, सन्नभेदी वगेरे अंगोने शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अपभ्रंश भाषाना प्रत्ययो लगाडी ते ते भाषानां रूपो बनावी लेवां]

प्रेरकरूप

प्रेरकअंग बनाववानी रीत

१ धातुने अ, ए, आव अने आवे [1]प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं प्रेरक अंग तैयार थाय छे.

---

[1] पालिमां पण साधारण रीते प्रेरणाना अर्थमां 'अ,' 'ए,' 'आप' अने 'आपे' लगाडवाथी धातुमात्रना चार अंगो बने छे:—

ए रीते तैयार थयेल प्रेरक अंगोने ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेना दरेक प्रकारनां रूपाख्यानो तैयार थाय छे-ए रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया आगळ आवेल कर्तरिरूपाधिकारमां आवी गई छे. तो पण अहीं उदाहरण तरीके केटलांक रूपाख्यानो दर्शाववामां आवे छे

वर्तमानकाळ

१ पु०—गामेमि, गामामि,   गामामो,-*मु,-म, गामिमो,-मु,-म,
गाममि, गामेमि,   गामेमो,-मु,-म, गाममो,-मु,-म।
गामेमो-मु,-म,
गमावेमि, गमावामि,   गमावामो,-मु,-म, गमाविमो,-मु,-म,
गमावमि, गमावेमि   गमाविमो,-मु,-म, गमावमो,-मु,-म,
गमावेमो,-मु,-म.   इत्यादि।

गामेज्ज, गामेज्जा, गमावेज्ज, गमावेज्जा।

भूतकाळ

सर्वपुरुष, सर्ववचन—गामसि-सी,-ही, हीअ, गामसी,-ही,-हीअ,
गामेसी,-ही,-हीअ, गमावसी,-ही,-हीअ,
गमावेसी,-ही,-हीअ।   इत्यादि।

भविष्यत्काळ

१ पु०—गमस्सामि-हिइ, गामस हिइ, गामे-हिइ, गमावस-हिइ,
गमावे हिइ   इत्यादि।

---

* '-मु' '-म' वाळा प्रत्ययो मूकवा छे, तो पण [illegible] 'गामामो' नी पेठे 'गामामु' 'गामाम' [illegible]

[illegible]

नामधातु

प्रेरकप्रक्रिया सिवाय संस्कृतमां बीजी पण अनेक प्रक्रियाओ छे, जेमके–[1]सन्नंतप्रक्रिया, यङंतप्रक्रिया, यङ्लुबंतप्रक्रिया अने नामधातुप्रक्रिया. परंतु प्राकृतमां ए प्रक्रियाओ माटे कोई खास विशेष

---

१ पालिमां पण सन्नंत, यङन्त, यङ्लुबंत अने नामधातुनी प्रक्रिया संस्कृतनी पेठे थाय छेः—

सन्नंत–	बुभुक्खति	(बुभुक्षते)
	जिघच्छति	(जिघत्सति)
	पिवासति	(पिपासति)
	जिगिंसति	(जिगीषति)
		(जिहीर्षति)
	तिकिच्छति चिकिच्छति	(चिकित्सति)
	वीमंसते	(मीमांसते)
सन्नंतप्रेरक–	बुभुक्खापेति	(बुभुक्षयति)
यङंत–	लालप्पति	(लालप्यते)
	जाजलति	(जाज्वल्यते)
यङ्लुबंत–	चंकमति	(चङ्क्रमीति)
	जंगमति	(जङ्गमीति)
	लालपति	(लालपीति)
नामधातु–	पब्बतायति	(पर्वतायते–पर्वत इव आचरति)
	छत्तीयति	(छत्रीयति पुत्रम्)
	अतिहत्थयति	(अतिहस्तयति—हस्तिना अतिक्रामति)
	उपवीणयति	(वीणया उपगायति)
	पुत्तीयति	(पुत्रं इच्छति)

—पालिप्र० पृ० २१०–२११

विधान तो नथी अने प्राकृत साहित्यमां ए प्रक्रियानां रूपाख्यानो उपलब्ध थाय छे एथी कल्पी शकाय छे के, ते ते प्रक्रियानां (संस्कृत) सिद्ध रूपोमां, आगळ जणावेल वर्णविकारना नियमानुसार फेरफार करी ते रूपोनो प्रयोग करवामां आवे (छ) छे. जेमके—

संस्कृत	प्राकृत
शुश्रूषति—	सुस्सूसइ। (सनंत)
लालप्यते—	लालप्पइ। (यडंत)
चङ्क्रमीति—	चंकमइ। (यङ्लुगंत) चंकमणं। (चङ्क्रमणम्)

इत्यादि।

मात्र नामधातु माटे विशेषता आ छे :

नामधातुओने लागेल 'य' प्रत्ययनो लोप विकल्पे थाय छे.

गुरुकायते—गरुआइ, गरुआअइ (गुरुरिव आचरति—गुरुनी जेवुं आचरण करे छे)

दमदमायते—दमदमाइ दमदमाअइ (दम दम थाय छे)

लोहितायते— लोहिआए-इ, लोहिआअए-इ। (लाल थाय छे)

हंसायते— हंसाए-इ, हंसाअए,-इ। (हंसनी जेम आचरे छे)

तमायते— तमाए-इ, तमाअए-इ। (अंधारा जेवुं छे)

अप्सरायते— अच्छराए,-इ, अच्छराअए-इ।

(अप्सरानी जेम आचरे छे)

उन्मनायते— उम्मणाए-इ, उम्मणाअए,-इ।(उन्मना थाय छे)

कष्टायते— कट्ठाए,-इ, कट्ठाअए,-इ।

(कष्टने माटे क्रमण करे

धूमायते	धूमाए–इ, धूमाअए–इ। (धूमने उद्वमे छे)	
सुखायते	सुहाए–इ, सुहाअए,–इ। (सुखने अनुभवे छे)	
शब्दायते	सद्दाए, इ, सद्दाअए–इ। (शब्द करे छे–बोलावे छे)	

इत्यादि.

सह्यभेद

वर्तमानकाळ, विध्यर्थ, आज्ञार्थ अने (ह्यस्तन) भूतकाळमां धातुने 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं सह्यभेदी अंग

---

१ पालिमा सह्यभेदी अंग बनाववा माटे 'य' 'इय' अने 'ईय' तथा क्याय 'इय्य' (प्रा० ईअ, इज्ज) प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे:—

य—	पच्चते, पच्चति	(पच्यते)
	बुज्झते, बुज्झति	(बुध्यते)
	वुच्चते, वुच्चति	(उच्यते)
य अने इय—	तुस्सते, तुसियति	(तुष्यते)
	पुच्छते, पुच्छियति	(पृच्छ्यते)
	भंजियति	(भज्यते)
इय्य—	करिय्यति, करिय्यते	(क्रियते)
ईय—	महीयति	(मह्यते)
	मथीयति	(मथ्यते)
	करीयति	(क्रियते)
	कय्यति	
	करियति	

—जुओ पालिप्र० पृ० २३४–२३७

वने छे अने ते अंगेने प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची अने अप-भ्रंश भाषाना ते ते पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडवाथी तेनां रूपाख्यानो थाय छे.

पैशाचीनी विशेषता

पैशाचीमां धातुनुं कर्मभेदी अंग बनाववुं होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेलां धातुने 'ईअ' 'इज्ज'ने बदले 'इय्य' प्रत्यय लगाडवो जोईए. जेमके,

सं०	प्रा०	शौ० प्रा०	पै०
गीयते	गिज्जइ	गिज्जदे	गिय्यते
दीयते	दिज्जइ	दिज्जदे	दिय्यते
रम्यते	रमिज्जइ	रमिज्जदे	रमिय्यते
पठ्यते	पढिज्जइ	पढिज्जदे	पढिय्यते

कृ

'कृ' धातुनुं कर्मभेदी अंग बनाववुं होय तो पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडता पहेलां एने ('कृ' धातुने) ज 'इय्य'ने बदले 'ईर' प्रत्यय लगाडवो जोईए.

सं० क्रियते प्रा० करिज्जइ, करीअइ शौ० प्रा० [1]करिज्जदे, करीअदे पै० कीरते

अपभ्रंशनी विशेषता

संस्कृतनां धना प्रथम पुरुषना 'क्रिये' रूपने बदले अपभ्रंशमां 'कीसु' रूप पण वपराय छे अने एने यथायोग्य.

---

१ करिज्जदे, करीअदे—जुओ पृ० २६ न–३.

साधारण सह्यभेदी अंगो

धातु	सह्यभेदी अंग	धातु	सह्यभेदी अंग
भण्–	भणीअ, भणिज्ज।	पा–	पाईअ, पाइज्ज।
हस्–	हसीअ, हसिज्ज।	दा–	दाईअ, दाइज्ज।
कथ्–कह्–	कहीअ, कहिज्ज।	ला–	लाईअ, लाइज्ज।
पत्–पड्–	पडीअ, पडिज्ज।	ध्या–झा–	झाईअ, झाइज्ज।
कथ्–बोल्–	बोलीअ, बोलिज्ज।	हो–	होईअ, होइज्ज।
		सू–	सूईअ, सूइज्ज।

इत्यादि।

ए रीते धातुमात्रनां सह्यभेदी अंगो बनावी लेवानां छे. आ अंगोनां रूपाख्यानो बनाववानी प्रक्रिया, कर्तरिरूपाधिकारमां जणावेल प्रक्रिया जेवी छे. जेमके–

वर्तमानकाळ

(भण्यते ग्रन्थः)

३ पु०–(गंथो) भणीअइ,–एइ, अए, एए, एज्ज, एज्जा
भणिज्जइ, ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए, ज्जेज्ज, ज्जेज्जा।

(भण्यन्ते ग्रन्थाः)

(गंथा) भणीअंति, ते, एंति, एंते, भणीअइरे, एइरे
भणिज्जंति, ते, ज्जेंति, ज्जेंते, ज्जइरे, ज्जेइरे,
भणीएज्ज, एज्जा, भणिज्जेज्ज, ज्जेज्जा।

इत्यादि।

(कथ्यसे त्वम्)

२ पु०–(तुमं) बोलीअसि, एसि, असे, एसे,
बोलिज्जसि, ज्जेसि, ज्जसे, ज्जेसे

(कथ्यत्वे यूयम्)

(तुम्हे) बोल्लीअह, एह, बोल्लीएइत्था, अइत्था ।

(त्वया अहं मूये) त्वया वयं सूमहे

१ पु०—(अहं) सूईआमि, एमि, अमि, (अम्हे) सूईआमो, मु, म,

सूइज्जामि, ज्जेमि, ज्जमि सूईइमो, मु, म,

सूईएज्ज, एज्जा सूईएमो, मु, म,

सूइज्जेज्ज, ज्जेज्ज । सूईअमो, मु, म,

सूइज्जामो, मु, म,

सूइज्जिमो, मु, म,

सूइज्जेमो, मु, म,

सूइज्जमो, मु, म,

सूईएज्ज, ज्जा,

सूइज्जेज्ज, ज्जा ।

विध्यर्थ

मणीअउ, एउ	मणीअंतु, एंतु ।
मणिज्जउ, ज्जेउ	मणिज्जंतु, ज्जेंतु ।
मणीएज्ज, ज्जा	मणीएज्ज, ज्जा, ज्जइ ।
मणीएज्जइ	
मणिज्जेज्ज, ज्जा	मणिज्जेज्ज, ज्जा, ज्जइ ।
मणिज्जेज्जइ	

आज्ञार्थ

मणीअउ, एउ	मणीअंतु, एंतु ।
मणिज्जउ, ज्जेउ	मणिज्जंतु, ज्जेंतु ।
मणीएज्ज, ज्जा	मणीएज्ज, ज्जा ।
मणिज्जेज्ज, ज्जा	मणिज्जेज्ज, ज्जा ।

भूत–(ह्यस्तनभूत)

भणीअसी, ही, हीअं ।

भणिज्जसी, ही, हीअ ।

१ जे काळमां सद्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय धातुने नथी लागता ते काळमां तेनां सद्यभेदी रूपो कर्तरिरूपो जेवां समजवानां छे, जेमके–

(अद्यतन) भूतकाळ–भण–भणीअ ।

भविष्यत्काळ–भण–भणिहिइ, भणिहिए, इत्यादि ।

क्रियातिपत्ति–भण–भणेज्ज, ज्जा, भणंतो, भणमाणो, इत्यादि ।

प्रेरक सद्यभेद

१ धातुनुं प्रेरक सद्यभेदी रूप करवुं होय त्यारे धातुने प्रेरणा-सूचक एक मात्र 'आवि' प्रत्यय लगाडी, ते तैयार थएल अंगने सद्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमा लगाडी प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सद्यभेदी अग बनाववानुं छे.

२ प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय लगाड्या विना मात्र उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ करी अने सद्यभेदसूचक 'ईअ' अने 'इज्ज' प्रत्यय पूर्वोक्त काळमा लगाडीने पण प्रत्येक धातुनुं प्रेरक सद्यभेदी अग तैयार थाय छे.

(आ सिवाय बीजी रीते प्रेरक सद्यभेदी अंग बनी शकतुं नथी)

ए रीते तैयार थएल प्रेरक सद्यभेदी अगना रूपाख्यानोनी प्रक्रिया कर्तरि रूपाख्यानोनी प्रक्रिया जेवी छे.

प्रे० सत्व० प्रे०म०अंग—

कर + आवि—करावि + ईअ— करावीअ— करावीअइ, ए, सि, से,
इत्यादि.

कर— कार + ईअ— कारीअ— कारीअइ, ए, सि, से,
इत्यादि.

कर + आवि—करावि + इज्ज—कराविज्ज—कराविज्जइ, ए, सि, से,
इत्यादि.

कर— कार + इज्ज— कारिज्ज— कारिज्जइ, ए, सि, से,
इत्यादि.

हस + आवि—हसावि + ईअ— हसावीअ— हसावीअइ, ए, सि, से,
इत्यादि.

हस + हास + ईअ— हासीअ— हासीअमि, आमि, एमि
इत्यादि.

हस + हसावि + इज्ज—हसाविज्ज—हसाविज्जित्था,-विज्जेइ,
ज्जह, इत्यादि.

हस + हास + इज्ज—हासिज्ज—हासिज्जंति, न्ते, ज्जइरे,
इत्यादि.

ए रीते धातु मात्रनां प्रेरक सत्वभेदी अंगो तैयार करी सर्व कालनां रूपाख्यानो समजी लेवानां छे.

ज्यां प्रेरक अंगने 'ईअ' अने 'इज्ज'प्रत्यय नथी लागता त्यां प्रेरक अंगथी सीधा पुरुषबोधक प्रत्ययो लगाडी कर्तरिरूपाख्यानोनी पेठे प्रेरक सत्वभेदी रूपाख्यानो समजवानां छे.

जेमके—भविष्यत्काळ

प्रे०

कर + आवि—करावि—कराविहि-इ, ए, -सि, -से, -मि,
विहामि, विस्सामि, विस्सं

कर्- कार –कारेहि-इ, ए, -सि, -से, -मि,
रेहामि, रेस्सामि, रेस्सं

हस+आवि-हसावि–हसाविहि-न्ति, -न्ते, -इरे-त्था, ह,
विस्सामो, विहामो, विस्सामु, विहामु,
विस्साम, विहाम, विहिमो, विहिमु,
विहिम, विहिस्सा, विहित्था

हस- हास –हासेहि-इ, ए, सि, से, मि,
सेहामि, सेस्सामि, सेस्सं। इत्यादि·

क्रियातिपत्ति

कराविज्ज, ज्जा, करावंतो, करावमाणो।

कारिज्ज, कारिज्जा, कारंतो, कारमाणो। इत्यादि·

अनियमित सघभेदी अंगो

दृश- [1]दीस- दीसइ, दीसिज्जइ, दीसउ, दीससी, ही, हीअ।

वच- [1]वुच्च- वुच्चइ, वुच्चिज्जइ, वुच्चउ, वुच्चसी, ही, हीअ।

सघ० प्रे० प्रे० म०

चि- चिव्व- चिव्वइ, चिव्विहिइ, चिव्वाविइ, चिव्वाविहिइ, इत्यादि·

चि- चिम्म–चिम्मइ, चिम्मिहिइ, चिम्माविइ, चिम्माविहिइ, इत्यादि·

हन्- हम्म- हम्मइ, हम्मिहिइ, हम्माविइ, हम्माविहिइ, इत्यादि·

खन्- खम्म- खम्मइ, खम्मिहिइ, खम्माविइ, खम्माविहिइ, इत्यादि·

दुह्- दुब्भ–दुब्भइ, दुब्भिहिइ, दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ, इत्यादि·

---

१ वर्तमानमां, विध्यर्थमां, आज्ञार्थमां अने ह्यस्तनभूतमां ज आ बे आदेशो वपराय छे.

२ आ बधा आदेशो वैकल्पिक छे अने मात्र सघभेदनी ज एमे ते पदनी रचनामां वपराय छे.

लिह्– लिब्भ–लिब्भइ, लिब्भिहिइ, लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ, इत्यादि.
वह्– वुब्भ–वुब्भइ, वुब्भिहिइ, वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ, इत्यादि.
रुध्– रुब्भ–रुब्भइ, रुब्भिहिइ, रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ, इत्यादि.
दह्– डज्झ–डज्झइ, डज्झिहिइ, डज्झाविइ, डज्झाविहिइ, इत्यादि.
बन्ध्–बज्झ–बज्झइ, बज्झिहिइ, बज्झाविइ, बज्झाविहिइ, इत्यादि.
सं+रुध् संरुज्झ-संरुज्झइ, संरुज्झिहिइ, संरुज्झाविइ, संरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
अणु+रुध्-अणुरुज्झ-अणुरुज्झइ, अणुरुज्झिहिइ, अणुरुज्झाविइ,
अणुरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
उप+रुध्-उवरुज्झ-उवरुज्झइ, उवरुज्झिहिइ, उवरुज्झाविइ,
उवरुज्झाविहिइ, इत्यादि.
गम्– गम्म–गम्मइ, गम्मिहिइ, गम्माविइ, गम्माविहिइ, इत्यादि,
हस्– हस्स–हस्सइ, हस्सिहिइ, हस्साविइ, हस्साविहिइ, इत्यादि.
भण्–भण्ण–भण्णइ, भण्णिहिइ, भण्णाविइ, भण्णाविहिइ, इत्यादि.
छुप्–छुप्प–छुप्पइ, छुप्पिहिइ, छुप्पाविइ, छुप्पाविहिइ, इत्यादि.
रुद्–रुव्व–रुव्वइ, रुव्विहिइ, रुव्वाविइ, रुव्वाविहिइ, इत्यादि,
लभ्–लब्भ–लब्भइ, लब्भिहिइ, लब्भाविइ, लब्भाविहिइ, इत्यादि.
कथ्–कत्थ–कत्थइ, कत्थिहिइ, कत्थाविइ, कत्थाविहिइ, इत्यादि.
भुज–भुज्ज–भुज्जइ, भुज्जिहिइ, भुज्जाविइ, भुज्जाविहिइ, इत्यादि.
हृ– हीर–हीरइ, हीरिहिइ, हीराविइ, हीराविहिइ, इत्यादि.
तृ– तीर–तीरइ, तीरिहिइ, तीराविइ, तीराविहिइ, इत्यादि.
कृ– कीर–कीरइ, कीरिहिइ, कीराविइ, कीराविहिइ, इत्यादि.

[प्राकृतमां 'कृ' नां सरभेदी अंगो बे थाय छे-कृ= 'कीर' अने 'करीअ' 'करिज्ज,' त्यारे पद्यार्थमां तो 'कृ'नुं 'कीर' अंग ज वपराय छे: कीरंत, कीरंति]

जृ–जीर–जीरइ, जीरेहिइ, जीराविइ, जीराविहिइ, इत्यादि.
अर्ज- विढप्प-विढप्पइ, विढप्पेहिइ, विढप्पाविइ, विढप्पाविहिइ, इत्यादि.
ज्ञा–णव्व–णव्वइ, णव्वेहिइ, णव्वाविइ, णव्वाविहिइ, इत्यादि,
ज्ञा–णज्ज-णज्जइ, णज्जेहिइ, णज्जाविइ, णज्जाविहिइ, इत्यादि.
वि+आ–व्या+हृ–वाहिप्प–वाहिप्पइ, वाहिप्पेहिइ, वाहिप्पाविइ, वाहिप्पाविहिइ, इत्यादि.
ग्रह–घेप्प–घेप्पइ, घेप्पेहिइ, घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ, इत्यादि,
स्पृश–छिप्प–छिप्पइ, छिप्पेहिइ, छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ, इत्यादि,
सिन् / स्निह् } सिप्प-सिप्पए, सिप्पेहिए, सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ, इत्यादि,
आरभ्--आढप्प--आढप्पेइ, आढप्पेहिए, आढप्पाविइ, आढप्पाविहिइ, इत्यादि.
जि–जिव्व–जिव्वए, जिव्वेहिए, जिव्वाविइ जिव्वाविहिइ इत्यादि.
श्रु–सुव्व– सुव्वए, सुव्वेहिए, सुव्वाविइ. सुव्वाविहिइ. इत्यादि.
हु– हुव्व– हुव्वए, हुव्वेहिइ, हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ, इत्यादि.
स्तु–थुव्व–थुव्वइ, थुव्वेहिइ, थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ, इत्यादि.
लु –लुव्व– लुव्वइ, लुव्वेहिइ, लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ, इत्यादि.
पू –पुव्व – पुव्वइ, पुव्वेहिइ, पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ, इत्यादि.
धू –धुव्व– धुव्वए, धुव्वेहिइ, धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ, इत्यादि.

[1]मणेंतो, मणेमाणो । मणेंतं, मणेमाणं । मणेंती, मणेंता ।
मणमाणी, मणमाणा ।
मणेमाणी, मणेमाणा ।
मणई, मणेई ।

पा– पाअंतो, पाअमाणो । पाअंतं, पाअमाणं । पाअंती, पाअंता ।
(शौ० मा० पाअंदो)
पाएंतो, पाएमाणो । पाएंतं, पाएमाणं । पाएंती, पाएंता ।
पांतो, पामाणो । पांतं, पामाणं । पांती, पांता ।
पाअमाणी, पाअमाणा ।
पाएमाणी, पाएमाणा ।
पामाणी, पामाणा ।
पाअई, पाएई ।
पाई ।

रु–रवंतो, (शौ० मा० [2]रवंदो) रवमाणो । रवंतं, रवमाणं । रवंती, रवंता ।
रवेंतो, रवेमाणो । रवेंतं, रवेमाणं । रवेंती, रवेंता ।
रवमाणी, रवमाणा ।
रवेमाणी, रवेमाणा ।
रवई, रवेई ।

हृ० हरंतो (शौ० मा० हरदो) हरमाणो । हरंतं, हरमाणं । हरंती, हरंता ।
हरेंतो हरेमाणो । हरेंतं हरेमाणं । हरेंती, हरेंता ।
हरमाणी, हरमाणा ।
हरेमाणी, हरमाणा ।
हरई, हरेई ।

---

१ मणेंतो– जुओ दीर्घस्वर=ह्रस्वस्वर पृ० ४
२ रवंतो + रवंदो जुओ पृ० ३५ न्त=न्द.

वृष्—वरिसंतो. (शौ०मा०वरिसंदो) वरिसमाणो । वरिसंतं. वरिसमाणं।
वरिसंती.वरिसंता ।

वरिसेंतो.वरिसेमाणो । वरिसेंतं.वरिसेमाणं । वरिसेंती.वरिसेंता ।
वरिसमाणी,
वरिसमाणा ।
वरिसेमाणी,
वरिसेमाणा ।
वरिसई, वरिसेई ।

नी—नेंतो, [2](नेंदो शौ०मा०) नेमाणो। नेंतं,नेमाणं । नेंती, नेंता ।
नेमाणी, नेमाणा ।
नेई ।

तुस्—तुसंतो, (शौ०मा०तुसंदो) तुसमाणो । तुसंतं, तुसमाणं ।
तुसंती, तुसंता ।

तुसेंतो, तुसेमाणो । तुसेंतं. तुसेमाणं । तुसेंती, तुसेंता ।
तुसमाणी, तुसमाणा ।
तुसेमाणी, तुसेमाणा ।
तुसई, तुसेई ।

दा—[3]देंतो (शौ०मा०देंदो) देमाणो । देंतं, देमाणं । देंती, देंता ।
देमाणी, देमाणा ।
देई ।

---

1 वरिसंतो + वरिसंदो – जुओ पृ० २७ ब–ट,
ए प्रमाणे तुसंदो,
कुस्सुंदो,
गोरविंदो वगेरे।

2 जुओ पृ० २४६ नि० ६

3 दा+अ+अंतो=दा+ए+न्तो=देंतो ।
दा+अ+मानो=दा+ए+मानो=देमाणो ।

चल्–चलंतो, चलमाणो । चलंतं, चलमाणं । चलंती, चलंता ।
(शौ० मा० चलंदो)
चलेंतो, चलेमाणो । चलेंतं, चलेमाणं । चलेंती, चलेंता ।
चलमाणी,चलमाणा ।
चलेमाणी,चलेमाणा ।
चलई, चलेई ।

खिद्–खिज्जंतो, खिज्जमाणो । खिज्जंतं, खिज्जमाणं । खिज्जंती, खिज्जंता ।
(शौ० मा० खिज्जंदो)
खिज्जेंतो, खिज्जेमाणो । खिज्जेंतं, खिज्जेमाणं । खिज्जेंती, खिज्जेंता ।
खिज्जमाणी, खिज्जमाणा ।
खिज्जेमाणी, खिज्जेमाणा ।
खिज्जई, खिज्जेई ।

त्वर { तुर–[1]तुरंतो, तुरमाणो । तुरंतं, तुरमाणं । तुरंती, तुरंता ।
तूर (शौ०मा० तुरंदो)
तुरेंतो, तुरेमाणो । तुरेंतं, तुरेमाणं । तुरेंती, तुरेंता ।
तुरमाणी,तुरमाणा ।
तुरेमाणी,तुरेमाणा ।
तुरई, तुरेई ।

शुश्रूष्––सुस्सूसंतो, (शौ० मा० सुस्सूसंदो) [2]सुस्सूसमाणो ।
लालप्य्–लालप्पंतो, (शौ० मा० लालप्पंदो) लालप्पमाणो ।
(पै० [3]लालप्पंतो)
गुरुकाय[4]–गरुअंतो, (शौ० मा० गरुअंदो) गरुअमाणो ।

---

१ 'तुरंतो' नी पेठे 'तूरंतो' वगेरे रूपो पण करी लेवा.

२ सुस्सूसंतं, सुस्सूसंती वगेरे रूपो पण करी लेवा.

३ जुओ पृ० २६ ल–ळ.

४ 'गुरुकायते' नामधातुनुं रूप छे, ए उपरथी 'गुरुकाय' ए वर्तमान कृदतनु अंग बन्युं छे.

कर—कारेंतो[1], (शौ० मा० कारेंदो) कारमाणो ।
कारेंतो, कारमाणो ।
करावंतो, करावमाणो ।
करावेंतो, करावेमाणो ।
शुष—सोसविंतो, (शौ० मा० सोसविंदो) सोसंतो, सोसेंतो,
सोसावंतो, सोसावेंतो
सोसविमाणो, सोसमाणो, सोसेमाणो, सोसावमाणो,
सोसावेमाणो इत्यादि.

सत्त्वभेदी वर्तमान कृदंत

भण—भणिज्जंतो, भणिज्जमाणो, भणीअंतो, भणीअमाणो । पुं०—
(शौ० मा० भणिज्जंदो) ([2]पै० भनिय्यंतो)
भणिज्जंतं,—ज्जमाणं, भणीअंतं,—अमाणं । न०—
भणिज्जंती,—ता, ज्जई; भणीअंती,—ता, —णीअई ⎫
भणिज्जमाणी—णा; भणीअमाणी, भणीअमाणा । ⎭ स्त्री०—
पुं०— न०— स्त्री०—
हन्—हम्मंतो, हम्ममाणो; हम्मंतं, हम्ममाणं; हम्मंती, ता,
हम्ममाणी,णा,हम्मई ।

---

१. 'कार' अंग उपरथी कारेंती, कारेई, कारमाणी, कारेंतं वगेरे रूपो उपजावी लेवां.

२ जुओ पृ० ३९१ पैशाचीनी विशेषता.

३ जुओ पृ० २२ पं—न.

प्रेरक सह्यभेदी कृदंत

(प्रेरक सह्यभेदी अंग बनाववानी प्रक्रिया 'प्रेरकसह्यभेद'[1] ने जणाववतां जणावी छे.)

कर—करावि +ईअ–करावीअंतो,–अमाणो, इत्यादि।

(शौ० मा० करावीअंदो) (पै० कराविय्यंतो)

कर—करावि + इज्ज– कराविज्जंतो, कराविज्जमाणो, इत्यादि।

कर—कार + ईअ– कारीअंतो, कारीअमाणो, इत्यादि।

कर—कार + इज्ज– कारिज्जंतो, कारिज्जमाणो, इत्यादि।

चि– चिव्व + आवि– चिव्वावितो, चिव्वाविज्जमाणो. इत्यादि।

प्राकृत अने पैशाचीमां वर्तमान कृदंतनां रूपो सरखां थाय छे, शौरसेनी अने मागधीमां जे विशेषता छे ते उदाहरणो साथे जणावी छे, अपभ्रंशमां शौरसेनी अने प्राकृत प्रमाणे समजवानु छे.

शौरसेनी, मागधी के पैशाचीनां उदाहरणो मात्र एक ज लिंगमा मूकेलां छे पण अभ्यासिए एनां त्रणे लिंगी रूपो पोतानी मेळे समजी लेवा.

पैशाचीना सह्यभेदी वर्तमान कृदंतनी विशेषता जणावेली छे.

(कोइ पण भाषानुं रूप करती वखते 'वर्ण-विकार' ना नियमो लक्ष्यमा राखवा)

भूतकृदंत

कर्तरि भूतकृदत—सह्यभेदी भूतकृदंत

---

१ जुओ पृ० २९५ प्रेरकसह्यभेद.

१ धातुना अंगने 'अ' 'द' अने 'त' लागवाथी तेनुं (बन्ने जातनुं) भूतकृदंत बने छे.

२ 'अ' 'द' अने 'त' प्रत्यय पर रहेतां पूर्वना 'अ'नो 'इ' थाय छे. ('द' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने 'त' पैशाचीमां वपराय छे.)

कर्तरि भू०कृ०—गम+अ=गमिओ गमिदो, गमितो (गतः)
चल+अ=चलिओ चलिदो, चलितो (चलितः) इत्यादि.

सकर्मक भू०कृ०—कर+अ=करिओ करिदो, करितो कडो (कृतः कटः)
पढ+अ=पढिओ पढिदो, पढितो गंथो (पठितो ग्रन्थः) इत्यादि.

हस+अ=हसिअं हसिदं, हसितं (हसितम्)
लस+अ=लसिअं लसिदं, लसितं (लसितम्)
तुर+अ=तुरिअं तुरिदं, तुरितं (त्वरितम्) इत्यादि.
सुम्सुम+अ=सुम्सुमिअं सुम्सुमिदं, सुम्सुमितं (शुश्रूषितम्)
चंकम+अ=चंकमिअं चंकमिदं, चंकमितं (चङ्क्रमितम्)
झा+अ=झाये झादं, झातं (ध्यातम्)

---

१ प्राकृतमां भूतकृदंतने माटे मात्र 'त (अ)' प्रत्यय वपराय छे, पालिमां ए 'त' उपरांत संस्कृतना 'तवतु'नो जेवो बीजो 'तवंतु' प्रत्यय पण वपराय छे:

त—हुतं (हुत)

तवंतु-हुतवा (हुतवान्) अने हुतवन्तो (हुतवन्तः)

—[illegible] पृ० [illegible] २५१–२५२

लु +अ=लुअं लुदं, लुतं (लूनम्)
हू +अ=हूअं हूदं, हूतं (भूतम्)

प्रेरक भू० कृ०—

१ धातुने प्रेरणासूचक 'आवि' प्रत्यय लगाड्या पछी अथवा धातुना उपान्त्य 'अ' नो दीर्घ कर्या पछी भूतकृदंतनो 'अ' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं प्रेरक भूतकृदंत बने छे.

कर– करावि+अ–कराविअं कराविदं, करावितं (कारितम्)
कारि+ अ–कारिअं कारिदं, कारितं

हस– हसावि+अ–हसाविअं हसाविदं, हसावितं (हासितम्)
हासि+ अ–हासिअ हासिदं, हासितं इत्यादि

आर्ष ग्रंथोमा के अर्वाचीन प्राकृतमां केटलेक स्थळे संस्कृतनां सिद्धरूपो उपरथी पण भूतकृदंतनां रूपो बनाववामां आव्यां छेः

गतम्– गयं।
मतम्– मयं।
कृतम्– [1]कडं।
हृतम्– हडं।
मृतम्– मडं।
जितम्– जिअं।
तप्तम्– तत्तं। वगेरे

भविष्यत्कृदंत—

धातुना अंगने '[2]स्संत' 'स्समाण' अने 'स्सई' प्रत्यय लगा-

१ जुओ पानुं ६६–त=ड.
२ स्स + अंत = स्संत। स्स + माण = स्समाण।
स्स + ई = स्सई. जुओ पृ० २९९ वर्तमानकृदंत.

ड्वाथी तेनुं भविष्यत्कृदंत[1] बने छेः

करिष्यन्–करिस्संतो (शौ० मा० करिस्संदो) इत्यादि ।

करिष्यमाणः–करिस्समाणो इत्यादि ।

हेत्वर्थकृदंत

१ धातुना अंगने 'तुं' 'दुं' अने 'त्तए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं हेत्वर्थकृदंत[2] बने छे.

२ उपर जणावेला त्रणे प्रत्ययो ('तुं' 'दुं' अने 'त्तए') पर रहेतां पूर्वना 'अ' नो 'इ' अने 'ए' थाय छे.

('दुं' शौरसेनी, मागधी अने अपभ्रंशमां वपराय छे अने प्राकृत तथा पैशाचीमां 'तुं' वपराय छे.)

---

१ भविष्यत्कृदंतनां पालिरूपो आ प्रमाणे छेः

–गमिस्सं (गमिष्यन्) स्त्री–गमिस्सती
गमिस्संती

करिस्सं (करिष्यन्)
चरिस्सं (चरिष्यन्)

'गमिष्यन्' वगेरे सिद्धरूपोने छेडे रहेला 'न्' नो अनुस्वार करवाथी पालिनां 'गमिस्सं' वगेरे रूपो तैयार थयेलां छे–पालिप्र० पृ० २४८–२४९

२ पालिभाषामां हेत्वर्थकृदंत करवाने माटे धातुने 'तुं' 'तवे' 'ताये' अने 'तुये' प्रत्ययो लगाडवामां आवे छे :

मंतुं । कातवे (कर्तुम्) नेतवे (नेतुम्)
दक्खिताये (द्रष्टुम्) गणेतुये (गणयितुम्) वगेरे.

—जुओ पालिप्र० पृ० २५७–२५८

तुं—दुं—

भण्–भण+तुं–भणिउं भणेउं, भणिदुं, भनितुं (भणितुम्–भणवाने माटे)
हस्–हस+तुं–हसिउं, हसेउं हसिदुं, हसितुं (हसितुम्–हसवाने माटे)
हो–होअ–तुं–होइउं, होएउं होइदुं, होइतुं (भवितुम्–थवाने माटे)
भण्-भणावि+तुं-भणाविउं भणाविदुं, भनावितुं (भणाववा माटे)
कर-करावि+तुं–कराविउं कराविदुं, करावितुं (कराववा माटे)
कर-कार+तुं-कारिउं, कारेउं कारिदुं, कारितुं (कराववा माटे)
हस्-हास+तुं-हासिउ, हासेउं हासिदुं, हासितु (हसाववा माटे)
शुश्रूष्-सुस्सूस+तुं–सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउं सुस्सूसिदुं, सुस्सूसितुं
(शुश्रूषा करवा माटे)
चङ्क्रम्य-चंकम+तुं–चंकमिउं, चंकमेउं चंकमिदुं, चंकमितुं
(चंक्रमण करवा माटे) इत्यादि

अनियमित हेत्वर्थकृदंत

कृ	+	तुं	–	का	+	उं	=	काउं	(कर्तुम्)
ग्रह्	+	तुं	–	घेत्	+	तुं	=	घेत्तुं	(ग्रहीतुम्)
त्वर्	+	तुं	–	तुर्	+	इउं	=	तुरिउं	} (त्वरितुम्)
				तुर्	+	एउं	=	तुरेउं	
दृश्	+	तुं	–	दट्ठ्	+	उं	=	दट्ठुं	(द्रष्टुम्)
भुज्	+	तुं	–	भोत्	+	तुं	=	भोत्तुं	(भोक्तुम्)
मुच्	+	तुं	–	मोत्	+	तुं	=	मोत्तुं	(मोक्तुम्)
रुद्	+	तुं	–	रोत्	+	तुं	=	रोत्तुं	(रोदितुम्)
वच्	+	तुं	=	वोत्	+	तुं	=	वोत्तुं	(वक्तुम्)

१ प्रेरकहेत्वर्थकृदंतनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनी जेवी ज छे.

[1]त्तए

[2]कर् – कर + त्तए = करेत्तए / करित्तए } (कर्तुम्)

सिज्झ् – सिज्झ + त्तए = सिज्झित्तए (सेद्धुम्)

उववज्ज् – उववज्ज + त्तए = उववज्जित्तए (उपपत्तुम्)

विहर् – विहर + त्तए = विहरित्तए (विहर्तुम्)

[3]पास् – पास + त्तए = पासित्तए (द्रष्टुम्)

गम् – गम + त्तए = गमित्तए (गन्तुम्)

[4]पव्वज् – पव्वज + त्तए = पव्वइत्तए (प्रव्रजितुम्)

आहर् – [5]आहार + त्तए = आहारित्तए (आहर्तुम्)

दल् – दल + इत्तए = [6]दलइत्तए (दातुम्)

[7]अच्चासाद्– अच्चासाद + त्तए = अच्चासादेत्तए (अत्याशातयितुम्)

---

१ विशेषे करीने आ प्रत्ययनो उपयोग आर्षग्रंथोमां थएलो छे. वैदिक संस्कृतना अने पालिना तुमर्थक 'तवे' प्रत्ययनी साथे आ 'त्तए' प्रत्ययनी विशेष समानता छे (जूओ पाणिनि–३–४–९ वैदिक प्र० तथा पृ० ३०७ नी १ टिप्पणी.

२ "अंतं करेत्तए" "सिज्झित्तए" "देवत्ताए उववज्जित्तए" "भुंजमाणे विहरित्तए"–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३११ स०

३ "रुवाइं पासित्तए" देवलोगं गमित्तए"–भगवतीसू० श० ७, उ० ७ पृ० ३१२ स०.

४ "पव्वइत्तए पव्वइत्तए" "अप्पणा आहारित्तए" "–सुनयाणं दलइत्तए"–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७१ स०.

५ आर्षताने लीधे 'हर्' नो 'हार' थयो छे.

६ आर्षताने लीधे अहीं 'इ' आगमरूपे थयो छे.

७ "सयमेव अच्चासादेत्तए"–भगवतीसू० श० ३, उ० २ पृ० १७२ स०.

समभिल्लोइ्— समभिल्लोक + त्तए = समभिल्लोएत्तए (समभिलो-कितुम्)

अपभ्रंश

धातुना अंगने 'एवं' 'अण' 'अणहं' 'अणहिं' 'एप्पि' 'एप्पिणु' 'एवि' अने 'एविणु' प्रत्यय लगाडवाथी अपभ्रंशनुं हेत्वर्थकृदंत बने छे.

एवं—

चय्	+	एवं	=	चएवं	(त्यक्तुम्)
दा	+	एवं	=	देवं	(दातुम्)

अण—

भुंज्	+	अण	=	भुंजण	(भोक्तुम्)
कर	+	अण	=	करण	(कर्तुम्)

अणहं—

सेव्	+	अणहं	=	सेवणहं	(सेवितुम्)
भुंज्	+	अणहं	=	भुंजणहं	(भोक्तुम्)

अणहिं—

भुंज्	+	अणहिं	=	भुंजणहिं	(भोक्तुम्)
भुंज्	+	अणहिं	=	भुंजणहिं	(भोक्तुम्)

एप्पि—

कर्	+	एप्पि	=	करेप्पि	(कर्तुम्)
जि	+	एप्पि	=	जेप्पि	(जेतुम्)

---

८ "नवहिंदवि समभिल्लोएत्तए"—भगवतीसू० श० १, उ० ७ पृ० ११८ न०,

एप्पिणु—

कर्	+	एप्पिणु	=	करेप्पिणु	(कर्तुम्)
चय्	+	एप्पिणु	=	चएप्पिणु	(त्यक्तुम्)

एवि—

कर्	+	एवि	=	करेवि	(कर्तुम्)
पाल्	+	एवि	=	पालेवि	(पालयितुम्)

एविणु—

कर्	+	एविणु	=	करेविणु	(कर्तुम्)
ला	+	एविणु	=	लेविणु	(लातुम्)

केटलेक स्थळे संस्कृतनां सिद्ध रूपो उपरथी पण हेत्वर्थकृदंतनां रूपोने बनावेलां छे:

लब्धुम् — लद्धुं ।
रोद्धुम् — रोद्धुं ।
योद्धुम् — जोद्धुं ।
कर्तुम् — [1]कट्टुं । वगेरे

संबंधकभूतकृदंत—

१ धातुना अंगने 'तुं' 'अ' 'तूण' 'तुआण' 'इत्ता'

---

१ जूओ पानुं ३५ नं—ट नि० २९

२ 'इत्ता', 'इत्ताण', 'आय' अने 'आए' प्रत्ययनो उपयोग खास करीने आर्षप्राकृतमां थएलो छे. पालिमां आ अर्थमां 'त्वा' (क्त्वाय 'इत्वा' (आर्षप्रा०—'इत्ता')) 'त्वान' (क्त्वाय 'इत्वान') (आर्षप्रा०—'इत्ताण') अने 'तून' (प्रा० 'तून' के 'ऊण') प्रत्ययनो उपयोग थाय छे:—

त्वा—कत्वा, करित्वा (आर्षप्रा० करित्ता) (कृत्वा)
गत्वा (गत्वा)

'इत्ताण' 'आय' अने 'आए' प्रत्यय लगाडवाथी तेनुं संबंधक भूतकृदंत बने छे.

शौरसेनी अने मागधीमां संबंधकभूतकृदंत करवा माटे धातुने 'इय' अने 'दूण' प्रत्यय लागे छे तथा प्राकृतना 'त'कारादि प्रत्ययो पण 'द'कारादि करीने लगाडाय छे अने 'इत्ता'

हंत्वा (हत्वा)
जहित्वा / जहत्वा (हित्वा) / (हात्वा)
छिंदित्वा (आर्षप्रा॰ छिंदित्ता) (छित्वा)
भुंजित्वा (,, भुंजित्ता) (भुक्त्वा)
जिणित्वा (,, जिणित्ता) (जित्वा)
पावुणित्वा (आर्षप्रा॰ पावुणित्ता) (प्राप्य)
त्वान— कत्वान
गंत्वान
हंत्वान
जहित्वान (आर्षप्रा॰ जहित्ताण)
तून— कतून
गतून
[illegible]तून

[illegible] ने बदले [illegible] कांई नियम [illegible]

[illegible]

[illegible] उदाहरणो [illegible]

' इत्ताण ' प्रत्ययो पण वपराय छे.

पैशाचीमां ए अर्थमां ' तून ' प्रत्यय वपराय छे.

अपभ्रंशमां ए अर्थमां ' इ ' ' इउ ' ' इवि ' अने ' अवि ' तथा ' एप्पि, ' ' एप्पिणु, ' ' एवि ' अने ' एविणु ' प्रत्ययनो व्यवहार थाय छे.

२ अपभ्रंश सिवायना उपर जणावेला बीजा प्रत्ययो पर रहेतां प्रयोगानुसारे पूर्वना ' अ ' नो ' इ ' अने ' ए ' थाय छे.

३ केटलेक ठेकाणे प्राकृतना ' त 'कारादि प्रत्ययोना ' त ' नो लोप पण थइ जाय छे (जूओ असंयुक्त ' कादि ' लोप पृ० १० नि० २)

४ उपर जणावेला प्रत्ययोमां जे प्रत्ययो ' ण ' छेडावाळा छे तेने अंते विकल्पे अनुस्वार थाय छे.

अपवाद–शौरसेनी

शौरसेनीमां ' कृ ' अने ' गम् ' धातुनुं संबंधक भूतकृदंत ' कडुअ ' अने ' गडुअ ' बने छेः (कृ + अडुअ = कडुअ–कृत्वा (गम् + अडुअ = गडुअ–गत्वा)

अपवाद–पैशाची

' ष्ट्वा ' छेडावाळां संस्कृत रूपोनुं संबंधक भूतकृदंत करवा माटे पैशाचीमां ए ' ष्ट्वा ' ने बदले ' द्दून ' अने ' त्थून ' वापरवामां आवे छेः

नद्दून, नत्थून (सं० नंष्ट्वा)

तद्दून, तत्थून (सं० तष्ट्वा) वगेरे

अपवाद—अपभ्रंश

मात्र एक ' गम् ' धातुनुं संबंधक भूतकृदंत करवा माटे —

प्रेरकना उपर्युक्त प्रत्ययो लगाडवा उपरांत 'प्पि' अने 'प्पिणु' प्रत्ययो पण लगाडवाना छे:

गम् + प्पि = गम्पि – गत्वा ।
गम् + प्पिणु = गम्पिणु – गत्वा ।

भाषावार उदाहरणो

प्राकृत

हस– हस + तुं = हसिउं, हसेउं, (हसित्वा)
हो– होअ + तुं = होइउं, होएउं, (भूत्वा)
हस्– हस + अ = हसिअ, हसेअ, (हसित्वा)
हो– होअ + अ = होइअ, होएअ, (भूत्वा)
हस्– हस + तूण = हसिऊण, हसिऊणं, हसेऊण, हसेऊणं (हसित्वा)
हो– होअ + तूण = होइऊण, होइऊणं, होएऊण, होएऊणं (भूत्वा)
हस्– हस + तुआण = हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं (हसित्वा)
हो– होअ + तुआण = होइउआण, होइउआणं, होएउआण, होएउआणं (भूत्वा)
भण्–भणावि + तुं = भणाविउं (भाणयित्वा)
,, + अ = भणाविअ
,, + तूण = भणाविऊण, भणाविऊणं
,, + तुआण = भणाविउआण, भणाविउआणं

१ आ प्रेरक संबंधक भूतकृदंत छे अने एनी रचना प्रेरक भूतकृदंतनी जेवी छे.

मण्–माण + तुं = माणिउं, माणेउं
,, + अ = माणिअ, माणेअ
,, + तूण= माणिऊण, माणिऊणं; माणेऊण, माणेऊणं
,, + तुआण, = माणिउआण, माणिउआणं, माणेउआण, माणेउआणं

कर–करावि + तुं = कराविउं (कारयित्वा)
,, + अ = कराविअ
,, + तूण= कराविऊण, कराविऊणं
,, + तुआण,=कराविउआण, कराविउआणं
,, कार + तुं = कारिउं, कारेउं
,, + अ = कारिअ, कारेअ
,, +तूण = कारिऊण;कारिऊणं, कारेऊण, कारेऊणं
,, तुआणं;कारिउआण,कारिउआणं;कारेउआण,कारेउआणं

शुश्रूष्–सुस्सूस + तुं = सुस्सूसिउं, सुस्सूसेउं
,, + अ = सुस्सूसिअ, सुस्सूसेअ
,, + तूण= सुस्सूसिऊण सुस्सूसिऊणं, सुस्सूसेऊण, सुस्सूसेऊणं
,, +तुआण=सुस्सूसिउआण, सुस्सूसिउआणं, सुस्सूसेउआण सुस्सूसेउआणं.

चङ्क्रम्य–चंकम + तुं = चंकमिउं, चंकमेउं
,, + अ = चंकमिअ, चंकमेअ
,, + तूण = चंकमिऊण, चंकमिऊणं; चंकमेऊण, चंकमेऊणं
,, +तुआण=चंकमिउआण, चंकमिउआणं, चंकमेउआण, चंकमेउआणं

कर– इत्ता = करित्ता (कृत्वा)
कर– इत्ताण = करित्ताण, करित्ताणं
कह– इत्ता = कहित्ता, (कथयित्वा)
कह– इत्ताण = कहित्ताण, कहित्ताणं
गम– इत्ता = गमित्ता, (गत्वा)
गम– इत्ताण = गमित्ताण, गमित्ताणं
गह+ आय = [1]गहाय (गृहीत्वा)
संपेह+आए = संपेहाए (संप्रेक्ष्य)
आया+आए = आयाए (आदाय)

शौरसेनी, मागधी—

हो + इय = हविय, होत्ता (भूत्वा)
,, + दूण = होदूण ,,
पढ + इय = पढिय, पढित्ता (पठित्वा)
पढ + दूण = पढिदूण ,,
रम + इय = रमिय, रंता (रन्त्वा)
रम + दूण = रंदूण ,,

पैशाची—

गम् + तून = गंतून (गत्वा)
हस् + तून = हसितून (हसित्वा)
पढ + तून = पढितून (पठित्वा)
कथ + तून = कथितून (कथयित्वा)

---

१ आचारांगसूत्र श्रु० स्क० १, उ० २—" रयणाणि गहाय [illegible]
" [illegible] गहाय "—पृ० १००–१०१.

अपभ्रंश—

कर + इ = करि (लब्ध्वा)
कर + इउ = करिउ (कृत्वा)
कर + इवि = करिवि (,,)
कर + अवि = करावि (,,)
कर + एप्पि = करेप्पि (,,)
कर + एप्पिणु= करेप्पिणु (,,)
कर + एविणु = करेविणु (,,)
कर + एवि = करेवि (,,)

अनियमित संबंधक भूतकृदंत (प्राकृत)

कृ + तुं = काउं,
,, + तूण = काऊण, काऊणं,
,, + तुआण=काउआण, काउआणं.
ग्रह् + तुं = घेत्तुं,
,, + तूण = घेत्तूण. घेत्तूणं,
,, + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआणं.
त्वर् + तुं = तुर + उं = तुरिउं, तुरेउं,
,, + अ = ,, + अ = तुरिअ. तुरेअ.
,, + उण = ,, + उण = तुरिउण, तुरिउणं; तुरेउण. तुरेउणं.
,, + उआण = ,, + उआण= तुरिउआण, तुरिउआणं; तुरेउआण. तुरेउआणं.
दृश् + तुं = दट्ठ + उं = दट्ठुं
,, + तूण = दट्ठ + उण = दट्ठूण, दट्ठूणं

,, + तुआण = दट्ठ + तुआण = दट्ठुआण, दट्ठुआणं.
मुंच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं,
,, + तूण = ,, + तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं,
,, + तुआण = ,, + तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआणं.
मुच् + तुं = मोत् + तुं = मोत्तुं
,, + तूण = ,, + तूण = मोत्तूण, मोत्तूणं
,, + तुआण = ,, + तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआणं.
रुद् + तुं = रोत् + तुं = रोत्तुं
,, + तूण = रोत् + तूण = रोत्तूण, रोत्तूणं
,, + तुआण = रोत् + तुआण = रोत्तुआण, रोत्तुआणं.
वच् + तुं = वोत् + तुं = वोत्तुं,
,, + तूण = वोत् + तूण = वोत्तूण, वोत्तूणं,
,, + तुआण = वोत् + तुआण = वोत्तुआण, वोत्तुआणं.
वन्द् + तु = वंदित्तु, वंदित्तुं.

[संस्कृतना सिद्ध संबंधक भूतकृदंतो पण थोडा केटलाक साथे प्राकृतमां वपराय छे.

आगम्य–आगम्म	वन्दित्वा–वंदित्ता.
गत्वा–गच्चा, गंता.	विज्ञाय–विण्णाय.
ज्ञात्वा–नच्चा.	श्रुत्वा–सोच्चा.
नत्वा–नच्चा.	मुक्त्वा–मुच्चा.
बुद्ध्वा–बुज्झा.	संहृत्य–साहट्टु.
भुक्त्वा–भोच्चा.	हत्वा–हंता
मत्वा–मच्चा, मंता.	

इत्यादि]

[1]विध्यर्थ—कृदंत—

विध्यर्थ कृदंतनी साधना विध्यर्थ कृदंतना संस्कृत सिद्ध रूपो उपरथी करवानी छे, तो पण तेने लगता केटलाक प्राकृत प्रत्ययो आ रीते छेः

१ धातुने 'तव्व,' (शौ० 'दव्व') 'अणिज्ज' अने 'अणीअ' 'प्रत्यय' लगाडवाथी तेनुं विध्यर्थ—कृदंत बने छे.

२ 'तव्व' अने 'दव्व' प्रत्यय पर रहेतां प्रायः पूर्वना 'अ' नो 'इ' तथा 'ए' थाय छे.

---

१ विध्यर्थ कृदंतो मध्यभेदी होय छे.

२ विध्यर्थ कृदंत माटे पालिमां 'तब्ब,' 'तय्य,' 'य,' अने 'अनीय' प्रत्यय वपराय छे:—

तब्ब—	भवितब्बं	(भवितव्यम्)
	बुज्झितब्बं	(बोद्धव्यम्)
	सयितब्बं	(शयितव्यम्)
तय्य—	ञातय्यं	(ज्ञातव्यम्)
	पत्तय्यं	(प्राप्तव्यम्)
	दट्ठय्यं	(द्रष्टव्यम्)
य—	देय्यं	(देयम्)
	मेय्यं	(मेयम्)
	कच्चं	(कृत्यम्)
	नच्चो	(नृत्यः)
वृद्धिवाळो य	कारियं	(कार्यम्)
	हारियं	(हार्यम्)
अनीय—	भवनीयं	
	सवनीयं	
	पापनीयं	(प्रापणीयम्)

—पालिप्र० पृ० :

३ विध्यर्थ–कृदंतने लागेल संस्कृत ' य ' प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमां ' ज्ज ' पण लागे छे.

सिद्ध रूपो उपरथी बनतां विध्यर्थ–कृदंतो--

कार्यम् – कज्जं ।	वाच्यम् – वच्चं ।
कृत्यम् – किच्चं ।	वाक्यम् – वक्कं ।
ग्राह्यम् – गेज्झं ।	जन्यम् – जन्नं ।
गुह्यम् – गुज्झं ।	भृत्यः – भिच्चो ।
वर्ज्यम् – वज्जं ।	भार्या – भज्जा ।
वध्यम् – वज्झं ।	अर्यः – अज्जो ।
भव्यम् – भव्वं ।	आर्यम् – अज्जं ।
अवद्यम् – अवज्जं ।	पाय्यम् – पज्जं । इत्यादि ।

हस–हस–हसिअव्वं, हसेअव्वं, हसितव्वं, हसेतव्वं । हसाविअव्वं, हसावितव्वं ।

शौ० हसिदव्वं, हसेदव्वं, हसाविदव्वं ।

सुमरितव्वं, सुमरेतव्वं, सुमरिअव्वं, सुमरेअव्वं ।

संकमितव्वं, संकमेतव्वं, संकमिअव्वं, संकमेअव्वं ।

हो–होतव्वं, होअव्वं । जि–जिणिअव्वं, जिणेअव्वं, जिणितव्वं, जिणेतव्वं ।

ज्ञा–नातव्वं, नायव्वं ।

अणिज्ज, अणीअ – हसणिज्जं, हसणीअं, हसावणिज्जं, हसावणीअं, करणिज्जं, करणीअं,

सुमरणिज्जं, सुमरणीअं,

संकमणिज्जं, संकमणीअं,

वच–वचणिज्जं, वचणीअं । इत्यादि ।

अ–पेयम्–पेज्जं, पेअं । पेया–पेज्जा, पेआ ।

गेयम्–गेज्जं, गेअं । इत्यादि ।

—अनियमित विध्यर्थ कृदंत—

ग्रह्–तव्व–घेत्तव्वं ।	रुद्–तव्व–रोत्तव्वं ।
भुज्–तव्व–भोत्तव्वं ।	कृ–तव्व–कातव्वं
वच्–तव्व–वोत्तव्वं ।	कायव्वं
मुच्–तव्व–मोत्तव्वं ।	त्वर–तव्व–तुरिअव्वं, तुरेअव्वं ।
दृश्–तव्व–दट्ठव्वं ।	तुरितव्वं, तुरेतव्वं ।

विध्यर्थ कृदंत (अपभ्रंश)—

प्राकृतमां वपराता 'तव्व' प्रत्ययने बदले अपभ्रंशमां 'इएव्वउ,' 'एव्वउं' अने 'एवा' प्रत्यय वपराय छे:

कर + इएव्वउं = करिएव्वउं – कर्तव्यम् ।

कर + एव्वउं = करेव्वउं

कर + एवा = करेवा

मर + इएव्वउं = मरिएव्वउं – मर्तव्यम् ।

मर + एव्वउं = मरेव्वउं

मर + एवा = मरेवा

सह + इएव्वउं = सहिएव्वउं – सोढव्यम् ।

सह + एव्वउं = सहेव्वउं

सह + एवा = सहेवा

सो + एवा = सोएवा – स्वप्तव्यम् ।

जग्ग + एवा = जग्गेवा – जागरितव्यम् ।

---

२ विध्यर्थ–कृदंतने लागेल संस्कृत ‘य’ प्रत्ययने स्थाने प्राकृतमां ‘अ’ पण लागे छे.

सिद्ध रूपो उपरथी बनता विध्यर्थ–कृदंतो––

कार्यम् – कज्जं ।	वाच्यम् – वच्चं ।
कृत्यम् – किच्चं ।	वाक्यम् – वक्कं ।
ग्राह्यम् – गेज्झं ।	जन्यम् – जन्नं ।
गुह्यम् – गुज्झं ।	भृत्यः – भिच्चो ।
वर्ज्यम् – वज्जं ।	भार्या – भज्जा ।
नद्यम् – नज्जं ।	अर्यः – अज्जो ।
मध्यम् – मज्झं ।	आर्यम् – अज्जं ।
अवद्यम् – अवज्जं ।	पथ्यम् – पत्थं । इत्यादि ।

तव्य–हस–हसिअव्वं, हसेअव्वं, हसितव्वं, हसेतव्वं । हसाविअव्वं, हसावितव्वं ।

शौ० हसिदव्वं, हसेदव्वं, हसाविदव्वं ।

सुम्सुमितव्वं, सुम्सुमेतव्वं, सुम्सुमिअव्वं, सुम्सुमेअव्वं ।

चंकमितव्वं, चंकमेतव्वं, चंकमिअव्वं, चंकमेअव्वं ।

हो–होतव्वं, होअव्वं । नि–निविअव्वं, निवेअव्वं,

ना–नातव्वं, नाअव्वं । निवितव्वं, निवेतव्वं ।

अणिज्ज, अणीअ – हसणिज्जं, हसणीअं, हसावणिज्जं, हसावणीअं,
करणिज्जं, करणीअं,
सुम्सुमणिज्जं, सुम्सुमणीअं,
चंकमणिज्जं, चंकमणीअं,
वच–वअणिज्जं, वअणीअं । इत्यादि ।

य–पेयम्–पेज्जं, पेअं । पेया–पेज्जा, पेआ ।
देयम्–देज्जं, देअं । इत्यादि ।

—अनियमित विध्यर्थ कृदंत—

ग्रह्—तव्व—घेतव्वं ।
भुज्—तव्व—भोत्तव्वं ।
वच्—तव्व—वोत्तव्वं ।
मुच्—तव्व—मोत्तव्वं ।
दृश्—तव्व—दट्ठव्वं ।

रुद्—तव्व—रोत्तव्वं ।
कृ—तव्व—कातव्वं
कायव्वं
त्वर—तव्व—तुरिअव्वं, तुरेअव्वं ।
तुरितव्वं, तुरेतव्वं ।

विध्यर्थ कृदंत (अपभ्रंश)—

प्राकृतमां वपराता 'तव्व' प्रत्ययने बदले अपभ्रंशमां 'इएव्वउं,' 'एव्वउं' अने 'एवा' प्रत्यय वपराय छेः

कर + इएव्वउं = करिएव्वउं — कर्तव्यम् ।
कर + एव्वउं = करेव्वउं
कर + एवा = करेवा
मर + इएव्वउं = मरिएव्वउं — मर्तव्यम् ।
मर + एव्वउं = मरेव्वउं
मर + एवा = मरेवा
सह + इएव्वउं = सहिएव्वउं — सोढव्यम् ।
सह + एव्वउं = सहेव्वउं
सह + एवा = सहेवा
सो + एवा = सोएवा — स्वप्तव्यम् ।
जग्ग + एवा = जग्गेवा — जागरितव्यम् ।

पुर + इल्ल = पुरिल्लं (पुरे भवम्) स्त्री० पुरिल्ली।

अधस् + इल्ल = हेट्ठिल्लं (अधो भवम्) स्त्री० हेट्ठिल्ली।

उपरि + इल्ल = उवरिल्लं (उपरि भवम्)

उल्ल—आत्म + उल्ल = अप्पुल्लं (आत्मनि भवम्)

तरु + उल्ल = तरुल्लं (तरौ भवम्)

नगर + उल्ल = नयरुल्लं (नगरे भवम्)

इत्यादि।

३ 'तेनी जेवुं' ए अर्थमां नामने 'व्व' प्रत्यय लागे छे.

महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः)

४ 'पणुं' अर्थमां नामने 'इमा' 'त्त' अने 'त्तण' प्रत्यय लागे छे अने अपभ्रंशमां 'प्पण' प्रत्यय पण लागे छे:

पीण + इमा = पीणिमा (पीनत्वम्)

पीण + त्तण = पीणत्तणं, पीण + त्त = पीणत्तं।

पुप्फ + इमा = पुप्फिमा (पुष्पत्वम्)

पुप्फ + त्तण = पुप्फत्तणं, पुप्फ + त्त = पुप्फत्तं।

अप० वड्ड + प्पण = वड्डप्पणु, वड्डत्तणु वगेरे (वृद्धत्वम्)

विहु + प्पण = विहुप्पणु, विहुत्तणु वगेरे (विभुत्वम्)

---

१ 'जात' अर्थमां पालिमां 'इम' प्रत्यय आवे छे.–

पच्छा जातः = पच्छिमो। उपरि जातः = उपरिमो।

पुरा जातः = पुरिमो। अधो जातः = हेट्ठिमो।

अन्ते जातः = अन्तिमो–

पालिप्र० पृ० २५९–२६०.

२ आ अर्थमां वपरातो 'मन' (प्रा० मण) प्रत्यय आवे छे

पुप्फमणम [illegible] (पुष्पमनस्) [illegible]

पालिप्र० पृ० १६१

५ 'वार' अर्थमां नामने 'हुत्त' (आर्ष-खुत्त[1]) प्रत्यय लागे छे:

एक + हुत्त = एगहुत्तं (एककृत्वः-एकवारम्)

द्वि + हुत्त = दुहुत्तं (द्विवारम्)

त्रि + हुत्त = तिहुत्तं (त्रिवारम्)

शत + हुत्त = सयहुत्तं (शतवारम्)

सहस्र + हुत्त = सहस्सहुत्तं (सहस्रवारम्)

६ 'वाळुं' अर्थमां आवता नामने लागता 'मतु' प्रत्ययने स्थाने 'आल' 'आलु' 'इत्त' 'इर' 'इल्ल' 'उल्ल' 'मण' 'मंत' अने 'वंत' प्रत्यय वपराय छे:

आल- रस + आल = रसालो (रसवान्)

जटा + आल = जडालो (जटावान्)

ज्योत्स्ना + आल = जोण्हालो (ज्योत्स्नावान्)

शब्द + आल = सद्दालो (शब्दवान्)

फटा + आल = फडालो (फटावान्)

---

१ सं० कृत्वम्-कुत्त-खुत्त-हुत्त-जुओ ग्यादिनो 'ह' पृ० १९.

२ 'वार' अर्थमां पालिमां 'क्खत्तुं' (सं० कृत्वम्) प्रत्यय वपराय छे:

एकक्खत्तुं (एकवारम्)
द्विक्खत्तुं (द्विवारम्)
तिक्खत्तुं (त्रिवारम्)

पालिप्र० पृ० २६१

आर्षप्राकृतमां आ अर्थमां 'खुत्त' (पालि-क्खत्तुं) प्रत्यय पण आवे छे: तिक्खुत्तो-

"तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ"-
भग० रा० पृ० २३५ पं० २

"महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ"-
(सू० द्वि० श्रु० अ० ७ पृ० ४२५ पं० २ स०)

"पत्तो अणंतक्खुत्तो" जीवविचारनी छेल्ली गाथा.

पितृ + उल्ल = पिउल्लो, पिआ (पिता)
हस्त + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो (हस्त)

विशेषता

पैशाचीमां स्वार्थिक 'अ' ने बदले संस्कृतनी पेठे 'क' वपराय छेः

सं० वदनकम्– प्रा० वयणयं– पै० वतनकं ।

" वतनके वतनकं समप्पेतून "

प्रा० व्या० पा० २ सू० १६४ पृ० ७०

अपभ्रंशमां स्वार्थमां 'अ,' 'अड,' 'उल्ल' 'अडअ', 'उल्लअ' अने 'उल्लडअ' प्रत्ययो वपराय छेः

दिट्ठ + अ = दिट्ठउ (दृष्टकः)
दोस + अड = दोसडु (दोषकः)
कुडी + उल्ल = कुडुल्ली (कुटिका)
हिअय + अडअ = हिअडउं (हृदयम्)
चुड + उल्लअ चुडुल्लओ (चूडकः)
बाहुबल + उल्लडअ=बाहुबलुल्लडउ (बाहुबलकः)

१ संस्कृतमां वपराता 'मतु' अर्थवाळा (त्व, तल्) प्रत्ययो लागीने [illegible] भणुल् ए म लागीने स्वार्थमां एना ए म प्रत्ययो [illegible] पण लागे छे.–

मृदुक + त्व = मउअत्त + ता = { मउअत्तया / मउअत्तया (मृदुकत्वता)

---

* प्राकृतव्याकरणमां 'अडड' 'डल्ल' 'डुल्ल' 'डमय' [illegible]

अनियमित तद्धितांत रूपो

एक + सि = एक्कसि
एक + सिअं = एक्कसिअं } (एकदा)
एक + इआ = एक्कइआ

भ्रू + मया = भुमया
भमया } (भ्रूः)

शनैः + इअ = सणिअं (शनैः)

उपरि + ल्ल = अवरिल्लो (उपरि)

ज + एत्तिअ = जेत्तिअं
ज + एत्तिल = जेत्तिलं } (यावत्)
ज + एद्दह = जेद्दहं

अप० जेवडु, जेत्तुलो

त + एत्तिअ = तेत्तिअं
त + एत्तिल = तेत्तिलं } (तावत्)
त + एद्दह = तेद्दहं

अप० तेवडु, तेत्तुलो

एत + एत्तिअ = एत्तिअ
एत + एत्तिल = एत्तिलं } (एतावत्) (इयत्)
एत + एद्दह = एद्दहं

अप० एवडु, एत्तुलो

क + एत्तिअ = केत्तिअं
क + एत्तिल = केत्तिलं } (कियत्)
क + एद्दह = केद्दहं

अप० केवडु, केत्तुलो

पर + क = परकं (परकीयम्)
राय + क = रायक्कं (राजकीयम्)
अम्ह + एच्चय = अम्हेच्चयं (अस्मदीयम्)
तुम्ह + एच्चय = तुम्हेच्चयं (युष्मदीयम्)
सव्वंग + इअ = सव्वंगिओ (सर्वाङ्गीणः)
पह + इअ = पहिओ (पान्थः)
अप्प + णय = अप्पणयं (आत्मीयम्)

वैकल्पिक रूपो

नव + ल्ल = नवल्लो, नवो (नवकः)
एक + ल्ल = एकल्लो, एक्को (एककः)
मनाक् + अय = मणयं
मनाक् + इय = मणियं, मणा } (मनाक्)
मिश्र + आलिअ = मीसालिअं, मीसं (मिश्रम्)
दीर्घ + र = दीहरं, दीहं (दीर्घम्)
विद्युत + ल = विज्जुला, विज्जू (विद्युत्)
पत्र + ल = पत्तलं, पत्तं (पत्रम्)
पीत + ल = पीअलं
पीवलं, पीअं } (पीतम्)
अन्ध + ल = अंधलो, अंधो (अन्धः)

[illegible] तद्धित [illegible] उपरथी पण प्राकृत [illegible] छे —

[illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] = [illegible] ।
[illegible] = [illegible] । [illegible] = [illegible] ।

[illegible] = [illegible] | [illegible] = [illegible] |
[illegible] = [illegible] | [illegible] = [illegible] |
[illegible] = [illegible] | [illegible] = [illegible] |
[illegible] = [illegible] ([illegible]) [illegible] = [illegible] |
([illegible]) [illegible] = [illegible] |

[illegible] = [illegible] | [illegible] = [illegible] |
[illegible] = [illegible] | [illegible] = [illegible] |
[illegible] = [illegible] | [illegible] = [illegible] |

[illegible]

धातुपाठ (परिशिष्ट)

[illegible]

[illegible]

४	जुगुप्स् प्रा० जुउच्छ	गुण / दुगुच्छ / दुगुन्छ
५	बुभुक्ष् प्रा० बुहुक्ख	भीरव
	बीज	बीज
६	ध्या प्रा० झा	झा
	गं	गा
७	ज्ञा	जाण / मुण
८	उद् + ध्मा	उद्धुमा
९	श्रद् + धा	सद्दह
१०	पा प्रा० पि	पिज / डल / पट्ट / घोट्ट
११	उद् + वा प्रा० उव्वा	ओरुम्मा / वसुआ
१२	नि + द्रा प्रा० निद्दा	ओहीर / उंघ
१३	आ + घ्रा प्रा० आघा	आइग्घ
१४	स्ना प्रा० ण्हा	अब्भुत्त
१५	सम् + स्त्यै	खा
१६	स्था	ठा / थक्क / चिट्ठ निरप्प (प्रा० चिट्ठ) / निरप्प

१७	उत् + स्था	उट्ठ, उक्कुक्कुर
१८	म्लै प्रा० मिला	वा, पव्वाय
१९	निर् + मा	निम्माण, निम्मव
२०	क्षि प्रा० झि	णिज्झर
२१	छाद् प्रा० छाय	णुम, नूम, णूम, सन्नुम, ढक, ओम्बाल, पव्वाल
२२	नि + वृ–निवार प्रा० निवार	णिहोड
	पात प्रा० पाड	
२३	दू	,,
२४	धवल	दूम
२५	तुल	दुम, दूम
२६	विरेच प्रा० विरेअ	ओहाम
		ओलुंड, उल्लंड, पल्हत्थ
२७	ताड	आहोड, विहोड
२८	मिश्र प्रा० मीस, मिस्स	वीसाल, मेलव

२९	उद् + धूल प्रा० उद्धूल	गुंठ
३०	भ्रम प्रा० भम	तलिअंट भमाड
३१	नाश प्रा० नास	विउड नासव हारव विप्पगाल पलाव
३२	दर्श प्रा० दरिस	दाव दंस दक्खव
३३	उद् + घाट प्रा० उग्घाड	उग्ग
३४	स्पृह	सिह
३५	सम् + आप	समाण
३६	उद् + नम् प्रा० उण्णम	उत्थंघ उल्लाल गुलुगुंछ उप्पेल
३७	प्र + स्थाप प्रा० पट्ठव	पट्ठव पेण्डव
३८	विज्ञप्ति प्रा० विण्णव	वोक्क अवुक्क

३९	अर्प प्रा० अप्प	अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम
४०	याप प्रा० जाव	जव
४१	प्लाव प्रा० पाव	ओम्वाल, पव्वाल
४२	विकोश प्रा० विकोस	पक्खोड
४३	रोमन्थ	ओग्गाल, वग्गोल
४४	कम प्रा० काम	णिहुव
४५	प्र+काश प्रा० पयास	णुव्व
४६	कम्प	विच्छोल
४७	आ+रोप प्रा० आरोव	वल
४८	दोल	रंखोल
४९	रंज	राव
५०	घट प्रा० घड	परिवाड
५१	वेष्ट प्रा० वेढ	परिआल
५२	क्री	किण
	वि+क्री प्रा० विक्की	विक्क, विक्किण
५३	भी	भा, बीह
५४	आ+ली	अल्ली

५५ नि+ली	णिलीअ णिलुक्क णिरिग्घ लुक्क लिक्क ल्हिक्क
५६ वि+ली	विरा
५७ रु प्रा० रुव	रुञ्ज रुण्ट
५८ श्रु प्रा० सुण	हण
५९ धू प्रा० धुण	धुव
६० भू	हो हुव (शौ० भू, भुव) हव भव)
६२ ,,	णिव्वड (पृथग्भवने, स्पष्टभवने च)
६३ ,,	हुप्प (प्रभवने)
६४ कृ प्रा० कर	कुण
६६ कृ	णिआर (काणेक्षितकरणे)
६७ कृ	णिट्ठुह (निष्टम्भे) संदाण (अवष्टम्भे)
६८ कृ	वावम्फ (श्रमकरणे)
६९ कृ	णिव्वोल (क्रोधपूर्वं ओष्ठमालिन्ये)
७० कृ	पयल्ल (शैथिल्यकरणे,

		लम्बने च)
७१	हृ ,,	णिलुंछ (निष्पाते आच्छोटने च)
७२	हृ ,,	कम्म (क्षुरकरणे)
७३	हृ ,,	गुल्ल (चाटुकरणे)
७४	स्मर प्रा० सर	झर झूर भर भल लढ विम्हर सुमर पयर पम्हुह
७५	वि+स्मृ	पम्हुस विम्हर वीसर
७६	व्या+हृ प्रा० वाहर	कोक्क, कुक्क पोक्क
७७	प्र+सृ प्रा० पसर	पयल्ल उवेल्ल
७८	,,	महमह (गन्धप्रसरणे)
७९	नि + सृ प्रा० नीसर	णीहर नील धाड वरहाड

८०	जागृ प्रा० जागर	जग्ग
८१	व्या + पृ प्रा० वावर	आअड्ड
८२	सं + वृ प्रा० संवर	साहर साहट्ट
८३	आ + दृ प्रा० आदर	सन्नाम
८४	प्र + हृ प्रा० पहर	सार
८५	अव + तॄ + ओअर	ओह ओरस्
८६	शक	चय तर तीर पार
८७	फक्क	थक्क
८८	श्लाघ	सलह
८९	खच	वेअड
९०	पच	सोल्ल पउल्ल
९१	मुच	छड्डु अवहेड मेल्ल उस्सिक्क रेअव णिल्लुञ्छ धंसाड

९२ ,, णिव्वर (दुःखमोचने)

९३ वञ्च { वेहव, वेलव, जूरव, उमच्छ }

९४ रच { उग्गह, अवह, विडविड्ड }

९५ समा + रच { उवहत्थ, सारव, समार, केलाय }

९६ सिच { सिंच, सिंप }

९७ प्रच्छ पुच्छ

९८ गर्ज बुक्क

९९ ,, ढिक्क (वृषगर्जने)

१०० राज { अग्घ, छज्ज, सह, रीर, रेह }

१०१ मस्ज { आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड, खुप्प }

११७	घूर्ण	घुल घोल घुम्म पहल्ल
११८	वि + वृत् प्रा० विवट्ट	ढंस
११९	क्वथ प्रा० कढ	अट्ट
१२०	ग्रन्थ	गण्ठ
१२१	मन्थ	घुसल विरोल
१२२	ह्लाद	अवअच्छ
१२३	नि + सद	णुमज्ज
१२४	छिद प्रा० छिंद	दुहाव णिच्छल्ल णिज्झोड णिव्वर णिल्लूर लूर
१२५	आ + छिद "	ओअंद उद्दाल
१२६	मृद	मल मढ परिहट्ट खड्ड चड्ड मड्ड पन्नाड

१२७ स्पन्द् प्रा० फंद् — चुलुचुल

१२८ निर् + पद् प्रा० निप्पज्ज — निव्वल

१२९ विसं + वद् — { विअट्ट / विलोट्ट / फंस }

१३० शद् — { झड / पक्खोड }

१३१ आ + क्रन्द् — णीहर

१३२ खिद् — { जूर / विसुर }

१३३ स्तम्भ् प्रा० थंभ — उत्थंघ

१३४ नि + षेध् — हक्क

१३५ क्रुध् प्रा० कुज्झ — जूर

१३६ जन — { जा / जम्म }

तन — { तड / तड्ड / तड्डव / विरल्ल }

तृप् — थिप्प

उप + सृप् — अल्लिअ

सं + तप् — झंख

वि + आप — ओअग्ग

सम् + आप — समाण

१४३ क्षिप
- गलत्थ
- अड्डक्ख
- सोल्ल
- पेल्ल
- णोल्ल
- छुह
- हुल
- परी
- घत्त

१४४ उत् + क्षिप
- गुलुगुञ्छ
- उत्थंघ
- अल्लत्थ
- उब्भुत्त
- उस्सिक
- हक्खुव

१४५ आ + क्षिप — णीरव

१४६ स्वप
- कमवस
- लिस
- लोट्ट

१४७ वेप
- लोट्ट
- आयज्झ

१४८ वि + लप
- झंख
- वडवड

१४९ लिप — लिंप

१५० गुप
- विर
- णड

१९१ कृप — अवहाव

१९२ प्र + दीप
प्रा० पदीव — { नेअव / मंदुम / मंगुय / अदमुय }

१९३ लुभ — मंभाव

१९४ क्षुभ — { ... / ... }

१९५ आ + रभ — { आरभ / आढव }

१९६ आ + लभ — { ... / ... / ... }

१९७ जृम्भ — जम्भा

विजृम्भ (...)

१९८ नद — [illegible]

१९९ नि + ... — [illegible]

[illegible]

२०० [illegible] — { [illegible] }

[illegible]

सर्वज्ञपणुं पण प्राप्त थवुं जोइए ने ज्यारे सर्वज्ञपणुं प्राप्त थयुं त्यारे तो आपणुं वांच्छित सर्वे सिद्ध थयुं त्यारे तो मुक्तिने अर्थे वीतरागनां वचन खोळवानी जरुर न रही. केमजे जो आकडानां फुलमांथी मधनो स्वाद मळ्यो तो मध खोळवा पर्वतमां कोण जाय! तेम पोतानो वांच्छित अर्थ सिद्ध थयो तो पछी कोण विद्वान पुरुष तेने वास्ते प्रयत्न करे? ए प्रकारे लौकिक न्यायछे ए हेतु माटे. वळी शुं? तो तेमणे करेलो परोपकार जेते पण संसारने तारण करनार संभवतो नथी. केमजे रागादि दोष युक्तपणावडे आपणी पेठेज ते पण योग क्षेम करे छे एटले आपणी पेठे ते पण रागादि दोषे भरेला छे ते पोतेज तरता नथी तो तेमने विषे बीजानुं तारणपणुं तो क्यांयीज सिद्ध थाय ! लोकमां पण जे नौका प्रमुख पोते तरती होय तेज बीजाने तारती देखाय छे ए हेतु माटे.

टीकाः—ननु स्यादेतद्यदि रागादिमत्वं भवेत्तदेकशासपतया सकलपार्थिवादिविचारचतुरप्रधानपुरुषपूज्यतान्यथानुपपत्त्या तेषामसिद्धमिति चेत् न ॥ तत्प्रकृतिष्वंगनादि घटनावलोकनेन तत्सिद्धेः ॥ तेषां रागादीमंतरेण तत्प्रतिबिंबेषु तल्लक्षणाध्यारोपासंभवात् ॥ इतरथा तत्प्रतिबिंबत्वानुपपत्तेः ॥ उपलादिना तत्सदृशतनुरूपाकारनिर्मापणं हि तत्प्रतिबिंबं नाम तन्नूनं ते रागादिमंत इति ॥

अर्थः—आ जगाए अन्यदर्शनी आशंका करे छे जे जो अमारा रागादि देव दोष सहित होय तो जे समस्त पृथ्वी आदि संबंधी

पदार्थनो विचार करवामां चतुर पुरुषो छे तेमां पोतानुं प्रधान पुरुषपणुं छे, जेथी पूजनीकपणुं छे.ते पोतानां कहेलां वचननी एक वाक्यताए छे ए हेतु माटे, एटले पोतानां वचनमां परस्पर बाधा नथी माटे. तथा अन्यथानुपपत्ति छे ए हेतु माटे, एटले एमणे कह्यां तेवांज पृथ्वी आदि पदार्थ छे माटे तेमनुं पूर्वे कह्युं एवुं असिद्धपणुं नथी एटले सिद्धपणुं छे. भावार्थः—जे अमारा देव रागादि दोष युक्त नथी माटे तेमनुं कहेवुं सत्य छे. हवे सिद्धांती तेमने जवाब दे छे जे तमारे एम न बोलवुं. केमजे तमारा देवनी प्रतिमाने विषे अथवा प्रतिमानी जोडे स्त्री प्रमुखनी संघाथे घटना करेली छे तेने जोतां एमने विषे रागादि दोषनी प्रत्यक्ष सिद्धि थाय छे ने तेमने जो रागादि दोष न होय तो तेमनी प्रतीमाउने विषे रागादि दोषने जणावनार एवां लक्षणनो आरोप कर्यो छे ते संभवे नहि. रागादि दोष लक्षण विनानी तेमनी प्रतिमाउ घमातीज नथी. पाषाणादि प्रतिमाओने विषे पाषाणादिकना आकार प्रगट रागादिकने जणावनारा छे जेवा एमां दोष भरेला छे तेवा आकारनी तेमनी प्रतिमाओ छे माटे निश्चे ते देव रागादि दोष सहितज छे.

टीकाः—॥ यदुक्तं ॥

सद्यंते ललनांगसंगमविधे रागोपरागोपगा,
द्वेषश्लेषजुषो भुजोर्जित मदारूस्ते च शस्त्रग्रहात् ॥
श्रेयःकल्पलतालवशास्त्ररचनाम्मोदप्ररोदस्पृशो,
ये देवा ननु संतुसंतु सहितास्तेवीतरागाः कथं ॥

अर्थः—ते वात शास्त्रमां कही छे जे अन्यदर्शनीना स्त्रीनो अंगसंग राखे छे तेथी रागरुपी ग्रहवडे गळायेला जणाय छे वळी उद्धत मदने जणावनार हस्तमुद्रा छे तेथी तथा हाथमां ग्रहण करे छे तेथी द्वेषवाळा ए देव छे एम जणाय छे. वळी कल्याणरुपी कल्पलताने नाश करे एवी शास्त्रनी रचना करवाथी मोहवाळा छे एम जणाता ए देवो क्रोधी होय तेथी ते वीतराग केम कहेवाय.

टीकाः—यदपि पार्थिवादिपुरुषपूज्यतान्यथानुपपत्त्या तेषां वीतरागत्वप्रसाधनं तदप्यविद्याविलसितं ॥ यतो यत एव तेषां प्रत्यक्षेण रागादिलक्षणं लक्षयंतोऽपि ते तान् वीतरागतयाध्यवसाय पूजयंत्यत एवैतन्मिथ्यात्वमुच्यते ॥

अर्थः—ए देवोने विषे वीतरागपणुं स्थापन करे छे ते ए बोले छे जे जो ए देवमां वीतरागपणुं छे तो राजा प्रमुख पुरुषो पूजे छे नहि तो केम पूजे? ते माटे ए प्रकारना अनुमान प्रयोगवडे वीतरागपणुं साधे छे तोपण ते सर्व अविद्यानो विलास छे एम जाणवुं जे माटे तेमनां रागादि लक्षण प्रत्यक्ष जणाय छे तोपण तेमने विषे वीतरागपणानो निश्चय करी पूजे छे एज हेतु माटे एने मिथ्यात्व कहीए छीए.

टीकाः—अतस्मिंस्तदिति प्रत्ययस्यैव तल्लक्षणत्वात् ॥ तस्मान्न रागादिमंतो देवाः किंतु संप्रत्यपि बिंबादिषु रागादिलक्षणविरुद्धदर्शनेन वीतरागतयानुमीयमानएव देव इति ॥

॥ यदुक्तं ॥

यस्य संक्लेशजननो, रागो नास्त्येव सर्वथा ॥
न च द्वेषोऽपि सत्वेषु शमेंधनदवानलः ॥

अर्थः—जेमां जे वस्तु नथी तेमां ते वस्तुनो निश्चय करवो तेने मिथ्यात्व कहीए. ए प्रकारे मिथ्यात्वनुं लक्षण छे ए हेतु माटे रागादि दोषवाळा होय ते देव न कहीए. त्यारे कोने देव कहीए? तो तेनो उत्तर पोतेज करे छे जे हालमां पण प्रतिमादिकने विषे रागादि लक्षणनो विरह देखवे करीने वीतरागपणे जे अनुमान करेला तेज देव कहीए. ते वात शास्त्रमां कही छे जे, क्लेशने उत्पन्न करनार एवो रागादिक दोष जेमां सर्वथा नथी. शांतीरूपी काष्टने बाळवा दावानल अग्नि समान एवो द्वेष पण जेने कोइ प्राणीमात्र प्रत्ये नथी.

टीकाः—न च मोहोपिसंज्ञाना छादनो ऽशूद्धवृत्तकृत् ॥ त्रैलोक्यख्यातमहिमा, महादेवः स उच्यते ॥ एवं विधश्चमहादेवो ऽर्हन्नेव ॥

यदुक्तम् ॥

अर्हन्नेव च लद्धलक्षणगणो रागादिलक्ष्मक्षते
र्देवः केवलमृद्धकेवलबलः स्याद्वीतरागस्ततः ॥

७२

स्वरूपवत्पर रूपेणापि सत्वात्त द्रूपापत्या स्वरुपापगम प्रसंगःअने स्त्वाभ्युपगमे वा जगद्वैचित्र्यभंगप्रसंगात् ॥

अर्थ—हवे सिद्धांती अन्यदर्शनीना एकांतमतने खंडन करे छे के एकांत मत एज अति श्रेष्ठ छे एम तमारे न बोलवुं. केम के जो एम कहेतो होय तो तारा वांछितने जणावनार बे विकल्प मात्र छे. ते कया. तो पदार्थ मात्र सद्रूप छे अथवा असद्रूप छे एम बे प्रश्न पूछीए छीए. तेमां जो सद्रूपज पदार्थ मात्र छे एम प्रथम विकल्प अंगिकार करे तो आ प्रकारे दूषण आवशे मात्र जे [illegible] सद्रूप पदार्थ छते पटना स्वरूपनी पेठे पटना स्वरूप [illegible] छे तेथी स्वरूपापगमनामा दोषनी प्राप्ति थशे [illegible] एकपणुं थशे. जो अनेक रूपपणानो अंगिकार [illegible] जगत्नुं जे विचित्रपणुं छे तेना नाशनो प्रसंग थशे [illegible]

टीका—[illegible] पदार्थः [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

अर्थ—[illegible] पदार्थो [illegible]

कारणभाव सिद्ध थशे. वळी घट जेम जळ लाववारुपी कार्यने करे छे तेम ओढवा पहेरवा प्रमुख पटादिकनुं पण कार्य करे. पण ते कार्य तो पटथी थतुं नथी, माटे सद्रूप एवाज पदार्थ छे एम एकांत पक्ष सिद्ध न थयो. हवे बीजो विकल्प जे पदार्थ मात्र एकांतपणे असद्रूप छे ते पण सिद्ध थतो नथी. केमजे जो एकांत असद्रूपनो अंगिकार करीए तो पटने पररूपनुं असत्पणुं छे तेमज पोताना रूपनुं पण असत्पणुं प्राप्त थशे. त्यारे गर्दजना शिंगमानी पेठे अत्यंत अजावनो प्रसंग थशे. त्यारे जळ जरवानुं जेने प्रयोजन छे ते पटने अर्थे नहि प्रयत्न करे. केमजे ते घटना स्वरूपनो अत्यंत जाव छे, माटे समस्त अर्थ क्रियानो विरह प्राप्त थयो ए हेतु माटे.

टीकाः—तस्मादेकांतेन सदसत्वाज्युपगमे जावस्यार्थक्रियानुपपत्तेरुजयरूपं वस्त्वज्युपगंतव्यम् न च सदसत्वयोरन्योन्यविरोधेनैकत्र समावेशाजावान्नोजयरुपता जावस्य संगछत इति वाच्यं॥ जावस्य स्वरुपेण सदसत्वाज्युपगमे हि स्याद्विरोधः स्वरूपपररूपाज्यां तु तदज्युपगमे कानुपपत्तिः॥

अर्थः—एकांतपणे पदार्थनुं सद्रूपपणुं अंगिकार करे तो अथवा एकांतपणे पदार्थनुं असद्रूप अंगिकार करे तो पदार्थ मात्रनी अर्थ क्रिया न थाय. माटे वस्तु मात्रनुं सद्रूप तथा असद्रूप अंगिकार करवुं. त्यारे प्रतिवादी बोल्यो जे जो एक वस्तुनुं सद्रूपपणुं तथा असद्रूपपणुं ए बे अंगिकार करशो तो एक बीजा साथे विरोध थवाथी एक वस्तुने विषे बेनो समावेश नहि थाय, माटे बेय रुपनो अत्यंता जाव प्राप्त थशे. त्यारे सिद्धांती बोल्यो जे

एम तमारे न बोलवुं. केमजे पदार्थनुं स्वरूपे करीने सद्रूपपणुं ने असद्रूपपणुं अंगिकार करीए तो तारो कहेलो विरोध प्राप्त थाय पण स्वरूप तथा पररूप ए बेवके सद्रूपपणुं तथा असद्रूपपणुं ए अंगिकार करीए तो शी असिद्धि थाय ? एटले शो दोष आवे कोइ न आवे.

टीकाः—तथाहि ॥ घटः स्वरूपेण द्रव्यतः पार्थिवत्वेन सामान्यादिना ॥ क्षेत्रत इहत्यत्वेन न माथुरत्वादिना ॥ कालतो वर्तमानत्वेन नातीतादिकालत्वेन ॥ भावतः श्यामत्वेन न रक्तत्वादिनेति ॥ इतरथाप्यन्यत्वादिनापि तत्स्वरूपेऽनेकरूपत्व प्रसङ्गो नाशत्वेन ॥ तस्मात् सदसद्रूपं वस्त्विति ॥

अर्थः—जेम देखाडे छे जे घट स्वरूपे करीने द्रव्यथी पृथ्वीसंबंधी घट छे पण अन्यपणे नथी. तथा क्षेत्रथी आ क्षेत्रनो छे पण मथुरादि क्षेत्र संबंधी नथी. तथा कालथी वर्तमानकालनो छे पण अतीतादि कालनो नथी. तथा भावथी श्यामपणे छे पण रक्तादिपणे नथी. एम न कहीए ने बीजी रीते कहीए तो ए घट अनेक रूपपणुं अथवा पोताना रूपनो नाश ए बे दोषनो प्रसंग आवे ए हेतु माटे सर्व वस्तुनुं सद्रूपपणुं तथा असद्रूपपणुं ए रीते सिद्ध थयुं

टीकाः—[illegible] सदसत्त्वादिविरोधमाहुः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

त्सिद्धांतात् ॥ सतश्चोत्पादानुपपत्तेः ॥ क्षणिकैकांतिवादिनामपि सौगतानां मते असते यसतापि कारणेन कार्यं न जन्येत असं- देयकारणे कार्यमित्यभ्युपगमात् ॥ तथा च कारणे सर्वथा कार्यानन्वयान्मृत्पिंडादपि घटो नोत्पद्येत ॥ उत्पादे वातंतवादिभ्यो- प्युत्पद्येत ॥ अकारणत्वाविशेषादिति ॥

अर्थः—वळी एकांतपणे वस्तुनुं सद्रूपपणुं तथा असद्रूप- पणुं अंगिकार करनारने मते कोइ प्रकारे विशेषनो प्रसंग नथी. एटले ए बे मतमां बराबर स्वदोषनो प्रसंग आवे छे, तेज देखाडे छे. जे नित्य एकांतवादि एवा सांख्यमतने विषे जेम असत् एवा मृत्ति- काना पिंडथके घट नथी उत्पन्न थतो तेमज विद्यमान एवा पण मृत पिंडथके घट नहि उत्पन्न थाय. केमजे सत् एवुंज कार्य कारण छे एवो ते सांख्यमतवाळानो सिद्धांत छे. ने जे सत् छे तेनी उत्प- त्तिनी असिद्धि छे ए हेतु माटे क्षणिक एकांतवादि एवा पण बौ- द्धमतने विषे असत् थकीज जेम कार्य उत्पन्न नथी थतुं एम स- त्कारणथी पण कार्य नहि उत्पन्न थाय. केमजे कारणने विषे असत् एवुंज कार्य छे एम तेमनुं अंगिकार करवापणुं छे. वळी कारणने विषे सर्वथा कार्यनो अन्वय नथी एवो तेमनो मत छे माटे मृ- त्तिकाना पिंडथी पण घटनी उत्पत्ति नहि थाय अथवा तो तंतु मनु- ख्यथी पण घटनी उत्पत्ति थवी जोइए. केमजे अकारणमां विशेषपणुं तेमना मतमां नथी माटे.

टीकाः—अत्र च बहु वक्तव्यं ॥ तच्चाप्रकृतत्वान्नोच्यते ॥ एवं चाप्रमाणिकैकांतविषयतयोपपद्यते तत् ज्ञानस्याऽज्ञानत्वं॥

तथा जवहेतुत्वयादृच्छिकोपलंजत्वनिष्फलत्वेज्योपि ॥ यदाह ॥ सदसदविसेसणाउ॥जवहेउं जइ छिन्नवलंजाउ॥ नाणफलाजावाउ॥ मिच्छदिठिस्स अन्नाणं ॥

अर्थः—आ जगाए घणी वात ए संबंधी कहेवाय छे पण आ प्रकरण बीजी वातनुं चाले छे माटे ते वातनो विस्तार नथी कहेता. हवे जे अप्रमाणिक एवा एकांत मतने अंगिकार करनारुं जे ज्ञान ते अज्ञान कहीए. केमजे ए ज्ञानने संसारनुं कारणपणुं छे तथा पोतानी इच्छामां आवे तेम अंगिकार करवापणुं एमां रह्युं छे ए हेतु माटे. तथा ए ज्ञाननुं निष्फळपणुं छे ए हेतु माटे ए त्रणे कारणे पण मिथ्या दृष्टिनुं ज्ञान ते अज्ञानज छे. ते वात शास्त्रमां कही छे जे मिथ्या दृष्टिना ज्ञानमां वस्तुनुं एकांत सद्रूप मानवामां तथा कांइ असद्रूप मानवामां विशेष नथी. तथा ते ज्ञान संसारनुं कारण छे तथा ते ज्ञान पोतानी इच्छा प्रमाणे कल्पेलुं छे तथा ते ज्ञाननुं फळ नथी माटे ए ज्ञान ते अज्ञानज छे.

टीकाः—एवं च सिद्धं तेषां वस्तुतो मूर्खत्वं ॥ तथा च तेषु सर्वज्ञत्वाध्यारोपो मिथ्यात्वमिति ॥ तत्वज्ञं समस्तशास्त्ररहस्य वेदिनं परमार्हतं पंचमहाव्रतधारिणं सर्वज्ञप्रायं सितांबरसूरिं अज्ञीयति मूर्खीयति ॥ एवं च तत्वज्ञे गुरावज्ञत्वारोपो मिथ्यात्व- विजृंभितं ॥

अर्थः—ए प्रकारे वस्तुताए तेमनुं मूर्खपणुं सिद्ध थयुं. वळी

तेमने विषे सर्वज्ञपणानो आरोप करवो तेने मिथ्यात्व कहीए. ने तत्वज्ञ एटले शास्त्र रहस्यनो जाण ने उत्कृष्टो आर्हंत एटले अरिहंतनां वचन प्रमाणे रहेनारो ने पंच महाव्रतधारी ने सर्वज्ञ जेवो जे श्वेतांबरसूरि तेने मूर्ख जेवो जाणे छे माटे तत्वना जाण एवा गुरुने विषे अज्ञानीपणानो आरोप करवो ते सर्व मिथ्यात्वनुं प्रकाशपणुं छे.

टीकाः—एतावता चागुरौ गुरुजावना गुरौ चागुरुधीरिती मिथ्यात्वं लक्षितं ॥ उन्मार्गीयति उत्पथत्वेन मन्यते जैनमार्गं॥ अपथं कुतीर्थिकमतं सम्यक्पथीयति सन्मार्गीयति॥ अत्र च॥ जैनमार्गस्योन्मार्गत्वं त्रयीबाह्यत्वादिना कुतीर्थ्यपथस्य च सत्पथत्वं तदंतर्नावादिनाच्युपगच्छंति मिथ्यादृशः ॥

अर्थः—एणे करीने अगुरुने विषे गुरुपणानी जावनाने गुरुने विषे अगुरुपणानी बुद्धि एने मिथ्यात्व कहीए एम देखाड्युं. जैनमार्गने उन्मार्गमां माने छे ने कुतीर्थी लोकोना मतने साचो मार्ग जाणे छे. आ जगाए मिथ्यादृष्टि जैनमार्गने उन्मार्गपणुं स्थापन करे छे ते वेदथी बाह्यपणुं ए मतनुं छे इत्यादि कारणवडे ने कुतीर्थिनो जे उन्मार्ग छे तेने सन्मार्गपणुं स्थापन करे छे ते कुतीर्थीनो मारग वेदने मळतो आवे छे ए हेतु माटे.

टीकाः—एतच्चासुंदरं ॥ त्रय्याः प्रामाण्येन हि तद्बाह्यतया जैनपथस्योत्पथत्वं स्यान्न चैवमस्ति तस्यालोकलोकोत्तरविरुद्धार्थप्रतिपादकत्वेनाप्रामाण्यात् ॥ तथाहि धर्ममार्गस्य मूलं दया सर्वदर्शनेषु गीयते ॥ यदाह ॥ पंचैतानि पवित्राणि,

सर्वेषां धर्मचारिणां ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं, त्यागो मैथुनवर्जनं॥ अस्याश्च यागादिषु छागादिहिंसामुपदिशंत्याः कथं धर्ममार्गत्वं॥

अर्थः—ए वात असुंदर छे एटले अघटती छे केमजे जो वेदनुं प्रमाणपणुं होयतो तेणे करीने निश्चे वेद बाह्य जैन धर्मनुं उन्मार्गपणुं होय पण एम तो नथी. केमजे लोक विरुद्ध तथा लोकोत्तर विरुद्ध एवा अर्थनुं प्रतिपादन करवापणुं छे माटे वेदनुं अप्रमाणपणुं छे ए हेतु माटे तेज देखाडे छे. जे धर्म मार्गनुं मूल सर्व दर्शनमां एक दयानेज कह्युं छे. ते वात शास्त्रमां कही छे जे धर्मना आचरण करनार सर्वे पु०षोने आ पांच वातां पवित्र छे एटले करवा योग्य छे, ते कयां? तो एक अहिंसा, बीजुं चोरी न करवी, त्रीजुं सत्य भाषण करवुं, चोथुं दान आपवुं, पांचमुं ब्रह्मचर्य राखवुं. माटे यज्ञादिकने विषे बकरा प्रमुखनी हिंसा करवानुं उपदेश करनार वेदमार्गने धर्ममार्गपणुं केमज होय?

टीकाः—अथ त्रयीविहितत्वात्तद्धिंसाया धर्महेतुत्वेन स्वर्गफलत्वादव्याहतं तस्याधर्ममार्गत्वमिति चेत् न ॥ तस्या एवा प्रामाण्यात्॥तथाहि त्रय्याः प्रामाण्यं यदभ्युपेयते भवता तत्किमपौरुषेयत्वात् अहोईश्वरकर्तृकत्वात् उताव्याहतार्थप्रतिपादकत्वात् आहोस्विदव्यभिचारिप्रमाजनकत्वात् ॥

अर्थः—हवे अन्यदर्शनी आशंका करे छे जे वेदमां कहेली हिंसा ते धर्मनुं कारण छे माटे निर्बंध एवुं स्वर्ग फळ ते हिंसाथी प्राप्त थशे माटे वेदमां कहेली हिंसा ते धर्म मार्ग छे एम जो तारुं

कहेवुं होय तो ते न कहेवुं, केमजे तेनुं अप्रमाणिकपणुंज छे ए हेतु माटे. तेज कही देखाडे छे जे वेदनुं प्रमाणिकपणुं तमो अंगिकार करो छो ते शुं वेदवचन पुरुषे नथी कह्यां एम अपौरुषेय वचनपणुं एमां छे ए हेतु माटे. अथवा वेद ईश्वरे कर्या छे ए हेतु माटे. अथवा वेदमां परस्पर विरुद्ध अर्थ प्रतिपादन कर्यो नथी ए हेतु माटे. अथवा अव्यभिचारी प्रमाणनुं उत्पन्न करवापणुं एमां रह्युं छे ए हेतु माटे.

टीकाः—न तावदाद्यः ॥ किल पुरुषाणां रागादिमत्वेन तद्वचनस्य प्रतारकवाक्यवद्दोषवत्त्वाशंकया हानोपादानाविषयत्वेन अप्यास्तदभ्युपगमो भवतः ॥ एतच्चासंगतं ॥ वचनस्य पौरुषेयत्वासिद्धेः ॥उच्यते इति वचनमित्यन्वर्थस्य विवक्षाप्रयत्नोदीरितकोष्टवायभिहन्यमानताल्वादिकारणकलाप मंतरेणानुपपत्तेः ताल्वादीनां च पुरुषमंतरेणासंभवात् ॥

अर्थः—हवे ए प्रकारे चार विकल्प उत्पन्न करी तेनुं खंडन करे छे जे प्रथमनो विकल्प पुरुषे वेद कर्या नथी तेनुं खंडन. जे पुरुषोने रागादि सहितपणुं छे तेणे करीने तेनां वचनने ठग पुरुषनां वाक्यनी पेठे दोष सहितपणानी आशंकावडे तमारे ते वेदनुं अंगिकार करवापणुं नथी ए आश्चर्य छे. केमजे तमारे तो हितकारीना वचननी पेठे अंगिकार करवापणुं छे माटे ए वात असंगत छे. वेदवचन अपुरुषनां कहेलां छे ए वात सिद्ध थती नथी. पुरुषनांज कहेलां छे. केमजे वचन शब्दनो ए अर्थ छे जे बोलीए तेने वचन कहीए. ए प्रकारे ए शब्दनोज घटतो अर्थ तेनी कहेवानी इच्छावडे प्रयत्नथी उच्चारण थतो ने हृदयादि आठ स्थानमां अफळातोज

शब्द तेनुं तालु आदिक जे उच्चारण स्थान ते प्रमुख जे कारणनो समूह ते विना तेनी सिद्धि नथी. माटे पुरुष विना तालु आदि स्थाननो संभव नथी ए हेतु माटे अपुरुषनो कहेलो वेद छे ए वात व्यर्थ पडी.

टीकाः—नापि द्वितीयः ॥ तस्य रागादिमलेन तद्वचनस्याप्रामाण्याशंकाकलंकितत्वात् ॥ रागादिमत्त्वं तस्यासिद्धमितिचेन्न अंगनादिसंबंधात्तदुपपत्तेः ॥ अर्वागवस्थायां तदुपपत्तावपि परावस्थायां तदभावात् तद्वचनस्य प्रामाण्यमितिचेन्न ॥

अर्थः—हवे बीजो विकल्प जे वेद ईश्वरे करेलो छे तेनुं खंडन ॥ जे ते तमारा ईश्वरने रागादि सहितपणुं छे माटे तेनुं वचन अप्रमाण छे एवी आशंकावडे कलंकित छे. त्यारे तमे कहेशो जे अमारा ईश्वरने रागादि नथी, तो एम न बोलवुं. केमजे स्त्री आदिकना संबंधथी रागादिक छे एम पोतानी मेळेज सिद्ध थाय छे. त्यारे तमे कहेशो जे ए तो पूर्व अवस्थामां रागादिकनी उत्पत्ति छते पण पर अवस्थामां ते रागादिकनुं असिद्धपणुं छे माटे ईश्वर वचनरूपी वेदनुं प्रमाणपणुं छे. तो एम न कहेवुं.

टीकाः—भवदभ्युपगमेन तस्यानादिसिद्धत्वादर्वाक्परावस्थाभिधानविरोधात् ॥ भवतु वा कथंचित्तस्यावस्थाद्वयं तथापि परावस्थायामपि शरीरपरिग्रहमंतरेण ताल्वादि कारणाभावेन तस्य त्रयीप्रतिपादनासंभवात्कथं तस्यास्तत्कर्तृकत्वं सिध्येत्॥

अर्थः—केमजे तमारा मतने आश्रि ते ईश्वरनी पूर्व अवस्था तथा पर अवस्था तेनुं जे कहेवुं तेमां विरोध छे. केमजे तमो ईश्वरने अनादि सिद्ध मानो छो ए हेतु माटे. अथवा कोइ प्रकारे ते ईश्वरनी बे अवस्था होय तो पण परावस्थामां पण शरीर परिग्रह कर्या विना अक्षरनुं उच्चारण करवामां कारणरूप तालुआदि स्थान विना वेदनुं प्रतिपादन करवानो संभव नथी. माटे वेदनुं ईश्वर कर्तापणुं केम अंगिकार करीए?

टीकाः—नापि तृतीयः ॥ न हिंस्यात्सर्वभूतानीत्यनेनाविशेषेण हिंसानिषेधमभिधायाग्नीषोमीयं पशुमालभेत स्वर्गकाम इत्यादिना तद्विधिमुपदिशंत्यास्तस्याः परस्पर विरुद्धार्थप्रतिपादनात् ॥ अथ स्वर्गादिफलविशेषोद्देशेन हिंसाविधेरुपदेशान्न तेन सामान्यविधिविहिताहिंसानिषेधव्याघातः ॥ अपवाद विषयं परिहृत्योत्सर्ग प्रवृत्तेरितिचेन्न विकल्पा सहत्वात्॥

अर्थः—हवे त्रीजो विकल्प जे परस्पर अविरोध जणावनार तेनुं खंडन करे छे. जे वेदमां एम कह्युं छे जे 'कोइ जीव प्राणी मात्रनी हिंसा न करवी.' ए प्रकारे हिंसानो निषेध करीने वळी कह्युं जे 'जेने स्वर्गनी इच्छा होय ते अग्नि तथा सोम बे देव जेमनो एटले यज्ञ संबंधी पशुनुं आलंबन करे.' इत्यादि वचनवमे हिंसानो विधि देखामनार वेदने परस्पर विरोधी अर्थने प्रतिपादन करवापणुं छे ए हेतु माटे. त्यारे अन्य दर्शनी बोल्यो जे स्वर्गादि फळ विशेष उद्देशीने हिंसा विधिनो उपदेश छे नथी सामान्य विधिवमे करेलो जे हिंसानो निषेध ते प्रत्ये विरोध नथी. माटे अपवादनो परिहार करी

उत्सर्गनी प्रवृत्ति थशे. त्यारे सिद्धांती बोल्या जे एम तमारे न कहेवुं, केमजे विकल्प बने सहन थाय एम नथी. एटले विरोध उत्पन्न करी एनुं खंडन थाय छे.

टीकाः—न हिंस्यादित्यादिका हि श्रुतिः किं फलवती न वा. न चेत् किमनयाऽजगलस्तनकल्पया फलोद्देशाभावे प्रेक्षावत्प्रवृत्त्यनुपपत्तेः॥प्रयोजनमनुदिश्य न मंदोऽपि प्रवर्तत इति न्यायात् ॥ फलवती चेत् केन फलेन किं स्वर्गादिना आहो ऐहिकेन। उतोभयेन ॥

अर्थः—जे न हिंसा करवी इत्यादिक जे श्रुति ते शुं फळवाळी छे अथवा नथी? जो नथी तो बोकडीना गळे स्तन थाय छे ने ते निरर्थक छे तेना जेवी निरर्थक एवी ए श्रुतिनुं शुं प्रयोजन छे' केमजे ज्यारे फळनो उद्देश नथी एटले ए श्रुति करवानुं फळ नथी त्यारे बुद्धिवाननी प्रवृत्ति पण थनार थशे, केमके प्रयोजननो उद्देश कर्या विना मंदबुद्धिवाळो पण नथी प्रवर्ततो. ए प्रकारनो न्याय छे ए हेतु माटे. ने जो ए श्रुति फळवाळी छे एम कहेशो तो कीया फळवाळी छे? शुं स्वर्गादि फळवाळी छे? अथवा आ लोकना फळने कहेनारी छे? अथवा आलोक परलोक संबंधी फळने कहेनारी छे?

टीका—न प्रथमस्तृतीयो वा ॥ विशिष्टस्य धर्मादिकारण- स्विकल्पस्य तवैव सात्म्यनिषिद्धः कृतं निराबाधसुखसंगता- दिना सुसंयोग ॥ नापि द्वितीयः ॥ यतोहि ॥ प्रतिनियतकाल

विषयतयोजयोरपि श्रुत्योः सामान्यविधित्वं विशेषविधित्वं वा प्रसज्येत ॥ विनिगमनायां प्रमाणाजावात् ॥

अर्थः—प्रथमनो तथा त्रीजो ए बे विकल्प न ग्रहण कर. केम जे आगळ कहेली जे श्रुति तेथीज आ लोक परलोकनुं फळ सिद्ध थशे. माटे अपराध विनाना पशुना वधने कहेनारी बीजी श्रुति ते वमे सर्युं. एटले बीजी श्रुति कहेवानुं शुं प्रयोजन ठे? वळी बीजो विकल्प पण नथी घटतो. केम जे बे श्रुतियोनुं फळ बरोबर नियमाये ठे तो बे श्रुतियोनो पण सामान्य विधि अंगिकार करो अथवा विशेष विधि अंगिकार करो. केम जे एक श्रुति अंगिकार करवी एवा निश्चयनो अजाव ठे.

टीकाः—न चैतद् जवतोप्यजिमतं॥तस्मान्न हिंस्यादित्यादिश्रुत्यैव सकलसत्वाजयदानप्रतिपादनड्ढर्ल्लालितया ऽनायाससाध्यार्थया स्वर्गादिफलसिद्धेः किमनया यागकारिणां पिशितलोलता मात्राजिव्यंजिकयाऽमुत्र नरकपातकारिण्या बहुवित्तव्ययायास साध्यार्थया पशुवधश्रुत्येति ॥

अर्थः—एक श्रुति एटले न हिंसा करवी कोइनी, अथवा यज्ञमां हिंसा करवी, ए श्रुति ए बेमांथी एक मानवी एक न मानवी एवो तो तारो पण मत नथी. ते माटे समस्त प्राणी मात्रने अजयदान आपवानुं जे प्रतिपादन करवुं तेमां दरिद्र एटले सर्वथा अजयदान कहेवा न समर्थ थती एवी ने प्रयास विना साध्य ठे अर्थ जेनो एवी ने हिंसा करवी इत्यादि श्रुति तेणे करीनेज स्वर्गादि फळनी

सिद्धि थशे माटे यज्ञ करनारने मांस भक्षणनी लालच मात्रने ज णावनारी ने परलोकमां नरकपात करावनारी ने घणा धननो ख च ने महा प्रयास तेणे करीने साध्य पदार्थने जणावनारी पशु म वा श्रुतिनुं शुं प्रयोजन छे?

टीकाः—नापिचतुर्थः ॥ यागादिविहितायां हिंसायाम प्यहिंसाबुद्ध्युत्पादनेन रागादिमत्तयाऽनाप्तेष्वप्याप्तबुद्ध्युत्पा नेन च विपर्ययज्ञानजननात् ॥ तथा चोक्तं विप्रोत्तमेन परीक्षा पुरस्सरमभ्युपेतजिनशासनेन श्रुतीनां परस्पर व्याहतार्थता दिकं मीमांसमानेन प्रमाणिकचक्रचूडामणिना पंडितधन पालेन ॥

अर्थः—चोथो विकल्प पण घटतो नथी केमजे यज्ञादिक विषे करेली जे हिंसा तेमां पण अहिंसा बुद्धिने उत्पन्न करनारी श्रुति छे माटे. तथा पोतामां रहेला जे रागद्वेषादि दोष तेणे करी अहितकारी एटले यज्ञने विषे हिंसाने कहेनार पुरुषो तेमने हि हितकारी पणानी बुद्धि उत्पन्न करवी ते रूपी विपरीत ज्ञानने उत्प करवापणुं वेदमां रह्युं छे, ए हेतु माटे ब्राह्मणमां श्रेष्ठ परीक्षा जिनशासननो अंगीकार ने श्रुतिओनुं परस्पर विरुद्धार्थपणुं इत्या विचार करनार ने प्रमाणिक पुरुषना समूहनो मुकुटमणि एवा पंडित धनपाल तेणे आ प्रकारे कह्युं छे.

टीकाः—स्वर्गःस्यन्मुनां यत्रामघट्टरो यंया विनेश्ठा भुन

स्वर्गश्छागधाद्धिनोति च पितॄन् विप्रोपभुक्ताशनम् ॥
आप्ताश्छद्मपराः सुराः शिखिहुतं प्रीणाति देवान् हवि
रेत्थं वल्गु च फल्गु च श्रुतिगिरांकोवेत्ति लीलायितं ॥

अर्थः—अपवित्र वस्तुने नक्कल करनारी गायोनो स्पर्श पापने नाश करे छे, तथा संज्ञा रहित पींपळा प्रमुख वृक्ष वंदनीक छे, तथा बकरां मारवाथी स्वर्ग मळे छे, तथा ब्राह्मण लोकोए जोजन करेलुं जे अन्न ते पित्रिलोकोने तृप्ति करे छे, तथा कपटी देव छे ते हितकारी छे, तथा अग्निमां होम्युं जे हुतद्रव्य ते देवताने प्रसन्न करे छे.ए प्रकारे सुंदर अने वळी निष्फळ एवुं वेदवाणीनुं लीलाचरण कोण जाणे छे ?

टीकाः—एवं च त्रय्या अप्रामाण्ये कथं तस्या धर्ममार्गत्वं ॥ तथा च सति तन्मूलस्य कुतीर्थिकपथस्यापि सन्मार्गत्व मपास्तं ॥ जिनमतस्यैव त्वनेकांतरूपतया प्रवृत्तिनिवृत्त्यादिरुप सकललोकव्यवहारप्रवर्त्तकत्वेन प्रामाण्यं तत्प्रामाण्याभ्युपगमर्मतरेण वस्तुतस्तस्याप्यनुपपत्तेः ॥

अर्थः—ए प्रकारे वेदनुं अप्रमाणपणुं छते धर्म मार्गपणुं तेनुं केम होय? नज होय. ज्यारे वेदनुं अप्रमाणपणुं थयुं त्यारे वेद छे मूळ जेनुं एवो कुतीर्थिक एटले अन्यदर्शनी तेना मारगनुं पण खंडन थयुं. ने जिनमतने तो अनेकांतरूपपणुं छे माटे प्रवृत्ति तथा निवृत्ति इत्यादिरूप जे सकल लोक व्यवहार तेनुं प्रवर्त्तकपणुं छे

तेणे करीने प्रमाणिकपणुं छे. लोक व्यवहारनुं प्रमाणिकपणुं कर्या वि वस्तुताए प्रमाणनुं पण अप्रमाणिकपणुं थाय.

टीकाः—यदुक्तं ॥

जेण विणा लोगस्स वि, ववहारो सव्वहा न निव्वडइ ।
तस्स भुवणेक्क गुरुणो, नमो अणेगंतवायस्स ॥

अर्थः—जे अनेकांत विना लोगनो व्यवहार सर्वथा नथी नीपजतो,ते जगद्गुरु परमात्मानुं अनेकांत वाक्य तेने नमस्कार करुं

टीकाः—तथा च पूर्वापराऽव्याहतार्थप्रज्ञापकत्वादादि मध्यावसानेषु दोषवर्जितत्वान्निःश्रेयसपथत्वाच्चेतरप्रतिक्षेपेण तस्यैवसन्मार्गत्वं ॥

॥ यदुक्तं ॥

स्याच्छब्दयुग्नयसमुच्चयक्लीढसर्वं ।
ज्ञावाचज्ञासनमघोरप वर्गमार्गम् ॥
पूर्वापरव्यतिहतिच्युतमत्रिकोटि ।
दोषं मते तु कुपथोपति कोऽत्र जैनम् ॥

अर्थः—वळी जैनमतमां पुर्वे कहेलो तथा पछी कहेलो जे अर्थ तेनुं निर्बाधपणे प्ररूपकपणुं छे ए हेतु माटे, तथा आदि मध्य ने अंत ने विषे दोष रहितपणुं छे ए हेतु माटे,तथा बीजा मारगनुं खंडन करवुं तेणे करीन पोतानुं ज सत्यमार्गपणुं प्रतिपादन कर्युं छे माटे मोक्ष मार्ग

पणुं जिनमतनुंज छे. ते शास्त्रमां कह्युं छे जे शब्द सहित जे नयनो समूह तेणे करीने व्याप्त एवा जे सर्वजाव तेनुं प्रगट करनार मोक्षमारगरूप तथा पूर्व तथा अपर जे व्यवधान तेणे रहित तथा जेमां कोइ प्रकारनो दोप नथी एवा जिनमतने आ जगतमां कोण कुमार्ग कही शके छे ?

टीकाः—एवं च वास्तवे जैनमार्गे अवास्तवत्वारोपः ॥ अवास्तवे च कुतीर्थ्यपथे वास्तवत्वसमारोपो मिथ्यात्वमहिम्नेति॥एतावता च तत्वे ऽतत्वबुद्धिरतत्वे च तत्वबुद्धिरिति मिथ्यात्वलक्षणमाविर्जावितं ॥ स्वमगुणाग्रण्यमित्यादि तु पूर्ववत्॥ तदाश्चर्यमेतन्मिथ्यात्वोपहृता यदेवं विपर्ययेण सर्व मवसाय गुणिनो द्विषंतीति वृत्तार्थः ॥

अर्थः—ए प्रकारे सर्वथा सत्य एवो जैन मार्ग छे तेने विषे असत्यपणानो जे आरोप करवो तथा अयथार्थी एटले असत्य एवो अन्यदर्शनीनो जे मार्ग तेने विषे सत्यपणानो जे आरोप ते मिथ्यात्वना महिमावमे छे. एणे करीने तत्वने विषे अतत्वनी बुद्धि करवी तथा अतत्वने विषे तत्वबुद्धि करवी एज मिथ्यात्वनुं लक्षण प्रगट कर्युं. तथा पोते गुण रहितना शिरोमणि छे तो पण पूर्वे कह्युं ते प्रमाणे माने छे ए मोटुं आश्चर्य छे. पोते मिथ्यात्व वमे हणायेला छे तेथी एम विपरीतपणे सर्व जाणी गुणी पुरुषोनो द्वेष करे छे. ए प्रकारे आ काव्यनो अर्थ थयो. ॥ ३१ ॥

टीकाः—ननु किमिदानीं गुणिनिः प्रयोजनं, संघ एव च.

सातलोलुपः साधुसाध्वीश्रावकश्राविकासमवायो भूयानिह संघ उच्यते स एव बलिष्ठत्वात् क्रूरत्वात् व्याघ्रः॥ शार्दूलस्तद्वशस्य तदधीनस्य दासवयन्नतत्र नियोज्यस्येति यावत् ॥

अर्थः—धर्मना अर्थी एवा जव्य प्राणीरूपी जे मृगनो समूह, जव्य प्राणीने मृग जेवा शायी कह्या? तो तेमनी जोळाशथी तथा बल रहितपणाथी, ते मृगने संघरूपी मोटा वाघे फाड्यो ठे. ते संघ कीयो? तो जैनमार्ग मुकी उन्मार्गे चालतो, तथा उत्सूत्रनी प्ररुपणा करतो, तथा शास्त्रनी आज्ञानी अपेक्षा न राखतो, पोतानी नजरमां आवे तेम चालतो, तथा शातासुखनो लालची एवो साधु साध्वी श्रावक श्राविकानो घणो जे समूह तेने संघ कहीए. तेज बळवानपणाथी तथा क्रूरपणाथी वाघ समान ठे तेने आधीन थयेलो एटले दासनी पेठे ज्यां त्यां मोकलवा योग्य एवो जे पुरुष तेनो मोक्ष क्यांथी होय ए प्रकारे संबंध ठे.

टीकाः—द्वितीयपक्षे ग्रासविषयीनूतस्य ॥ मोक्ष इति श्लिष्टं पदं ॥ तेन जंतुपक्षे मोक्षो निर्वाणं ॥ हरिणपक्षे च त्रुटनं व्याघ्रात्पलायनमिति यावत् ॥ कुतःकस्मान्नकथं चिदित्यर्थः ॥ ननु मुक्त्यनुगुणानुष्ठानान्नावात्तस्य मोक्षाजावः किमायातं संघस्येत्यत आह ॥

अर्थः—हवे बीजोःपक्ष एटले जेम कोइ पुरुषने वाघेमजबूत फाड्यो होय ते क्यांथी मूकाय?तेम जव्य प्राणीरुपी हरिण संघरुपी

१५१	कृप	अवहाव
१५२	प्र + दीप प्रा० पदीव	तेअव संदुम संधुक्क अब्भुत्त
१५३	लुभ	संभाव
१५४	क्षुभ	खउर पड्डुह
१५५	आ + रभ	आरभ आढव
१५६	उपा + लभ	झंख पच्चार वेलव
१५७	जृम्भ	जम्भा
	विजृम्भ (वजम्भ)	
१५८	नम	णिसुढ (भारपूर्वकनमने)
१५९	वि + श्रम प्रा० वीसाम	णिव्वा
१६०	आ + क्रम	ओहाव उत्थार छुंद

१६१ भ्रम

- टिरिटिल्ल
- ढुंढुल्ल
- ढंढल्ल
- चक्कम
- भम्मड
- भमड
- भमाड
- तलअंट
- झंट
- झंप
- भुम
- गुम
- फुम
- फुस
- ढुम
- ढुस
- परी
- पर

१६२ गम्

- अई
- अइच्छ
- अणुवज्ज
- अवज्जस
- उक्कुस
- अक्कुस
- पच्चड्ड
- पच्छंद
- णिम्मह
- णी

१९३ आ + गम्

१९४ सम् + गम्

१९५ अन्या + गम

१९६ प्रत्या + गम्

१९७ शम

१९८ रम

१६९	पूर	अग्घाड
		अग्घव
		उद्धुमा
		अंगुम
		अहिरेम
१७०	त्वर	तुवर
		जअड
१७३	क्षर	खिर
		झर
		पज्झर
		पच्चड
		णिच्चल
		णिट्टुअ
१७४	उत् + छल	उत्थल्ल
१७५	वि + गल	थिप्प
		णिट्टुह
१७६	दल	विसट्ट
	वल	वंफ
१७७	भ्रंश	फिड
		फिट्ट
		फुड
		फुट्ट
		चुक्क
		भुल्ल
१७८	नश	णिरणास
		णिवह
		अवसेह
		पडिसा
		अवहर

१७९	अव + काश	ओवास
१८०	सं + दिश	अप्पाह
१८१	दश	निअच्छ पेच्छ अवयच्छ अवयज्झ वज्ज सव्वव देक्ख ओअक्ख अवक्ख अवअक्ख पुलोअ पुलअ निअ अवआस पास
१८२	स्पृश	फास फंस फरिस छिव छिह आलुंख आलिह
१८३	प्र + विश	रिअ
१८४	प्र + मृश प्र + मुष	म्हुस

१८५	पिष	णिवह णिरिणास णिरिणज्ज रोञ्च चड्डु
१८६	भष	भुक्क
१८७	कृप्	कड्ढ साअड्ढ अंच अणच्छ अयञ्छ आइञ्छ
१८८	,,	अक्खोड (असिकर्षणे)
१८९	गवेष	ढुंढुल्ल ढंढोल गमेस घत्त
१९०	श्लिष प्रा० सिलेस	सामग्ग अवयास परिअंत
१९१	म्रक्ष	चोप्पड
१९२	काङ्क्ष	आह अहिलंघ अहिलंख वच्च वंफ मह सिह विलुंप

१९३	प्रति + ईक्ष्	सामय विहीर विरमाल
१९४	तक्ष	तच्छ चच्छ रम्प रम्फ
१९५	वि + कस	कोआस वोसट्ट
१९६	हस	गुंज
१९७	स्रंस	ल्हस डिंभ
१९८	त्रस	डर वोज्ज वज्ज
१९९	नि + अस	णिम णुम
२००	परि + अस्	पलोट्ट पल्लट्ट पल्हत्थ
२०१	निः + श्वस	झंख
२०२	उत् + लस	ऊसल ऊसुंभ णिल्लस पुलआअ गुंजोल्ल आरोअ

१८५	पिष	णिवह णिरिणास णिरिणज्ज रोञ्च चड्ड
१८६	भष	भुक्क
१८७	कृष्	कड्ढ साअड्ढ अंच अणच्छ अयञ्छ आइञ्छ
१८८	,,	अक्खोड (असिकर्षणे)
१८९	गवेष	ढुंढुल्ल ढंढोल गमेस घत्त
१९०	श्लिष प्रा० सिलेस	सामग्ग अवयास परिअंत
१९१	म्रक्ष	चोप्पड
१९२	काङ्क्ष	आह अहिलंघ अहिलंख वच्च वंफ मह सिह विलुंप

१९३	प्रति + ईक्ष्	सामय विहीर विरमाल
१९४	तक्ष	तच्छ चच्छ रम्प रम्फ
१९५	वि + कस	कोआस वोसट्ट
१९६	हस	गुंज
१९७	स्रंस	ल्हस डिम्भ
१९८	त्रस	डर वोज्ज वज्ज
१९९	नि + अस	णिम णुम
२००	परि + अस्	पलोट्ट पल्लट्ट पल्हत्थ
२०१	निः + श्वस	झंख
२०२	उत् + लस	ऊसल ऊसुंभ णिल्लस पुलआअ गुंजोल्ल आरोअ

२०३	भास	भिस
२०४	ग्रस	घिस
२०५	अव + गाह	ओवाह
२०६	आ + रुह	चड
		वलग्ग
२०७	मुह	गुम्म
		गुम्मड
२०८	दह	अहिऊल
		आलुंख
२०९	ग्रह	वल
		गेण्ह
		हर
		पंग
		निरुवार
		अहिपच्चुअ
२११	छिद	छिन्द
	भिद	भिन्द
२१७	युध	जुज्झ
	बुध	बुज्झ
	गृध	गिज्झ
	क्रुध	कुज्झ
	सिध	सिज्झ
	मुह	मुज्झ
२१८	रुध	रुन्ध
		रुम्भ

२१९	सद्	सड
	पत	पड
२२०	क्वथ	कढ्ढ
	वर्ध	वड्ढ
२२१	वेष्ट	वेढ
२२२	सं + वेष्ट	सं + वेल्ल

मागधीना धातु

२९७ प्र + ईक्ष = प्रेक्ष प्रा० पेक्ख मा० पेस्क

आ + चक्ष प्रा० आयक्ख मा० आचस्क

केटलाक अपभ्रंश धातुओ

३९०	भू	हुच्च (पर्याप्ति)
३९१	ब्रू	ब्रुव
३९२	व्रज	वुञ
३९३	दृश	प्रस्स
३९४	ग्रह	गृण्ह
३९५	तक्ष	छोल्ल

देश्य धातुओ

खुडुक्क	गू० खटकवुं
घुडुक्क	,, घडकवुं
भटक्क	,, भटकवुं
चंप	,, चांपवुं